JNANPITH MURTIDEVI JAIN GRANTHAMALA ENGLISH NO 9

DELHI JINA GRANTHA RATNĀVALĪ

(Catalogue of Sanskrit Prakrit & Apabhramśa Manuscripts

of

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura, Delhi)

by

Kundan Lal Jain

Principal Directrate of Education

Delhi Administration Delhi



BHARATIYA JNANPITH PUBLICATION

First Edition 1981 *Price Rs 70*

BHĀRATIYA JÑĀNAPĪTHA

MŪRTIDEVĪ JAINA GRANTHAMĀLĀ

FOUNDED BY

LATE SAHU SHANTI PRASAD JAIN

IN MEMORY OF HIS LATE MOTHER SHRIMATI MURTIDEVI

AND

PROMOTED BY HIS BENEVOLENT WIFE

LATE SHRIMATI RAMA JAIN

IN THIS GRANTHAMĀLĀ CRITICALLY EDITED JAINA ĀGAMIC PHILOSOPHICAL PURĀNIC LITERARY, HISTORICAL AND OTHER ORIGINAL TEXTS AVAILABLE IN PRAKRIT SANSKRIT APABHRAMŚA, HINDI, KANNADA TAMIL ETC, ARE BEING PUBLISHED IN THEIR RESPECTIVE LANGUAGES WITH THEIR TRANSLATIONS IN MODERN LANGUAGES

ALSO

BEING PUBLISHED ARE

CATALOGUES OF JAINA BHANDĀRAS INSCRIPTIONS ART AND ARCHITECTURE STUDIES BY COMPETENT SCHOLARS AND POPULAR JAINA LITERATURE



General Editors

Siddhantacharya Pt Kailash Chandra Shastri

Dr Jyoti Prasad Jain



Published by

Bharatiya Jnanpith

Head Office B/45 47 Connaught Place New Delhi 110001

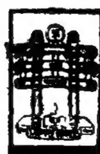
Printed at Yuva Mudran 7 New Wazirpur Industrial Complex, DELHI 110052

ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला अगरेजी ग्रन्थांक—६

दिल्ली-जिन-ग्रन्थ-रत्नावली

(दिग० जैन सरस्वती भण्डार, नया मन्दिर, धर्मपुरा देहली के
सस्कृत, प्राकृत एव अपभ्रश की हस्तलिखित पांडुलिपियो की सूची)

सकलन सपादन
कुन्दनलाल जन
प्रिन्सिपल शिक्षा निदेशालय
दिल्ली प्रशासन दिल्ली



भारतीय ज्ञानपीठ, प्रकाशन

प्रथम संस्करण 1981 मूल्य 70 रुपये

स्व पुण्यश्लोका माता मूर्तिदेवी की पवित्र स्मृति मे
स्व० साहू शान्तिप्रसाद जन द्वारा सस्थापित
एव
उनकी धमपत्नी स्वर्गीया श्रीमती रमा जन द्वारा सपोषित

भारतीय ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमालाके अन्तगत प्राकृत सस्कृत अपभ्रश हिन्दी कन्नड तमिल आदि प्राचीन भाषाओ म
उपलब्ध आगमिक दाशनिक पौराणिक साहित्यिक ऐतिहासिक आदि विविध विषयक
जन साहित्य का अनुस धानपूर्ण सम्पादन तथा उसका मूल और यथासम्भव
अनुवाद आदि के साथ प्रकाशन हो रहा है। जैन भण्डारो की
सूचियाँ शिलालेख सग्रह कला एव स्थापत्य विशिष्ट
विद्वानोके अध्ययन ग्र थ और लोकहितकारी जन
साहित्य ग्रन्थ भी इसी ग्र थमाला म
प्रकाशित हो रहे हैं।



ग्रन्थमाला सम्पादक

सिद्धान्ताचाय प कलाशचन्द्र शास्त्री
डॉ० ज्योतिप्रसाद जन



प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ

प्रधान कार्यालय बी/४५ ४७ कॅनाट प्लेस नयी दिल्ली–११०००१
मद्रक युवा मुद्रण ७ यू वजीरपुर इण्डस्ट्रियल कॉमप्लैक्स दिल्ली–११००५२



स्थापना फाल्गुन कृष्ण ९ वीर नि० २४७० विक्रम स० २००० १८ फरवरी १९४४

समर्पित है

श्रद्धेय स्व० डॉ० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये को

जिन्होंने अनुसंधान के क्षेत्र में ज्ञानचक्षु उन्मीलित किये।

पितृतुल्य मातुलश्री स्व० पं० मनोहरलाल जी कुरवाई को

जिन्होंने जैन धर्म का अक्षर ज्ञान कराया।

धर्म-साधिका स्व० मातुश्री चिरौंजाबाई जी को

जिन्होंने श्रम साधना का महत्व समझाया।

—कुन्दनलाल जैन

प्रस्तुति

जन ग्रन्थ भण्डारो मे सग्रहीत प्राकृत अपभ्रश, सस्कृत आदि कई एक भाषाओ मे लिखे हस्त लिखित ग्रन्थो का अपना विशेष महत्व रहा है। धम सस्कृति और समाज क विकास की परम्परा के विशिष्ट सूत्र उनमे देखने को मिलते हैं। विभिन धर्मावलम्बियो की अपनी अपनी अलग मा यताओ और परम्पराओ की जानकारी उनस स्पष्ट हो जाती है। इन जन भण्डारा मे जनेतर परम्पराओ क ग्रथ भी सग्रहीत मिलते हैं। मध्यकाल म जैन यतियो और अध्येताओ मे से अनेको ने विभिन ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ करते रहने का काय धम और व्यवसाय के रूप मे अपना लिया था, इससे भी हर प्रकार के ग्रन्थो की प्रतियाँ इन भण्डारो मे पहुँचती रहीं थीं। पुन राजनैतिक उलट फेरो और धार्मिक सघर्षों के फलस्वरूप जब जब कोई विशिष्ट पुराने नगर, कस्बे आदि उजडने लगे तब तब वहाँ के जैन मदिरो और उपाश्रयो मे सग्रहीत हस्तलिखित ग्र थ अ यत्र स्थाना तरित किए जाते रहे जिससे उनकी सुरक्षा हो सकी है तथा वे आज भी सुलभ हो पाते हैं।

हषवधन की मत्यु तथा उसके साम्राज्य के विघटन से लेकर उत्तरी भारत म मुगल साम्राज्य की स्थापना तक की आठ नौ शताब्दियो मे भारतीय सस्कृति समाज तथा राजनतिक सगठनो मे निरतर परिवतन होते रह। इन सक्रमणकालीन शक्तियो का भारतीय राजनतिक इतिहास सामाजिक तथा सास्कृ तिक इतिहास निरतर नये अनुरूप लेता रहा है जिनका विवरण लिखन का अनेको लब्ध प्रतिष्ठित इतिहास कारो ने प्रयत्न किया है। परन्तु आज भी उसम बड बडे अन्तराल हैं। अनेक पक्षो की ओर समुचित ध्यान नही दिया जा सका तथा कई एक समस्याओ का सही हल अब भी नही निकाला जा सका है। प्राचीन भाषाए किस प्रकार वतमान भाषाओ मे परिवर्तित हुइ इसका भाषा शास्त्रीय अध्ययन अभी होना है। इन शताब्दियो मे प्राकृत, अधमागधी भाषाओ तथा जनसाधारण की भाषाओ मे रचित साहित्य का जो बहुत बडी मात्रा मे इन जन ग्र थ भण्डारो मे सग्रहीत है समुचित अध्ययन अभी नही हुआ है।

भारत मे पुन मुसलमानी सत्ता की स्थापना के बाद जब मुसलमान शासको क भारतीय समाज के विभिन वर्गों के मुसलमान सुल्तानो आदि के सबधो का जो क्रम प्रारम्भ हुआ उसमे भारतीय वणिक वग के साथ इन मुसलमान शासको से सबधो का सही क्रमिक विवेचन अभी तक नही हो पाया है जो अत्यावश्यक ही नही अपितु अति महत्वपूण है क्योकि भारतीय इतिहास की अनेक अनबूझ पहेलियाँ इस अध्ययन म ही सुलझाई जा सकगी। इस प्रकार के अध्ययन के लिए जन ग्र थ भण्डार बहुत ही महत्वपूण हैं।

इन जन भण्डारो म सग्रहीत हजारो हस्तलिखित ग्र थो की जानकारी तथा उनके उपयोग कर सकने के लिए अत्यावश्यक है कि उन हस्तलिखित ग्र थो की विवरणात्मक सूचियाँ तयार कर विद्वानो और सशोधको को सलभ की जावें इस क्रम म राजस्थान और गुजरात के अनेक जैन ग्र थ भण्डारो की सूचियाँ तयार की जाकर प्रकाशित हो चुकी हैं। यह हष का विषय है कि उसी क्रम म दिल्ली के जैन

/

ग्रन्थ भण्डारो की भी सूचियाँ तैयार की जा रही है और उनके प्रकाशन की योजना अब कार्यान्वित होन लगी है।

श्री कुन्दन लाल जन ने इस काय को अनेक वर्षों के कठोर परिश्रम म पूरा किया है उनका तयार किया हुआ यह विस्तत विवरणात्मक सूचीग्र थ दिल्ली जिन-ग्रन्थ रत्नावली के नाम से प्रकाशित हो रहा है।

श्री कुन्दनलाल जन की तयार की गई दिल्ली जिन-ग्र थ रत्नावली की विशेषता यह है कि वह ग्रन्थो के प्रमुख शीषको को उनके लेखको के नाम, विषय भाषा तथा प्रत्यक ग्र थ क आकार प्रकार व पत्र सख्या आदि की ही सूची नही है प्रत्युत उसमे प्रत्येक ग्र थ रत्न के विषय म विशष जानकारी दी गई है। ऐसी जानकारी देत हुए उ होने प्रत्यक ग्र थ के आदि अन्त भाग की समुचित पक्तियाँ उद्धत कर दी हैं। पुष्पिकाओ व रचना काल सबधी उल्लेखो की भी परम्परा द दी गई है। अन्त मे लखक न प्रत्येक ग्रन्थ के सबध मे विशेष महत्वपूर्ण प्रतिलिपियो के नाम तथा सबधित ग्र थो के Cross references भी उसमे दे दिये हैं जिसस उक्त पाडुलिपि या ग्र थ क अध्ययन मे और अधिक समुचित सहायता मिल सकेगी।

सदर्भित हस्तलिखित ग्रन्थो के प्रारम्भिक तथा अन्तिम अशो और पुष्पिकाओ क जो उदधरण इस सूची पत्र म दिए गये है वे सबधित काल के इतिहासकारो को बहुत ही उपयोगी तथा सहायक प्रमाणित होगे। अपनी रचना के प्रारम्भ अथवा उसके अन्त मे ग्रथकार प्राय अपना तथा अपन वश आदि का परिचय देता रहता है। पुष्पिकाओ मे लेखक उस क्षत्र विशेष के शासक अथवा अपने सरक्षक का भी उल्लेख करना नही भूलता। इसी प्रकार के उल्लेख पाश्चात्कालीन प्रतिलिपियो मे उन प्रतियो के प्रति लिपिकार भी समय समय पर जोडते रहे है। इन उल्लखो स क्षत्रीय राजनतिक तथा सास्कृतिक इतिहास क सहायक सूत्र मिल सकते है जो इतिहास के अन्तरालो को पूरा करने म सहायक हो सकत हैं।

यह प्रसन्नता का विषय है कि वर्षों के कठोर परिश्रम से तैयार की गई यह विस्तत विवरणात्मक सूचियाँ प्रकाशित होने लगी हैं। मेरा विश्वास है कि इन सूचियो क प्रकाशन से बौदिधक वग द्वारा स्वागत ही नहीं किया जावेगा बल्कि वे सभी पस्तकालयो मे सग्रहीत भी होती रहेंगी। ऐसी वज्ञानिक ढग से तयार की गई इन विस्तत विवरणात्मक सूचियो के लिए हम उनके लेखक श्री कुदनलाल जन का अभिनन्दन करते हैं।

रघुवीर निवास,
सीतामऊ (मालवा)
जून 30 1981

—रघुवीर सिह

प्रधान सम्पादकीय

यह प्राय सवमान्य तथ्य है कि जन परम्परा की साहित्य सपदा किसो भी अन्य भारतीय धार्मिक परम्परा की अपेक्षा विपुलता विविधता एव गुणवता की दृष्टि मे यून अथवा हीन नही है। विभिन्न भाषयिक एव विविधविषयक उच्चकोटि की रचनाओ स जन मनीषी अतिप्राचीन काल से भारती भडार को समद्ध करते आये है। जैन धम सघ के दो प्रमुख अग हैं—साधु और श्रावक। ससारत्यागी निर्ग्रन्थ श्रमण मुनि एव आर्यिका मोक्षमाग के एकनिष्ठ साधक होते हैं। गृहस्थ जीवन व्यतीत करनेवाले श्रावक श्राविकाओं के लिए वे धर्ममय प्रदशक आराध्य एव सद्गुरु होते हैं। इन विषयाशावशातीत निष्परिग्रही निरारभी मुनिराजों की विशेषता ज्ञानध्यानतपोरक्त रहना है। उनका प्रयत्न सदव अभीक्षण ज्ञानोपयोग मे सलग्न रहना होता है। स्वाध्याय उनके तपानुष्ठान का महत्वपूर्ण अग होता है। अतएव अति प्राचीन काल से ही अनगिनत आचाय एव मुनिराज साहित्य सजन मे प्रमुख योग देते आये। वस्तुत प्राकृत एव सस्कृत भाषाओ का तो अधिकाश जन साहित्य विशेषकर बारहवी शती ई० के अ त पय त रचित प्राय पूरा उक्त ऋषिवरो के ही अध्यवसाय का प्रसाद है। क नड तमिल अपभ्र श तथा हि दी गुजराती मराठी आदि देशज भाषाओ मे रचित अधिकाश साहित्य गृहस्थ पडितो एव कवियो का देन है।

एक जैन गृहस्थ देव शास्त्र गुरु का उपासक होता है। जिनेन्द्र देव के पश्चात आम्नायानुमोदित धमशास्त्र और साधु रूपी निग्रन्थगुरु ही उसकी शक्ति के सर्वोपरि पात्र होते हैं। उसके दनिक आवश्यक षटकर्मों मे स्वाध्याय और दान का महत्वपूर्ण स्थान है। श्रद्धापूवक धमशास्त्रो का नित्य कुछ काल अध्ययन करना स्वाध्याय है और साधु-साध्वी सभी सत्पात्रो की आहार अभय औषधि शास्त्र रूप चतुविध दान स सेवा करना दान है। अत स्वत भी और गुरुओ की प्रेरणा स भी जन गृहस्थ साधु साध्वियो को अ य त्यागी व्रतियो को तथा जिनमदिरो को शास्त्रो की प्रतियाँ लिखाकर दान करने मे सदव उत्साहपूवक प्रवृत्त होते रहे हैं। परिणामस्वरूप देश के प्राय प्रत्येक जिनालय म एक छोटा मोटा शास्त्र भडार विकसित होता रहा। मध्यकाल के भटटारकीय युग मे भटटारकीय पीठो मठो बसदियो उपाश्रयो आदि मे अच्छे ग्रन्थसग्रह बने और सरक्षित रहे। इस प्रकार ये विविध शास्त्र भण्डार जन साहित्य के सरक्षण के सफल साधन सिद्ध हुए।

आधुनिक युग के प्रारम्भ से ही जबसे पाश्चात्य विद्वानो ने भारतीय धम, दर्शन साहित्य आदि का विधिवत अध्ययन प्रारम्भ किया तो शन शन जन शास्त्रभण्डारो ने भी उनका ध्यान आकर्षित किया। पीटरसन व भण्डारकर की सस्कृत पाडुलिपियो की वार्षिक विवरणिकाओ ने कन्नड साहित्य के सबध मे राइस व नरसिंहाचाय की सूचियो ने तमिल के विषय मे प्रो० चक्रवर्ती की पुस्तक ने गिरनाट की जैना बिबलियो ग्रफी वेलणकर के जिनरत्नकोष श्वे० जन ग्रथावली आदि प्रकाशनो ने जन शास्त्र भण्डारो तथा उनमे सग्रहीत हस्तलिखित ग्र थो के महत्व को उजागर किया और उनकी शोध-खोज एव अध्ययन को अभूतपूव प्रोत्साहन दिया। अब यह आवश्यकता प्रतीत होने लगी कि कम से कम प्रत्येक महत्वपूर्ण जैन शास्त्रभण्डार की परिचयात्मक ग्र थसूचियाँ आधुनिक शली मे तयार की जाय। प० नाथूरामजी प्रेमी

ग्रौर ग्राचार्य जुगलकिशोर मुख्तार ने अपने साहित्यैतिहासिक निबन्धो द्वारा इस दिशा मे विशेष प्रोत्साहन दिया। मुख्तार साहब अपने समय मे ग्रन्थभण्डारो के सर्वोपरि खोजी थ। ग्रनेक भण्डारो का निरीक्षण करके उन्होंने ग्रनेक ग्रज्ञात रचनाग्रो पर प्रकाश डाला। दिल्ली इन्दौर नागौर सोनीपत ग्रादि कई स्थानो क भण्डारो की ग्र थ सूचियाँ भी उ होने ग्रपने ग्रनेकान्त मासिक मे प्रकाशित कीं। ग्रपने वीरसेवामदिर मे ग्रपने सहायक प परमान द जन शास्त्री के सहयोग से दो महत्वपूर्ण प्रशस्तिसग्रह भी प्रकाशित किये। उ ही की तथा ला० पन्नालाल जन ग्रग्रवाल की प्रेरणा से प्रकाशित जैन साहित्य का सकलन सपादन हुग्रा। जन सिद्धान्त भास्कर व जनसदेश शोधाक मे भी कुछ भण्डारो की सूचियाँ प्रकाशित हुई। राजस्थान क प्राय सभी प्रमुख दिग० शास्त्र भण्डारो की सूचियाँ व प्रशस्ति सग्रह डा० कस्तूरचन्द्र कासलीवाल ने परिश्रम पूवक तयार करके श्री महावीरजी जन शोध सस्थान जयपुर से प्रकाशित कराइ। जन सिद्धा त भवन ग्रारा की सूची व प्रशस्ति सग्र तथा ऐ० प नालाल सरस्वती भवन ब्यावर व झालर पाटन की सूचियाँ भी प्रकाश मे ग्राइ। सन 1948 म भारतीय ज्ञानपीठ से प० के० भुजबलि शास्त्री द्वारा सकलित सपादित क नड प्रा तीय ताडपत्रीय ग्र थसूची प्रकाशित हुई थी। मुनि जिनविजयजी का प्रशस्ति सग्रह द० ला० भारतीय विद्यामदिर ग्रहमदाबाद से प्रकाशित मुनि पुण्यविजयजी के विपुलसग्रह की कई विशाल सूचियाँ तथा डा० नरे द्र भानावत द्वारा सपादित मुनि विनयच द्र ज्ञानभण्डार जयपुर की सूची भी प्रकाशित हुई। उपयक्त सूचियाँ इस क्षेत्र की उल्लखनीय उपलब्धियाँ हैं। इतना सब होने पर ग्रभी भी सकडो ग्र थ भण्डारो की सूचियाँ निर्माण एव प्रकाशन की प्रतीक्षा मे हैं।

ग्र थसूचियो के लाभ विद्वानो को ग्रविदित नही है। ग्रपनी साहित्य सपदा एव हस्तलिखित ग्रन्थो का लखाजोखा जानना मात्र ही नही प्राय प्रत्येक भण्डार मे एकाधिक ग्रप्रकाशित रचनाए प्राप्त होती हैं कभी कभी तो एसी विरल रचनाए भी प्राप्त हो जाती है जिनके ग्रास्तित्व की तो ग्रन्थान्तरो से जानकारी थी किन्तु वह कही भी उपल ध नही थी। इसके ग्रतिरिक्त किसी भी ग्रन्थ के ग्राधुनिक पद्धति स सुसम्पादित सस्करण का निर्माण करने के लिए विभि न भण्डारो म प्राप्त उसकी प्रतियो का मिलान करने स पाठभेदो के प्राक्षिप्त या त्रुटित ग्रशा ग्रादि क निणय करने म बडी सहायता मिलती है। शास्त्र दान करने वाले ग्रौर प्रतिलिपिलेखक की प्रशस्तिया स ग्रनेक रचनाग्रो के रचनाकाल निर्धारण मे सहायता मिलती है ग्रौर मूल लखक के विषय मे दानप्रेरक गुरु, दाता श्रावक या श्राविका लिपिकार ग्रादि के व देश काल ग्रादि के सबध मे ग्रनक महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त हो जाते हैं। भाषा एव लिपि के विकास का ग्रध्ययन करने मे भी विभिन्न कालीन एव विभिन्न क्षेत्रीय प्रतिलिपियाँ उपयोगी होती हैं।

श्रावक शिरोमणि स्व० साहू शान्ति प्रसाद जी एव उनकी धमपत्नी स्व० श्रीमती रमारानी की सुविवेचित दानशीलता से प्रस्थापित तथा श्री साहू श्रेयास प्रसाद जा एव साहू ग्रशोक कुमार जी द्वारा वतमान मे सुसचालित भारतीय ज्ञानपीठ ग्रपनी मूर्तिदेवी जन ग्र थमाला के ग्रन्तगत सैकडो महत्वपूर्ण ग्रन्थरत्न प्रकाशित कर चुका है, ग्रौर कर रहा है। प्रस्तुत ग्र थसूची का प्रकाशन करके उसने ग्रपने द्वारा प्रकाशित सदभ ग्रन्थो की सूची मे उपयोगी वद्धि की है। इस दिल्ली जिन ग्रन्थ रत्नावली मे महानगर के धर्मपुरा मुहल्ले में स्थित नये मदिर के दिगम्बर जैन सरस्वती भण्डार मे सरक्षित सस्कृत प्राकृत व ग्रपभ्र श भाषाग्रो के 1260 हस्तलिखित ग्रन्थो की परिचयात्मक सूची तथा विशेष महत्व की प्रशस्तियाँ सकलित हैं। दिल्ली बादशाहत के शाही खजाची ला० हरसुखराय जी एव उनके सुपुत्र राजा सुगनचन्द्र जी जौहरी द्वारा निर्मापित सुन्दर कलापूर्ण उक्त मदिर का भण्डार लगभग 200 वष पुराना है किन्तु उसमे

अन्यत्र से सग्रहीत 14 वीं 15 वीं शती ई० पुरानी भी अनेक ग्रन्थप्रतियाँ हैं। यह शास्त्रभण्डार अच्छा समृद्ध है और दिल्ली के जैन शास्त्र भण्डारो का प्रतिनिधि माना जा सकता है।

इस प्रकार की सूचियाँ भी निर्माण करने का काय बडा धय श्रम एव समय-साध्य होता है। कदाचित नीरस भी होता है। श्री कुदनलाल जन वर्षों से इस काय पर जुटे रहे। उ होने इसके लिए बड़ा परिश्रम किया है समय लगाया है अनेक बाधाओ का भी सामना किया है। उनके हम आभारी हैं। ऐसे तकनीकी प्रकाशना मे अनेक दोषो का रह जाना सम्भाव्य है। इसमे भी हे और हम उनका भान है। उनमे से अनेक का परिमार्जन भी हो सकता था। हमारे भारतीय ज्ञानपीठ कार्यालय के डा गुलाब च द्र जी द्वारा प्रस कापी को यथासभव परिमार्जित करने उसे व्यवस्थित करने उसका एक नया क्रम देने तथा सशोधनो का रूपायत करने मे यह जो सारा श्रम किया गया है वह निश्चित ही स्तुत्य है। अनेक परिस्थितिज य विवशताओ के कारण जसा जो होना चाहिए था वह न हो सका इसका हम खेद है। किन्तु उससे इस प्रकाशन के महत्व एव उपयोगिता मे अन्तर नही पडता। पाण्डलिपियो के प्रारम्भिक और अन्तिम श्लोको के मूल पाठ को सशोधित करने मे विपयय की सभावना के कारण श्री कुदनलाल जी ने उन्हें यथावत रहने दिया है।

शिक्षा मत्रालय नई दिल्ली से इसके प्रकाशन के लिए अनुदान प्राप्त हुआ इसके लिए भारतीय ज्ञानपीठ की ओर से हम उसके विशेष आभारी है। ज्ञानपीठ की ओर से भी इस काय मे प्रचुर राशि व्यय हुई है।

आशा है कि जिन शास्त्र भण्डारो की सूचियाँ अभी प्रकाशित नही हुई है, उन्हे भी इस प्रकाशन से प्ररणा मिलेगी।

21 8 1981

—कलाशच द्र शास्त्री
—ज्योति प्रसाद जन

प्रस्तावना

'हिन्दी जिन ग्रन्थ रत्नावली' का यह प्रथम भाग दिल्ली व धमपुरा स्थित नया मंदिर (जिसे दि० जैन अग्रवाल मंदिर भी कहते हैं) के सरस्वती भंडार में स्थित संस्कृत प्राकृत और अपभ्रंश भाषा के हस्तलिखित ग्रंथों की विवरणात्मक सूची है।

धमपुरा के नये मंदिर का अपना प्राचीन इतिहास है। यहाँ लाला हरसुखराय जी रहा करते थे, जो हिसार के निवासी थे और तत्कालीन बादशाह के खजांची भी थे। एक बार लालाजी को ज्ञात हुआ कि बादशाह की सवारी निकलनेवाली है। उस रास्ते सुनहरी मस्जिद पड़ती थी जो बड़ी जीर्ण शीर्ण दशा में पड़ी थी। लालाजी ने जिन्हें राजा साहब की उपाधि भी प्राप्त थी तुरन्त ही सुनहरी मस्जिद का जीर्णोद्धार करा डाला। वह एकदम नयी सी लगने लगी।

जब बादशाह की सवारी निकली और बादशाह ने सुनहरी मस्जिद की सुन्दर दशा देखी तो बड़े खुश हुए और वजीर से पूछा कि इसे किसने सुधरवाया है। लोगों ने तुरन्त उत्तर दिया कि यह तो राजा साहब ने ठीक करायी है। बादशाह को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने लौटते ही राजा साहब को दरबार में आमंत्रित किया और सुनहरी मस्जिद के जीर्णोद्धार का कारण पूछा। राजा साहब ने बड़े विनम्र भाव से उत्तर दिया हुजूर यह तो इबादतगाह है। उसका टूटा फूटापन मुझे अच्छा नहीं लगा तो ठीक करा दी। खता हुई हो तो माफ करें। बादशाह बोले 'राजा साहब! आप तो जैनी हैं फिर मस्जिद से आपको मुहब्बत क्योंकर हो गई? राजा साहब विनम्र भाव से बोले, हुजूर इबादतगाह मुसलमान की हो चाहे हिन्दू जैनी या सिक्ख की हो सब बराबर है और सबको इबादतगाह में जाकर इबादत करनी ही चाहिए। इसमें कोई ताज्जुब की बात तो है नहीं?

राजा साहब के उत्तर से बादशाह बड़े खुश हुए और उन्होंने राजा साहब को मुँह माँगी चीज अता करने को कहा। राजा साहब ने बड़े सरल भाव से कहा कि जैनियों के लिए भी धमपुरा में एक इबादतगाह (मंदिर) बनवाने को इजाजत दी जावे। बादशाह ने तुरन्त फरमान जारी कर दिया। यद्यपि मुल्ला मौलवियों ने बड़ा विरोध किया था फिर भी किसी की कुछ न चली और इस नये मंदिर की नींव लाला हरसुखराय जी ने प्रारम्भ करा दी। इसके फरमान आदि कागजात उनके वंशजों के पास अब भी विद्यमान हैं।

राजा साहब ने मंदिर के निर्माण में उस समय दस लाख रुपये खर्च किये थे। यह मंदिर बड़ा ही कलात्मक एवं सुन्दर है सिंहासन का जो सिंह है उसकी मूँछ के बाल तक स्पष्ट चमकते हैं।

राजा साहब मंदिर का पूरा निर्माण जब करा चुके केवल कलशारोहण का काम बाकी रह गया तो अपना हाथ खींच लिया। काम रुक गया। लोगों में कानाफूसी होने लगी। वे राजा साहब के पास पहुंचे और मंदिर के बारे में चर्चा की। राजा साहब बड़े विनम्र भाव से बोले "मेरा पैसा समाप्त हो गया है। अब इस काम को सारे समाज के चन्दे से किया जावे।" लोगों ने अपनी ओर से हजारों रुपये

देने चाहे पर राजा साहब राजी न हुए। उनका तो प्रस्ताव था कि सभी पचजन प्रत्येक जनी के पास चलें और वह अपनी श्रद्धावश जो कुछ दें उसी स आगे का काम चलाया जाये। आखिरकार राजा साहब के कथनानुसार सारे जन समाज से चदा इकट्ठा हुआ। फिर जो कुछ और रुपया लगाना पड़ा वह राजा साहब ने लगाया। इस प्रकार कलशारोहण का काय समाप्त हुआ।

कुछ दिनो बाद किसी ने राजा साहब से इस रहस्य का भेद जानना चाहा तो राजा साहब बोल भाई! यदि समाज का चदा न हो तो आगे चलकर हमारे बेटे पोते या रिश्तेदार कहते फिरेंगे कि यह मदिर हमारा है और लड़गे। अब तो किसी की हिम्मत न होगी कि यह मेरा है ऐसा कह सक। यह पचायती मंदिर हो गया। कोई कुछ तो न कह सकेगा। इस तरह इस पुनीत मदिर का निर्माण हुआ।

लालाजी की शास्त्रो मे बड़ी रुचि थी। अत वे स्वय ग्रथ लिखवाते थे। जहाँ कही उन्हे पता चलता कि हस्तलिखित ग्रंथ है तो तुरत ही खरीद लेते। ग्रथो के अच्छे अध्येता थे अत ग्रथ सग्रह पर बड़ा पैसा खर्च करते थे। इसीका परिणाम है कि इतना बड़ा हस्तलिखित ग्रथो का भण्डार इस मंदिर मे एकत्रित हो सका। उसकी सुरक्षा और देखभाल भी वे स्वय किया करते थे। इन ग्रंथों में जैन ग्रंथ ही सकलित नहीं किये गये वे अपितु अन्य मतो के ग्रथों का अच्छा सग्रह विद्यमान है। सस्कृत अध्ययन का यह मदिर बड़ा अच्छा केन्द्र माना जाता रहा। दूर दूर से विद्वान आकर इस भण्डार के ग्रथ देखा करते या उनसे नकल उतार कर अपनी प्रति बनाकर ले जाते। राजा साहब ने इतना बड़ा पस्तकालय बनवा कर भावी पीढी पर बड़ा भारी उपकार किया है। इस भडार की सूची बनाने का मुझे सौभाग्य मिला। इसके लिए प्रभु का कृतज्ञ हूँ। कसे यह सूची तयार हो सकी सो इसका विवरण निम्न प्रकार है।

देहाती कहावत है कि बारह वष मे घूरे के भी दिन फिरते हैं पर इस ग्रथ के दिन फिरने को इक्कीस वष लग गये हैं। और यह तो पहला ही भाग है जो भारत सरकार के अनुदान से ही प्रकाशित हो रहा है आगे के भागो का क्या होगा यह अनुसधित्सु जगत गभीरतापूवक विचार करे। ऐसा नीरस और आँखफोड़ काम जिसके पीछे अथलाभ तनिक सा भी न हो कौन करने को तयार है? मुझे तो आशका है पुरानी हस्तलिखित पोथियाँ बाचने वालो की पीढी ही चुक रही है। मैंने जो कुछ सामग्री सकलित की है वह शोध की दष्टि स बडी ही महत्त्वपूर्ण है। उसके प्रकाशन की तुरन्त ही व्यवस्था की अपेक्षा की जाती है।

इस समय उन स्वगस्थ पुण्यविभूतियो का अभाव दिल को दुखा रहा है। जो इस महान यज्ञ के पुरोधा थे। स्व० डा० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये और बा० छोटे लाल जी कलकत्ता व स्व० डा० हीरालाल जी—ये तीनो ही इस कला के पारखी थे। आज वे इस ग्रथ को देख पाते तो बहुत ही प्रसन्न होते। यह काय कसे प्रारम्भ हुआ इसकी बडी लम्बी राम कहानी है। सन 1960-61 मे मैं अपने छात्रो के साथ काश्मीर यात्रा पर गया था। उसी वष ओरिएटल कान्फ्रेंस' की बठक भी श्रीनगर मे हो रही थी। मुझे पता चला कि डा० उपाध्ये और डा० हीरालाल जी यहाँ विद्यमान है तो मैं तुरन्त ही उनका होटल ढूढकर उनस जा मिला। डा० उपाध्ये बडी सहृदयता और प्रम से मिले और मुझसे Catalogue तैयार करने को कहा। मे तब नही जानता था कि Catalogue किस चिड़िया का नाम होता है, मैंने तो सिर्फ डा० उपाध्ये का शुभाशीर्वाद पाने एव उनके वरदहस्त की छत्रच्छाया प्राप्त करने के प्रलोभन म स्वीकृति दे दी।

डा० उपाध्ये ने दिल्ली मे मिलने को कहा। मैं एक सप्ताह बाद उनसे दिल्ली मे मिला। तब मैं दरियागज मे रहता था। उन्होने Catalogue सबधी प्रोफार्मा की, जो भारत सरकार द्वारा अधिकृत है

व्यवस्था करा दी और डा० पन्नालाल जी अग्रवाल से मिल लेने का मुझे सुझाव दिया। डा० पन्नालाल जी ने दिल्ली के शास्त्रभंडारों के अधिकारियों से मेरा परिचय करा दिया और मुझे हस्तलिखित ग्रंथ मिलने लगें। मैं अपनी लेखन सामग्री एवं कुछ सन्दर्भ ग्रंथों को लेकर नया मंदिर की धर्मशाला के एक कमरे में बैठ गया। जैसे ही पहला हस्तलिखित ग्रंथ खोला और पढ़ने का प्रयास किया तो आँखों तले अंधेरा छा गया। कुछ भी समझ न आया और न बाँच सका। जीवन मे हस्तलिखित ग्रंथ बाँचने का दूसरा अवसर था। मैं घबरा गया कि यह सब इतना बड़ा काम कैसे होगा और उपाध्ये जी को दिये हुए वचन का निर्वाह कैसे होगा। इसी चिन्ता मे वहीं लेट गया। नींद आ गई। स्वप्न मे किसी ने कहा 'घबराओ नही लगे रहो सब कुछ हो जायेगा।" आँख खुली तो घर चला आया। निराशा के कारण किसी भी काम मे मन न लगा। उन दिनो स्व० बा० छोटेलाल जी कलकत्ता वीर सेवा मंदिर मे विद्यमान थे। वे वर्षों से बंद पड़े अनेकान्त के पुनः प्रकाशन का प्रयास कर रहे थे। उनका स्वास्थ्य बहुत ही कमजोर था, दमा की पीड़ा थी फिर भी काम में लगे रहते थे।

प्राय प्रतिदिन मैं उनके पास जा पहुँचता और उन्हें अपनी कठिनाईयो से अवगत कराया करता पर उन्होंने बड़ा धीरज बंधाया और सान्त्वना दी तथा प० गौरीशंकर हीराचंद ओझा का 'प्राचीन लिपि और वर्णमाला का विकास' शीर्षक ग्रंथ मुझे पुस्तकालय से निकाल कर दिया और समझाया कि अक्षरो का क्रमिक विकास कैसे हुआ और देवनागरी लिपि का किस तरह विकास हुआ। इस ग्रंथ से मुझे बड़ा सहारा मिला और धीरे धीरे मैं हस्तलिखित ग्रंथ फटाफट बाँचने लगा और इस तरह यह ग्रंथ तैयार हो सका।

इस ग्रंथ को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए मैंने और भी कई अन्य सन्दर्भ ग्रंथो का सहारा लिया और जिस ग्रंथ का जहाँ कही थोड़ा सा भी उल्लेख मिला उस ग्रंथ तथा उसकी पृष्ठ संख्या का Cross reference के रूप मे उल्लेख कर डाला जिससे अनुसंधित्सु पाठक को एक ही स्थान पर कई उदाहरण प्राप्त हो जावें। इस तरह मेरा काम गति पकड़ने लगा।

इस तरह अक्तूबर 1967 तक मैंने धर्मपुरा, पंचायती मंदिर, सेठ का कूचा शाहदरा के सभी ग्रंथ तथा बदवाड़ा के कुछ ग्रंथो का विवरण नोट कर लिया था। यद्यपि मैं जुलाई 1967 मे शाहदरा स्थित स्वनिर्मित मकान मे रहने लगा था फिर भी बदवाड़े के मंदिर मे रोज शाहदरा से जाता था और ग्रंथ सूची का काम करता था। इसी बीच नवम्बर 1967 मे मेरी पदोन्नति प्रिन्सिपल के रूप मे हो गई। ग्रंथ सूची का काम स्थायी रूप से बंद कर देना पड़ा जिसके दो कारण थे एक तो मेरा शासकीय उत्तरदायित्व बढ़ गया था दूसरे ग्रंथ सूची के प्रकाशन के मुझे कोई आसार दिखाई नहीं दे रहे थे। यदि प्रकाशन की तनिक सी भी आशा कही से मिलती हुई दिखती तो मैं इस काम को और अधिक बढ़ाता जाता, पर प्रकाशन के अभाव मे मैं सर्वथा निराश हो गया और ग्रंथ-सूची का काम ठप्प पड़ गया। विभिन्न स्थानो पर विभिन्न व्यक्तियो से इसके प्रकाशन का चर्चा की पर महाकवि बिहारी की यह उक्ति—

कर लें सूंघ सराह लें सबै रहे गहि मौन।
रे गंधी ! मति अंध तू अतर दिखावत कौन ॥'

चरितार्थ हो रही थी। अचानक जनवरी 72 में ज्ञानपीठ से आदेश हुआ कि भारत सरकार के निर्धारित प्रोफार्मा पर सूचनाएं तैयार की जावें। जनवरी 72 से मैं उस मे लग गया और सूचनाएँ तैयार कर डालीं। फिर भी प्रकाशन मे अनेको अड़गे और गतिरोध आने लगे और मैं निराशा और निरुत्साह के अंधकार में

भटकने लगा। वीर निर्वाण शताब्दी के अवसर पर भी विभिन्न समितियो से अनुरोध करता फिरा पर व्यर्थ गया। अतत इतना अधिक निराश हुआ कि ऐसे ठोस पर नीरस साहित्यक कार्य कभी न किये जावे और मन मे इतनी उद्विग्नता आ गई कि 'अर्धकथानक' के कर्ता प० बनारसीदास की भांति उनके शृगारी ग्रंथ की तरह इस सपूर्ण ग्रथ को भी जमना में प्रवाहित करने को तयार हो गया था। जब कभी कोई विद्वान या शोधकर्ता इसकी चर्चा करता तो मेरा गला भर आता और सोचता कि सचमुच ही ऐसे ठोस शोध कार्य करने मे तिल तिल खून जलाना और आंख फोडना महान् पातक है।

मुझे इस ग्रथ की तयारी में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप मे जिन विद्वानो एव ग्रथकर्ताओ का सहयोग और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है उन सबके प्रति अपनी विनयाजलि प्रस्तुत करता हूँ। इस ग्रथ मे कुछ प्रूफ सबधी त्रुटियाँ रह गई हैं उनकी क्षमा याचना करते हुए निवेदन करना चाहता हूँ कि 'यादृश पुस्तक दष्ट तादृश लिखित मया, यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषो न दीयते।' इस मत्र का अक्षरश पालन किया गया है। अत मूल प्रति में जैसा पढ़ा गया वैसा छापा गया, जब तक कोई प्रमाण नहीं मिला तब तक संशोधन का दुस्साहस नहीं किया है अत छदभंग, मतिदोष आदि अनेको त्रुटियो के लिए पाठकों से क्षमा याचना करता हूँ। इस ग्रथ में केवल 1260 हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का विस्तृत विवरण अंग्रेजी में तथा आदि-अन्त भाग, प्रशस्ति, अन्य ग्रथों के उद्धरण आदि हिन्दी सस्कृत मे दिये हैं। भारत सरकार का प्रोफार्मा ऐसा ही है अत तदनुसार ही सारा काम किया है।

इस अवसर पर दिल्ली के जन भण्डारो के व्यवस्थापकों का आभार व्यक्त करना चाहता हू जिन्होने मेरे विश्वास पर लगभग पचास हजार की प्रचुर मात्रा मे पाण्डुलिपियाँ दी और मैं यह सब काय कर सका और मुझे आनन्द की अनुभूति हुई।

मैं श्री रामकृष्ण शर्मा शिक्षा अधिकारी शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार का विशेष आभारी हूँ जिन्होने इसके प्रकाशन के अनुदान दिलाने हेतु पर्याप्त रुचि ली। इस काय के लिए मैं अपनी पत्नी के उपकार को भी कसे भूल सकता हूँ जिसने उस समय हर कठिनाई मे मेरा साथ दिया।

अन्त मे कृपालु पाठको से निवेदन कर देना चाहता हूँ कि यह मेरा प्रथम प्रयास है। 'को न विमुह्यति शास्त्र-समुद्रे' उमास्वामी के उन शब्दों में मैं अपनी त्रुटियों को स्वीकारता हुआ सज्जन पाठको से अनुरोध करूगा कि वो सुझाव सशोधन वे आवश्यक समझें मुझे निम्न पते पर अवश्य ही सूचित कर। अग्रिम सस्करणो और भागो मे मैं उन्हें सुधारने का सतत प्रयत्न करूगा। अगले भागो की विशाल सामग्री सकलित पड़ी है यदि कोई उदार साहित्यिक प्रकाशक इस ओर दष्टिपात करे तो शोध और अनुसधान के क्षेत्र मे कार्य करनेवालो को बड़ी मदद मिलेगी।

श्रुत कुटीर
68, कुती माग
विश्वासनगर शाहदरा
दिल्ली 110032
दिनांक 10 जुलाई 81

—कुन्दनलाल जन

ABBRIVIATION

D — Devanagari
SKT = Sanskrit
Pra — Prakrit
Apb = Apbhraṁśa
C = Complete
V S = Vikrama Saṁvat
Col 8th = Length, Breadth Pages, Lines and letters dipicts

जि० र० को० = जिनरत्नकोष—डॉ० वेलणकर
प्र० ज० सा० = प्रकाशित जैन साहित्य—डा० पन्नालाल जी अग्रवाल
रा० सू० = राजस्थान सूची—डा० कस्तूरचन्द जी कासलीवाल
भ० स० = भट्टारक सम्प्रदाय—विद्याधर जोहरापुरकर
ज० ग्र० प्र० स० = जन ग्र थ प्रशस्ति सग्रह—प० जुगलकिशोर मुख्तार
आ० सू० = आमेर सूची—डा० कस्तूरचन्द्र कासलीवाल
प्र० स० = प्रशस्ति सग्रह—डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल

—मुख्तार

दिल्ली-जिन-ग्रन्थ-रत्नावली

DIG JAIN SARASWATI BHANDAR, NAYA MANDIR,

DHARMAPURA, DELHI

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura, Delhi

S No	Library accession or collection No if any	Title of work	Name of Author	Name of Commentator
1	2	3	4	5
1	*Loose Papers No 42 E*	Ābharanapujayam Deva bhusaṇa Kathā	—	—
2	*A 1 (ka) E*	Ādipurana	Jinasenacarya	—
3	*A 1 (kha)*	Ādipurana		—
4	*A 1 (b)*	Ādipurana	,	—
5	*A 1 (gha)*	Ādipuraṇa	,	—
6	*A 1 (N)*	Ādipurana	,,	—
7	*Inc 13*	Ādipuraṇa tikā	—	—
8	*Skt Gutkā 22*	Anantavrata Katha	Śrutasāgara	—
9	*Skt Gutkā 63 E*	Anantacaturdaśi Katha	—	—
10	*A 32 (ka) E*	Āradhana katha Kośa 4 Chapters	Brahmanemidatta	—
11	*A 16 (ka)*	Bhadrabahu caritra 4 Chapters	Ācarya Ratnanandi	—
12	*A 16 (kha)*	Bhadrabahu-caritra	Ācarya Ratnanandi	—
13	*A 16 (ga)*	Bhadrabāhu caritra	Ācarya Ratnanandi	—
14	*A 16 (gha)*	Bhadrabāhu caritra	Ācarya Ratnanandi	—
15	*Lr 38 (ka)*	Bhartṛhari Śataka Satika (Niti Śataka)	Kavi Bhartrhari	—

(Purāṇa, Kathā, Carita, Kavya etc.)

Mat or Subt.	Script	Size in cms No of folios or leaves lines per page and No of letters per line	Extent	Condition and age	Additional particulars
6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	24×10 7 2 14 63	Inc	Good C 15th V S	
P		41 8×15 2 254 14 60	C	Good 1710 V S	Published
P		32×15 2 512 14 38	C	Good 1931 V S	Published
P		33×15 2 359 12 55	C	Good 1665 V S	Pub with notes Repaired after bad condition
P		11 6×11 3 550 10 40	Inc	Good	Last page lost Published
P		25 4×11 3 261 16 48	Inc	—	Last pages lost Published
—	D Skt Prose	35 5×15 2 25(157to181) 15 60	Inc	—	Pages 2 (158) 3 (159) are missing.
P	D Skt Poetry	18 9×13 3 12 to 17 page 13 25	C	Good	Unpublished
P	D Skt Prose	15 8×13 9 Pages 92 to 96 12 22	C	Good	
P	D Skt Poetry	31 7×13 9 214 12 39	C	Good 1798 th V S	Bhādo Badi 14 Friday V S 1798 Published
P	D,Skt Poetry	29 1×13 3 28 11.33	C	Good 1804 V S	Disciple of Anantakirti Published
P	D Skt Poetry	27 9×13 9 18 13 40	C	Good 1861 V S	Published
P	D,Skt Poetry	27 9×12 7 25 11 35	C	Good 1891 V S	Paper thin & good Published
P	D,Skt Poetry	27 5×11 3 31 10 32	C	Old	Writing is not good
P	D Skt Poetry	38 1×16 4 24 10 48	C	Good	Published

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
16	*L 38 (kha)*	Bhartrhari śataka Satika (Śrṅgara śataka)	Kavi Bhartrhari	—
17	*Lr 38 (ga)*	Bhartrhari Śtaka Saṭika (Vairāgya śatika)	Kavi Bhartṛhari	—
18	*Lr 39 (ka)*	Bhartṛhari Śataka (Niti Śrṅgara Vairagya Śatakatrya)	Kavi Bhartṛhari	
19	*A 30 (ka)*	Bhavisyadatta carita 15 Canons	Vibudha Śridhar 1230 V S	—
20	*A 30 (kha)*	Bhavisyadatta carita	Śridhar	
21	*A 9 (ka)*	Brahat Harivamśa puraṇa	Jinasenacarya II 705 Śaka	—
22	*A 38 (ka)*	Candraprabha caritra 18 Canons	Viranandi	—
23	*A 38 (kha)*	Candraprabha caritra 18 Canons	Viranandi	
24	*A 38 (ga)*	Candraprabha caritra	Viranandi	—
25	*A 18 (ka)*	Dhanyakumara caritra 7 Chapters	Sakalakirti Bhaṭṭaraka	
26	*A 18 (kha)*	Dhanyakumara-caritra		—
27	*A 41 (ka)*	Dharmasarmabhyudaya Kavya 21 Canons	Mahakavi Hari candra	
28	*A 51 (ka)*	Draupadi prabandha	Jinasenācārya	—
29	*A 36 (ka)*	Dvisamdhana Mahākavya Vyākhyā (Padakaumudi) 18 Canons	Dhanañjaya Kavi	Nemicandra
30	*A 13 (ka)*	Hanumān caritra 12 Canons	Brahmacaryajit S/o Virasmgha	—
31	*A 8 (ka)*	Harivamśa purana 39 Canons	Brahma Jinadāsa	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	38 1×16 4 24 11 50	C	Good	Published
P	D,Skt Poetry	38 1×16 4 23 10 52	C	Good	Published
P	D,Skt Poetry	26 6×13 9 47 6 38	C	Good	Published.
P	D Skt Poetry	22 8×1 14 90 9 24	C	Old 1817 V S	See *Jaina-grantha praśasti-saṁgraha, II* p 49 Unpublished
P	D Skt Poetry	26 6×8 8 79 9 42	Inc	Old 1486 V S	First two pages are missing Handwriting is good Unpublish
P	D Skt Poetry	26 6×15 2 392 12 36	C	Good	Disciple of Kirtisena of Punnāta Saṁgha Published
P	D Skt Poetry	30 4×17 7 112 8 48	C	Good 1899 V S	Published with side notes
P	D Skt Poetry	30 4×12 2 114 10 34	C	Good 1872 V S	Published
P	D Skt Poetry	26×12 7 162 8 27	C	Good	Published
P	D Skt Poetry	30 4×14 6 36 15 35	C	—	No good hand
P	D Skt Poetry	27 3×12 13 (39to51) 9 30	Inc	Good 1621 V S	First 38 pages are missing The paper is thin & weak
P	D Skt Poetry	29 9×13 3 136 9 30	C	Good	Published
P	D Skt Poetry	24×10 1 24 12 33	C	1672 or 1872 V S	Words are rubbed Unpublished
P	D Skt Poetry	35 5×20 3 226 16 41	C	Good 1845 Śaka	Disciple of Devanandi
P	D,Skt Poetry	30 4×13 9 80 12 34	C	—	2000 Ślokas Unpublished It is also called as *Añjani Caritra*
P	D,Skt Poetry	30 4×15 2 167 16 56	C	Good 1773 V S	Unpublished Clean hand

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
32	*A 8 (kha)*	Harivaṁśa puraṇa 39 Canons	Brahma Jinadāsa	—
33	*A 8 (ga)*	Harivaṁśa puraṇa	Brahma Jinadasa	—
34	*A 9 (kha)*	Harivamsa purana	Jinasenācārya	—
35	*A 28 (ka)*	Jambuswami-carita 11 Canons	Jinadāsa	—
36	*A 35 (ka)*	Jinadatta Katha 9 Canons	Gunabhadracārya	—
37	*E 33 (ka)*	Jñānasuryodaya Nataka	Vadicandra Suri	—
38	*Inc*	Karṇamrta puraṇa	Kesava Sena 1688 V S	—
39	*Lr 37 (ka)*	Karpuramañjari Nataka	Rajā Śekhara	—
40	*A 45 (ka)*	Kirātarjuniyam 18 Canons	Bharavi	—
41	*A 44 (ka)*	Kumarasambhava 8 Canons	Kalidasa	—
42	*Loose papers No 39*	Mahabharata Śantiparva	—	—
43	*A 6 (ka)*	Mahavira puraṇa 13 Chapters	Sakalakirti	—
44	*A 3 (ka)*	Mallinatha puraṇa	Sakalakirti	—
45	*A 46 (ka)*	Meghaduta Khaṇḍakāvya	Kalidāsa	—
46	*A 4 (ka)*	Munisuvratanātha puraṇa	Brahma Kṛsṇadasa 1681 V S	—
47	*A 22 (ka)*	Nagakumara caritra 5 Canons	Mallisena Suri V S 1104	—
48	*A 22 (kha)*	Nāgakumāra caritra 5 Canons	Mallisena Sūri	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	926 11 35	C	Good 1813 V S	Disciple of Sakalakirtı Bhaṭṭāraka Unpublished
P	D,Skt Poetry	30 4×12 7 269 11 45	Inc	—	No Last page.
P	D Skt Poetry	29 1×12 7 282 13 58	C	Good	9500 Ślokas, Published Strong & durable paper
P	D Skt Poetry	26 6×12 7 110 10 32	C	Good	Disciple of Sakalakirtı Published
P	D Skt Poetry	26 6×11 3 73 8 20	C	Good	Published
P	D Skt Drama	27 9×15 2 41 12 33	C	Good 1648 V S	Published
P	D Skt Poetry	28 5×13 9 101 11 42	Inc	—	4000 Ślokas
P	D Skt Drama	31 ×1 7 17 13 54	C	V Old 1507 V S	Needs repaır Non Jaına Ms
P	D Skt Poetry	20 3×11 3 93 10 27	C	Good	Published
P	D Skt Poetry	20 9×12 51 11 23	C	Good 1694 V S	Published
P	D Skt Poetry	26 6×13 3 (32 to 82) 50 10 38	Inc	—	—
P	D Skt Poetry	26 6×13 3 76 12 36	C	Good	Published
P	D Skt Poetry	30 4×18 9 23 13 56	C	Good	Good & strong paper Published
P	D Skt Poetry	20 3×10 1 17 10 29	C	Good	Published
P	D,Skt Poetry	30 4×18 9 63 13 55	C	Good	4025 Ślokas Unpublished
P	D Skt Poetry	27 9×13 9 19 12 40	C	Good 1661 or 1761V S	Also called *Sruta Pañcamı Kathā* Good paper Published
P	D,Skt Poetry	26 6×11 3 26 10 35	C	Good 1690 or 1693 V S	Published

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir Dharmapura, Delhi

1	2	3	4	5
49	*Lr 14 (ka)*	Navaratna Kavyam	—	—
50	*A 5 (ka)*	Neminātha purana 16 Canons	Brahma Nemidatta 1685 V S	—
51	*A 5 (kha)*	Neminātha purana	Brahma Nemidatta	—
52	*A 39 (ka)*	Nemınırvāṇa Kavya 15 Canons	Vāgbhaṭta S/o Soma	—
53	*Skt Gutakā No 1*	Nirdosasaptami katha	—	—
53 A	*Pra 25*	Nirdosasaptami katha	—	—
54	*A 23 (ka)*	Padma caritra or Padmanandi caritra	Muni Śricanda 1087 V S	—
55	*A 7 (ka)*	Padmapurana 123 Parvas	Ravisenacarya 678 A D	—
56	*A 7 (kha)*	Padmapurana	Ravisenacarya 678 A D	—
57	*A 10 (ka)*	Pandavapurana 25 Parvas	Subhacandra Bhaṭṭaraka 1608 V S	—
58	*A 10 (kha)*	Pandavapurana	Subhacandra Bhaṭṭaraka 1608 V S	—
59	*A 40 (ka)*	Parśvanātha caritra 12 Canons (Parsvanatha purana)	Vādiraja Suri 947 Śaka (1015 1045 A D)	—
60	*A 26 (ka)*	Pradyumna-caritra 16 Canons	Somakirti Suri 1530 V S	—
61	*A 26 (kha)*	Pradyumna caritra 16 Canons	Somakirti Suri 1530 V S	—
62	*A 49 (ka)*	Purandara vidhana Kathopahkyāna	Śrutasāgara	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	22 8×12 7 3 7 31	Inc	—	—
P	D,Skt Poetry	29 1×15 2 154 12 38	C	Good	Published
P	D·Skt Poetry	30 4×13 9 302 9 34	C	Good 1668 V S	Old paper First page in duplicate Published
P	D Skt Poetry	32 3×14 6 100 9 37	C	Good 1868 V S	Published
P	D,Skt Poetry	34 9× 8 9 up to page 93 25 30	C	Good	Published
P	D Skt Poetry	15 8 ×13 9 up to page 251 14 20	C	Good	Published
P	D Skt Poetry	26 6×12 7 58 10 31	C	Good 1894 V S	Unpublished
P	D Skt Poetry	40 6×13 9 342 14 66	C	V old paper	1800 ślokas Published
P	D Skt Poetry	31 6×15 2 246 24 55	C	V old paper 1775 V S	No good hand Published
P	D Skt Poetry	31×16 4 159 13 42	C	Good 1889 V S	Successor of Vijaykirti mulagaccha Published
P	D Skt Poetry	25 4×12 7 131 16 45	C	V old 1764 V S	With some side notes Published
P	D Skt Poetry	26 4×12 7 96 9 39	C	Good 1891 V S	Good paper Published
P	D Skt Poetry	27 3×12 96 22 43	C	Good 1752 V S	Disciple of Bhimasena Published
P	D Skt Poetry	26 6×11 3 85 18 48	C	Old paper 1759 V S	4850 Ślokas Published
P	D,Skt Poetry	27 9×13 3 3 11 58	C	Old	Letters rubbed Unpublished

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
63	*A 30 (ka)*	Puṇyāśrava Katha kosa 16 Chaps	Rāmacandra Mumuksu	—
64	*342 (ka)*	Raghuvaṁśa Kāvya 2 Canons	Kalıdasa	—
65	*Loose papers Guṭakā 25*	Roṭatıja Kathā	—	—
66	*A 12 (ka)*	Śāntınātha carıtra 16 Canons	Sakalakırtı Bhaṭṭaraka	—
67	*A 12 (kha)*	Śāntınatha carıtra	Sakalakīrtı Bhaṭṭaraka	—
68	*Loose papers 7*	Śāntınatha-carıtra		—
69	*Inc*	Śantınatha puraṇa	Sak ılakırtı Bhaṭṭaraka	—
70	*A 24 (ka)*	Saptavyas ın ı caritra 7 Canons	Somakırtı Dıscıple of Bhımasena Nandı Samgha	—
71	*A 24 (kha)*	Saptavyasana carıtra 7 Canons	Somakırtı 1522 V S	—
72	*A 50 (ka)*	Sıddhacakra Katha	Subhacandra	—
73	*A 43 (ka)*	Śıśupalavadha 20 Canons	Magha Kavı	—
74	*A 20 (ka)*	Śreṇika carıtra (Puraṇa) 15 Canons	Śubhacandra Bhaṭṭaraka	—
75	*A 20 (kha)*	Sreṇıka carıtra 15 Canons	Śubhacandra Bhaṭṭaraka	—
76	*A 20 (ga)*	Śrenıka carıtra	—	—
77	*A 14 (ka)*	Śrīpāla-carıtra 7 Canons	Sakalakırtı Bhaṭṭaraka	—
78	*A 14 (kha)*	Śrıpāla caritra 7 Canons	Sakalakırtı Bhaṭṭaraka	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	30 4×12 193 13 32	C	Good	Published
P	D,Skt Poetry	27 9×12 7 12 10 30	C	Good	Published
P	D Skt Prose	15 8×13 9 up to 261 14 20	C	Good	Unpublished
P	D,Skt Poetry	30 4×14 6 128 14 45	Inc	—	4375 Ślokas Published
P	D Skt Poetry	29 1×12 7 201 10 36	C	Good paper 1868 V S	Good hand Red ink fully used Published
P	D Skt Poetry	24 7×11 3	Inc	—	Last page missing
P	D Skt Poetry	24 7×10 7 297 10 27	C	V old 1872 V S	4375 Ślokas Published
R P	D Skt Poetry	30 4×12 7 114 11 34	Inc	Khaṇḍita	Also called *Vidhi Vinoda* Published
P	D Skt Poetry	25 4×11 3 58 14 48	C	Good 1765 V S	See S N 70 J R K 416 Published
P	D Skt Poetry	25 4×11 3 8 9 32	C	Good 1825 V S	Also called *Nandisvara Kathā* or *Nandiśvra aṣṭahnikā Katha* Unpublished
P	D Skt Poetry	26 6×13 3 124 10 31	C	Good	Published
P	D Skt Poetry	26×14 6 106 12 35	C	Good 1807 V S	Published
P	D Skt Poetry	28 5×12 7 91 11 43	C	Simple Paper	2500 Śloka Some side notes are given Published
P	D Skt Poetry	27 9×12 7 38 9 30	C	Good	Some ṭippanas are also given Script is very old
P	D,Skt Poetry	30 4×13 9 48 10 34	C	Good	804 Ślokas Unpublished
P	D Skt Poetry	26 6×12 7 39 11 36	C	Good & strong paper 1643 V S	804 Ślokas Unpublished

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir, Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
79	*A 15 (ka)*	Śrīpāla-caritra	Śruta Sāgara 1560 V S	—
80	*E 30 (ka)*	Subhāsitāvali	Sakalakirti Bhaṭṭāraka	
80	A *Skt Gutakā No 3*	Subhasitavali	,	—
81	*E 30 (kha)*	Subhāsita Ratnaval	Sakalakirti Bhaṭṭaraka	
82	*E 30 (ga)*	Subhasita Ratnavali	Sakalakirti Bhaṭṭāraka	
83	*E 30 (gha)*	Subhasita Ratnavali	Sakalakirti Bhaṭṭāraka	–
84	*E 31 (ka)*	Subhāsita Ratnasamdoha Pausa Sudi 5 1050 V S	Amitagati Ācārya Disciple of Madhava sena Māthuragaccha	—
85	*E 31 (kha)*	Subhasita Ratnasaṁdoha Pausa Sudi 5 V S 1050	Amitagati Ācārya	—
86	*E 31 (ga)*	Subhasita Ratnasamdoha Pausa Sudi 5 V S 1050	Amitagati Ācarya	—
87	*E 32 (ka)*	Subhasitārnava	Subhacandra Bhaṭṭāraka ?	—
88	*Loose folios 18*	Subhasita Grantha	—	—
89	*A 29 (ka)*	Subhuma-caritra	Ratanacandra Bhaṭṭaraka Disciple of Sakalacandra Saraswatigaccha mula Samgha V S 1683	—
90	*A 17 (ka)*	Sudarśana caritra 8 Canons	Sakalakirti Bhaṭṭāraka	–
91	*A 27 (ka)*	Sudarśana caritra 12 Canons	Vidyanandi disciple of Devendrakirti 16th century	—
92	*E 34 (ka)*	Suktamuktāvali (Sindūra Prakarana)	Somadevācārya or Somaprabhāçarya 1250 A D	—

6	7	8	9	10	11
P	D,Skt Prose	27 3×12 15.9 26	C	Good	Unpublished
P	D,Skt Poetry	35 5×17 7 6 to 28 pages 21 22	C	Good	Also called *Subhāṣita Ratnavalī* 392 Ślokas Unpublished
P	D,Skt Poetry	26 6×15 2 up to 80 pages 21 23	C	Good	
P	D,Skt Poetry	23 6×14 6 36 9 29	C	Good 1858 V S	Unpublished
P	D Skt Poetry	24×12 7 41 9 26	C	Good 1808 V S	Unpublished
P	D,Skt Poetry	27 9×11 3 21 11 35	C	Good	Unpublished
P	D Skt Poetry	33×15 2 47 12 50	C	Good	922 Ślokas In the kingdom of Muñja of Dhara Published
P	D Skt Poetry	29 8×15 2 58 12 41	C	Good 1855 V S	Published See 84
P	D Skt Poetry	26×10 7 105 7 37	C	Good 1612 V S	Published See 84
P	D Skt Poetry	27 9×14 6 43 12 33	Inc	Good	Dohas Sorathas Gathas are also used Unpublished
P	D Skt Poetry	30 4×12 7 18 11 43	Inc	—	—
P	D Skt Poetry	26 6×10 7 34 9 50	C	Good 1683 V S	Unpublished
P	D,Skt Poetry	29 1×13 9 37 12 35	C	Good 1821 V S	900 Ślokas Published
P	D,Skt Poetry	25 4×10 7 29 13 43	C	V old paper 1779 V S.	Clear hand Unpublished
P	D, Skt. Poetry	27 3×12 7 15 9 34	C	Good	103 Ślokas Published

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
93	*E 34 (kha)*	Suktamuktāvali Satika (Sindura Prakarana)	Somadevācārya or Somaprabhācārya	Harṣakīrti
94	*A 21 (ka)*	Sukumāla-caritra 7 Canons	Sakalakīrti Bhaṭṭāraka	—
95	*A 21 (kha)*	Sukumala caritra 9 Canons	Sakalakirti Bhaṭṭāraka	—
96	*A 21 (ga)*	Sukumala caritra	Sakalakirti Bhaṭṭāraka	—
97	*A 48 (ka)*	Trikālacaturvimśati katha	—	—
98	*A 2 (ka)*	Uttara purana (Mula)	Gunabhadracarya	—
99	*A 2 (kha)*	Uttara purana (Mula)	Gunabhadracarya	-
100	*A 2 (ga)*	Uttara purana (Purvardha and uttarardha)	Gunabhadracarya	—
101	*Lr 40 (ka)*	Vairagya śataka (text)	Bhartrhari Kavi	—
102	*Lr 39 (kha)*	Vairagya śataka	Bhartrhari Kavi	—
103	*Loose folios*	Vikramaditya Pañca vimśatika	—	—
104	*A 11 (ka)*	Vrasabhanatha caritra 20 chap	Sakalakirti Bhaṭṭaraka	-
104A	*A 11 (kha)*	Vrasabhanātha caritra	Sakalakirti Bhaṭṭaraka	—
104B	*A 11 (ga)*	Vrasabhanatha caritra	Sakalakirti Bhaṭṭaraka	—
105	*A 37 (ka)*	Yaśastilaka campu 8 Āśvasas	Somadeva Suri 881 Śaka	—
105 A	*A 25 (ka)*	Yaśodhara-caritra Pañjikā	Somadeva Suri	Śrideva

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	24 7×12 7 31 10 40	C	Good	Jalhaṇadeva (1250 A D) mentioned !!! name 48 Ślokas only
P	D,Skt Poetry	29 1×13 9 32 14 47	C	Good 1829 V S	1050 Ślokas Published
P	D,skt Poetry	29 9×13 3 46 12 31	C	Good	Published
P	D Skt Poetry	20 3×13 3 64 13 23	C	Good 1828 V S	V old paper Published
P	D Skt Poetry	26×13 3 2 14 30	Inc	—	Unpublished
P	D Skt Poetry	29 1×13 9 275 12 42	C	Good	Text only Published
P	D Skt Poetry	29 1×13 1 258 12 48	C	Good	Published
P	D Skt Poetry	24×11 3 184 16 54	C	Good 1744-45 V S	Published
P	D Skt Poetry	31×13 9 7 12 42	C	Good	Published
P	D Skt Poetry	21 5×8 2 48 7 32	C	Good 1522 V S	Published
P	D Skt Poetry	26 6×11 3 3 to 27 pages 17 65	Inc	—	—
P	D Skt Poetry	27 9×16 4 212 11 36	C	Good 1825 V S	Disciple of Padmanandi Uupublished
P	D Skt Poetry	26 6×11 3 165 13 32	Inc	Old	Very old paper
P	D,Skt Poetry	26 6×11 3 129 17 38	C	V Old 1698 V S	Some papers are torn
P	D Skt Poetry Prose	26 6×18 9 238 16 35	C	Good Paper	Published
P	D Skt Poetry Prose	30 4×13 9 55 11 33	C	Good paper 1996 V S	Unpublished

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
105 B	*A 19 (ka)*	Yaśodhara-caritra	Somakirti	—
105 C	*A 19 (ga)*	Yaśodhara caritra 8 Canons	Vāsavasena 1585 V S	—
105 D	*A 19 (kha)*	Yasodhara-caritra	Sakalakirti Bhaṭṭāraka	—
106	*Loose papers Guṭakā 55*	Adhyatma padya	—	—
107	*I 23 (ka)*	Adhyātmopanisad	*Hemacandra Suri*	
108	*ā 5 (ka)*	Ācārāṅga Tīka 784 śaka		Śilaṅka
109	*u 1 (kha)*	Ācara vrtti 12 Conons (Mulācara tika)		Vasunand yac irya
110	*Ā 14 (ka)*	Ālapa paddhati	Devasena Suri Disciple of Vimalasena	—
111	*Ā 14 (kha)*	Ālāpa paddhati		—
112	*Ā 14 (ga)*	Ālāpa paddhati		—
113	*Ā 14 (gha)*	Ālapa paddhati		
114	*Ā 14 (ṅa)*	Ālapa paddhati		—
115	*I 10 (ka)*	Ātmānuśasana	Guṇabhadra Bhadanta D/o Jinasena	—
116	*I 10 (kha)*	Ātmānuśasana		-
117	*I 10 (ga)*	Ātmanuśasana		—

6	7	8	9	10	11
P	D;Skt Poetry	24×11 3 21 16 50	C	Old 1695 V S	1018 Ślokas Unpublished
P	D;Skt Poetry	25 4×11 3 28 15 44	C	Old	Unpublished
P	D,Skt Poetry	26 6×11 3 66 9 29	C	Good 1747 V S	1000 Ślokas Unpublished
P	D Skt Hindi Poetry	18 9×17 1 upto 252 12 20	Inc	Good	Unpublished
P	D Skt Poetry	23 4×11 3 81 13 42	C	Good	Unpublished
P	D Pra Skt Poetry	31×17 1 235 19 45	Inc	Good 1827 V S	Page No. 234 is missing Unpublished
P	D Skt Poetry	25 4×13 9 453 11 33	C	Good 1862 V S	Also called *Sarvārtha Siddhi Vṛtti* Unpublished
P	D Skt Prose	25 4×13 9 14 8 39	C	Good	Published
P	D Skt Prose	26 6×12 7 9 11 37	C	Good 1793 V S	Very old Ms Published
P	D,Skt Prose	26×11 3 16 7 34	C	Good	Good hand Published
P	D Skt Prose	25 4×12 7 29 4 33	C	Good 1792 V S	Published
P	D Skt Prose	17 7×13 9 15 13 20	C	Good	Copy size Published
P	D Skt Poetry	23 4×20 9 36 12 30	C	Good	270 Ślokas Published
P	D,Skt Poetry	20 3×13 4 35 10 25	C	Good	Light coloured paper Good hand Published
P	D,Skt Poetry	30 4×13 3 24 11 42	C	Good	Published.

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir, Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
118	i 10 (Gha)	Ātmānuśāsana	Guṇabhadra	—
119	i (Ka)	Ātmānuśasana Tīka	Gunabhadrācārya	Prabhacandrācarya
120	u 4 (Ka)	Bhagavatī aradhanā (Vijayodaya Tīkā)	Śivakotyacārya	Aprājita Suri
121	i 25 (Ka II)	Bhavasaṁgraha	Vamadeva	—
122	i 25 (Ka I)	Bhāvasamgraha	Vamadeva	—
123	u 22 (Kha)	Bhavyajanabllabha	Guṇabhusanacarya	—
124	ū 1 (Ka)	Carcāpatra	Pt Amarchandra	—
125	u 25 (Ka)	Caritrasara (Bhavanasarasamgraha)	Camunda Raja Ranarangasingha D/o Jinasena Bhaṭṭaraka	—
126	u 25 (Kha)	Carirasara	Camundaraja	—
127	Prakirnaka Guṭakā 17	Caubisaṭhana	—	—
128	Guṭaka 55	Caubīsaṭhana	—	—
129	Guṭaka 48	Caubisaṭhāṇa	—	—
130	Guṭaka	Chyalisaṭhaṇā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	24×12 7 41 9 35	C	Good	740 Ślokas Very weak paper Published
P	D Skt Poetry Prose	27 3×12 7 111 9 28	C	Goob 1874 V S	—
P	D Skt Poetry Prose	27 9×13 9 312 15 43	C	Good 1863 V S	Published
P	D Skt Poetry	27 3×12 45 10 34	C	V Old 1900 V S	Published
P	D Skt Poetry	29 1×15 8 25 13 50	C	Good 1995 V S	Published
P	D Skt Poetry	25 4×10 7	C	Good 1576 V S	Unpublished
P	D Skt Prose	26 6×12 7 45 12 48	C	Good 1855 V S	Unpublished
P	D Skt Poetry	28 5×13 3 68 10 42	C	Good 1589 V S	1800 Śalokas Published
P	D Skt Poetry	26 6×13 9	C	Good 1776 V S	Published
P	D Skt Prose Hindi	20 9×14 1 up to 40 Pase 14 35	C	Good	—
P	D Skt Prose	18 9×17 2 up to 225th Page 12 20	C	Good	
P	D Skt Prose Prakrit	20 9×13 3 11 32	C	Good	
P	D Skt Prose	18 9×14 1 up to 246th Page 12 20	C	Good	

1	2	3	4	5
131	ā 16 (Ka)	Dravyasaṁgraha Bṛhaṭṭīkā	Namıcandrācārya	Brahmadeva
132	ā 16 (Kha)	Dravyasaṁgraha		
133	ā 16 (Ga)	Dravyasamgraha		,
134	a 16 (Gha)	Dravyasaṁgraha		
135	a 16 (na)	Dravyasaṁgraha		
136	ā 16 (Ca)	Dravyasaṁgraha		
137	a 17 (Ka)	Dravyasaṁgraha Chaya tıkā	Nemıcandracarya	Sahasrakıtı
138	u *12 (ka)*	Dharmamrta Tıka V to VIII Chapters(Bhavya kumudacandrıka)	Pt Āsadhara 1296 V S	—
139	u *1? (kha)*	Dharmamṛta (Anagara) Bhavyakumudacandrıkā Tıkā		Pt Āśadhara ,
140	*a 31 (Ga)*	Dharmaparıksa 21 Canons	Amitagatı D/o Madhavasena 1070 V S	—
141	*a 31 (Gha)*	Dharmaparıkṣa	"	—
142	*a 31 (ka)*	Dharmaparıksa		—
143	*a 31 (ka)*	Dharmaparıkṣa		—
144	u *16 (ka)*	Dharmapraśnottara	Sakalakırtı Bhaṭṭāraka	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Prakrit Poetry Skt Prose	26 6×16 9 125 11 35	C	Good	Unpublished
P	,	29 1×12 7 91 12.41	C	Good 1611 V S	2200 Ślokas Unpublished
P		27 9×12 7 86 13 50	C	Good	3000 granthas pramāṇa Unpublished
P		25 4×11 3 110 11 37	C	Good 1668 V S	Published
P		25 4×11 3 147 9 28	C	V Old Paper	2700 granthas pramāṇa Published
P		26 6×10 1 136 9 36	C	1492 V S V Old Paper	3000 granthas rampāṇa
P	D Pra Skt Poetry	22 8×10 1 7 16 43	C	Good	59 Gathās Published
P	D Skt Poetry Prose	27 9×15 2 189 13 53	C	Good	Also called *Anagara Dharmamrta* Published
P	D Skt Poetry Prose	21 5×13 9 117 12 34	C	Good 1811 V S	Published
P	D Skt Poetry	27 9×10 1 87 10 43	C	V Old	2120 ślokas Published
P	D Skt Poetry	27 3×10 7 48 15 51	C	Good	Published
P	,	33×14 6 66 12 48	C	Good paper	Published
P	,	27 9×12 7 125 8 35	C	Good paper 1879V S.	Published
P	D, Skt Poetry	27 9×13 9 74 10 38	C	Good	Published

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir, Dharmapura, Delhi

1	2	3	4	5
145	u *16 (kha)*	Dharmapraśnottara		—
146	u *11 (ka)*	Dharmasaṁgraha Śravakacāra	Medhavı 1541 V S	—
147	u *11 (kha)*	Dharmasaṁgraha Śravakacarya		—
148	u *31 (kha)*	Dharmopadesapıyusa	Brahma Nemıdatta D/oMallısena	—
149	*ū 31 (ka)*	Dharmopadesa pıyusa va sa Śrāvakācāra	Brahma Nemedatta D/o Mallısena	—
150	*ā 1 (ka)*	Gommatasāra Satıka 22 chapters	Nemicandracarya	—
151	*ā 1 (kha)*	Gommatasāra (Jıvakanda)		—
152	*a 2 (ka)*	Gommatasara (Karma kanda Satıka) 9 Chapters		—
153	*ā 2 (kha)*	Gommatasāra Satıka		—
154	*ı 29 (ka)*	Istopadesa	Pujyapadacarya	—
155	*ī 29 (kha)*	Istopadeśa		—
156	*ū 10 (ka)*	Jına samhıta	Ekasandhı Bhaṭṭaraka	—
157	*ı 8 (ka)*	Jnanarnava 42 Chapters	Śubhacandracarya	—
158	*ı 8 (kha)*	Jñanārṇava (mula)		-
159	*ī 8 (ga)*	Jñānārṇava (mula)		—
160	*ı 8 (Gha)*	Jñānārnava (mula)	Śubhacandrācārya	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	27 9×12 7 69 11 35	C	Good	Published
P	D Skt Poetry	31 6×15 2 58 12 40	C	Good 1874 V S	Published
P	D Skt Poetry	27 3×12 7 82 10 31	C	Good 1874 V S	
P	D Skt Poetry	21 5×12 7 30 10 26	C	Good 1845 V S	474 Ślokes Unpublished
P	D Skt Poetry	28 5×13 3 24 9 37	C	Good 1873 V S	Unpublished
P	D Skt Pra Prose Poetry	33×13 9 211 15 47	C	Good	733 Gāthās Published
P		25 5×15 2 240 12 55	C	Good 1612 V S	Published
P		33 ×13 9 185 15)	C	Good 1637 V S	972 Gāthās Published
P	,	?9 3×15 2 (239 to 462) 224 13 47	C	Good 1667 V S	Published
P	D Skt Poetry	29 9×13 3 4 10 35	C	Good 1883 V S	Published
P	D Skt Poetry	27 9×12 7 5 7 33	C	Good	Published
P	D Skt, Poetry	29 1×13 9 122 10 42	Inc	Good	Unpublished
P	D Skt Poetry	36 7×17 7 31 20 64	C	Good	2077 Ślokas Pramāna Published
P	D, Skt Poetry	26 6×15 2 89 13 40	C	Good 1861 V S	Published
P	D, Skt Poetry	31 2×12 7 133 9 40	C	Good	Good and clear hand Published
P	D Skt Poetry	26 6×11 3 73 13 45	C	Good 1708 V S	2700 Ślokas Published

1	2	3	4	5
161	I 8 (ṅa)	Jñānārṇava (mula)		—
162	I 8 (Ca)	Jñanārṇava (mūla)		—
163	I 8 (Cha)	Jñānārṇava (mula)		-
164	I 8 (Ja)	Jñānārṇava (mula)		-
165	No 25	Jñanārṇava		—
166	Loose Papers	Jñānarṇava Tıka Tatvaprakāśam		Śrutasagara Pupıl of Vıdyanandı 16th C
167	a 21 (ka)	karmavıpaka	Sakalakırtı Bhaṭṭāraka	—
168	Loose Papers	Khaṇdana sutra	—	
169	a 3 (ka)	Labdhısāra (Ksıpaṇa sāra) 15 chaps	Nemıcandracārya	—
170	a 21 (ka)	Lātı-Samhıta (Rajmala Śravakācara) 7 Canans	Pt Rājamala 1641 V S	—
171	a 2 (ka)	Mūlācāradıpaka	Sakalakırtı Bhaṭṭaraka	—
172	I 13 (ka)	Niyamsāra (Tatparyavṛttıtıkā) 12 Chapters	Kandkunecarya	Padmapra Maladhārı deva
173	I 15 (ka)	Padmandı-pañcavımśatikā Satıka	Padmanandı Munı	—
174	I 15 (ka)	Padmanandi-pañcavımśatikā Stika		—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	29 1×11 3 159 8 34	2nc	Good 1606 V S	Possibly last page is missing Somewhere side notes are also given Published
P	D Skt Poetry	26 6×11 3 86 13 50	C	Good	Published
P	D Skt Poetry	25 4×10 7 79 12 46	C	Good	Published
P	D Skt Poetry	125 10 35	2nc	V Old	Somewhere side notes are given Published
P	D Skt Poetry	25 4×12 7 117to 156 9 30	2nc	—	116 pases of begining are missing
P	D Skt Poetry Prose	23 8×13 9 18 9 23	2nc	—	Only 18 leaves
P	D Skt Poetry	34 2×8 8 18 9 56	C	Good	Important due to non availabi lity in other libraries Unpublished
P	D Skt Prose	26×11 9 142 15 35	2nc	Good	Cut by mice
P	D Skt Poetry	34 2×15 2 62 15 58	C	Good	3200 Ślokas Published
P	D Skt Poetry	34 9×17 1 58 11 47	C	Good	1600 Ślokas Pulbished
P	D Skt Poetry	31 ×17 1 132 13 36	C	Good 1873 V S	3365 Ślokas Unpulbished
P	D Pra Skt Poetry	28 5×13 9 77 12 45	C	Good 1861 V S	Published
P	D Skt Poetry	26 6×10 7 140 13 44	Inc	V old & torn	Published
P	D Skt Poetry	24 2×10 7 180 13 48	C	Good	Published

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir, Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
175	ī 15 (ga)	Padmanandi-pañcaviṁśatikā Satīka	,	—
176	ī 16 (ka)	Padmanandi pañcaviṁśatika mula		—
177	ī 16 (kha)	Padmanandi pañcaviṁśatikā mula	,	—
178	ī 16 (ga)	Padmanandi pañcaviṁśatikā mula		—
179	5	Padmanandi pañcaviṁśatika	,	—
180	Prakirnak ī 28	Padmanandi pañcaviṁśatika	Padmanandi muni	—
181	ā 22 (ka)	Pañcasamsara svarupa nirupana	—	
182	ī 28 (ka)	Pañcastikāya Tīkā II Skandha	Kandakudācarya	Amrta candra Suri
183	ī 28 (kha)	Pañcastikaya Tīkā		
184	ī 28 (ga)	Pañcastikaya Tīkā		
185	Prakirnaka No 1'	Pañcastikaya Tīkā (Paradipa)		Prabha candra 1567 V S
186	ī 17 (ka)	Paramarthopadeśa	Jñanabhuṣana Bhaṭṭāraka 1560 V S	
187	ī 12 (ka)	Paramatmaprakāśasatika	Yogindra Dava	Brahmadeva
188	ī 9 (ka)	Prabodha Sāra 3 Chapters	Yaśahkirti	Brahmadeva

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	24 ×10 1 166.8 44	C	Good 1761 V S	Published
P	D Skt Poetry	27 3×12 7 116 8 34	Inc	Good 1594 V S	There are ṭippaṇis also Published
P	D Skt Poetry	29 1×13 3 96 11 37	C	Good 1770 V S	Published
P	D Skt Poetry	24 7×10 7 124 7 37	C	Good	Published
P	D Skt Poetry	24 7×15 2 115 5 30	Inc	—	Ist and other leaves are missing Published
P	D Skt Poetry Prose	7 to 8 15 47	Inc	—	Published
P	D Skt Poetry	25 4×12 7 7 9 31	C	Good	Unpublished
P	D Pra Skt Poetry	29 1×13 9 64 10 42	C	Good	173 gathās Published
P		27 3×14 6 51 12 40	C	Good	Published
P		26×12 68 11 35	C	Good	Published
P		25 4×11 3 66 11 28	Inc	Good 1811 V S	65th leave missing Corners up to 32th leave are cut
P	D Skt Poetry	29 1×11 3 12 10 42	C	Good	V Important Unpublished
P	D Skt Pra Poetry	39 4×15 2 17 20 50	C	V old and torn	—
P	D, Skt Poetry	31×20 3 19 13.35	C	Good	429 Ślokas V Important Published

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
189	*ī 9 (kha)*	Prabodha sara 3 Chapters		—
190	*ū 9 (ka)*	Praśnottaropasakacara 24 Canons	Sakalakirti Bhaṭṭaraka	—
191	*u 9 (kha)*	Prasnottaropasakacara 24 Canons		-
192	*ū 9 (ga)*	Praśnottaropasakacara 24 Canons		—
193	*u 9 (gha)*	Praśnottaropasakacara 24 Canons		
194	*ı 6 (ka)*	Pravacanasara Tika (Tatvadipika)	Kundakundacarya	Amrtaca ndrācarya
195	*ı 6 (kha)*	Pravacanasara Tika (Tatvadipika)		
196	*ī 6 (ga)*	Pravacanasara Tika (Tatvadipika)		
197	*ī 6 (gha)*	Pravacanasara Tika (Tatvadipika)		
198	*ı 6 (gha)*	Pravacanasara Tika (Tatvadipika)		
199	*ı 7 (ka)*	Pravacanasāra Tikā (Tatparya Vrtti)		Jayasena carya
200	*ū 7 (ka)*	Prāyaścita Paṭha	Akalaṅkadeva	
201	*u 8 (ka)*	Prayaścita samuccaya Tika	Nadiguru	
202	*u 14 (ka)*	Prayaścita samuccaya	Gurudasa Ācarya D/o Nandinandin	—
203	*ū 6 (ka)*	Purusāthasidhyupaya Mula (Jina Pravcana Rrāhasya Kośa	Amrtacandracarya	—
204	*u 6 (kha)*	Purusārthasidhyupāya Mula (Jinapravacana rahasyakośa)	Amṛtacandracarya	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	30 4×17 1 46 4 46	C	Good 1982 V S	429 Ślokas. V Important भ to भ words are not used Published
P	D Skt Poetry	29 1×14 6 96 15 43	C	Good 1828 V S	Published
P	D Skt Poetry	31×14 6 85 13 46	C	Good	
P	D Skt Poetry	30 4×15 2 94 17 45	C	Good 1861 V S	
P	D Skt Poetry	27 9×13 9 122 10 37	C	Good 1609 V S	
p	D Pra/Skt Poetry	27 3×14 6 105 12 34	C	Good	275 Gathās Published
P		27 9×13 9 146 9 38	C	Good 1889 V S	
p		26 6×12 7 102 10 50	C	Good	
p		26 6×10 7 70 13 50	C	Good	Good and beautiful hand Published
P		24 7×11 3 71 15 45	C	Good 1707 V S	—
P		24×10 7 186 13 33	C	Good 1804 or 1904 V S	Two types of paper and hand are used
P	D Skt Poetry	27 9 [illegible] 3 9 5 14 43	C	Good 1908 V S	Published
P		27 9×15 2 105 12 33	C	Good	
P		25 4×11 3 23 10 36	C	Good	166 Ślokas Published
P		30 4×13 9 1[illegible] 10 41	C	Good	226 Kārikās Published
P	D Skt Poetry	26 6×12 7 10 13 41	C	Good	224 Karikās Published

1	2	3	4	5
205	ū 6 (ga)	Purusārthasidhyupaya (J P R K) mula	Amrtacandrācarya	—
206	ū 6 (gha)	Purusārthasidhyupāya (J P R K) mula		—
207	u 17 (ka)	Ratnakaranda Śravakācāru (mula) 7 canons	Samantabha drācarya	—
208	u 17 (kha)	Ratnakaraṇḍa Śravakācara (upāskadhyana Tika)		Prabhācandra
209	ū 18 (ka)	Ratnakaraṇḍa srava kacara (upāsakadhyana Tika)		—
210	Loosed	Ratnakaranda Śravakacara (mula)		—
210a	Sk Gutakā 7	Ratnakaraṇḍa Śrarkacara		—
211	ī 17 (ka)	saddarśana samuccaya	Haribhadra Sūri	—
212	i 17 (kha)	Saḍdarśana samuccaya		—
213	i 18 (ka)	Saḍdarśana samuccaya Tikā		Devaprabha 1572 V S
214	ī 18 (kha)	Suḍdarśana samuccaya Tika		—
215	i 22 (ka)	Sajjanacitta ballabha	Mallisena 1104 V S	—
216	i 19 (ga)	Samadhitantra (Satika)	Pujyapadacarya	Praphacand racarya
217	ī 18 (ka)	Samadhi sataka (satika)		
218	ī 18 (kha)	Samādhi sataka (satika)		
219	ī 19 (ka)	Samadhi sataka (satika)		

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt. Poetry	23 4×15 8 14 12 28	C	Good	222 Kārikās. Published
P	D, Skt Poetry	20 3×11 3 35 6 24	C	Good 1902 V S	Published
P	D, Skt Poetry	23 4×15 2 10 12 30	C	Good	Published
P	D Skt Poetry	27 9+12 7 23 7 32	C	Good	—
P	D Skt Poetry	96 9 35	C	Good 1876 V S	—
P	D Skt Poetry	24×17 7 10 11 32	C	Good	Published
P	D Skt Poetry	24 7×11 3 upto 152 9 36	C	Good 1587 V S	
P	D Skt Poetry	26 6×12 7	C	Good 1869	87 Ślokas Unpublished
P	D Skt Poetry	20 3×10 1 7 9 32	– C	Good 1903 V S	Unpublished
P	D Skt Poetry	47 11 47	C	Good 1884 V S	Unpublished
P	D Skt Poetry	26 6×10 7 33 15 43	C	Good 1761 V S	Unpublished
P	D Skt Poetry	27 9×12 3 5 7 34	C	Good	25 Ślokas Published
P	D, Skt Poetry	27 9×13 3 12 7 27	C	Good	Published
P	D Skt Poetry	27 9×12 11 9 35	C	Good	106 Ślokas Published
P	D, Skt Poetry	27 9×13 3 16 10 38	C	Good 1883 V S	Published
P	D, Skt Poetry	27 9×12 7 12 19 48	C	Good	Published

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
220	*ı 19 (kha)*	Samadhı-śataka (satika)		
221	*Gutaka 3175*	Samayasara Padya Prastavıkā	—	—
222	*ī 4 (ka)*	Samayasara (Tatparya vrttı)	Kundakundacarya	Jınasena
223	*ı 3 (ka)*	Samayasara (Ātmakhyatı Tīka)		Amrtacand racarya
224	*ı 3 (kha)*	Samayasara kalaśa (Ātmakhyātı Tıka)		
225	*ı 3 (ga)*	Samaysara kalaśā (Ātmakhyātı Tıka)		
226	*ı 3 (gha)*	Samayasara kalaśa (Atmakhyātı tıka)	Kundakundacarya	
227	*ī 5 (ka)*	Samayasāra kalśa		
228	*ı 5 (kha)*	Samayasara kalasa		
229	*ı 5 (ga)*	Samayasara kalaśa		
230	*ı 5 (gha)*	Samayasara kalaśa		
231	*ı 5 (na)*	Samayasāra kalaśa		
232	*ī 5 (ca)*	Samayasāra kalaśa		
233	*Loosed Papers 34*	Samayasāra kalaśa		

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	24 7×11 3 25 12 36	C	Good 1819 V S	Published
P	D Skt Poetry	13 9×13 3 102 13 20	C	Good	—
P	D Pra Skt Poetry	26 6×11 3 115 14 47	C	Good 1660 V S	439 Gāthās Published
P	D Pra Skt Poetry	26 6×15 8	C	Good 1862 V S	415 Gāthās Puplished
P	D Pra Skt Poetry Prose	29 1×13 9 172 10 33	C	Good 1831 V S	Published
P	D Pra Skt Poetry Prose	25 4×11 3 84 16 50	C	Good 1735 V S	In the margin of each leaf 'जयमाल' word is written Published
P	D Pra Skt Poetry Prose	25 4×10 7 120 11 50	C	Good	Somewhere *ṭippanas* are also given Published
P		79 3 30	C	Good 1872 V S	*ṭippanas* by Nityavijaya Imp work
P		29 1×12 7 118 3 24	C	Good 1879 V S	Published
P		22 8×13 9 47 6 30	C	Good	
P		26 ×12 7 26 9 40	C		
P		26 6×12 7 33 8 35	C		
P	,	24×10 7 36 7 34	C	,	,
P	,	13 Pages	Inc	—	

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir, Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
234	*no 35*	Samayasāra kalaśa	Kundakundacarya	Amṛtacand rācārya
235	*no 18*	Samayasāra kalaśa		
236	*a 34 (ka)*	Samayasara kaumudi	—	—
237	*ā 23 (ka)*	Saracaturviṁśastikā	Sakalakirti Bhaṭṭaraka	—
238	*i 21 (ka)*	Sarasamuccaya (Granthasāra samuccaya)	Kulabhadra	
239	*i 1 (ka)*	Saṭpāhuda Saṭika	Kundakundacarya	
240	*ī 1 (kha)*	Saṭpahuda Saṭika		—
241	*i 2 (ka)*	Saṭpahuda Saṭika 6 chapters		Srutasagara
242	*Loosed Papers*	Saṭpancaśika Satippaṇa	Haribhaṭṭa	Ilabhaṭṭa
243	*ā 13 (ka)*	Siddhantasāra dipaka	Sakalakirti Bhaṭṭaraka	—
244	*a 13 (kha)*	Siddhantasara dipaka		—
245	*ā 13 (ga)*	Siddhantasara dipaka		—
246	*a 13 (gha)*	Siddhantasara dipaka		—
247	*ā 13* (na)	Siddhāntasara dipaka		—
248	*Guṭakā*	Siddhāntasara dipaka chep VI only		—

6	7	8	9	10	11
P	D Pra Skt Poetry Prose	29 9×13 3 16 to 30 P 7 43	Inc.	—	First 16 leaves are missing
P		29 1×13 9 17 10 40	Inc	-	Published
P	D Skt Prose	26 6×11 3 71 12 32	C	Good 1723 V S	
P	D Skt Poetry	26 6×14 6 115 12 34	C	Good	—
P		25 4×11 3 12 15 35	C		331 Ślokas Published
P	D Pra Skt Poetry Prose	26×11 3 54 10 45	C	Good 1762 V S	Published
P		25 4×10 1 56 10 35	Inc	Old and torn	Two leaves (54 55) are missing
P		28 5×15 2 192 12 40	C	Good	—
P	D Skt Poetry	26×11 3 5 7 40	Inc	Good 1658 V S	Astronomy
P		25 4×13 4 189 15 30	C	Good	4516 Ślokas Unpublished
P		30 4×15 2 247 9 37	C	Good 1792 V S	Unpublished
P		29 1×13 9 137 13 38	C	Good 1794 V S	Unpublished
P		30 4×13 3 227 10 31	C	Good 1735 V S	Unpublished
P	D Skt Poetry	25 4×12 162 10 48	C	Good 1838 V S	Unpublished
P		21 5×12 2 upto 84 P 20 22	Inc	Good	—

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura, Delhi

1	2	3	4	5
249	*loosed papers*	Siddhāntasāra dīpaka	Sakalakīrti Bhaṭṭāraka	–
250	*ī 35 (ka)*	Sinduraprakara Saṭika (Suktamuktāvali)	Somaprabhācarya	Harsakīrti
251	*ī 35 (kha)*	Sinduraprakara Saṭika		,
252	*35 (ga)*	Sinduraprakara Mula		–
253	*35 (gha)*	Sinduraprakara Saṭippaṇa		—
254	*35 (na)*	Sinduraprakara Saṭippana		—
255	*37*	Ślokavartika	—	—
256	*Loosed Papers*	Ślokavartika	—	—
257	*ū 22 (ka)*	Śravakacara (Bhavyajanaballabha)	Gunabhusaṇacarya	—
258	*ū 15 (ka)*	Suprabhacārya doha (Suppayadoha)	Suprabhacārya	—
259	*u 3 (ka)*	Swāmikartikeyanupreksā Saṭika 12 chpters	Swāmi Kārtikeya or Swāmi Kumara	Śubhacandrā carya 1613 V S
260	*u 3 (kha)*	Swāmikārtikeyānupreksā Saṭika		
261	*ū 3 (gha)*	Swāmikārtikeyānupreksa Saṭika		
262	*ū 3 (ga)*	Swāmikartikeyānupreksā Saṭippana	,	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	27 9×11 3 65 to 184 P 10 43	Inc	Good 1592 V S	—
P	"	34 13 43	C	Good 1791 V S	
P		25 4×10 1 10 8 13 50 58		Good	—
P		21 5×12 7 22 7 30	C	Good 1898 V S	—
P		22 8×9 5 14 8 34	C	Good 1659 V S	98 Ślokas
P		22 8×11 3 9 30	C	Good 1873 V S $\overline{1869}$	99 Ślokas
P	D Skt Prose Poetry	28 5×15 2 78 12 35	Inc	—	
P	D Skt Prose	33 6×16 4 287 to 422 P 14 55	Inc	1862 V S	Many leaves are missing
P	D Skt Poetry	34 2×17 1 12 12 47	C	Good	Important Unpublished
P	D Pra Skt Poetry	26 6×13 3 23 9 30	C	Good 1835 V S	V Important MS Unpublished
P		27 9×13 3 311 11 35	C	Good 1796 V S	Published
P	"	30 4×12 258 9 48	C	Good 1821 V S	Published
P		30 4×15 2 249 12 41	C	Good 18 6 V S.	Published
P	D Pra Poetry	27 9×12 7 68 6 28	C	Good 1889 V S	189 Gāthās

Dıg Jaın Saraswati Bhandar Naya Mandır Dharmapura Delhı

1	2	3	4	5
263	*ı 14 (ka)*	Tatvajñana taraṅgiṇı	Jñānabhusana Bhaṭṭāraka D/o Bhuvanakırtı 1560V S	—
264	*ı 14 (kha)*	Tatvajñāna taraṅgını		-
265	*a 8 (ka)*	Tatvārtharajavartıka	Akalaṅkadeva	—
266	*a 24 (ka)*	Tatvartharatna prabha kara vrttı	Prabhacandra 1489 V S D/o Dharmacandra	—
267	*a 6 (ka)*	Tatvartharatna prabha kara vrttı		—
268	*ī 24 (ka)*	Tatvartha sara	Amrtacandracarya	-
269	*ī 24 (kha)*	Tatvārtha sara		—
270	*ī 24 (ga)*	Tatvārtha sara		—
271	*a 10 (ka)*	Tatvartha sarvarthasıddhı	Pujyapada (Devanandı)	-
272	*a 10 (kha)*	Tatvārtha sarvarthasıddhı	•	-
273	*a 10 (ga)*	Tatvārtha sarvārthasıddhı		—
274	*a 5 (ka)*	Tatvartha slokavartıka	Vıdyanandı Surı	—
275	*a 11 (ka)*	Tatvartha sukhabodha vrttı	Pt yodadeva	Śrutasagara D/o Vıdyā nandı
276	*a 4 (kha)*	Tatvārtha sutra	Umaswamı	—
277	*a 4 (ga)*	Tatvārtha sutra Mula	,	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	25 4×14 6 24 15 40	C	Good	536 Ślokas Published
P		27 9×14 6 22 11 40	C		536 Ślokas Published
P	D Skt Prose	29 1×13 9 529 11 40	C		Published
P	D Skt Prose	25 4×10 1 101 9 41	Inc		Unpublished
P	D Skt Prose	33 6×17 1 58 14 53	C	Good 1990 V S	
P	D Skt Prose	25 4×15 2 30 12 37	C	Good	Published
P		19 6×15 8	C	Good 1921 V S	Good hand Copy Size
P		22 8×11 4 55 10 23	C	Good	—
P		27 9×12 7	C	Good 1874 V S	Published
P		27 9×12 7 201 9 36	C	Good 1752 V S	Published
P		26 6×11 3 92 17 47	C	Good 1784	Published
P		33×16 4 421 15 42	C	Good 1900 V S	Published
P		29 1×12 3 148 10 30	C	Good	Unpublished
P		26 6×15 2 8 12 40	C	,	Published
P		26 6×12 7 11 10 34	C	,	Published

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
278	*ā 4 (gha)*	Tatvārtha sutra Mula	Umaswāmi	—
279	*ā 25 (ka)*	Tatvārtha sūtra Mula		—
280	*Guṭaka* I	Tatvārtha sutra Mula		—
281	*Guṭakā 5*	Tatvārtha sūtra Mula		
282	*Guṭaka 7 ka*	Tatvārtha sutra Mula		—
283	*Guṭaka 14*	Tatvārtha sutra Mūla		—
284	*Gutaka 47*	Tatvartha sutra Mula		—
285	*Gutaka 63*	Tatvartha sutra Mula		
286	*12*	Tatvartha sutra Mula	,	—
287	Guṭaka 25	Tatvārtha sutra Mula	,	—
288	Guṭakā 55	Tatvārtha sutra Mula		—
289	Guṭakā 6	Tatvartha sutra Mula		—
290	Guṭaka 7	Tatvārtha sutra Mula		—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Prose	12 8×36	C	Good 1863 V S	Published
P		25 4×15 2 15 9 29	C	Good 1948 V S	Golden ink used Published
P	,	33 ×21 5 up to 17 P 25 30	C	Good	Published
P		25 4×11 3 up to 28 P 9 40	C		Published
P		20 3×15 2 up to 56 P 20.20	C	Good	Published
P		4 9×20 9 up to 48 P 13 45	C	Good	Published
P		20 9×16 4 up to 104 P 16 20	C	Good	Published
P		12 8×13 9 up to 127 P 12 22	C	Good	Published
P		31 6×13 9 7 10 50	Inc	Good	Published
P		15 8×13 9 upto 159 P 14 20	C	Good	Published
P		18 9×17 1 upto 174 P 12 20	C	Good	Published
P	,	28 5×13 9 upto 14 P 10 30	C	Good	Published
P	,,	24 7×11 3 upto 63 P 9 36	C	V Old 1587 V S.	First five leaves are missing.

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
291	*Gutaka 11*	Tatvārtha sutra Mula	Umaswami	—
292	*Gutakā 13*	Tatvartha sutra Mula		—
293	*Guṭakā 15*	Tatvartha sutra Mula		—
294	*Guṭakā 23*	Tatvartha sutra Mula		—
295	*Gutakā 25*	Tatvartha sutra Mula		
296	*Gutaka 28*	Tatvartha sutra Mula		—
297	*Gutaka 27*	Tatvartha sutra Mula		—
298	*Gutakā 29*	Tatvartha sutra Mula		
299	*Guṭaka 33*	Tatvartha sutra Mula		—
300	*Guṭakā 34*	Tatvartha sutra Mula		—
301	*Guṭakā 37*	Tatvartha sutra Mula		—
302	*Loosed paper*	Tatvārtha sutra vrtti Tatvārtha dipaka		Śrutasāgara D/oVidyā nandi
303	*ā 9 (ka)*	Tatvartha sutra vrtti		—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt I rose	35 5×20 3 33 11 13	C	Good	Good hand Register size
P		21 5×16 4 upto 49 P 18 21	C	Good 1763 V S	Copy size
P		21 5×11 3 upto 73 P 19 17	C	Good 1805	Book size
P		19 6×15 2 upto 11 P 20 15	Inc	Good 1842 V S	first few leaves are missing
P		20 3×15 2 upto 62 P 18 20	C	Good	First twinty leaves are missing
p		18 9×12 7 upto 72 P 9 23	C		Published
P		15 2×13 9 upto 42 P 13 30	C	Good 1826 V S	
p		16 4×11 3 upto 91 P 17 14	C	Good	
p		12 7×7 6 upto 85 P 7 20	C	Good 1871 V S	
P		17 7×12 7 upto last 50 P 10 21	C	Good 1918 V S	
P		17 7×13 3 upto 113 P 8 24	C	Good	
P		26×11 3 40 14 46	Inc	—	
P		26 6×13 9 266 13 41	C	Good 1792 V S	Unpublished

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir, Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
304	*ā 7 (ka)*	Tatvārtha-ṭīka	Siddhasena Gaṇi	—
305	*ā 12 (ka)*	Trailokyadīpaka 3 chapters	Indra Vamadeva	—
306	*24 Loosed*	Trailokyasara	—	—
307	*ā 15 (ka)*	Tribhaṅgisara	Nemicandrācarya	Somadeva D/o Pujyapāda
308	*ā 15 (kha)*	Tribhaṅgisāra		
309	*ā 15 (ga)*	Tribhangisāra	,	
310	*a 18 (ka)*	Trilokasara Satīka	Nemicandracarya D/o Abhayanandi	Sahasrakīrti
311	*ū 19 (ka)*	Trivarnacara 5 chapters	Sakalakīrti Bhaṭṭaraka	—
312	*ū 20 (ka)*	Trivarnācara 13 chapters	Somasena Bhaṭṭaraka D/o Gunabhadra	–
313	*u 33 (ka)*	Upasakācāra	Pujyapāda swami	–
314	*ū 32 (ka)*	Upāsakadhyayana (Vasunandi Śravakācara)	Vasunandi D/o Nemicandra	—
315	*ū 24 (ka)*	Upadeśaratnamala (Saṭkarmopadeśa Ratna malā)	Sakalabhusana D/o Śubhacandra	—
316	*ā 47 (ka)*	Vidagdhamukhamandana Saṭīka 4 chapters	Dharmadasa	—
317	*ā 47 (kha)*	Vidagdhamukhamaṇḍana Satīka		–
318	*ā 47 (ga)*	Vidagdhamukhamaṇḍana	,	

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	30.4×17 7 775 16 37	C	Good 1917 V S	Unpublished
P	,	34 9×13 4 67 15 34	C	Good 1827 V S	465 Ślokas Unpublished
P	D Pra Skt Poetry Prose	28 5×18 9 142 to 165 P 15 34	Inc	Good 1874	Unpublished
P	D Skt Poetry	34 2×17 1 14 12 60	C	Good	,
P	D Pra Skt Poetry	27 9× 12 7 78 13 40	C	Good 1615	
P		25 4×10 1 60 13 50	C	Good	
P		26 6×11 3 72 12 45	C	Good 1574 V S	1018 Gāthās Published
P	D Skt Poetry	31 6×17 7 21 16 50	C	Good	Imp work Unpublished
P		27 9×14 6 85 14 43	C	Good 1861 V S	Published
P		29 9×12 7 8 7 33	C	Good	Unpulbished
P	D Pra Skt Poetry	30 4×13 9 48 6 40	C		Published
P	D, Skt Poetry	27 3×13 3 144 10 41	C	Good 1882 V S	Unpublished
P	D, Skt Poetry	26×11 3 36 7 28	C	Good	A work on Buddhism
P	,	25 4×10 7 7 16 64	C	Good 1495	Neat and clean hand
P		21 5×12	C	Good 1889 V S	—

1	2	3	4	5
319	*No 25*	Yogaśāstraprakaśa (Adhyatmopanısad)	Hemacandracārya	—
320	*No 26*	Yogaśāstraprakaśa (Adhyātmopanısad)		—
321	*i 10 (ka)*	Āpatamımāmśā (with Astaśatı tıkā)	Samantabhadra Swamı	—
322	*i 2 (ka)*	Āptamımamsā vrttı		Vasunandı Ācarya
323	*ı 2 (kha)*	Āptamımamasa vrttı		
324	*ı 5 (ka)*	Āptaparıksa	Vıdyananda Surı	—
325	*ı 5 (kha)*	Āptapa ıksa		—
326	*i 5 (ga)*	Āptaparıksā		—
327	*i 1 (ka)*	Aṣṭasahasrı (Astaśatı ṭıkā)	Vıdyananda Ācarya	—
327a	*i 1 (kha)*	Aṣṭasahasrı		—
327b	*23*	Aṣṭasahasrı		—
328	*ı 9 (ka)*	Aṣṭaśatı Devāgama vrttı	Akalaṅkadeva	—
329	*i 9 (kha)*	Devāgama vrttı		—
330	*i 9 (ga)*	Devāgama-vrttı		—
331	*i 9 (gha)*	Devāgama vrttı		—

(*Nyāya-śāstras*)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	26×10 7 6 16 60	Inc	Good	—
P	,,	26 ×11 3 from 18 to 20 pp 3 15 60	Inc	Good	—
P	D Skt Prose Poetry	26 6×13 9 19 11 33	C		Published
P		33 19× 6 62 13 45	C		
P		26 6×17 7 35 12 32	C		
P	D Skt Poetry	29 1×20 3 116 12 32	C	Good 1960 V S	124 Ślokas Published
P		27 9×13 9 110 10 44	C	Good 1884 V S	Published
P		27 3×13 9 71 14 42	C	Good 1861 V S	
P	D Skt Prose	33×18 9 382 10 35	C	Good 1762 V S	
P		25 4×10 7 201 13 46	C	Good	Published
P		27 3×12 152 13 32	Inc	Good	—
P	D Skt Prose Poetry	27 9×13 9 47 10 35	C	Good 1936 V S	114 Ślokas Published
P		25 4×13 9 43 9 45	C	Good	Published
P		27 9×13 9 47 10 36	C	Good 1758 V S	
P		27 3×12 53 10 38	C	Good 1879 V S	

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir, Dharmapura, Delhi

1	2	3	4	5
332	*Lq 41 (ka)*	Chāṇakya-nıtı	Ācārya cāṇakya	—
333	*Loosed papers* No 15	Chānakya nīti		—
334	*i 8 (ka)*	Nyāyadīpıka	Ahhınva Dharma bhusaṇa D/o Vardhamāna	—
335	*ı 8 (kha)*	Nyāyadīpıkā		—
336	*i 8 (ga)*	Nyāyadıpika		—
337	*i 8 (gha)*	Nyāyadīpıkā		-
338	*13 (ka)*	Parīkṣāmukha Mula 6 chapters	Māṇıkyanandı	—
339	*i 13 (kha)*	Parīkṣāmukha Mula		—
340	*i 13 (ga)*	Parīksāmukha Mula		—
340a	*Skt Guṭaka*	Parīksāmukha Mula		—
341	*i 15 (ka)*	Pramāna nırṇaya	Vādırāja Surı	—
342	*i 15 (kha)*	Pramāṇa nirnaya		—
343	*i 3 (ka)*	Pramāṇa parīksa	Vıdyānanda Ācārya	—
344	*i 14 (ka)*	Pramāṇa-parīksa		—
345	*i 14 (kha)*	Pramāṇa parīksā		—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	20.3×11 3 20 7 30	C	—	
P	D, Skt Poetry Hindi	24 ×15 2 17 13 36	Inc	—	—
P	D Skt Prose	26 6×17 7 35 12 32	C	Good	Published
P		29 1×15 8	C	Good 1870 V S	
P		27 9×13 3 40 9 38	C	Good 1889 V S	
P		13 47	C	Good 1746 V S	
P		29 1×15 2 6 13 45	C	Good	207 Sūtras Published
P		33×14 6 5 12 46	C		—
P		26 6×12 7 7 9 40	C	Good 1869 V S	209 Sutras Published
P		35 3×20 3 19 11 13	C	Good	—
P		28 5 ×13 9 37 12 46	C	Good 1862 V S	Published
P	,	25 4×11 3 26 9 38	Inc	—	Some where *tippaṇas* also given
P		33 ×19 5 63 to 103 P 13 45	C	Good 1978 V S	Good paper On first–62 leaves there is *Āpta-mīmāṁsā* Published
P	,	26×16 9 60 11 34	C	Good 1861 V S	Published
P		25 4×12 77 9 32	C	Good 1552 V S.	

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
346	*i 14 (ga)*	Pramāna parīkṣa	Vidyanandi Swami	—
347	*i 11 (ka)*	Pramaṇaprameyakalika	Narendrasena	—
348	*i 4 (ka)*	Prameyakamalamartanda 6 chapters (Parīksamukha ṭika)	Prabhācandracarya	—
349	*i 4 (kha)*	Prameyakamalamarṭaṇḍa		—
350	7	Prameyakamalamartaṇḍa		—
351	*i 12 (ka)*	Prameya ratnamala	Anantaviryacarya	
352	*i 12 (kha)*	Prameya ratnamala		—
353	*i 16 (ga)*	Syadvada mañjarī	Mallisena	—
354	*i 16 (kha)*	Syadvada mañjarī		—
355	*i 19 (ka)*	Syadvada ratnakara	Ratnaprabha Suri	—
356	*i 6 (ka)*	Tarkasamgraha	Annama Bhaṭṭa	
357	*i 6 (kha)*	Tarkasamgraha		—
358	*i 6 (gha)*	Tarkasamgraha		—
359	*i 7 (ka)*	Tarkasaṁgraha dīpika		Abhayadeva Sūri
360	*i 7 (kha)*	Tarkasamgraha-dīpikā		
361	*Lr 42 (ka)*	Dhatupaṭha	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Prose	25 4×10 1 9 37	C	Good	Pubushed
P	,,	23 4×19 6 13 15 25	C	Good 1871 V S	Copy size Unpublished
P	,	27 3×19 5 280 17 38	C	Good 1895 V S	Published
P		27 9×17 1 442 12 38	C	Good 1876 V S	,
P		27 9×15 2 152 to 202 12 35	Inc	Good	,
P		25 4×18 3 54 15 33	C		
P		29 1×13 9 61 11 41	C		,
P	D Skt Poetry	25 4×10 1 55 17 60	C	Good	
P		29 1×13 9 137 10 37	C		
P		25 4×11 3 89 18 65	C		
P	D Skt Prose	31 6×17 7 6 12 38	C	Good 1929 V S	,
P		29 1×11 3 5 20 50	C	Good	,,
P		19 6×12 7 11 33	C	Good 1870 V S	,
P		28 5×13 9 16 16 42	C	Good	
P		27 9×13 9 20 13 42	C		—
P	D; Skt Prose	31×17 1 13 12 38	C	Good 1882 V S	Unpublished

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
362	*Ir 3 (ka)*	Hema prakrıyā	Vīrasıngha D/o Mahendra	—
363	*Ir 3 (kha)*	Hema vyakaraṇa	Hemacandracārya	Abhayanandı
364	*Ir 12 (ka)*	Jaınendra vyakaraṇa Mahavṛttı	Devanandı (Pujyapada) 700 A D	
365	*Ir 12 (kha)*	Jaınendra vyākaraṇa Mahāvṛttı		
366	*Ir 1 (ka)*	Jaınendra vyākaraṇa Mahāvṛttı		
367	*Ir 1 (kha)*	Jaınendra vyakaraṇa Mahāvṛttı		
368	*Ir 2 (ka)*	Jaınendra vyākaraṇa Mula (Pañcadhyāyī)		
369	*Ir 2 (kha)*	Jaınendra vyākaraṇa (Pañcadhyayī)		—
370	*No 2*	Jaınendra vyākarana (Pañcadhyāyī)		—
371	*Ir 4 (ka)*	Kaśıka Nyāsa pañcıka) (Vṛttı Vıvarana pañjıkā)	Jaınendrabuddhı	–
372	*Ir 44 (ka)*	Kaśıka-vṛttı	Name not mentıoned	—
373	*Gutakā 25*	Laghusutra pañcaka	-	—
374	*Ir 9 (ka)*	Prabodha candrıkā	Rāmacandracārya	—
375	*No 14*	Śabda-rupavalı	—	—
376	*Ir 45 (ka)*	Samāsa cakra	Govında	-

(*Vyākaraṇa*)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Prose	24 7×11 3 106 13 44	Ç	Good 1684 V S.	—
P		26×13 9 24 12 40	Inc	—	Name of the MS not given but on the back of 24th leaf mentioned '[illegible]'
P		26 6×13 9 155 10 30	C	Good 1879 V S	Published
P		31×13 9 40 12 40	Inc	Good	
P		35 5×20 3 385 14 38	C	Good 1890 V S	
P		26 6×16 4 4 8 16 36	C	Good 1815 V.S	
P		28 5×15 2 31 12 32	C	Good 1879 V S	
P		31×15 2 6 12 38	Inc	Good	
P		38 7×17 1 26 to 133 P 14 57	Inc	—	
P		36 7×18 9 703 14 55	C	Good	—
P		66 11 53	Inc	—	—
P		15 8×13 9 upto 143 P 14 20	Inc	—	—
P		23 4×9 5 16 9 60	C	Good	—
P	,,	22 8×12 13 7 25	Inc		—
P	,,	25 4×10 1 11 7 28	Ç		—

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir, Dharmapura, Delhi

1	2	3	4	5
377	*lṛ 6(ka)*	Sārasvata kṛdanta prakriyā	Anubhutirsvarupācārya	—
378	*lṛ 5 (ga)*	Sārasvata Laghu (Ākhyata prakrıyā)		—
379	*lṛ 6 (kha)*	Sarasvata-vyakaraṇa		—
380	*lṛ 5 (ka)*	Sarasvata vyākaraṇa		—
381	*lṛ 5 (kha)*	Sārasvata vyakaraṇa		—
382	*No 21*	Sarasvata vyakaraṇa		—
383	*lṛ 10 (ka)*	Sıddhanta candrıkā (Purvārdha)	Ramabhadracarya (Ramabhadraśrama)	—
384	*lṛ 10 (kha)*	Sıddhanta candrıkā (Uttarardha) (Ākhyata prakrıya		—
385	*lṛ 7 (ka)*	Sıddhanta candrıka (Purvardha)	"	—
386	*lṛ 7 (kha)*	Sıddhanta candrıka (Uttarārdha)		—
387	*lṛ 8 (ka)*	Sıddhanta candrıkā (Uttarārdha)	"	—
388	*Loosed Papers*	Sıddhānta candrıkā (Vıbhaktyartha)		—
389	*lṛ 11 (ka)*	Sıddhanta kaumudı (Purvardha) (Taddhıta prakrıya)	Bhaṭṭojı Dıksıta	—
390	*lṛ 11 (kha)*	Sıddhanta kaumudı (Uttarārdha)		
391	*lṛ 43 (ka)*	Vaıyakaraṇa bhusanasara	Kauṇḍa Bhaṭṭa S/o Raṅgojı Bhaṭṭa	—

(*Vyakarana*)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Prose	28 5×13 3 84 8 38	C	Good 1867 V S	Published
P	"	26 6×12 7 11 10 35	C	Good	Published
P		24 7×12 7 67 10 40	C		
P		35 5×17 7 63 7 28	C	Good 1879 V S	
P		22 8×15 2 40 14 32	Inc	Good	
P		27 9×13 9 10 to 51 9 35	Inc		
p		25 4×10 7 75 8 30	C		—
P		24×11 3 70 11 40	Inc		—
p		25 4×13 3 59 10 36	C		—
p		25 4×11 3 18 11 32	C		—
P		31 6×15 8 47 12 36	C		Author s name is not mentioned
P		26 6×10 7 16 7 28	Inc	—	—
P		27 9 ×13 9 114 15 44	C	,	Published
P		33 6×16 4 80 19 47	C		
P		31×13 9 45 11 43	C	Good 1891 V S	—

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir, Dharmapura, Delhi

1	2	3	4	5
392	*No 35*	Kāvyaprakāśa with ṭīkā	Mammaṭācārya	—
393	*No 34*	Kāvyaprakāśa Mula		—
394	*Loosed Papers*	—	—	—
395	*Iṭ 6 (ka)*	Kuvalayānanda karika	—	—
396	*Iṭ 17 (ka)*	Śrutabodha Mula	Kavi kalidasa	—
397	*Iṭ 17 (kha)*	Śrutabodha Mula		—
398	*Ir 13 (ka)*	Vagbhaṭalaṅkara	Vagbhaṭṭa kavi	—
399	*Iṭ 16 (ka)*	Vrtta ratnakara	Bhaṭṭa kedāra	—
400	*Ir 16 (kha)*	Vrtta ratnakara		—
401	*Iṭ 16 (ga)*	Vrtta ratnākara Seṭika (Setu ṭikā)		Hari Bhaskara S/o Yazibhaṭṭa 1733 V S
402	*Ir 18 (ka)*	Amara kosa (Nāmaliṅganusasana)	Amara Singha	—
403	*Ir 18 (kha)*	Amara koṣa (Namaliṅgānuśāsana)		—
404	*Iṭ 25 (ka)*	Anekārthadhvani mañjari	Bandhusena (?)	—
405	*Iṭ 25 (kha)*	Anekārthadhvani mañjari Padādhikāra III	(?)	—
406	*Iṭ 19 (ka)*	Dvirūpa-kosa	Maheśwara kavi	—
407	*Iṭ 26 (ka)*	Ekakṣari Nāmamālā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry Prose	25 4×11 3 1463 8 34	Inc	—	Published
P	D Skt Poetry	21 5×11 3 16 8 25	Inc	Good 1888 V S	„
P	„	26 6×12 7 2 to 15 P 9 33	Inc	„	Firs leaf is missing,
P		22 8×13 3 18 8 28	C	Good	'ल' is missing So it is written as 'कुवयानन्द कारिका'
P		27 3×11 3 4 10 40	C	Good 1861 V S	
P		20 9×10 7 7 7 25	C	Good 1869 V S	„
P		26×12 7 15 10 36	C	Good 1871 V S	
P		29 1×12 7 7 12 50	C	Good 1870 V S	
P		27 9×12 7 9 10 33	C	Good 1876 V S	
P		— 27	C	Good 1870 V S	
P		34 2×13 4 101 10 32	C	Good 1909 V S	
P		30 4×15 2 71 10 36	C	Good 1866 V S	„
P		26 6×13 9 11 12 32	C	Good 1879 V S	—
P		22 8×10 1 11 9 34	C	Good 1832 V S	—
P		27 9×13 3 13 9 40	C	Good	—
P	„	20 9×10 1 2 10 38	C	Good	—

1	2	3	4	5
408	*lr 20 (ka)*	Medını Kosa	?	—
409	*lr 21 (ka)*	Namamala Hemi (Abnıdhanacıntamaṇı)	Hemacandracarya	—
410	*lr 23 (ka)*	Namamala Laghu	Harsakırtı	—
411	*lr 24 (ka)*	Nāmamala Mula (Śabdartha nighanṭu)	Dhanañjaya kavı (Śrutakırtı) 1123 V S	—
412	*lr 24 (kha)*	Nāmamala Mula		—
413	*lr 24 (ga)*	Namamālu Mula		—
414	*lr 24 (ca)*	Namamala (Saṭıka)		Amarakırtı
415	*lr 22 (ka)*	Śabda Sandoha Samgraha (Anekarthasamgraha)	Hemacandracarya	
416	*lr 27 (ka)*	Takaradı śloka vyakhya		
417	*u 30 (ka)*	Bhadrabahu somhıta	Barahamıhıra	—
418	*No 17*	Brhajjataka 26 chapters		—
419	*No 9*	Brhajjataka vıvrttı		Bhaṭṭotpla
420	*Gutakā No 51*	Haṭha pradıpıka	Svatmarama yogındra	—
421	*lr 47 (ka)*	Jyotı prakaśa	Hıravıjaya Surı 1640 V S	—
422	*lr 33 (ka)*	Lılavatı sutra	Bhāskaracārya	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	31 × 15 2 74 12 38	C	Good 1885	Published
P		25 4 × 10 7 63 12 40	C	Good	—
P		24 × 11 3 14 14 54	C	Good 1811 V S	—
P		22 8 × 15 8 14 13 26	C	Good	Published
P	,,	24 × 13 9 9 12 40	C	Good 1869 V S	,,
P	D Skt Poetry	14 × 10 7 9 11 37	C	Good	—
P		20 9 × 17 7 53 23 28	C	Good 1706 V S	V Imp
P		26 6 × 12 7 8 11 37	C	Good 1888 V S	—
P		20 3 × 12 1 16 35	C	Good 1891	—
P		26 × 11 3 20 7 28	C	Good 1910 V S	Unpublished
P		26 6 × 13 3 40 10 32	Inc	Good	—
P		30 4 × 13 9 24 18 47	Inc		—
P		15 8 × 10 7 72 7 18	Inc	—	—
P		23 4 × 10 7 51 8 35	C	Good	—
P	,	22 2 × 14 6 12 18 16	C	V old	To be repaired Author s name not given

1	2	3	4	5
423	*Ir 33 (kha)*	Lilāvatı sūtra	Bhāskarācarya	—
424	*Ir 31 (ga)*	Lilavatı sutra		—
425	*No 22*	Lilāvatı tika		Paraśurāma
426	*Ir 30 (ka)*	Navakāra āmnāya	—	—
427	*Ir 31 (ka)*	Nımitta	Bhadrabāhu	—
428	*Guṭaka No 52*	Pāsā kevalı (Śakunāvali)	Gargacārya	—
429	*Ir 36 (ka)*	Prastava sāgara 14 Taraṅgas	Pt Bhāgiratha 1508 V S	—
430	*Guṭaka No 30*	Ṣaṭ-pañcaśika saṭika	Prthu S/o Baraha mıhıra	—
431	*No 19*	Ṣaṭpañcāśikā saṭıppaṇa	—	—
432	*Guṭakā 35*	Sıddhakheṭı (Kheṭa sıddhı)	Sıddhacarya	—
433	*No 15*	Śıghra prabodha	Kaśınatha Bhaṭṭa cārya	—
434	*Ir 34 (ka)*	Svapnaphala	(?)	—
435	*Ir 32 (ka)*	Vārāhı saṁhıta saṭika (Saṁhıtā vıvarana)	Varāhamıhıra	Bhaṭṭotpala 1023 V S
436	*Ir 35 (ka)*	Vıveka vılasa 12 chapters	Jınadatta Sūri	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	19 6×12 7 16 15 13	C	Good	published Author s name not given
P	„	26 6×13 9 36	C	,	
P	D, Skt Prose / Prose	44 8 40	Inc		—
P	D Skt Poetry	34 2×18 9 3 32 30	C		Register size
P		29 1×18 9 14 13 40	C		—
P		15 2×10 1 20 6 18	Inc		—
P		25 4×12 7 129 10 36	Inc	Good 1890 V S	—
P	D Skt Poetry / Prose	15 2×11 3 63 7 16	C	Good 1796 V S	56 ślokas
P	D Skt Poetry	26×11 3 5 7 40	C	Good	See No 242 also
P		30 4×17 7 23	C	,	Register size charts & maps on all leaves
P	,	25 4×11 3 15 13 43	C	Good 1783 V S.	—
P		27 9×13 3 4 11 41	C	Good	—
P	„	624 9 44	C	Good 1609 V S	
P	D, Skt Poetry	27 3×12.7 84 8 34	C	Good	1323 ślokas

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir, Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
437	*Ir 28 (ka)*	Yantra mantra-saṁgrah	—	—
438	*Ir 29 (ka)*	Yantra-saṁgrah	—	—
439	*Ir 50 (ka)*	Kāla jñāna 9 chapters	Śambhu Kavi	—
440	*Ir 48 (ka)*	Madhava nidāna (Rugviniścaya) satippaṇa	Madhavacarya	—
441	*Ir 48 (kha)*	Mādhava nidāna		—
442	*Ir 48 (ga)*	Mādhava nidāna		—
443	*Ir 49 (ka)*	Mutra parijñāna	Dhanwanta i	—
444	*Ir 49 (kha)*	Mutra parijñāna		—
445	*Ir 52 (ka)*	Śata śloki ?	Vopadeva Kavi	—
446	*Gutaka 37*	Svarna karsana paddhati	—	—
447	*Ir 51 (ka)*	Vaidya jivana saṭippaṇa	Lolimba Raja S/o Divakara Paṇdita	—
448	*Ir 53 (ka)*	Vaidyaka grantha ?	?	—
449	*Ir 54 (ka)*	Yoga sata	Vidagdha Vaidya	—
450	*Guṭaka 3*	Akalaṅkāṣṭaka	Akalaṅkadeva	—
451	*Guṭaka 7*	Akalaṅka stotra	Akalaṅkadeva	—

(Āyurveda Stotras)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry Prose	35 5×20 9 67 29 26	C	Good	Register size
P		31 ×18 9 26 to 33	Inc	—	Register size
P	D Skt Poetry	26×12 7 16 9 32	C	Good 1895 V S	—
P		24×11 3 170 6 30	C	Old	17th Century., Published
P		24×12 7 18 5 28	Inc	–	Published
P		26 6×12 134 19 50	C	Good 1790 V S	—
P		25 4×10 1 9 13 57	C	Good 1751 V S	—
P		27 9×13 9 17 10 35	C	Good	—
P		31 6×13 9 11 10 43	C	Good 1897 V S	Name not mentioned in the MS
P		16 4×12 7 6 11 26	C	Good	—
P		23 4×13 3 52 5 26	C	Good 1865 V S	–
P		2ɔ 4×13 3 21 11 30	C	Good	—
P		19 5×12 14 11 24	C	Good 1906 V S	Name not mentioned in the MS
P		26 6×15 2 2 11 36	C	Good	Published
P		24 7×11 3 upto 155 9 36	C	Good 1587 V S	,

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir Dharmapura, Delhi

1	2	3	4	5
452	*Guṭakā 34*	Akalaṅka-stotra with Hindi ṭīkā	Akalaṅkadeva	Pt Sadāsukha 1753 V S
453	*Ir 4 (ka)*	Ambikā kalpa 7 chapters	Śubhacandra Bhaṭṭāraka	—
454	*Ir 18 (ka)*	Aparādha kṣama stotra	—	—
455	*Ir 2 (ka)*	Bhairavapadmāvati kalpa (Padmāvatikalpa-saṭika) 10 chapters	Malliseṇacarya D/o Jinasena	Bandhusena
456	*Ir 3 (ka)*	Bhairavapadmāvati kalpa Mula		
457	*Ir 19 (ka)*	Bhaktamara stotra Mula	Manatuṅgācārya	—
458	*Ir 19 (kha)*	Bhaktāmara stotra Mula		—
459	*Ir 19 (ga)*	Bhaktamara stotra Mula		—
460	*Gutakā 1*	Bhaktamara stotra Mula		—
461	*Gutakā 8*	Bhaktāmara stotra with Mantra		—
462	*Guṭakā 14*	Bhaktamara stotra Mula		—
463	*Gutakā 21*	Bhaktāmara stotra Mula		—
464	*Guṭakā 47*	Bhaktamara stotra Mula		—

(Stotras)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Prose Hindi Poetry	17 7×12.7 upto last 28 Pages 10 21	C	Good 1918 V S	—
P	D Skt Poetry	34 2×20 3 30 14 36	C	Good	—
P		26 6×12 2 9 45	C		—
P	D Skt Poetry Prose	26 6×12 7 108 9 40	C		Published
P	D Skt Prose	24 7×11 3 19 9 36	C	Good 1801 V S	To be repaired
P	D Skt Poetry	26 6×11 3 5 8 35	C	Good	Published
P		21 5×11 3 5 10 30	C		
P		15 2×10 7 8 8 25	C		
P		33×21 5 upto 19 25 30	C		
P		24×15 2 upto 48 21 18	C		
P		37 4×20 9 upto 42 13 45	C		Published Also translated by Dr Jacobi in German
P		13 4×13 4 7 15 16	C		Published
P		20 9×13 9 upto 30 16 20	C		

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
465	*Guṭakā 63*	Bhaktāmara stotra Mūla	Mānatuṅgācārya	—
466	*Guṭaka 64*	Bhaktāmara stotra Mula		—
467	*Gutakā 68*	Bhaktāmara stotra Mula		—
468	*Guṭakā 25*	Bhaktāmara stotra Mula		—
469	*Gutakā 32*	Bhaktamara stotra Mula		—
470	*Gutakā 54*	Bhaktāmara stotra Mula		—
471	*Gutaka 55*	Bhaktamara stotra Mula		—
472	*Gutakā 6*	Bhaktāmara stotra Mula		—
473	*Guṭakā 7*	Bhaktāmara stotra Mula		—
474	*Guṭakā 11*	Bhaktāmara stotra Mula		—
475	*Gutaka 13*	Bhaktamara stotra Mūla		—
476	*Guṭaka 19*	Bhaktāmara stotra Mula		—
477	*Guṭaka 23*	Bhaktāmara stotra Mula		—

(Stotras)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	15 8×13 9 upto 151 12 22	C	Good	Published
P		33×20 3 upto 30 20 44	C		
P		26 6×15 2 upto 32 15 44	C		
P		15 8×13 9 up to 32 14 20	C		
P		17 7×16 4 9 9 22	C	Good 1959 V S	
P		20 9×15 8 upto 59 16 20	C	Good	
P		18 9×16 4 upto 15 9 12 20	C		
P		28 5×13 9 upto 19 10 30	C		
P		24 7×11 3 up to 174 9 36	C	Good 1587 V S	
P		35 5×20 3 upto 13 11 13	C	Good	Registersize Published
P		21 5×16 4 upto 68 P 18 21	C	Good 1763 V S	Published
P		19 6×15 2 upto 10 17 17	C	Good	
P		19 6×15.2 upto 99 20.15	C	Good 1842 V S.	

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
478	*Guṭakā 27*	Bhaktāmara-stotra Mula	Manatuṅgācārya	—
479	*Guṭaka 28*	Bhaktāmara stotra Mula		—
480	*Gutuka 33*	Bhaktamara totra Mula		—
481	*Gutaka 34*	Bhaktamara stotra Mula		—
482	*Gutaka 37*	Bhaktamara stotra Mula		—
483	*Gutaka 38*	Bhaktamara stotra with Mantra		—
484	*Ir 32 (ka)*	Bhaktamara stotra		—
485	*Gutakā 29*	Bhaktāmara stotra ṭika		Hemaraja
486	*Loosed Gutakā 53*	Bhaktamara stotra with Riddhi Mantra Saṭika		
487	*Ir 12 (ka)*	Bhaktamara stotra vritti		Brahma Rāyamalla 1667 V S
488	*Ir 12 (kha)*	Bhaktāmara stotra with stories		
489	*No 32*	Bhaktāmara tika		Harinama 1715 V S
490	*Ir 19 (gha)*	Bhaktāmara stotra saṭika		Name not mentioned
491	*Ir 19 (ṅa)*	Bhaktāmara stotra		

(*Stotras*)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	15×13 9 upto 45 I 13 30	C	Good 1826 V S	Published.
P		18 9×12 7 upto 97 I 9 23	G	Good	
P		12 7×7 6 upto 36 7 20	C	Good 1871 V S	
P		17 7×12 7 upto 47 10 21	C	Good 1918 V S	
P		17 7×12 7 upto 78 8 24	C	Good	
P		17 1×12 7 upto 26 12 22	C	Good 1668 V S	44 Ślokas Published
P		— 9 7 30	C	Good 1948 V S	V Imp due to 52 Ślokas Golden ink used
P	D Skt Poetry Prose	18 9×15 2 upto 140 19 22	C	Good 1843 V S	Important
P	,	20 3×15 8	C	Good 1947 V S	—
P		26×11 3 64 9 30	C	Good 1925 V S	Published
P		22 8×12 7 57 10 33	C	Good 1792 V S	
P		27 9×11 3 25 5 38	Inc	Good 1715	First leaf is missing V Imp Original MS
P	,	26×13 3 17 10 41	C	Good 1869 V S	—
P		25 4×11 3 15 12 34	C	Good 1785	—

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura, Delhi

1	2	3	4	5
492	*Guṭakā 29*	Bhaktipāṭha-śloka	—	—
493	*Guṭakā 26*	Bhaktı śloka	—	—
494	*Guṭaka 29*	Bhāvanabattısı	Amıtagatı II	—
495	*Iṭ 26 (ka)*	Bhūpāla caturvımśatika	Bhupāla Kavı	—
496	*Iṭ 27 (ka)*	Bhupāla caturvımsatıka	Bhūpāla Rāja Kavı	Pt Āśadhara 1285 V S
497	*Gutakā 1*	Bhupāla-caturvımśatıkā mula	Bhupala Kavi	—
498	*Gutakā 47*	Bhupāla-caturvımśatika mula		—
499	*Loosed Guṭakā 25*	Bhupāla caturvımśatıkā mula	,	—
500	*Loosed Guṭaka 54*	Bhupāla caturvımśatıkā mula	,	—
501	*Gutaka 55*	Bhupāla caturvımśatıkā (Jınacaturvımśatıka)		—
502	*Guṭakā 7*	Bhūpala caturvımśatıkā (Jına caturvımśtıkā)		—
503	*Guṭakā 11*	Bhūpāla caturvımśatıkā (Jıva-caturvımśatıkā)		—
504	*Guṭakā 28*	Bhupāla cat.rvımśatıka Mūla		—

(*Stotras*)

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt Poetry	16.4×11.3 From p 19 17 14	C	Good	—
P	"	18 4×12 7 upto 24 I 9 23	C	"	—
P	"	16 4×11 3 upto 75 I 17 14	C		33 s'lokas
P		27 3×13 3 5 8 40	C		Unpublished
P	D Skt Poetry Prose	25 4×12 7 10 10 42	Inc		"
P	D Skt Poetry	33×21 5 upto 27 25 30	C	"	
P		20 9×13 9 upto 47 16 20	C		"
P		15 8×13 9 upto 49 14 20	C		
P		20 9×15 8 upto 69 20 22	C	"	"
P	"	18 9×17 1 upto 150 12.20	C		"
P	"	23 9×17 3 upto 132 9 36	C	"	"
P	"	35 5×20 3 9 17 13	C	"	"
P	"	18 9×12 7 upto 114 I 9 23	C	"	"

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir, Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
505	*Guṭakā 33*	Bhūpala caturvimsatikā Mula	Bhūpal ikavi	—
506	*Guṭakā 37*	Bhupala caturvimsatika Mula		
507	*Guṭaka 7*	Caityavandana	—	—
508	*Guṭakā 49*	Cakreśvarī stotra	—	—
509	*Ir 5 (ka)*	Caturvimśati jina kavya with Pradipika ṭika	Surendrakirti Bhaṭṭaraka 1826 V S	Śivaka Dasa
510	*Guṭaka 3*	Caturvimsati jina stavana	Devanandi Muni	—
511	*Guṭakā 13*	Caturvimśati-jina stotra	—	—
512	*Guṭakā 52*	Caturvimśati jina stuti	Maghanandi	—
513	*Guṭaka 7 29*	Caturvimśati-jina Stuti (Caturvimśati Tirthankara Jayamala)		—
514	*Guṭaka 10*	Caturvimśati jina stuti (Caturvimśati Tirthankara Jayamalā)		—
515	*Ir 8 (ka)*	Caturvimśati samdhana kāvya Saṭika	Pt Jagannatha D/o Narendrakirti Bhaṭṭaraka	Pt Jagannātha 1699 V S (svopajñaṭikā)
516	*Ir 8 (kha)*	Caturvimśati-samdhana kāvya Saṭika		,
517	*Guṭakā 19*	Caturvimśati-tirthankara nāmāvali	—	—

(Stotras)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	12 7×7 6 upto 63 I 7 20	C	Good 1871 V S	—
P		17 7×12.7 upto 93 1 8 24	C	Good	—
P		20 3×15 2 upto 9 20 20	C	,,	—
P		11 3×10 1 upto 81 9 16	C	—	—
P		34 9×18 3 86 13 45	C	Good	—
P		13 9×13 3 upto 84 13 20	C		—
P		22 8×12 7 upto 25 11 27	C		—
P		15 2×13 3 upto 119 9 16	C	,,	See S N 550 also
P		24 7×11 3 upto 86 9 36	C	Good 1587 V S	—
P		23 4×15 8 upto 209 13 30	C	Good	—
P		25 4×10 1 17 15 44	C	,,	Published
P		31 6×18 9 34 12 43	C	Good 1980 V S	,,
P	D Skt Prose	19 6×15 2 upto 2 17 17	C	—	—

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir, Dharmapura, Delhi

1	2	3	4	5
518	*Guṭakā 20*	Caturviṁśati tīrthaṅkara-nāmāvalī	—	—
519	*Guṭakā 52*	Cintamaṇi pārśvanātha-stavana (Lakṣmī stotra)	Padamaprabha Deva D/o Padmanandi	—
520	*Guṭakā*	Cintāmaṇi Parśvanātha stavana	Rājasena D/o Vīresena	—
521	*Guṭakā 35*	Cintāmaṇi Pārśvanatha stotra	—	—
522	*Guṭakā 14*	Cintāmaṇi stavana	—	—
523	*Guṭakā 10*	Darśana pāṭha	—	—
524	*Guṭakā 6*	Darśana stotra	—	—
525	*Guṭaka 7*	Dasabhakti	—	—
526	*Guṭakā 23*	Devadarśana	—	—
527	*Iṛ 2 (gha)*	Devāgama stotra Mula (Āptamīmaṁsā)	Samantabhadrācārya	—
528	*Iṛ 28 (kha)*	Devāgama-stotra Mula (Āptamīmāṁsā)		—
529	*Iṛ 28 (ga)*	Devāgama stotra Mula (Āptamīmāṁsā)	,,	—
530	*Iṛ 28 (ka)*	Devāgama stotra Mula (Āptamīmāṁsā)		—
531	*Guṭakā 4*	Dvicakreśvarī stotra	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt. Poetry	16.4×15.9 upto 2 12.20	C	—	—
P	„	15 2×13 3 upto 112 9 16	C	Good	See S. No. 634 to 639
P		„	C	„	—
P	„	17 7×13 9 upto 94 13 20	C		—
P	„	20 9×15 2 upto 195 17 30	C	„	—
P		23 4×15 8 upto 151 13 30	C		14 Ślokas
P		28 5×13 9 2 10 30	C		—
P		24 7×11 3 upto 47 I 9 36	C	Good 1587 V S	
P		19 6×15 2 upto 12 20 12	C	Good 1842 V S	—
P		14 1×12 7 19 8 17	C	Good	115 Ślokas Published
P		25 4×12 7 8 9 32	C		„
P	„	16 4×12 7 15 8 17	C	„	„
P	„	30·4×13 3 19 3 38	C	„	„
P	„	23.4×22 8 upto 20 13 30	C	Good	8 Ślokas.

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura, Delhi

1	2	3	4	5
532	*Iṭ 24 (ka)*	Ekībhāva stotra Saṭīka	Vādirāja Sūri	—
533	*Iṭ 24 (kha)*	Ekībhāva stotra Saṭīka		—
534	*Iṭ 30 (ka)*	Ekībhava stotra Mula		—
535	*Guṭakā 1*	Ekibhava stotra Mula		—
536	*Guṭaka 28*	Ekibhava stotra Mula		—
537	*Gutakā 33*	Ekibhava stotra Mula		—
538	*Guṭakā 37*	Ekibhava stotra Mula		—
539	*Gutakā 47*	Ekibhava stotra Mula		—
540	*Guṭaka 25*	Ekibhava stotra Mula		—
541	*Gutaka 35*	Ekibhava stotra Mula		—
542	*Guṭakā 54*	Ekībhāva stotra Mula		—
543	*Guṭakā 55*	Ekibhava-stotra Mula		—
544	*Guṭakā 3/11*	Gurubhakti		—

(*Stotras*)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	25 4×15.2 14 11 20	C	Good	Published
P		26×12 7 12 11 32	C	Good 1872V S	„
P		27 9×12 5 7 37	C	Good	26 Ślokas
P		33×21 5 upto 25 25 30	C	„	—
P		18 9×12 7 upto 109 9 23	C	,	Published
P		12 7×7 6 upto 57 7 20	C	Good 1817 V S	,
P		17 7×12 7 upto 87 8 24	C	Good	
P		20 9×13 9 upto 39 16 20	C		
P		15 8×13 9 upto 45 14 20	C		
P	„	17 7×13 9 upto 75 13 20	C		,
P		20 9×15 8 upto 65 20 22	C	,	„
P		18 9×17 1 upto 140 12 20	C		
P	,	13 9×13 3 upto 32 13 20	C		

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir, Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
545	*Guṭakā 3/15*	Gurubhakti	—	—
546	*Guṭakā 3/14*	Gurvāvalī	—	—
547	*Guṭakā 3/9*	Gurvāvalī	—	—
548	*Guṭakā 1*	Jinacaitya vandanā	—	—
549	*Guṭakā 9*	Jinacaturvimśati-stotra	Māghanandi	—
550	*Guṭakā 3/7*	Jinacaturviṁśati-stotra	—	—
551	*Guṭaka 1*	Jinadarśana pāṭha	—	—
552	*skt Guṭakā 41*	Jinadarśana pāṭha	—	—
553	*pra Guṭakā13*	Jinadarśana pāṭha	—	—
554	*pra Guṭaka 54*	Jinadarśana paṭha	—	—
555	*pra Guṭakā13*	Jinadarśana paṭha	—	—
556	*skt Guṭakā48*	Jinadarśana stotra	—	—
557	*skt Guṭakā20*	Jinadarśana stotra	—	—

(Stotras)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	13 9×13 3 upto 40 13.20	C	Good	—
P	,,	13 9×13.3 upto 39 13 20	C		—
P	,	13 9×13 3 upto 27 13 20	C		Title's name not given
P		33×21 5 upto 2 25 30	C	,	—
P	,	upto 59 22 18	C	Good 1714 V S	See S N 513 to 515 also
P		13 9×13 9 upto 25 13 20	C	Good	—
P		34 9×18 9 upto 1 25 30	C		—
P	,	17 7×12 upto 38 10 22	C	,,	Published
P		22 8×12 7 upto 23 10 27	C		
P		20 9×12 8 upto 172 20 22	C	,	
P	,,	22 8×12 7 upto 23 10 27	C	,,	
P		20.9×13 9 upto 43 16.32	C	,,	,,
P	,,	16.4×13 9 2 12 20	C	Good 1943 V S	,,

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5	6
558	*skt Guṭakā 28*	Jinadarśana-stotra	—		
559	*pra Guṭakā 23*	Jinamaṅgalaṣṭaka	—	—	
560	*skt Guṭakā 1*	Jinamaṅgalaṣṭaka	—	—	
561	*skt Gutakā 11*	Jinarakṣā-stotra	—	—	
562	*skt Gutaka 17*	Jinasahasranama mantra	—	—	
563	*lṛ 16 (ka)*	Jinasahasranama stotra (Mula)	Jinasenacarya D/o Virasena	—	
564	*skt Guṭakā 24*	Jinasahasranama stotra (Mula)		—	
565	*skt Gutaka* [illegible]	Jinasahasranama stotra (Mula)		—	
566	*lṛ 16 (ga)*	Jinasahasranama stotra (Mula)		—	
567	*lṛ 16 (kha)*	Jinasahasranāma stotra (Mula)		—	
568	*Guṭakā 38*	Jinasahasranama stotra (Mula)		—	
569	*skṭ Gutakā 26*	Jinasahasranāma stotra (Mula)		—	
570	*skt Gutaka 47*	Jinasahasranāma stotra (Mula)		—	
571	*skt Guṭakā 25*	Jinasahasranama stotra (Mūla)		—	

(*Stotras*)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	18 9×12 7 upto 17 9 13	C	Good	35 ślokas Published
P		21 5×15 2 upto 24 12 14	C		—
P	„	33×21 5 3 25 30	C		—
P	„	35 5×20 3 4 11 13	C		80 ślokas
P	D Skt Prose	15 2×10 1 34 9 22	C		—
P	D Skt Poetry	25 4×12 7 12 9 32	C		Published
P		22 8×15 2 10 17 21	C	„	
P		30 4×15 8 upto 21 10 30	C		
P		18 9×18 3 11 13 25	C	Good 1948 V S	Published
P		23 4×11 3 18 5 30	C	Good 1870 V S	
P		15 8×13 9 upto 118 14 15	C	Good	„
P		18 9×16 4 upto 12 13 25	C	„	
P	„	20 9×13 9 upto 117 16 20	C	„	
P		15 8×13 9 upto 27 14 20	C		

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
572	*skt Guṭakā 1*	Jinasahasranāma stotra (Mula)	Jinasenacārya D/o Virasena	—
573	*skt Gutakā 26*	Jinasahasranāma stotra (Mula)		—
574	*skt Gutakā 7*	Jinasahasranāma stotra (Mula)		—
575	*skt Guṭaka 27*	Jinasahasranāma stotra (Mula)		-
576	*skt Gutaka 33*	Jinasahasranama stotra (Mula)		—
577	*skt Gutaka 34*	Jinasahasranama stotra (Mula)		—
578	*skt Gutaka 37*	Jinasahasranama stotra (Mula)		—
579	*skt Gutakā 1*	Jinasahasranama stotra (Mula)	—	—
580	*skt Guṭakā 25*	Jinasahasranama stotra (Mula)	—	—
581	*Gutaka 25*	Jinasahasranama stotra (Mula)	—	—
582	*Guṭakā 40*	Jina ahasranama stotra (Mula)	—	—
583	*Ir 11 (ka)*	Jinasahasranama stotra (Mūla with ṭikā)	Pt Āśādhara	Āśādhara, Śrutasāgara D/o Vidyānandi
584	*skt Guṭakā 10*	Jinasahasranāma stotra (Mula with ṭikā)	"	"

(Stotras)

6	7	8	9	10	11
P	D,Skt Poetry	33×21 5 upto 10 25 30	C	Good	Published
P	,	15 2×15 2 16 9 18	C	,	
P	,	20 3×15 2 upto 46 20 20	C	,	,
P		15 7×13 9 upto 57 13 30	C	Good 1826 V S	167 ślokas Published
P		12 7×7 6 upto 26 7 20	C	Good 1871 V S	
P		17 7×12 7 upto 14 10 21	C	Good 1918 V S	,
P		17 7×12 7 upto 159 8 24	C	Good	
P		33×21 5 upto 5 25 30	C		Se S. No 626 also Published
P		20 3×15 2 upto 65 18 20	C		41 ślokas Published.
P		15 8×13 9 upto 15 14 20	C	,	Published
P		15 8×15 2 upto 16 11 30	C	,	—
P	D; Skt Prose Poetry	26 6×13 9 213 11 26	C	Good 1811 V S	—
P	,	23 4×15 8 upto 149 13 30	C	Good	143 ślokas

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
585	*skt Guṭakā 28*	Jinasahasranāma stotra (Mula with ṭikā)	Pt Āśādhara	—
586	*Gutaka 21*	Jinasahasranama stotra (Laghu)		—
587	*Gutakā 32*	Jinasahasranama stotra (Laghu)		Śrutasagara 1550V S
588	No *30*	Jinasahasranama stotra (Laghu)	Jinasenacarya	Amarakirti Suri 1552V S
589	No *31*	Jinasahasranama stotra ṭika		
590	*Ir 1 (ka)*	Jinasahasranama stutividya Citrakavya with ṭika	Samantabhadra	Narasimgha
591	*Gutaka 3*	Jinastavana	—	—
592	*skt Gutakā 3*	Jinastavana	—	—
593	*pra Gutaka3/6*	Jñānabhakti	—	—
594	*Gutaka 4*	Jvalamalini stotra with Mantras	—	—
595	*skt Gutaka 4*	Jvalini stotra	—	—
596	*skt Gutaka 10*	Kalikuṇḍaparsvanatha stotra	—	—
596a	*skt Gutaka o*	Kalikuṇḍa stavana	—	—
597	*Ir 20 (ka)*	Kalyāṇamandira stotra (Mula)	Kumudacandracarya SiddhasenaDivakara	—

(*Stotras*)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	18 9×12.7 upto 21 11 26	C	Good	41 Ślokas
P		21 5×15 2 upto 55 14 28	C		—
P	D Skt Poetry prose	26×15 2 166 12 33	C		—
P	,	22 2×9 5 24 12 42	C		Unpublished
P		26 6×15 2 73 12 24	C		
P		27 9×14 6 38 15 37	C		116 Ślokas Also called जिनशतकालकार
P	D Skt Poetry	26 6×15 2 upto 4 11 36	C		—
P		35 5×20 ɔ 3 11 13	C		—
P		13 9×13 9 upto 24 13 20	C	,	—
P		23 4×22 8 upto 12 13 30	C		—
P		23 4×22 8 upto 4 13 30	C	,,	—
P		23 4×15 8 upto 233 13 30	C	,,	9 Ślokas
P		21 5×17 7 upto 4 16 27	C	,	—
P	,	26 6×12 7 6 7 40	C	,	Published

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir, Dharmapura, Delhi

1	2	3	4	5
598	*slt Guṭakā 1*	Kalyāṇamandira stotra (Mūla)	Kumudacandrācārya (Siddhasena Divākara	—
599	*Guṭaka 54*	Kalyanamandira stotra (Mula)	,	—
600	*Gutaka 55*	Kalyanamandira stotra (Mula)		—
601	*Gutakā 35*	Kalyāṇamandira stotra (Mula)	,	—
602	*Guṭaka 13*	Kalyanamandira stotra (Mula)		—
603	*Guṭaka 25*	Kalyaṇamandira stotra (Mula)		—
604	*Gutaka 47*	Kalyanamandira stotra (Mula)		—
605	*skt Gutakā 7*	Kalyaṇamandira stotra (Mula)		—
606	*skt Gutaka 11*	Kalyaṇamandira stotra (Mula)		—
607	*skt Gutakā 19*	Kalyāṇamandira stotra (Mula)		—
608	*skt Gutakā 27*	Kalyāṇamandira stotra (Mula)		—
609	*skt Guṭaka 28*	Kalyānamandira stotra (Mula)	,	—
610	*skt Guṭaka 33*	Kalyāṇamandira stotra (Mula)	,	—

(*Stotras*)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	33×21.5 upto 22 I 25 30	C	Good	Published
P	,,	20 9×15 8 upto 62 20 22	C	,,	
P	,,	18 9×17 1 upto 135 12 20	C		,,
P		17 7×13 9 upto 72 13 20	C	,,	,,
P		22 8×12 7 upto 28 11 27	C	Good 1736 V S	,,
P	,,	15 8×13 9 upto 38 14 20	C	Good	
P		20 9×13 9 upto 35 16 20	C		,,
P		24 7×11 3 upto 194 9 36	C	Good 1587 V S	,,
P	,,	35 5×20 3 14 to 24 11 13	C	Good	,,
P	,,	19 6×15.2 upto 20 17 17	C	,,	—
P		15.2×13 9 upto 48 13 30	C	Good 1826 V S	—
P	,,	18 9×12.7 upto 104 9 23	C	Good	Published
P	,,	12.7×7 6 upto 51 7 20	C	,,	,,

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
611	*skt Gutaka 34*	Kalyānamandıra-stotra (Mula)	Kumudacandracārya	—
612	*skt Gutakā 37*	Kalyānamandıra stotra (Mul ı)	„	—
613	*Ir 21 (ka)*	Kalyanamandıra stotra with ṭika		—
614	*Ir 22 (ka)*	Kalyanamandıra stotra with ṭika		
615	*Ir 23 (ka)*	Kalyanamandıra stotra with ṭika		Kanakakuśala D/o Hıravıjaya 1652 V S
616	*Ir 23 (kha)*	Kalyaṇamandıra stotra with ṭıka		
617	*Ir 23 (ga)*	Kalyaṇamandıra stotra with ṭıka		not mentıoned
618	*skt Gutaka 38*	Kalyaṇamandıra stotra with ṭīkā		—
619	*Ir 6 (ka)*	Kalyaṇamandıra stotra (Mula)	—	—
620	*Ir 7 (ka)*	Kanakadhāra stotra	Samntabhadracarya	Prabhacandra
621	*skt Guṭakā 38*	Kanakadhara stotra	Śamkaracārya	—
622	*skt Gutaka 10*	Karaheṭaka parśvanatha stotra	—	—
623	*skt Guṭaka 29*	Karuṇasṭaka stotra	Padmanandı	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	17 3×12 7, upto 57 10.21	C	Good 1918 V S	Published
P	,	17 7×12 7 upto 5 8 24	C	Good	,,
P	D, Skt Poetry Prose	27 9×12 9 14 50	C	Good 1625 V S.	
P	,	25 4×12 21 10 32	C	Good 1871 V S	44 ślokas
P	,	26×13 3 21 13 41	C	Good 1869 V S	740 ślokas
P		25 4×10 7 1? 19 65	C	Good 1755 V S	740 ślokas
P		21 5×6 2 31 6 42	C	,	
P		17 1×12 7 upto 84 20 22	C	Good 1668 V S	44 ślokas
P	,	17 1×12 7 upto 118 20 22	C	Good 1668 V S	16 ślokas
P	D, Skt Poetry	23 4×15 8 upto 235 13 30	C	—	5 ślokas
P	,,	16 4×11 3 upto 130 17.14	C	Good	8 ślokas
P	,	33×15.2 100.12 42	C		Unpublished
P	,,	26×15.2 70.12.34	C	,,	,,

1	2	3	4	5
624	*skt. Gutakā 4*	Ksetra-pāla-stotra	—	—
625	*pra Guṭakā 3/13*	Laghucaryāvandanā		—
626	*skt Gutakā 15*	Laghu saha ranāma	—	—
627	*skt Gutakā 7*	Laghu sāmayika paṭha		—
628	*skt Gutakā 10*	Laghu samāyika pāṭha		—
629	*skt Gutaka 7*	Laghu svayambhu	Devanandi	
630	*skt Gutaka 10*	Laghu svayambhu	Name not mention	—
631	*skt Gutakā 13*	Laghu svayambhu	,	
632	*skt Gutakā 23*	Laghu svayambhu		—
633	*skt Gutaka 7*	Laghu tattvārtha utra (Arhat pravacana)		—
634	*Gutakā 3*	Laksmi stotram (Mula) (Cintāmani parśvanātha stotra)	Padamaprabhadeva	
635	*Gutakā 40*	Laksmī stotra (Mūla) (Cintamaṇi pārśvanatha stotra)		—
636	*Guṭakā 1*	Laksmi-stotra (Mula) with ṭikā		not mentioned.

6	7	8	9	10	11
P	D; skt Poetry	23.4×21 8 up to 17 13.30	C	Good	9 Ślokas
P	,,	13 9×13 3 up to 35 13 20	C	Good	—
P		21 5×11 3 up to 19 19 17	C	Good 1805 V S	41 Ślokas
P		24 7×11 3 up to 175 9 36	C	Good 1587 V S	14 Ślokas
P		23 4 ×15 8 up to 238 13 32	C	Good	12 Ślokas
P	D skt Poetry	24 7×11 3 up to 179 9 36	C	Good 1587 V S	25 Ślokas
P		23 4×15 8 up to 238 13 30	C	Good	25 Ślokas
P		21 5×16 4 up to 39 18 21	C	Good 1763 V S	
P	,,	19 6×15 2 up to 50 20 15	C	Good 1842 V S	
P	D, skt Prose	24 7×11 3 up to 177 9 36	C	Good 1587 V S	—
P	,,	20 3×15 8 up to 9 19 22	C	Good	9 Ślokas See S N 520 also
P	,,	15 8×15 2 up to 13 11 30	C	,,	—
P	,,	29 7×17.7 up to 4 11 33	C	,,	—

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
637	skt Gutakā 10	Laksmi stotra (Mula) (Cintamaṇi par'vanatha stotra)	Padamaprabhadeva	—
638	skt Gutakā 29	Laksmi stotra (Mula)		—
639	skt Gutaka 38	Laksmi stotra		
640	skt Gutakā 4	Mahalaksmi stotra		—
641	skt Gutaka 29	Maharsi paryupasana	—	—
642	pra Gutaka 21	Maharsi stavana (Jinayajña pujavidhanadi	Pt Āśadhara	
643	Gutakā 64	Mahavīrasṭaka	Bhagachandra	—
644	skt Gutaka 38	Mahavira stavana	—	—
645	skt Gutaka 38	Matraksara vasudhara nama stotra	Abhayanand	—
646	skt Gutaka 10	Nagadi ara parśvanatha stotra	Jayasagara	
647	skt Gutaka 38	Namiuṇa stotra (saṭika)		—
648	skt Gutaka 19	Namokara mantra (Jinadarśana stotra)	—	—
649	skt Gutaka 1	Navagraha samyukta stuti	—	
650	pra Gutaka 22	Nemistuti tilaka (saṭika) (Dvyaksra stavana)	Pt Śalibhadra	

6	7	8	9	10	11
P	D skt Poetry	23 4×15 8 up to 244 13 30	C	Good	9 Slokas See S N 520 also
P		16 4×11 3 up to 129 17 24	C		
P		17 1×12 7 up to 105 12 22	C	Good 1668 V S	23 Slokas
P		23 4×22 8 upto 5 13 30	C	Good	—
P		16 4×11 3 upto 124 I 17 14	C		20 Slokas
P		21 5×15 2 upto 67 14 28	C		—
P		33×20 3 upto 47 20 44	C		S9 lok is Published
P		17 1×12 7 upto 97 12 22	C	Good 1668 V S	S30 lokas
P	D skt Prose	17 1×12 7 upto 35 12 22	C	Good 1667 68V S	,
P	,	23 4×15 8 upto 234 13 30	C		5 Ślokas
P	D skt Poetry	17 1×12 7 upto 140 12 22	C	Good 1668 V S	32 Ślokas
P		19 6×15 2 upto 21 5 17	C	Good	—
P	,	33 ×21 5 upto 3 25 30	C	,	—
P	D· skt Poetry Prose	20 3×15 2 upto 3 12.26	C	Good 1898 V S	Only in two words 'M and N'

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
651	*pra Guṭakā 47*	Padmavatī sahasranama	—	—
652	*skt Gutaka 4*	Padmāvatī stotra	—	—
652a	*skt Gutaka 8*	Padmāvatī stotra	—	—
653	*lṛ 10 ka*	Pañcanamaskāra stotra	Umasvamī	—
654	*Guṭaka 3*	Pañcanamaskara stotra		
655	*Gutaka 48*	Pañcanamaskara mantra		
656	*skt Gutaka*	Pañcanamaskara stotra		
657	*lṛ 9 ka*	Pañcapadadhyana Japa	Not mentioned	—
658	*Guṭakā 38*	Pañcaparameṣṭhī namaskara stavana	—	—
659	*Loosed Papers 10*	Pañcastotra samgraha	—	—
660	*Pra Gutakā 9/2*	Parmananda śloka	—	—
661	*skt Guṭakā 28*	Paramānanda stotra	—	—
662	*29*	Paramananda stotra	—	—

(*Stotras*)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	12×11 3 21 9 15	Inc	Good	—
P		23 4×22 8 upto 15 13 30	C		28 Ślokas
P		17 1×12 7 upto 89 12 22	C	Good 1668 V S	26 Ślokas
P		22 8×13 9 upto 5 6 16	C	Good	—
I		26 ×15 2 upto 3 11 36	C		—
P		10 7×10 1 upto 5 8 13	C		—
I	D Skt Poetry Prose	35 4×29 3 4 11 13	C		11 Ślokas
P	,,	25 4×12 7 upto 18 10 30	C		—
P		17 1×12 7 up to 115 12 25	C	Good 1668 V S	—
P		27 9×15 2 36 7 20	C	Good 1669 V S	—
P		15 2×13 3 up to 29 13.28	C	Good	27 Ślokas
P	,,	18 9×12 7 up to 35 9 23	C		25 Ślokas
P	,,	16 4×11 3 up to 143 I 17 14	C		24 Ślokas

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura, Delhi

1	2	3	4	5
663	*skt Gutakā 10*	Parmnānada stotra śloka	—	—
664	*Loosed Papers Gutakā 55*	Parmananda stotra sloka	—	—
665	*skt Gutakā 63*	Parmananda stotra śloka	—	—
666	*skt Gutakā 38*	Paramapurusaṣṭottara nama strotra	—	—
667	*skt Gutaka 52*	Parsvanatha cintamani stavana	—	—
668	*skt Gutakā 1*	Pārsvanatha cintamaṇi yamaka stotra		—
669	*skt Gutakā 38*	Parsvanatha nama mantraksara stotra		—
670	*skt Gutakā 52*	Parsvanatha stavana	—	—
671	*lr 17 (ka)*	Parśvanatha stavana with ṭika	—	
672	*skt Gutaka 63*	Parśvanatha stotra (Cintamaṇi Parśvanatha-stotra)	Padamaprabhadeva	
673	*lr 13 (ka)*	Pārśvanatha stotra with ṭika	”	—
674	*Gutaka 35*	Parśvanatha stotra		—
675	*Guṭakā 55*	Parśvanatha stotra	Devacandasuri	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	22.8×13 9 upto 115 12 30	C	Good	24 Ślokas
P		18 9×17 1 up to 152 12 20	C		,
P		15 8×13 9 up to 153 I 12 22	C		
P		17 1×12 7 up to 64 12 22	C		22 Ślokas
P		15 9×13 3 up to 105 9 16	C		See S No 522 also
P		33×21 5 up to 4 I 25 30	C	,,	—
P		17 1×12 7 up to 103 12 22	C		34 Ślokas
P		15 2×1 3 up to 105 9 16	C		–
P	D, Skt Poetry Prose	23 4×10 1 1 5 42	C		—
P		15 8×13 9 upto 143 12 22	C		See S No 634 to 639 Published
P	,,	27 9×16 4 5 12 34	C	,	Published
P	D, Skt Poetry	17 7×13 9 upto 95 13 20	C	,,	Some last pages are missing
P		13 9×17 1 upto 125 12 20	C		—

1	2	3	4	5
676	*Guṭukā 33*	Parśvanatha stotra Pañjikā	Jayakesari	—
677	*skt Gutaka 52*	Parśvanatha stotra	—	—
678	*skt Gutakā 7*	Parsvanatha stotra	Padmanandi Bhaṭṭāraka	—
679	*skt Gutaka 7*	Parśvanatha stotra	Śrutasagara	—
680	*skt Gutaka 28*	Parśvanatha stotra	—	—
681	*skt Guṭaka 28*	Parsvanatha stotra	—	—
682	*skt Gutakā 38*	Parsvanatha s avana		—
683	*Loosed Pp Gutaka 54*	Prabhavikaśani stotra	—	—
684	*skt Guṭakā 7*	Prasnottaramalika	Amoghavarsa	—
685	*skt Gutakā 32*	Praśnottari ratnamalā	Name not mentioned	—
686	*Gutaka 29*	Pratikramaṇa alocana vidhi	—	—
687	*skt Guṭaka 29*	Puṇyaśrava danaphala	,	—
688	*skt Guṭaka 29*	Puṇyaśrava pañcanamaskara-phala	Ramacanda Mumuksu D/o Keśavanandi	—

(*Stotras*)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry Prose	24 7×10 7 upto 17 9 30	Inc	Good 1859 V S	16th leaf is missing
P	D Skt Poetry Hindi	15 2×13 3 upto 115 9 16	C	Good	—
P	D Skt Poetry	24 7×11 3 upto 48 9 36	C	Good 1587 V S	—
P		24 7×11 13 upto 157 9 36	C	Good	15 Ślokas
P		18 9×12 7 upto 39 9 23	C		—
P		18 9×12 7 upto 120 9 23	C		—
P		17 1×12 7 upto 111 12 22	C	Good 1668 V S	8 Ślokas See S N 619 for Colophon
P		20 9×12 8 upto 177 20 22	C	Good	—
P		24 7×11 3 upto 189 I 9 36	C	Good 1587 V S	29 Ślokas
P		14 6×10 1 upto last 7 7 20	C	Good 1848 V S	31 Ślokas
P	D Skt pra Poetry	16 4×11 3 upto 119 17 14	C	Good	—
P	D, Skt Poetry	35 5×20 3 18 11 13	C	,,	16 Ślokas
P		35 5×20 3 5 11 13	C	,,	8 Ślokas

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandır Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
689	skt Guṭaka 11	Puṇyaśrva subhopayoga phala	Ramacanda Mumuksu D/o Keśavanandı	—
690	Gutaka 15	Rsımandala stotra	–	—
691	Gutakā 48	Rsımaṇdala stotra		—
692	Guṭaka 49	Rsımaṇdala stotra	—	—
693	skt Guṭakā 38	Rsımaṇdana maha stavana	—	–
694	skt Gutakā 8	Rsımaṇdana stavana	Gautamasvāmı ?	–
695	skt Gutaka 10	Rsımaṇdana stavana	—	–
696	skt Gutakā 15	Sahasranama stotra (yugadıdevasṭottara sahasranama)	Jınasenacārya D/o Vıresena	—
697	skt Guṭakā 17	Saharsranama stotra		—
698	skt Guṭaka 23	Sahasranama stotra		—
699	skt Gutaka 7	Sajjanacıttavallabha	Mallıseṇa	–
700	skt Gutaka 36	Samadhı sataka (tantra)	Devanandi Pujyapāda	—
701	Guṭakā 17	Sāmayıka pāṭha	—	—

(*Stotras*)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	35 5×20 3 8 11 13	C	Good	8 Ślokas
P	,	20 9×16 4 upto 5 18 20	C		
P	,	10 7×10 1 upto 19 8 13	C	Good 1941 V S	Double paging
P		11 3×10 1 upto 79 9 16	Inc	Good	92 ślokas Page No 65 missing
P		17 1×12 7 upto 46 12 22	C	Good 1667 V S	73 Ślokas
P		21 5×17 7 upto 9 16 27	C	Good	Copy size
P		23 4×15 8 upto 283 13 30	C		82 Ślokas
P		12 5×11 3 upto 16 19 17	C	Good 1805 V S	162 Ślokas
P		17 7×15 2 19 9 24	C	Good 1948 V S	–
P		19 6×15 2 upto 84 20 15	C	Good 1842 V S	–
P		24 7×11 3 upto 183 9 36	C	Good 1587 V S	25 Ślokas
P		35 5×20 3 17 11 13	C	Good	105 Ślokas
P	,	25 4×10 1 9 14 32	Inc		Svetāmbara MS

1	2	3	4	5
702	*u 34 (ka)*	Samāyika Paṭha	Bahumuni	—
703	*u 34 (kha)*	Sāmāyika paṭha with ṭippaṇa		—
704	*u 34 (gha)*	Samayika paṭha (Laghu)		
705	*Guṭaka 29*	Samāyika paṭha		
706	*Gutaka 34*	Samayika paṭha	—	—
707	*Gutakā 37*	Samayika paṭha (Laghu)		Hindi ṭika ?
708	*Gutakā 7*	Samayika stava	—	
709	*Gutakā 55*	Samayika stotra	Bahumuni? not mentioned in MS	—
710	*Ir 31 (ka)*	Sammedaśikhara mahatmya 21 chapters	Dixita Devadatta	
711	*Gutaka 2/6*	Samyaktvaslāgha	?	—
712	*skt Gutaka 7*	Śāntinatha stuti	Śrutasagara	
713	*skt Gutakā 38*	Śānti stava		—
714	*Gutakā 14*	Śānti stavana	Manadeva Sūri	

(*Stotras*)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt. Poetry	26×15 2 12 11 34	C	Good	Uupublished
P		29 8×12 7 16 8 38	C		
P		21 5×11 3 2 8 24	C		5 to 10 Ślokas are missing
P	D Skt Pra Poetry	16 4×11 3 up to 18 17 14	C		—
P		17 7×12 7 upto 27 10 21	C	Good 1918 V S	—
P	D Skt Poetry Hindi prose	17 7×12 7 upto 65 8 24	C	Good	—
P	D Skt Poetrv	24 7×11 3 upto 49 9 36	C	Good 1587 V S	—
P	,	18 9×17 1 upto 267 12 20	C		—
P		26×12 7 113 9 36	C	Good 1884 V S	Unpublished
P		15 2×13 3 upto 52 13 28	C	Good	—
P		24 7×11 3 upto 158 9 36	C	Good 1587 V S	9 Ślokas
P		17 1×12 7 upto 109 12 22	C	Good 1668 V S	6 Ślokas See S N 619 for Colophon
P		22 8×12 7 upto 32 13 27	C	Good	—

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
715	*skt Guṭakā 9*	Sarasvatī stavana	Jñānabhusaṇa Muni	—
716	*skt Gutaka 14*	Sarasvatī stotra	Somasena	—
717	*skt Gutakā 25*	Savrasvatī stotra	Malayakīrti D/o Vijayakīrti	—
718	*pra Gutakā 23*	Sarasvatī stotra (Śruta devata stuti)	Padmanandi	—
719	*skt Gutakā 15*	Sarasvatī stuti	Malayakīrti D/o Vijayakīrti	—
720	*skt Gutaka 36*	Śāstrapuja stuti	Jñanabhusana	—
721	*Gutaka 3/2*	Siddhabhakti	—	—
722	*skt Gutaka 1*	Siddhacakra yantroddhā raka (Brahat)	Biru Kavi	—
723	*lṛ 15 (ka)*	Siddhapriya stotra with ṭika	Devanandi Muni	—
724	*lṛ 15 (kha)*	Siddhapriya stotra with ṭika	,	
725	*lṛ 31 (kha)*	Siddhapriya stotra Mula		
726	*skt Guṭaka28*	Śloka		
727	*skt Gutakā38*	Śloka and Gāthas		

(Stotras)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	23 4×15 8 upto 3 1 13 30	C	Good	11 Ślokas
P		20 9×15 2 upto 193 17 30	C		See S No 523 for Colophon
P		20 3×15 2 upto 49 18 20	C		—
P		21 5×16 4 upto 27 12 14	C		First 15 leaves are missing See S No 731 also
P		21 5×11 3 upto 59 19 17	C	Good 1805 V S	9 Ślokas Book size
P		19 6×17 1 upto 6 13 20	C	Good 1978 V S	—
P		13 9×13 3 upto 16 13 20	C	Good	—
P		20 9×15 2 upto 218 17 30	C		See S No 523 for Colophon
P	D Skt Poetry Prose	25 4×11 3 11 10 38	C		26 Ślokas published
P	D Skt Poetry	26×12 10 10 42	C	Good 1871 V S	25 Ślokas
P		31×18 9 24 23 19	C	Good	26 Ślokas Registersize
P		18 9×12 7 upto 33 9 23	C		Only 4 Ślokas
P		17 1×12 7 upto 118 12 22	C	Good 1668 V S	Only three

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
728	*skt Guṭakā 10*	Snapana mahotsava	Abhayanandi	—
729	*skt Gutaka 11*	Snapana vidhi (Laghu)	—	—
729a	*skt Guṭakā 10*	Snapana vidhi (Laghu)	—	—
730	*Gutaka 7*	Śravaka pratikramaṇa	—	—
731	*Gutaka 5*	Śrutadevata stuti (Sarasvati stotra)	Papmanandi	—
732	*skt Gutaka 38*	Suryasahasranama	—	—
733	*skt Gutaka 38*	Surya ṭika	—	
734	*skt Guṭakā 38*	Surya stotra	—	—
735	*skt Gutaka 25*	Svayambhu Patha (Laghu)	—	—
736	*skt Gutaka 7*	Svayambhu stotra Brhat	Samantabhadracarya	—
737	*skt Gutaka 31*	Svayambhu sto ra		—
738	*skt Gutaka 28*	Svayambhu stotra Brhat (Mula)		—
739	*skt Guṭaka 29*	Svayambhu stotra Brhat (Mula)		—

(*Stotras*)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	23 4×15 8 upto 221 13 30	C	Good	63 Ślokas
P		35 ×20 3 upto 6 11 13	C		13 Ślokas
P		23 4×15 8 upto 153 13 30	C		—
P		24 7×11 3 upto 100 9 36	C	Good 1587 V S	S e 281 for colophon
P		27 9×13 ɔ 4 7 33	C	Good	See S N 718 also
P		17 1×12 7 upto 78 12 22	C	Good 1668 V S	for colophon See S N 619
P		17 1×12 7 upto 68 12 22	C	Good 1668 V S	8 Ślokas
P		17 1×12 7 upto 67 12 22	C		21 Ślokas
P		20 3×15 2 upto 31 18 20	C	Good	25 Ślokas Published
P		24 7×11 3 upto 85 9 36	C	Good 1587 V S	131 Ślokas Published
P		13 9×9 5 upto 50 8 17	C	,,	Published
P	,	18 9×12 7 upto 90 9 23	C	,	,,
P	,	16 4×11 3 upto 69 17 14	C	,	

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
740	*Ir 7 (kha) 1*	Svayambhu stotra (Kriyakalapaṭika) Saṭika	Samantabhadarācarya	Prābhachandracārya
741	*Ir 14 (ka)*	Svayambhu stotra Brhat (Mula)		—
742	*Ir 14 (kha)*	Svayambhu sto ra Brhat (Mula)		
743	*skt Gutakā 5*	Svayambhu stotra (Laghu)	—	–
744	*skt Gutaka 13*	(Svavambhu stotra (Laghu)	—	—
745	*skt Gutaka 42*	Svayambhu stotra (Laghu)	—	—
746	*skt Gutaka 47*	Svayambhu stotra (Laghu)	—	—
747	*Gutaka 14*	Svayambhu stotra (Laghu)	—	—
748	*Gutaka* 25	Svayambhu stotra (Laghu)	—	—
749	*skt Gutakā 63*	Svayambhu stotra Brhat (Mula)	Samantabhadracarya	–
750	*skt Gutakā 10*	Trikalacaturvimśatināma	Hamsa	—
751	*skt Gutaka 2*	Trimśaccaturvimśati jinanama	—	—
752	*skt Gutaka 7*	Upāsakadhyayana	Prabhācaudra	—

(*Stotras*)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry Prose	27 9×15 2 59 11 40	C	Good	Published
P		27 9×12 7 18 5 40	C		
P		25 4×12 7 10 10 34	C		200 ślokas Published
P		25 4×11 3 upto 20 9 40	C		Published
P		22 8×18 9 upto 20 20 25	C		
P		16 4×11 3 upto 29 8 20	C		
P		20 9×13 2 upto 64 16 24	C		
P		37 4×20 9 upto 27 13 45	C		
P		15 8×13 9 upto 97 14 20	C		
P		15 8×13 9 upto 186 12 22	Inc		
P	D Skt Poetry	23 4×15 8 upto 150 13 36	C		
P		31× 14 6 upto 200 11 41	C		
P	,	24 7×11 3 upto 186	C	Good 1587 V S	33 ślokas For colophon see S N 28

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
753	*Guṭaka 43*	Vajrapañjara stotra	Prabhacandra	—
754	*skt Gutakā 38*	Vardhamanajina stotra	Siddhasena	—
755	*I 16 (ka)*	Varadhamana stuti	Hemasuri	—
756	*Ir 25 (ka)*	Visāpahara stotra (Mula)	Dhanañajaya Kavi	—
757	*Ir 25 (kha)*	Visapahara stotra (Mula)		—
758	*skt Gutaka 1*	Visapahara stotra (Mula)		—
759	*skt Gutakā* 47	Visapahara stotra (Mula)		—
760	*Gutaka 55*	Visapahara stotra (Mula)		—
761	*Gutaka 54*	Visapahara stotra (Mula)		—
762	*Gutakā 28*	Visapahara stotra (Mula)		—
763	*Guṭakā 33*	Visapahara stotra (Mula)		—
764	*Guṭakā 37*	Visapahara stotra (Mula)		—
765	*Ir 25 (ga)*	Visāpahāra stotra with Mahaprabhi ṭika		Nagacandra

(*Stotras*)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	14 6×12 1 8 20	C	Good	—
P	,,	17 1×12 7 upto 58 12 22	C	Good 1668 V S	—
P		24×11 3 2 13 46	Inc	Good 1706 V S	32 Ślokas
P	,	27 3×15 2 3 12 42	C	Good	Published
P		24 7×10 7 3 9 31	C		,
P		33×21 5 upto 23 25 30	C		41 Ślokas Published
P		20 9×13 9 upto 43 16 20	C		40 Ślokas
P	,	18 9×17 1 upto 145 12 20	C		40 Ślokas Published
P		20 9×15 8 upto 73 20 22	C	,	40 Ślokas
P	,,	18 9×12 7 upto 119 9 23	C		
P		12 7×7 6 upto 51 7 20	C	Good 1871 V S	,,
P	,,	17 7×12 7 upto 83 8 24	C	Good	
P	D Skt, Prose Poetry	27 9×12 7 14 9 39	C	,	—

Dıg Jaın Saraswati Bhandar Naya Mandır Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
766	*lṛ 25 (gha)*	Vısaphara stotra wıth Mahāprabhı tıka	Dhanañjaya Kavı	—
767	*lr 25 (na)*	Vısaphara stotra wıth Mahāprabhı ṭıka		not mentıoned
768	*skt Gutakā 38*	Vıvdhamnāyamaya stotra	—	—
769	*skt Gutakā 38*	Yantramantrādı	—	—
770	*lṛ 23 (ka)*	Yatıbhāvanasṭaka stotra (Mula)	Padmanandı Munı	—
771	*Pra Gutaka 3/23*	Yatıbhavanasṭaka stotra (Mula)	-	-
772	*skt Gutaka 7*	Yatıbhavanasṭaka stotra (Mula)	—	
773	*skt Gutakā 29*	Yatıbhavanasṭaka stotra (Mula)		—
774	*Gutakā 63*	Abhıseka Pāṭha		
775	*Gutaka 47*	Abhıseka Paṭha (Snapana vıdhı)	—	—
776	*Guṭaka 25*	Abhıseka Pāṭha	—	-
777	*ṛ 3 (ka)*	Abhıṣeka Patha (Snapana vıdhı)	Lalacandra Bınodı ?	—
778	*Gutakā 10 I*	Ādınātha puja	—	—

(*Stotras*, Pūjā, Pāṭha etc)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry Prose	25 4×12 18 10 32	C	Good 1871 V S.	—
P	,,	26 6×12 7 8 12 42	C	Good 1965 V S	—
P	D Skt Poetry	17 1×12 7 upto 53 12 22	C	Good 1667 V S	For colophon see S N 619
P		17 1×12 7 upto 62 12 22	C	Good 1668 V S	,
P		27 3×13 3 upto 5 8 40	C	Good	Combined with S No 496 Unpublished
P		13 9×13 3 upto 94 13 20	C		—
P		24 7×11 3 upto 64 9 36	C	Good 1587 V S	9 Slokas
P		16 4×11 3 upto 71 17 14	C	Good	—
P	,	15 8×13 9 upto 92 12 22	C		—
P	,	20 9×13 9 upto 134 16 20	C	,	—
P		15 8×13 9 upto 238 14 20	C	Good	—
P	,,	20 3×15 8 10 14 22	C	Good 1980 V S	Copy size
P	D, Skt Hindi Poetry	23 4×15 8 upto 217 13 30	C	Good	—

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir, Dharmapura, Delhi

1	2	3	4	5
779	*Guṭakā 8*	Ādıtya vratodyāpana	Mahıcandra D/o Brahma Jayasāgara	—
780	*Gutaka 57*	Akṛtrıma caıtyālaya-vandanā	—	—
781	*Guṭakā(4 kha)*	Akṛtrıma-caıtyālaya vandanā	—	—
782	*Gutakā 55*	Akṛtrıma caıtyālaya vandana	—	—
783	*Guṭakā 22*	Akrtrıma caıtyalaya vandanā	—	—
784	*Gutakā 26*	Akṛtrıma caıtyalaya vandanā	—	—
785	*Gutakā 21*	Akṛtrıma caityalaya vandana	—	—
786	*Guṭakā 48*	Akrtrıma caıtyalaya vandanā		—
787	*Gutakā 54*	Akṛtrıma caıtyālaya vandana	—	—
788	*Gutaka 10*	Akrtrıma caıtyālaya-vandana	—	—
789	*Guṭakā 27*	Akrtrıma caıtyālaya vandanā	—	—
790	*Guıakā 34*	Akrtrıma-caityālaya-vandana	—	—
791	*lṛ 19 (ka)*	Ananta caturdaśı pujā	Brahma Śāntidāsa	—

6	7	8	9	10	11
P	D, skt Poetry	21 5×17 7 up to 49 16 27	C	Good	—
P	,,	20 3×17 1 20 15 25	C	,	Published
P		26 6×12 up to 8 11 37	C	,,	
P		35 5×21 5 up to 8 15 42	C	,	,
P		18 9×16 4 up to 20 12 30	C	,,	
P		18 9×16 4 up to 131I 13 25	C	,,	,
P		19 6×15 2 up to 12 15 23	C		,
P	,	20 9×13 3 up to 33 11 32	C		
P	,	33×18 9 up to 14I 15 42	C	,	
P		23 4×15 8 up to 206 13 30	C		6 Ślokas Published
P	,	15 2×13 9 up to 10 13 30	C	,	Published
P	,,	17 7×12 7 up to 29 10 21	C		,
P	,,	24 7×12 7 27 9.36	C	,,	—

1	2	3	4	5
792	*r 18 (kha)*	Anantanatha pujā (Anantavratodyapanā pūja)	—	—
793	*Guṭakā 22*	Ananta pūjā vidhi	—	—
794	*r 20 (ka)*	Anaṇtavrata pujā	Śrībsusana	—
795	*r 18 (ka)*	Anantavrata puja udya pana	Gunacandracārya D/o yaśhkirti D/o Ratnakirti 1633v s	—
796	*Guṭaka 22*	Ananta vrata pujodya pana	—	—
797	*Guṭaka 34 I*	Aṅkurāropana vidhi (yāvaraka vidhi)	—	—
798	*Gutakā 10*	Antariksa pārśvanatha pūjāṣṭaka	Nemidatta Muni	—
799	*Gutakā 83*	Asṭāhnikā pujā	—	—
800	*skt Gutakā 63*	Aṣtahnikā pujā	—	—
801	*skt Gutakā 47*	Astāhnikā pūja	–	—
802	*7*	Astāhnikā pūjā	—	—
803	*Guṭakā 25*	Aṣṭāhnikā pūja	—	–
804	*r (ka)*	Astahnikā pūjā (Sārdhadvayadipa-pāṭha pujā)	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	24 7×12 7 43 9 36	C	Good 1863 V S	800 Ślokas Unpublished
P	,	18 9×13 2 up to 19 13 25	C	Good	—
P		26×15 2 14 12 30	C	,	Unpublished
P	D Skt Poetry	27 9×14 6 26 12 44	C		
P		18 9×13 3 upto 12 13 25	C		230 Ślokas Published
P	,	17 7×14 6 upto 113 14 25	C	,,	—
P	,	23 4×15 8 upto 222 13 30	C	,	—
P		15 8×16 9 upto 74 14 15	C		20 Ślokas
P		15 8×13 9 upto 52 12 22	C	,,	18 Ślokas
P		20 9×13 9 upto 37 16 20	C		17 Ślokas
P		20 3×15 2 upto 69 20 20	C	Good 1941 V S	19 Ślokas
P	•	15 8×13 9 upto 105 14 20	C	,	18 Ślokas
P	,	31 6×17 7 99 12 40	C	Good 1923 V.S	Unpublished

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura, Delhi

1	2	3	4	5
805	*r 1 (kha)*	Astahnikā puja	—	—
806	*r 1 (ga)*	Aṣṭāhnika pujā	—	—
807	*No 14*	Aṣṭāhnika puja	—	—
808	*Gutakā 2*	Astāhnikā puja	Kanakakirti	—
809	*Guṭakā 13*	Astāhnika puja	—	—
810	*Gutakā 15*	Astahnikā puja Vṛhat	—	—
811	*Gutakā 15*	Aṣṭahnika puja (Nandīśvara pujā)	Candrakirti	—
812	*Gutakā 15*	Aṣṭahnika pujā (Nandīśvara puja)	—	—
813	*Guṭakā 23*	Astahnikā pujā (Nandīśvara pujā)	—	—
814	*Gutakā 39*	Aṣṭahnikā pujā (Nandīśvara pujā)	—	—
815	*Guṭaka 31*	Aṣṭāhnikā pujā	—	—
816	*Gutakā 8*	Aṣṭāhnikā udyāpana	—	—
817	*Guṭakā 14*	Bali vidhāna yantrodd hara	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	31×15 8 146 12 30	C	Good 2438 virN S.	—
P		26×16 4 251 13 35	C	Good	—
P		26 6×16 4 26 14 37	C		—
P		31×14 6 upto 61 11 41	C		23 Ślokas
P	D Skt Ap Poetry	21 5×16 4 upto 54 18 21	C	Good 1763 V S	—
P	D Skt Poetry	21 5×11 3 upto 248 19 17	C	Good 1805 V S	—
P	D Skt Ap Poetry	21 5×11 3 upto 259 19 17	C		—
P	D Skt Poetry	21 5×11 3 upto 81 19 17	C	,	—
P	D, Skt Ap Poetry	19 6×15 2 upto 20 20 15	C	Good 1842 V S	—
P	D, A p poetry	20 3×17 1 upto 23 15 26	C	Good 1954 V S	—
P	D, Skt Ap Poetry	13 9×9 5 upto 115 8 17	C		—
P	D, Skt Poetry	21 5×17 7 upto 55 16 27	C	Good	Copy size See 694 for Colophon
P	"	20 9×15 2 upto 140 17 30	C	,,	—

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir, Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
818	*Gutakā 2*	Bhaktāmara pujā	—	—
819	*Gutaka 15*	Bhaktamara puja	Jñānasagara ? 1650 V S	—
820	*Gutakā 16*	Bhaktāmara puja	—	—
821	*Gutakā 12*	Bhaktamara puja with yantra mantras	Mānatuṇgācarya Hemaraja Pandeya	—
822	*Gutakā 2*	Bharata ksetra jina pujā	Śubhacandra ?	—
823	*Loose pp 20*	Cakra puja vidhi	—	—
824	*skt Gutaka 10*	Candanā saṣṭhi puja	—	—
825	*skt Guṭakā 63*	Caritra puja	Brahmasena	—
826	*r 6 (ka)*	Caritra śuddhi puja	Śribhusaṇa 1634 V S	—
827	*skt Gutaka 5*	Caritra śuddhi puja		—
828	*skt Gutakā 14*	Caritra śuddhi pujā		—
829	*Loose pp 21*	Caritra vrata śuddhi-puja		—
830	*Guṭakā 3/21*	Caturvimśati jina-nirvāṇa-varṇana	,	—

6	7	8	9	10	11
P	D, skt Poetry	31×14 6 upto 188 11 41	C	Good	—
P	,,	21 5 ×11 3 upto 138 19 17	C	Good 1805 V S	—
P		17 7×15 8 upto 62 15 24	C	Good 1828 V S	—
P	D skt Hindi Poetry	22 8×13 9 upto 36 11 25	C	Good	—
P	D Skt Poetry	31×14 6 upto 216 11 41	C	•	—
P		25 4×11 3 3 18 66	C		—
P		23 4×15 8 upto 185 13 30	C	,	—
P	,	15 8×13 9 upto 85 12 22	C		—
P		26 6×13 9 127 11 30	C	Good 1861 V S	Unpublished
P		23 4×13 9 up to 122 20 20	C	Good	—
P	,,	20 9×15 2 up to 174 17 30	C	,,	—
P	,,	27 9×12 7 40 9 35	Inc	,	—
P	,	13 9×13 3 87 13.20	C	,	—

1	2	3	4	5
831	*skt Guṭakā 13*	Caturvimśati tirthaṅkara pujā	—	—
832	*ṭ 4(ka)*	Caturvimśati tirthaṅkara pujā	—	—
833	*skt Guṭakā 2*	Cintamaṇi pujā	—	—
834	*pra Guṭakā 14*	Cintāmani pujā	—	—
835	*Gutakā 25*	Daśalaksaṇa puja	—	—
836	*Gutaka 38*	Daśalaksana pujā	—	—
837	*skt Guṭaka 14*	Dasalaksaṇa puja	—	—
838	*skt Gutaka 1*	Daśalaksana puja Jayamalā	—	—
839	*skt Gutakā 13*	Daśalakṣaṇa puja	—	—
840	*sl t Guṭaka 15*	Daśalaksaṇa pujā	—	-
841	*skt Guṭakā 17*	Daśalakṣaṇa pujā	—	—
842	*skt Guṭakā23*	Daśalaksaṇa pujā	—	—
843	*ṭ 7 (ka)*	Daśalakṣaṇoddyapana pāṭha	Sumatisāgara D/o Abhayanandi 1700 V S	—

6	7	8	9	10	11
P	D;Skt Hindi Poetry	21 5×16 4 84 18 21	C	Good 1763 V S	—
P	D Skt Poetry	27 9×13 9 4 10 33	C	Good	—
P		31×14 6 up to 170 11 41	C	,,	—
P		20 9×15 2 up to 193 17 30	C		—
P		15 8×13 9 up to 94 14 20	C		—
P		15 8×13 9 up to 41 14 15	C	,,	—
P		37 4×20 9 up to 23 13 45	C	,,	—
P	D Skt Ap Poetry	27 9×15 2 up to 26 10 36	C	Good 1881 V S	—
P	,	21 5×16 4 upto 33 18 21	C	Good 1763 V S	—
P		21 5×11 3 upto 50 19 17	C	Good 1805 V S	—
P	,,	17 7×15 2 upto 12 9 24	C	Good 1948 V S	—
P	,,	19 6×15 2 upto 48 20 15	C	Good 1842 V S	—
P		26×15 2 15 12.36	C	Good	Unpublished

1	2	3	4	5
844	*r 7 (kha)*	Daśalakṣaṇodyāpana pāṭha	—	—
845	*r 7 (ga)*	Daśalaksanodyāpana pāṭha	—	—
846	*r 7 (gha)*	Daśalakṣaṇodyāpana paṭha	—	—
847	*Loose pp 22*	Daśalaksaṇodyāpana paṭha	—	—
848	*Guṭaka* 4	Daśalaksanodyāpana paṭha	—	
849	*skt Gutakā 8*	Daśalaksaṇodyāpana pāṭha	—	-
850	*skt Guṭakā 2*	Deva puja	—	—
851	*skt Gutakā 5*	Deva puja (Snapana vidhi)	—	—
852	*skt Gutakā 5*	Deva puja (Snāpana vidhi)	Lāla Candra Vinodi	
853	*skt Guṭaka 13*	Deva puja		-
854	*skt Guṭakā 20*	Deva pujā	,,	—
855	*skt Guṭakā 15*	Deva pujā	,	—
856	*skt Guṭakā 18*	Deva-pūjā	,	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	20 3×17 1 20 12 25	C	Good 1926 V S	Unpublished Copy size
P	,	18 9×17 7 21 13 21	C	Good	Copy size
P	,	18 9×17 7 21 13 21	C		
P		26 6×11 3 13 10 40	Inc		—
P		27 3 ×15 2 13 12 38	Inc	Good 1894 V S	—
P		21 5×17 7 upto 39 16 27	C	Good	—
P	D Skt Ap Poetry	30 4×15 8 upto 31 10 30	C		—
P	D Skt Poetry	25 4×13 3 to 5 9 40	C		—
P	D, Skt Poetry Hindi	25 4×11 3 upto 86 9 40	C	Good 1899 V S	—
P	,	22 8×18 9 upto 9 20 25	C	Good	—
P	D Skt Poetry	20 3×15 2 upto 11 13 20	C	,	—
P	,	21 5×11 3 upto26 19 17	C	Good 1805 V S	Book size
P	D, Skt Ap Poetry	18 2×15 2 upto 8 11 26	C	Good 1929 V S	—

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
857	*skt Gutaka 19*	Deva pujā	—	—
858	*skt Guṭa ā 37*	Deva pujā (Brhat)	—	—
859	*skt Guṭakā 50*	Deva pūja (Brhat)	—	—
860	*skt Guṭakā 63*	Deva pujā (Brhat)	—	—
861	*Gutakā 25*	Deva pujā (Bṛhat)	—	—
862	*Gutakā 15*	Deva pujā (Bṛhat)	—	—
863	*Gutakā 54*	Deva pujā (Bṛhat)	—	—
864	*Gutakā 36*	Deva pujā (Brhat)	—	—
865	*skt Gutakā 6*	Deva pujā (Bṛhat)	—	—
866	*skt Gutakā 10*	Deva puja (Bṛhat)	—	—
867	*skt Gutaka 13*	Deva pujā (Brhat)	—	—
868	*skt Guṭaka 19*	Deva pūjā (Bṛhat)	—	—
869	*skt Guṭakā 23*	Deva puja (Bṛhat)	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	12 6×15 2 upto 31 17 7	C	Good	—
P	,	17 1×13 9 upto 10 10 20	C	,	—
P	,	16 4×10 7 upto 10 15 12	C		—
P	,	15 8×13 9 upto 35 12 22	C	,	—
P		15 8×13 9 upto 80 14 20	C		—
P		20 9×16 4 upto 27 18 20	C		—
P	,	20 9×15 8 upto 99 20 22	C	Good 1757 V S	—
P		20 9×16 4 upto 9 14 17	C	Good	—
P		28 5×13 9 upto 27 10 30	C	Good	—
P	,	23 4×15 8 upto 157 13 30	C	,	—
P		21 5×16 4 upto 23 18 21	C	Good 1763 V S	—
P	,	19 9×15.2 upto 34 17 7	C	,	—
P	,	19 6×15 2 upto 27 20 15	C	Good 1842 V S	—

1	2	3	4	5
870	*skt Guṭakā 23*	Deva-pujā (Bṛhat)	–	—
871	*skt Guṭakā13*	Deva puja (Brhat) with Hindi ṭikā	—	—
871a	*skt Guṭaka14*	Deva pujā (Bṛhat) with Hindi ṭikā	—	-
872	*skt Guṭakā 16*	Devaśastraguru pujā	—	—
873	*skt Guṭaka 20*	Devaśastraguru pujā	—	—
874	*skt Guṭaka27*	Devaśastraguru pujā	—	-
875	*skt Guṭakā 31*	Devaśastraguru puja	—	—
876	*skt Guṭaka 32*	Devaśastraguru puja	—	—
877	*skt Guṭaka34*	Devasastraguru puja	—	—
878	*skt Guṭakā 39*	Devaśāstraguru pujā	—	—
879	*skt Guṭakā 7*	Devaśastraguru pūjā (Sammuccaya)	-	—
880	*skṭ Guṭakā 21*	Devaśāstraguru pūjā (Bṛhat)	—	—
881	*skt Guṭakā 22*	Devaśāstraguru pūjā (Bṛhat)	—	—

(*Pujā pāṭha Vidhāna etc*)

6	7	8	9	10	11
P	D skt Poetry Ap	19 6×15 2 up to 27 20 15	C	Good 1842 V S	—
P	D skt Poetry Hindi	21 5×16 4 up to 19 18 21	C	Good	—
P	D skt Poetry Hindi	34 4×20 9 up to 12 13 45	C	Good	—
P	D skt Poetry	17 7×15 8 upto 9 15 24	C	Good 1928 V S	See No 820 for colophon
P	D skt Poetry Ap	16 4×13 9 upto 10 12 20	C	Good 1943 V S	—
P	D skt Poetry	15 2×13 9 upto 7	C	Good 1826 U S	—
P		13 9×9 5 upto 12 8 17	C	Good	—
P		12 7×7 6 upto 97 7 20	C	Good 1871 V S	—
P		17 7×12 7 upto 27 10 21	C	Good 1918 V S	—
P	,	20 3×17 1 upto 8 15 26	C	Good 1954 V S	—
P		20 3×15 2 upto 8 20 20	C	Good	—
P		19 6×16 4 upto 10 15 23	C		—
P		18 9×16 4 upto 17 13 30	C		—

Dig Jain Saraswatı Bhandar Naya Mandir Dharmapura, Delhi

1	2	3	4	5
882	*skt Guṭakā 26*	Devaśastraguru puja (Brhat)	—	—
883	*skṭ Guṭaka 39*	Devaśāstraguru puja (Brhat)	—	—
884	*skt Gu akā 57*	Devaśastraguru puja (Brhat)	—	—
885	*skt Gutaka 52*	Devaśastraguru-puja (Brhat)	—	—
886	*skt Gutaka 55*	Devasastraguru puja (Brhat)	—	—
887	*ṛ 12 (ka)*	Dharmacakra puja	—	—
888	*skt Gutaka 14*	Dharmacakra puja	—	—
889	*Gutakā 38*	Dharā vıdhana	—	—
890	*ṛ 6 (ka)*	Dhvajaropana vıdhı	—	—
891	*Guṭaka 34*	Dhvajaropana vıdhı	—	—
892	*ṛ 48 (ka)*	(Dvadaśa vrata mandlo-dyāpana pujā	Bhaṭṭaraka Devendra kırtı	—
893	*skt Gutaka 2*	Gaṇadhara pujā	—	—
894	*ṛ 36 (ka)*	Gaṇadhara valaya puja	Bhaṭṭraka Prabhā candra	—

(Pujā pāṭha Vidhānā etc)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	18 9×16 4 upto 11 13 25	C	Good	—
P		15 8×14 4 upto 12 10 20	C		—
P		20 3×17 1 upto 16 15 20	C		See Hindi Pujā also
P		15 2×13 3 upto 40 9 15	C		—
P		35×18 9 upto 9 15 42	C	,	—
P		26×15 2 13 12 32	C		Unpublished
P	,	20 9×15 2 upto 42 17 30	C		—
P		15 8×13 9 upto 14 15	Inc		—
P		33 6×20 3 13 10 36	C		—
P		17 7×14 6 16 14 25	Inc		—
P		26 6×15 2 16 12 34	C	,,	—
P		31×14 6 upto 179 11 41	C	,	—
P		25 4×15 2 upto 69 7 12 31	C		—

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura, Delhi

1	2	3	4	5
895	*skt Gutaka 14/4*	Ganadhara valaya puja	Bhaṭṭarak Prabhā Chandra	—
896	*skt Guṭakā 14/15*	Ganadhara valaya puja		—
897	*skt Gutaak 15*	Ganadhara valaya pu a	Śuddhisāgara	—
898	*r 43 (ka)*	Gandhakuti puja Saṭika	Pt Āśadhara	—
899	*skt Gutaka 10*	Gangadi pujasṭaka	Śaha Lohata	—
900	*Loose pp Gutaka 53*	Ghaṇṭakarṇa mantra	—	—
901	*r 56 (ka)*	Gommaṭasara puja	—	Hindi ṭika by Todarmala
902	*r 55 (ga)*	Gommaṭasara puja	—	—
903	*skt Gutaka 7*	Guru puja	Brahma Jinadasa	—
904	*skt Gutakā 10*	Guru puja		—
905	*skt Guṭakā 13*	Guru puja (Muniśvara puja)		—
906	*skt Guṭaka 19*	Guru puja (Muniśvara puja		—
907	*skt Gutaka 27*	Guru puja		—

(Pūja pāṭha, Vidhāna etc)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	20 9×15 2 upto 52 17 30	C	Good	—
P		20 9×15 2 upto 192 17 30	C		—
P		21 5×11 3 upto 237 19 17	C	Good 1805 V S	—
P	,	27 9×11 3 20 6 35	C	Good 1717 V S	—
P	D Skt Poetry Hindi	23 4×15 8 upto 216 13 30	C		—
P		20 3×15 8 upto 8 19 22	C		—
P		18 9×16 4 8 12 21	C		Copy size
P		20 3×17 2 upto 18 11 24	C	—	
P	,	20 3×15 2 upto 20 20 20	C	,	
P	,,	23 4×15 8 upto 202 13 30	C		—
P		21 5×16 4 upto 30 18 21	C	Good 1763 V S	—
P	,,	19 6×15 2 upto 39 17 17	C	Good	—
P		15 2×13 9 upto 16 13 30	C	Good 1826 V S	—

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
908	skt *Gutka 36*	Guru puja		—
909	skt *Gutkā 19*	Guru puja (Dvitiya)	—	—
910	skt *Gutakā 10*	Gurvavali pujā (Maharsi-paryupasana Vidhana)	—	—
911	skt *Gutaka 10*	Hemajhāri jina pujastaka	Bhaṭṭaraka Visva bhusaṇa	—
912	skt *Gutka 14*	Homa puja (Dvitiya)	—	—
913	skt *Gutaka 14*	Homa puja Vastu puja	—	—
914	*Gutakā 34 II*	Homa Vidhi	Bhaṭṭaraka Indra nandi Ekasandhi	—
915	*r 15 (ka)*	Indradhvaja puja	Bhaṭṭaraka Visva bhusaṇa S/oViśala kirti	—
916	*r 15 (kha)*	Indradhvaja puja		—
917	*kt Guṭaka 2*	Jalayatra Vidhana	—	—
918	*r 13 (ka)*	Jambudvipa puja	Jinadāsa D/o Lakṣa misagara	—
919	*r 13 (kha)*	Jambudvipa puja	—	—
920	skt *Gutakā ?*	Jambudvipa puja	—	—

(Pujā pāṭhā Vidhāna etc)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry Hindi	19 6×17 1 upto 3 13 20	C	Good 1978 V S	—
P		19 6×15 2 upto 41 17 17	C	Good	—
P		23 4×15 8 upto 204 13 30	C		—
P	D Skt Poetry	23 4×15 8 upto 213 13 30	C		—
P		20 9×15 2 upto 81 17 30	C		—
P		20 9×15 2 upto 73 17 30	C		A map of Vastu racana is also given
P		16 4×15 2 upto 56 14 20	C		—
P	,	22 2×15 8 135 20 20	C	Good 1882 V S	Copy size Unpublished
P	,	33×15 2 89 12 53	C	Good	—
P		31×14 6 upto 193 17 14	Inc		
P		20 3×19 6 27 18 25	C		Copy size
P		26 6×12 7 29 10 38	C		—
P	,,	31×15 2 upto 56 11 41	C		Also called जम्बूद्वीपाष्टसप्तत्यकृत्रिमजिनालया परातीतवर्तमानागत जिनपूजा

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir, Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
921	*skt Gutakā 2*	Jambudvipa pujā	Jinadāsa	—
922	*skt Gutaka 5*	Jambudvipa puja		—
923	*skt Gutka 2*	Javaraka vidhi (Ankuraropaṇavidhi)	—	—
924	*ṛ 34 (ka)*	Jinaguṇa sampatti puja	—	—
925	*ṛ 34 (kha)*	Jinaguṇa sampatti puja	—	—
926	*skt Guṭaka 5*	Jinaguṇa sampatti puja (Laghu)	—	—
927	*skt Gutaka 22*	Jinaguna sampatti puja	—	—
928	*Gutaka 21*	Jina pujasṭaka (Laghu)	Pt Āśādhara	—
929	*skt Gutakā 4*	Jinendra ksetrapala puja	Jinadatta	—
930	*ṛ 7 (ka)*	Kalaśārohṇa vidhi	—	—
931	*skt Guṭakā 10*	Kalikuṇda parśvanatha puja	—	—
932	*skt Gutaka 47*	Kalikuṇda parśvanatha pūja	—	—
933	*skt Gutaka 38*	Kalikuṇda pārśvanatha puja	—	—

(Pūjā pātha Vidhāna etc)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	20 3×12 7 upto 57 15 18	C	Good 1860 V S	—
P		*23 4×13 9* upto 582 20 20	C	*Good*	*Copy size*
P		13 4×14 6 upto 192 11 41	C		—
P		26 6×14 6 7 12 34	C		Unpublished
P		24×12 7 6 11 30	C		—
P		23 4×13 9 upto 277 20 20	C	Good 1814 V S	—
P		18 9×13 3 upto 25 13 25	C	Good	—
P		21 5×15 2 upto 61 14 28	C		—
P		23 4×22 8 upto 8 13 30	C		=
P		33 6×20 3 6 10 35	C		Unpublished
P		234×15 8 upto 232 13 30	C		—
P		20 9×13 9 upto 51 16 20	C		—
P		15 8×13 9 upto 21 12 22	C	,	—

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
934	*skt Gutakā 2*	Kalıkuṇda puja	—	—
935	*skt Guṭakā 2*	Kalıkuṇda puja	—	—
936	*skt Gutakā 13*	Kalıkuṇda puja	–	–
937	*skt Gutakā 14*	Kalıkuṇda puja	—	—
938	*skt Gutakā 39*	Kalıkuṇda pūja	—	—
939	*skt Gutaka 7*	Kalıkunda puja	—	–
940	*skt Gutaka 13*	Kalıkunda puja	—	
941	*skt Gutaka 42*	Kalıkuṇda puja	–	—
942	*skt Guṭaka 63*	Kalıkunda puja	—	—
943	*Guṭakā 25*	Kalıkuṇda puja	—	
944	*Gutakā 15*	Kalıkunda puja	-	–
945	*skt Guṭaka 10*	Kanakakumbha pujasṭaka		—
946	*r 11 (ka)*	Karmadahana puja	Bhaṭṭāraka Śubha Candra not mentioned in the Ms	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	31×14 6 upto 133 11 41	C	Good	—
P	D Skt Poetry Pra	35 5×20 3 6 11 13	C		Register size
P	D Skt Poetry	21 5×16 4 upto 63 18 21	C	Good 1763 V S	—
P	D Skt Poetry Ap	20 9× 15 2 upto 191 17 30	C	Good 1777 V S	—
P	D Skt Poetry	20 3×17 1 upto 12 15 26	C	Good 1945 V S	See S No 878 for colophon
P		20 3×15 2 upto 60 20 20	C	Good	—
P		22 8×18 9 upto 27 20 25	C		—
P	D Skt Poetry Ap	16 4×11 3 upto 25 8 20	C		—
P	D Skt Poetry	15 8×13 9 upto 45 12 22	C		—
P		15 8×13 7 upto 135 14 20	C		—
P		20 9×16 4 upto 13 18 20	C		—
P		23 4×15 8 upto 211 13 30	C		—
P	,	30 4×12 7 15 8 48	C	Good 1959 V S	Unpublished

1	2	3	4	5
947	*ţ 11 (kha)*	Karmadahana puja	—	—
948	*ţ 11 (ga)*	Karmadahana pu a	—	—
949	*skt Gutaka 3*	Karmadahana puja	Bhaţţaraka Śubha candra	—
950	*skt Gutaka 2*	Karmadahana puja		—
951	*skt Gutaka 5*	Karmadahana puja		—
952	*skt Gutaka 15*	Karmadahana puja		—
953	*skt Gutaka 25*	Karmadahana puja		—
954	*skt Guţakā 14*	Karmaksapana puja	-	—
955	*skt Gutakā 7*	Ksamavanı puja	—	—
956	*skt Gutaka 47*	Ksamavani puja	Narendrasena Paṇḍıtacarya	—
957	*skt Gutakā 9*	Ksamavaṇı puja		—
958	*Guıakā 38*	Ksamavanı puja		—
959	*Gutaka 28*	Ksamavanı puja		—

(Pujā-pāṭha Vidhana etc)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	26 6×15 2 16 12 35	C	Good	Unpublished
P		26 6×12 7 15 10 40	C	Good 1841 or 1861 V S	
P		31×22 2 upto 25 27 34	C	Good	—
P		31×14 6 upto 75 11 41	C		Unpublished
P		23 4×13 9 upto 293 20 20	C	Good	Copy size
P		21 5×11 3 upto 165 19 17	C	Good 1805 V S	—
P		20 3×15 2 upto 107 18 20	C	Good	—
P		20 9×15 2 upto 179 17 30	C	Good 1770 V S	Unpublished
P		20 3×15 2 upto 63 20 20	C	Good	—
P	D Skt poetry Hindi	20 9×13 9 upto 96 16 20	C	Good	—
P		17 7×17 7 upto 57 11 30	C		—
P	D Skt Poetry	15 8×13 9 upto 71 14 15	C		—
P		15 8×13 9 upto 127 14 20	C	,	—

1	2	3	4	5
960	*Gutakā 15*	Ksamavanı puja	Narendrasena Pandıtacarya	—
961	*Gutakā 25*	Ksamavanı puja		—
962	*Gutakā 31*	Ksamavanı puja		—
963	*Gutaka 63*	Ksetrapala puja	—	—
964	*Gutaka 47*	Ksetrapala puja	—	—
965	*Gutakā 4*	Ksetrapala puja	—	—
966	*Gutakā 4*	Ksetrapala puja (Dvıtıya)	—	—
967	*Gutakā 23*	Ksetrapala puja (Dvıtıya)	Udayacandra	—
968	*Gutaka 10*	Ksırajalanıdhı puja (Parśvanatha puja)	—	—
969	*Gutaka 10*	K ırodhanı pujaṣṭaka	Abhayacandra	—
970	*r 3 (kha)*	Laghu Abhısekapaṭha puja	Lalacandra Vınodı	—
971	*r 21 (ka)*	Laghu Anantavrata vıdhı	Jınadasa	—
972	*r 21 (kha)*	Laghu Anantavrata vıdhı		—

(*Pūja pāṭha, Vidhāna etc*)

6	7	8	9	10	11
P	D skt Poetry	21 5×11 3 up to 91 19 17	C	Good 1805 V S	Unpublished
P		20 3×15 2 up to 49 18 20	C	Good	—
P	D Skt Poetry Ap	13 9×9 5 up to 98 8 17	C		—
P		15 8×13 9 up to 3 13 20	C		—
P		20 9×13 9 up to 120 16 20	C		—
P	D Skt Poetry	23 4×22 8 up to 22 13 30	C		—
P		23 4×22 8 up to 8 13 30	C		—
P	D Skt Poetry Hindi	19 6×15 2 up to 28 20 15	C	Good 1842 V S	—
P		23 4×15 8 up to 221 13 30	C	Good	—
P		23 4×15 8 up to 214 13 30	C	,	—
P		20 3×15 8 7 14 30	C		Copy size See SN 777 also
P	D Skt Poetry	30 4×13 9 4 13 52	C		Unpublished
P		24×12 7 5 14 41	C		,

1	2	3	4	5
973	*sk Gutaka 10*	Malınavastvastaka	—	—
974	*r 38 (ka)*	Meghamalavratodyapana		—
975	*r 38 (kha)*	Meghamalavratodyapana	—	—
976	*r 40 (ka)*	Muktavalı vratodyapana	—	—
977	*skt Guṭaka 7*	Nandı samgha gurvavalī	—	—
978	*skt Gutaka 8*	Nandı samgha gurvavalı	—	—
979	*skt Gutaka 29*	Nandı samgha gurvavalı	—	—
980	*r 35 (ka)*	Nandıśvara panktı pujā	—	—
981	*r 35 (kha)*	Nandıśvara panktı pujā	—	—
982	*r 35 (ga)*	Nandıśvara panktı puja	—	—
983	*r 57 (ka)*	Nandıśvara paṅktı puja	—	—
984	*skt Guṭaka 27*	Nandıśvara pujā	—	—
985	*Guṭakā 14*	Nandıśvara puja	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	23 4×15 8 up to 210 13 30	C	Good	—
P		26×15 2 3 12 34	C		Unpublished
P		25 4×12 7 4 9 38	C	Good 1863	
P		25 4×15 2 3 12 32	C	Good	
P		24 7×11 3 up to 106 9 36	C	Good 1587 V S	51 ślokas See S N 910 for colophon
P		21 5×17 7 up to 15 16 27	C	Good	See S N 694 and 910 for colophon
P		16 4×11 3 up to 134 17 14	C		80 ślokas See S N 910 also
P		26×12 7 12 10 40	C		—
P		24 7×10 7 13 10 40	C		—
P		26×12 7 upto 47 8 10 33	C		—
P		25 4×12 8 10 40	C		—
P	D Skt Hindi Poetry	15 2×13 9 upto 30 13 30	C	Good 1826 V S	—
P	D Skt Poetry	37 4×20 9 up to 26 13 45	C	Good	—

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
986	*r 16 (ka)*	Nandiśvara puja	Bha Viśvabhusaṇa S/o Vijayakirti	
987	*r 37 (ka)*	Nandisvara vratodyapana	—	–
988	*r 39 (ka)*	Nandisvar dyapana vidhi (Asṭahnika udyapana)	Jñanas igara D/o Candrakirti	–
989	*r 47 (ka)*	Navagraha puja	—	
990	*skt Gutaka 14*	Navagraha puja	—	
991	*skt Gutaka 10*	Neminatha pujasṭaka	—	
992	*skt Gutaka 13*	Nhavana vidhi	Abhayanandi	
993	*skt Gutaka /*	Nirvana puja	Udayakirti	
994	*skt Gutaka 9*	Nirvana puja		–
995	*skt Gutaka 4/*	Nirvana puja		
996	*Gutakā 25*	Nirvaṇa puja		
997	*Guṭaka 18*	Nirvana puja		–
998	*skt Gutakā 15*	Nirvana pujā		–

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	21 5×17 7 16 15 20	C	Good 1978 V S	Copy size Unpublished
P	D Skt Poetry	24×12 7 22 9 30	C	Good 1885 V S	Unpublished
P	D Skt Poetry	26×14 6 9 9 43	C	Good 1752 V S	,
P	D Skt Poetry	26×15 2 3 12 32	C	Good	—
P	D Skt Poetry	20 9×15 2 upto 67 17 30	C	Good 1770 V S	—
P		23 4×15 6 upto 219 13 30	C	Good	—
P		21 5×16 4 upto 60 18 21	C	Good 1763 V S	Copy Size
P	D Skt Poetry Ap	20 3×15 2 upto 57 20 20	C	Good	—
P		17 7×17 7 upto 48 11 30	C		—
P		20 9×13 9 upto 45 16 20	C		—
P		15 8×13 9 upto 138 14 20	C		—
P		24 3×17 7 upto 49 13 24	C		—
P		21 5×11 3 upto 83 19 17	C	Good 1805 V S	—

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
999	*skt Gutakā 16*	Nirvaṇa puja	Udayakirti	—
1000	*skt Gutakā 16*	Nirvāna puja		—
1001	*skt Gutakā 25*	Nirvaṇa puja		—
1002	*skt Gutaka 31*	Nirvaṇa puja		—
1003	*Gutaka 15*	Padmavati puja		—
1004	*skt Gutakā 4*	Padmavati puja		—
1005	*skt Gutakā 38*	Padmavati puja		—
1006	*r 31 (ka)*	Palya vidhana vratodya pana	Bhaṭṭaraka Ratna nandi	—
1007	*r 32 (ka)*	Palva vidhanodyapana	Śubhacandra	—
1008	*r 33 (ka)*	Pañca kalyaṇaka puja	Bhaṭṭaraka Śuddhisa gara	—
1009	*r 33 (kha)*	Panca kalyaṇaka puja		—
1010	*skt Gutaka 2*	Pañca kalyanaka puja	Megharaja D/o Gunakirti	—
1011	*skt Gutaka 12*	Pañca kalyanaka puja	Śribhusana	—

(Pūjā pāṭha, Vidhāna etc)

6	7	8	9	10	11
P	D skt Poetry Ap	17 7×15 8 up to 27 15 24	C	Good 1928 V S	See S No 840 for colophon
P		17 7×15 8 up to 72 15 24	C	Good 1928 V S	,
P		20 3×15 2 up to 51 18 20	C	Good	—
P		13 9×9 5 up to 120 8 17	C	,	—
P	D Skt Poetry	20 9×16 4 up to 10 18 20	C		—
P		23 4×22 8 up to 8 13 30	C		—
P		17 1×12 7 up to 173 12 22	C	Good 1668 V S	—
P		27 3×13 3 8 10 40	C	Good 1711 V S	Grantha Samkhya 1801 Unpublished
P		26 6×15 2 9 12 32	C	Good	Unpublished
P		27 9×13 9 18 10 40	C		
P		26 6×14 6 18 12 34	C	,	,,
P		31 ×15 2 19 11 41	C		—
P		22 8×13 9 up to 31 11 25	C	,	—

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
1012	*skt Gutaka 25*	**Pañca kalyaṇaka puja**	–	—
1013	*Gutaka 37*	Pañca kalyaṇaka puja	Jñanasagar D/o Śasikirti	—
1014	*skt Guṭakā 15*	Panca kalyanaka puja	Śribhusana	—
1015	*skt Guṭaka 25*	**Pañca kalyaṇaka puja**		—
1016	*r 25 (ka)*	Pañcamasa caturdasi vratodyapana	Bh Su endrakirti 1848 V S	—
1017	*r 25 (kha)*	Pañcamasa caturdasi vratodyapana		—
1018	*skt Gutaka 5*	Pañcameru jayamala	—	—
1019	*r 35 (ga)*	Pañcameru puja	Indrakirti	—
1020	*skt Gutakā 14*	**Pañcameru puja**	Bhudharadasa	—
1021	*Gutakā 29*	**Pañcameru puja**		—
1022	*Gutakā 25*	**Pañcameru pujā**	—	—
1023	*skt Guṭakā 47*	**Pañcameru puja**	—	—
1024	*skt Gutakā 15*	**Pañcameru puja**	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	15 8×13 9 upto 188 14 20	C	Good	Unpublished
P		21 5×15 2 17 to 25 18 20	Inc	Good 1841 or 1861 V S	First 16 pages are missing
P		21 5×11 3 upto 125 19 17	C	Good 1805 V S	—
P		20 3×15 2 upto 84 18 20	C	Good	—
P		25 4×15 2 6 12 33	C		Unpublished
P		24 12×7 6 9 36	C	Good 1863 V S	
P	D Ap poetry	20 3×15 2 upto 132 18 20	C	Good	For colophon see S N 295
P	D Skt Poetry	26 12×7 34 to 40 10 33	C		—
P	D Skt Poetry Hindi	37 4×20 9 upto 24 13 45	C		—
P		18 9×15 8 upto 30 12 22	C		—
P	D Skt Ap Poetry	15 8×13 9 upto 100 14 20	C		—
P		20 9×13 9 upto 31 16 20	C		—
P	D Skt Poetry	21 5×11 3 upto 81 19 17	C	Good 1805 V S	See S No 284 for colophon

1	2	3	4	5
1025	*skt Gutaka 19*	Pañcameru puja	—	—
1026	*skt Gutakā 25*	Pañcameru puja	Śrībhusaṇa	—
1027	*skt Gutaka 27*	Pañcameru puja	Bhudharadasa	—
1028	*skt Gutakā 39*	Pañcameru puja	—	—
1029	*r 41 (ka)*	Pañcamīvrata pujā (Pañcamī prosadhodyapana)	Harśakīrti D/o Ramakīrti	—
1030	*r 41 (kha)*	Pañcamīvrata puja (Pañcmī prosadhodyapana)		—
1031	*r 42 (ka)*	Pañcamī vratodyapana	—	—
1032	*r 25 (ka)*	Pancaparameṣṭhi guṇa mala	Bhaṭṭaraka Śubha candrakīrti	—
1033	*r 53 (ka)*	Pañcaparameṣṭhi puja	Yaśonandi or Jñanabhūsaṇa 1621 V S	—
1034	*r 54 (ka)*	Pañcaparameṣṭhi puja	Bhaṭṭraka Śubha candra 1608 V S	—
1035	*Guṭakā 8*	Pañcaparameṣṭhī puja		—
1036	*skt Guṭakā 15*	Pañcaparameṣṭhi puja	—	—
1037	*skt Gutakā 10*	Pañcaparameṣṭhī pūja	—	—

(Pūjā pāṭha Vidhāna etc)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry Hindi	19 6×15 2 upto 51 17 17	C	Good	—
P	D Skt Poetry	20 3×15 2 upto 142 18 20	C	Good	For colophon See S N 295
P	D Skt Poetry Hindi	15 2×13 9 upto 27 13 30	C	Good 1826 V S	For colophon See S N 297
P	D Skt Poetry Ap	20 3×17 1 upto 18 15 26	C	Good 1945 V S	—
P	D Skt Poetry	24×12 7 6 12 45	C	Good 1859 V S	—
P		26 6×15 2 7 12 38	C	Good	—
P		27 3×13 3 3 10 41	C	Good 1711 V S	—
P		70 3×15 2 upto 125 18 20	C	Good	For colophon See S N 295
P		29 1×13 3 41 10 33	C	Good 1878 V S	Published
P		26 6×15 2 22 12 35	C	Good	Unpublished
P		25 4×11 3 29 10 30	C		—
P		21 5×11 3 upto 208 10 17	C	Good 1805 V S	For colophon See S N 293
P		23 4×15 8 upto 223 13 30	C	Good	—

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
1038	*r 45 (ka)*	Pratimasanta caturdasi Vratodyapana vidhi	Aksayarama 1800 V S	—
1039	*r 45 (kha)*	Pratimasanta caturdasi Vratodyapana vidhi		
1040	*r 4 (ka)*	Pratistha patha (Pratistha sara)	Vasuvindvacarya (Jayasenacarya)	—
1041	*r 4 (ka)*	Pratistha patha (Pratistha sara)		
1042	*r 5 (ka)*	Pratistha vidhi		
1043	*r 9 ka*	Pratistha sara samgraha	Vasunandi Siddhantika	—
1044	*r 9 (kha)*	Pratistha sara samgraha		—
1045	*r 10 (ka)*	Pujasara samuccaya	—	-
1046	*skt Gutaka 4*	Puja vidhana	—	—
1047	*r 9 (ka)*	Puspanjali puja	Ratanacandra Bhattaraka 1681 V S	-
1048	*r 9 (kha)*	Puspañjali puja		
1049	*skt Gutaka 2*	Puspanjali puja	Kanakakirti	—
1050	*skt Gutaka 25*	Puspanjali puja (Sudarśana puja)	—	—

(*Pūja pātha Vıdhāna etc*)

6	7	8	9	10	11
P	D skt Poetry	26 6×12 7 14 10 41	C	Good	Unpublıshed
P		26 6×13 9 11 13 40	C		
P		34 2×18 9 76 13 40	C	Good 1978 V S	Publıshed
P		36 7×20 3 66 13 48	C	Good 1975 V S	
P		23 4×15 8 45 13 30	C	Good	—
P		26 6×15 2 23 13 35	C		700 ślokas Unpublıshed
P		27 9×12 7 30 10 42	C	Good 1759 V S 1624 śaka	
P		20 9×15 2 107 13 28	C	Good	—
P		26 6×12 upto 7 11 37	C		—
P	,	29 1×13 9 5 13 56	C		Unpublıshed
P		24 7×12 7 9 9 33	C		—
P		31×14 6 upto 139 11 41	C		—
P		19 6×15 2 upto 40 20 15	C	Good 1842 V S	For colophon See No 294

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
1051	*skt Gutakā 23*	Puspañjali pujā	–	—
1052	*skt Gutaka 2*	Ratnakudikā mantra	—	—
1053	*skt Gutka 12*	Ratnatraya puja	–	
1054	*r 26 (ka)*	Ratnatraya puja	—	–
1055	*r 26 (kha)*	Ratnatraya puja	—	–
1056	*r 28 (ka)*	Ratnatraya puja	–	—
1057	*r 29 (ka)*	Ratnatraya puja	—	–
1058	*skt Gutaka 14*	Ratnatraya puja	Mahacandra	—
1059	*skt Gutakā 7*	Ratnatraya puja	Narendrasena Panditacārya	–
1060	*skt Guṭaka 47*	Ratnatraya puja		—
1061	*skt Gutakā 63*	Ratnatraya puja		—
1062	*Prakirnaka Gutaka 25*	Ratnatraya puja		-
1063	*skt Guṭaka 38*	Ratnatraya puja		-

(Pūjā pāṭha Vidhāna etc)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	19 6×15 2 upto 70 20 15	C	Good	For colophon see S No 294
P	D skt Poetry Ap	31×14 6 upto 118 11 41	C		—
P	D Skt Poetry	22 8×13 9 upto 76 13 28	C		—
P		24 7×12 7 13 9 35	C		Unpublished
P		26 6×12 7 14 10 37	C		
P		26 12×7 16 9 40	C		
P	D Skt Poetry Ap	26 6×15 2 7 12 35	C		
P	D skt Poetry	37 4> 20 9 upto 33 13 45	C	—	—
P		20 3×15 2 upto 38 20 20	C		—
P		20 9×13 9 upto 79 16 20	C		—
P		15 8×13 9 upto 81 12 22	C	,	—
P	,	15 8×13 9 upto 121 14 20	C		—
P		15 8×13 9 upto 60 14 15	C		—

1	2	3	4	5
1064	*skt Gutka 10*	Ratnatraya puja		—
1065	*skt Gutka 13*	Ratnatraya puj ı	-	—
1066	*sl t Gutal a 15*	Ratnatıavı puja	—	—
1067	*skt Gutaka 17*	Ratnatraya puja	—	
1068	*skt Gutka 23*	Ratn ıtraya vıdh ına	Narendrasena Panditacarya	-
1069	*sl t Gutaka ?3*	R ıtnatıa\ a vıdhana		—
1070	*skt Gutal a ?5*	R ıtn ıtra\a vıdhana	Narendrasen ı Paṇḍıta ırya	—
1071	*skt Gutaka 27*	Ratnatra\ a vıdhana	—	—
1072	*skt Gutal a 27*	Ratnatraya vıdhana	Dharmakit D/o Rısahadasa Nuhadasa	—
1073	*sl t Gutal a 31*	R ıtnatra\ a vıdhana	Narendrasena Panditacarya	—
1074	*sl t Gutaka 34*	Ratnatraya vıdhana (Arghya)	—	—
1075	*r 51 (ka)*	Rsımandala puja	—	—
1076	*skt Gutaka 2*	Rsımaṇḍala p ıja	—	—

(Pujā pāṭha Vidhana etc)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	23 4×15 8 upto 173 13 30	C	Good	—
P		21 5×16 4 upto 38 18 21	C	Good 1763 V S	For colophon See S No 292
P		21 5×11 3 upto 50 19 17	C	Good 1805 V S	
P		17 7×15 2 upto 13 to 29 9 24	C	Good 1948 V S	
P		19 6×15 2 upto 66 20 15	C	Good 1842 V S	For colophon see S No 294
P		19 6×15 2 upto 94 20 15	C	Good 1842 V S	
P		20 3×15 2 upto 51 18 20	C	Good	For colophon see S No 295
P	D Skt Poetry Ap	15 2×13 9 upto 25 13 30	C	Good 1826 V S	For colophon see S No 297
P	D skt Poetry	15 2×13 9 upto 85 13 30	C	Good 1826 V S	
P		13 9×9 5 upto 78 8 17	C	Good	—
P		17 7×12 7 upto 38 10 21	C	Good 1918 V S	For colophon see S No 300
P		23 4×11 3 6 7 41	C	Good 1890 V S	—
P	,	31×14 6 upto 153 11 41	C	Good	—

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura, Delhi

1	2	3	4	5
1077	*skt Guṭakā 14*	Rsimaṇdala vidhi	Viru Kavi	—
1078	*ṛ 14 (ka)*	Sahasra guṇita puja	Śubhacandra	—
1079	*ṛ 10 (ka)*	Sahasra nama puja (Bṛhat)	Dharmabhusaṇa	—
1080	*No 6*	Sahasra nama puja (Bṛhat)		—
1081	*Guṭaka 21*	Sakalikaraṇa vidhana	—	—
1082	*skt Gutaka 2*	Sakalikaraṇa vidhana	—	—
1083	*skt Gutaka23*	Sakalikarana vidhana	—	—
1084	*ṛ 2 (ka)*	Samavasaraṇa paṭha	Rupacandra 1692 V S	—
1085	*skt Gutakā 3*	Samavasarana paṭha (Samavaśruti puja)	Bhaṭṭāraka Kamalakirti	—
1086	*skt Gutaka 5*	Samavasarana paṭha (Samavasruti puja)		—
1087	*No 31*	Samāyika paṭha with Hindi tika	—	—
1088	*skt Gutaka 8*	Sankaṭahara pārśva nathasṭaka	—	—
1089	*ṛ 44 (ka)*	Śanticakra puja	—	—

(Puja pāṭha Vidhānā etc)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	20 9×15 2 upto 187 17 30	C	Good 1770 V S	—
P		26×14 6 39 13 32	C	Good	Uupublished
P		26 6×15 2 63 14 38	C		
P		27 3×15 2 27 1 40	Inc		
P		21×5 15 2 upto 57 14 28	C		—
P		31×14 6 upto 194 11 41	C		—
P		19 6×25 2 upto 54 20 15	C		For colophon see S N 294
P		27 9×13 9 68 15 43	C	Good 1861 V S	Unpublished
P		31×22 2 18 27 32	C	Good	825 ślokas
P		23 4×13 9 upto 168 20 20	C		Copy-size
P	Pr Prose Hindi Gujarati	26 6×10 7 84 10 32	Inc	Good 1749 V S	—
P	D skt Poetry	21 5×17 7 upto 16 16 27	C	Good	—
P		24×12 7 5 9 35	C	,	See S N 1090 also Unpublished

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
1090	*skt Gutaka 2*	Śānticakra puja	—	—
1091	*Gutakā 53*	Śantidhara paṭha		—
1092	*r 13 (ka)*	Śantidhara paṭha Gadyadhara	—	—
1093	*r 8 (la)*	Śantidhara paṭha	—	—
1094	*r 8 (la)*	Śantidhara paṭha		
1095	*skt Gutakā 4*	Śanti paṭha		—
1096	*skt Gutakā 22*	Śanti paṭha	—	—
1097	*Gutaka 25*	Śānti paṭha	—	—
1098	*No 40*	Santi paṭha	—	—
1099	*skt Gutaka 34*	Śanti paṭha	—	—
1100	*skt Gutaka 31*	Śanti paṭha	—	
1101	*skt Gutaka 27*	Śanti paṭha	—	—
1102	*skt Gutaka 13*	Śanti patha	—	—

(Pūja pātha Vidhāna etc)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	31×14 6 up to 49 11 41	C	Good	See S N 1143 also Unpublished
P		20 3×15 8 upto 47 19 20	C		–
P	D Skt Prose	17 7×15 2 10 18 25	C		Copy size
P	D Skt Poetry	27 3×17 7 4 12 30	C	Good 1945 V S	—
P		34 2×20 3 2 15 50	C	Good	—
P		26 6×12 up to 10 11 37	Inc		Published
P		18 9×16 4 up to 50 12 30	C		
P		15 8×13 9 upto 145 14 20	C		
P		15 8×15 2 upto 7 11 30	Inc		
P		17 7×12 7 upto 38 10 21	C	Good 1918 V S	For colophon, See S N 291
P		13 9×9 5 upto 85 8 17	C	Good	—
P		15 2×13 9 upto 12 13 30	C	Good 1826 V S	For colophon See S N 288
P		21 5×16 4 up to 61 18 21	C	Good 1763 V S	For colophon See S N 283 Copy size

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
1103	*skt Guṭaka 7*	Śanti visarjana paṭha	—	—
1104	*skt Gutakā 20*	Śanti visarjana paṭha		--
1105	*skt Gutaka 21*	Śanti visarjana paṭha	-	—
1106	*sl t Gutaka 26*	Śanti visarjana paṭha	—	—
1107	*skt Gutakā 39*	Śanti visarjana paṭha	—	
1108	*skt Gutaka 48*	Śanti visarjana paṭha	—	–
1109	*skt Gutaka 57*	Śanti visarjana paṭha	—	–
1110	*Guṭakā 29*	Śanti visarjana paṭha	—	-
1111	*skt Gutaka 33*	Śanti visarjana paṭha	—	
1112	*skt Guṭaak 53*	Śanti visarjana paṭha	—	—
1113	*Guṭakā 14*	Śanti visarjana paṭha	—	—
1114	*skt Gutakā 54*	Śānti visarjana pāṭha	—	—
1115	*skt Gutaka 36*	Śanti visarjana paṭha	—	—

(Pūjā-pāṭha, Vidhāna etc)

6	7	8	9	10	11
P	D skt Poetry	20 3×15 2 up to 10 20 20	C	Good	—
P		20 3×15 2 up to 41 13 25	C	Good 1953 V S	—
P		19 6×16 4 up to 23 15 23	C	Good	—
P		18 9×15 2 up to 18 13 25	C		—
P		15 8×14 6 up to 25 10 20	C	,,	—
P		20 9×13 3 up to 38 11 32	C	Good 1893 V S	—
P		20 3×17 1 up to 32 15 25	C	Good	—
P		18 9×15 8 upto 38 12 22	C		—
P		17 7×15 2 up to 19 13 24	C		—
P		20 3×15 8 up to 10 19 22	C		—
P		37 4×20 9 upto 51 13 45	C		—
P		33 ×18 9 up to 23 15 42	C		—
P		20 3×16 4 up to 14 14 17	C		—

1	2	3	4	5
1116	*skt Gutaka 10*	Śanti visarjana paṭha	—	—
1117	*skt Gutakā 16*	Śanti visarjana paṭha	—	—
1118	*skt Gutakā 39*	Santi visarjana paṭha	—	—
1119	*r 5 (ka)*	Sapta paramasthana vrata puja	—	
1120	*skt Gutaka 15*	Saptarsi puja	Śribhusana	
1121	*skt Guṭakā 25*	Sapatarsi puja		
1122	*skt Gutaka 39*	Sapatarsi puja	—	
1123	*skt Gutaka 9*	Sarasvati puja (Śrutaskandha puja)	Śrutasāgara D/o Mallibhusaṇa	—
1124	*r 55 (ka)*	Sarasvati puja (Śrutaskandha puja)		—
1125	*r 55 (kha)*	Sarasvati pūja (Śrutaskandha puja)		
1126	*r 55 (ga)*	Sarasvati puja (Śrutaskandha pujā		—
1127	*skt Guṭaka 2*	Śastra puja	Malayakirti D/o Vijayakirti	—
1128	*skt Gutakā 5*	Śastra puja		—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	23 4×15 8 upto 162 13 30	C	Good	15 ślokas
P		17 7×15 8 17 to 44 15 24	C	Good 1928 V S	16 Ślokas
P		20 3×17 1 upto 15 15 26	C	Good 1954 V S	For colophon see S No 878
P		26×15 2 6 12 30	C	Good	—
P		21 3×11 3 upto 145 19 17	C	Good 1805 V S	
P		20 3×15 2 upto 90 18 20	C	Good	For Śrıbhusaṇa See S No 818
P	D Skt poetry Ap	20 3×17 1 upto 14 15 26	C		
P	D Skt Poetry	23 4×15 8 up to 2 13 30	C		
P		20 3×15 8 14 13 22	C	Good 1971 V S	
P		20 9×13 4 10 13 20	C	Good	Copy size
P		20 3×17 7 11 11 24	C		
P		30 4×15 8 upto 39 10 30	C		Author is not mentioned but Pt Parmanand writes Malayakirti D/o Vijayakirti See S N 714 also
P		25 4×11 3 upto 14 9 40	C		

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
1129	*skt Gutakā 7*	Śastra puja	Malayakirti D/o Bhattāraka vijayakirti	Jayamalā of Dyānata raya
1130	*skt Gutka 9*	Śāstra pūja	Malayakirti	—
1131	*skt Gutka 47*	Śastra puja (Aṣṭāhnika udyapana)		—
1132	*skt Gutka 64*	Śastra puja		—
1133	*Gutakā 25*	Śastra puja		—
1134	*skt Gutaka 21*	Śastra puja (Srutapuja or Sarasvati stavana)	Pt Āśadhara	
1135	*skt Gutaka 13*	Śastra puja	—	
1136	*skt Gutaka 16*	Śāstra puja	Nemidatta	—
1137	*skt Guṭaka 19*	Śastra puja		—
1138	*skt Gutaka 19*	Sāstra puja (Dvitiya)	—	
1139	*Gutakā 23*	Sastra puja	—	
1140	*skt Gutaka 25*	Sastra pūja	—	—
1141	*skt Guṭakā 27*	Sastra pūja	Jñanabhusana	

(Pūjā pātha Vidhāna etc)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry Hindi	20 3×15 2 upto 18 20 20	C	Good	–
P	D Skt Poetry	17 7×18 9 upto 45 11 30	C		
,		20 9×13 9 upto 40 16 20	C		
P		15 8×13 9 upto 90 12 22	C		–
P		15 8 13 9 upto 130 14 20	C		–
P		26 5× 15 2 upto 63 14 28	C		–
P		21 5 ×16 4 upto 51 18 21	C	Good 1773 V S	Copy size
P		17 7×15 8 upto 77 15 24	C	Good 1928 V S	–
P		19 6×15 2 upto 42 17 17	C	Good	
P		19 6×15 2 upto 44 17 17	C		–
P		19 6×15 2 upto 53 20 15	C	Good 1842 V S	
P		20 3×15 2 upto 49 18 20	C	Good	
P		15 2×13 9 upto 14 13 30	C	Good	—

1	2	3	4	5
1142	*skt Gutakā 31*	Śastrapuja	Malayakirti D/o Vijayakirti	—
1143	*skt Guṭaka29*	Siddhacakrapuja	Devendrakirti	—
1144	*r 52 (ka)*	Siddhacakra vidhana		—
1145	*r 3 (ka)*	Siddhacakra vidhana	Prabhacandra	—
1146	*Gutaka 34*	Siddha pratiṣṭhā	—	—
1147	*skt Gutaka 14*	Siddhapratiṣṭha vidhi	—	—
1148	*skt Gutaka 48*	Siddhapuja (Bhavaṣṭaka)	—	—
1149	*Patras 40*	Siddha puja (Bhavāṣṭaka)	—	—
1150	*skt Gutakā 9*	Siddha puja	Padmanandi	—
1151	*skt Guṭaka 22*	Siddha puja		—
1152	*skt Guṭaka 26*	Siddha puja		—
1153	*skt Gutaka 13*	Siddha puja		—
1154	*skt Gutaka 43*	Siddha puja		—

(Pūjā pāṭha Vidhāna etc)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	13 9×9 5 upto 84 8 17	C	Good	See S N 1127 to 1136
P	,	18 9×15 2 upto 118 19 22	C		V Imp
P		29 6×14 6 4 5 31	C		—
P		27 9×13 9 6 10 45	Inc		First page missing Unpublished
P	D Skt Poetry Ap	16 4×15 2 upto 47 14 20	Inc		–
P		20 9×15 2 upto 190 17 30	C		—
P	D, Skt Poetry Hindi	20 9×13 3 upto 35 11 32	C		-
P	D Skt Poetry	15 8×15 2 upto 7 11 30	C		—
P		17 7×17 7 upto 21 11 30	C		Published
P		18 9×16 4 upto 23 12 30	C		,
P	"	18 9×16 4 upto 15 13 25	C		
P		22 8×18 9 upto 10 20 25	C		,
P		17 1×11 3 upto 4 10 22	C	Good 1941 V S	

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
1155	*s t Gutakā 20*	Siddha puja	Padmanandi	—
1156	*skt Gutaka 21*	Siddha puja		—
1157	*skt Guta' a 50*	Siddha puja		—
1158	*skt Gutakā 47*	Siddha pujā		—
1159	*skt Gutaka 37*	Siddha puja		
1160	*skt Gutaka 41*	Siddha puja		
1161	*sl t Gut il a 59*	Siddl a puja		
1162	*skt Gut l a 57*	Siddha puja		—
1163	*skt Gut l a 63*	Siddha puja		—
1164	*skt Gutaka 25*	Siddha puja		
1165	*Gutakā 15*	Siddha pujā		—
1166	*Guṭaka 39*	Siddha pūja	,	—
1167	*Guṭakā 14*	Siddha pūja		—

(Pūja pātha Vidhāna etc)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	20 3×15 2 upto 14 13 20	C	Good	Published
P		19 6×16 4 upto 15 15 23	C		
P		16 4×10 7 upto 14 15 12	C		
P		20 9×13 9 upto 25 16 20	C		
P		14 1×13 9 upto 16 10 20	C		
P		17 7×12 upto 5 10 22	C	Good 1941 V S	
P		15 8×14 6 upto 16 10 20	C	Good	
P		20 3×17 1 upto 24 15 25	C		
P		15 8×12 7 upto 38 12 22	C		
P		15 8×13 9 upto 83 14 20	C		
P		20 3×16 4 upto 19 18 20	C	,	,
Inc	,	15 8×18 9 upto 14 12 24	C	,	First ten pages are missing
Inc		37 4×20 9 upto 14 13 45	C		Published

Dig Jain Saraswati Bhandar, Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
1168	*patras 36*	Sıddha pujā	Padmanandı	—
1169	*Gutakā 54*	Sıddha puja		—
1170	*Gutaka 55*	Sıddh ı puja		—
1171	*skt Gutaka 7*	Sıddha puja		
1172	*skt Guṭakā 5*	Sıddha pujā		—
1173	*skt Guṭaka 4 kha*	Sıddha puja		
1174	*skt Gutaka 2*	Sıddha pujā		
1175	*skt Guṭakā 6*	Sıddha puja		–
1176	*skt Gutaka 10*	Sıddha puja	,	—
1177	*skt Guṭaka 11*	Sıddha puja		—
1178	*skt Gutakā 13*	Sıddha puja	,	—
1179	*skt Guṭakā 15*	Sıddha pujā	,	—
1180	*skt Guṭaka 16*	Sıddha pujā		–

6	7	8	9	10	11
P	D, skt Poetry	20 3×16 4 upto 13 14 17	Inc	Good	Published
P		33×18 9 upto 15 15 42	C		
P		35 5×21 5 upto 11 15 42	C		
P		20 3×15 2 upto 13 20 20	C		
P		25 4×11 3 upto 8	C		
P		26 6×12 upto 9	C		
P		30 4×15 8 upto 35 10 30	C		,,
P		28 5×13 9 upto 31 10 30	C		
P		23 4×15 8 upto160 13 30	C		,
P		35 5×20 3 upto 7 11 13	C		For colophon see S N 291
P		21 5×16 4 upto 24 18 21	C	,,	, 292
P	,	21 5×11 3 upto 29 19 17	C		,, 293
P	,	17 7×15 8 upto 92 15 24	C		,, 820

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
1181	*skt Gutakā 18*	Siddha puja	Padmanandi	—
1182	*skt Gutaka 19*	Siddha pūja and Aṣṭaka		—
1183	*skt Gutaka 23*	Siddha puja —		
1184	*skt Gutaka 27*	Siddha puja		
1185	*skt Gutakā 29*	Siddha puja		
1186	*skt Gutaka 31*	Siddha puja		—
1187	*skt Gutaka 34*	Siddha puja		—
1188	*skt Gutaka 39*	Siddha puja		
1189	*skt Gutaka 63*	Siddha puja Jayamala	Visvasena	
1190	*skt Gutaka 21*	Siddha puja vidhana	Pt Āśadhara	
1191	*skt Gutakā 10*	Sitalaṅgā pujaṣṭaka	Yaśonandi	
1192	*skt Gutaka 10*	Snapanastava (Abhiseka pūja)	Keśavanandi	—
1193	*t 49 (ka)*	Snapana Vidhi	—	

(Puja patha, Vidhāna etc)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	18 9×15 2 upto 10 11 26	C	Good 1929 V S	For colophon see S No 856
P		19 6×15 2 upto 37 17 17	C	Good	—
P		19 6×15 2 upto 39 20 15	C	Good 1842 V S	For colophon see S No 294
P		15 2×13 9 upto 13 13 30	C		Published For colophon see S N 297
P		16 4×11 3 upto 139 17 14	C		Published
P		13 9×9 5 upto 18 8 17	C		
P		17 7×12 7 upto 34 10 21	C	Good 1918 V S	For colophon see S No 300
P		20 3×17 1 upto 10 15 26	C	Good 1954 V S	878
P	D Skt Poetry Ap	5 8×13 9 upto 40 12 22	C	Good	—
P	D Skt Poetry	21 5×15 2 upto 68 14 28	Inc		—
P		23 4×15 8 upto 215 13 30	C		—
P	D Skt poetry Hindi	23 4×15 8 upto 208 13 30	C		—
P	D Skt poetry	27 9×15 2 2 12 36	C		—

1	2	3	4	5
1194	skt *Guṭaka 14*	Snapana vidhi	—	—
1195	*skt Gutaka 7*	Ṣodaśakaraṇa pūjā	—	—
1196	*skt Guṭakā 47*	Ṣodaśakāraṇa pujā	—	—
1197	*skt Gutaka 63*	Ṣodasakarana pūjā	—	—
1198	*Guṭaka 25*	Ṣodaśakāraṇa puja	—	—
1199	*skt Gutakā 29*	Ṣodaśakāraṇa pūja	—	—
1200	*skt Gutakā 38*	Ṣodaśakārana pūja	—	—
1201	*Patras 14*	Ṣodaśakarana puja	—	—
1202	*skt Guṭaka 2*	Ṣodaśakarana pujā	—	—
1203	*skt Gutakā 10*	Ṣoḍaśakārana pujā	—	—
1204	*skt Guṭaka 13*	Ṣodaśakārana pūjā	—	—
1205	*skt Guṭakā 14*	Ṣodaśakaraṇa pujā	—	—
1206	*skt Guṭakā 15*	Ṣodaśakāraṇa pūjā	—	—

(Pūjā pāṭhā Vidhāna etc)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	37 4×20 9 upto 5 13 45	C	Good	—
P	D Skt Poetry Ap	20 3×15 2 upto 15 20 20	C		—
P	,,	20 9×13 9 upto 27 16 20	C		—
P		15 8×13 9 upto 42 12 22	C		—
P		15 8×13 9 upto 85 14 20	C		—
P		18 9×15 8 upto 18 12 22	C		—
P		15 8×13 9 upto 24 14 15	C		—
P	,	37 4×20 9 upto 22 13 45	C		—
P		31 ×14 6 upto 107 11 41	C		—
P		23 4×15 8 upto 166 13 30	C		—
P		21 5×16 4 upto 32 18 21	C	Good 1763 V S	For colophon see S No 292
P		20 9×15 2 upto 14 17 30	C	Good 1770 V S	—
P		21 5×11 3 upto 33 19 17	C	Good 1805 V S	For colophon see S No 293

1	2	3	4	5
1207	*skt Guṭakā 16*	Ṣodasa karaṇa puja	—	—
1208	*sl t Gutaka 23*	Ṣ daśa karaṇa puja	-	—
1209	*sl t Gutaka 27*	Ṣodaśa karana puja	—	—
1210	*s t Gutakā 27*	Sodasa karana puja	—	—
1211	*sl t Gutal ā 27*	Ṣodaśa karaṇa puja (Arghya)	—	—
1212	*l t Gutal ā 31*	Ṣodasa karana puja		—
1213	*sl t Gutal a 34*	Sodaśa karaṇa puja (Arghya)	—	—
1214	*r 23 (ka)*	Ṣodasa karana vratodyapana	Ācarva Keśavanandı 1964 V S	—
1215	*r 23 (ka)*	Ṣodaśa karaṇa vratodyapana		—
1216	*t Guṭal a*	Sukla pañcmı vratodyapana	-	—
1217	*skṭ Gutakā 10*	Surāpagādyasṭaka	—	
1218	*skt Gutaka 10*	Sv ıstıjana vidhana	—	—
1219	*skt Gutaka 3*	Trıṁśat caturvıṁśatı pūja	Śubhacandra Bhāva Śarma	—

(Pūjā pāṭha, Vidhāna etc)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry Ap	17 7×15 8 upto 64 15 24	C	Good 1928 V S	For colophon see S No 820
P		19 6×15 2 17 to 39 20 15	C	Good 1842 V S	294
P		15 2×13 9 upto 18 13 30	C	Good 1826 V S	297
P		15 2×13 9 upto 101 13 30	C	Good 1826 V S	, 297
P		15 2×13 9 upto 10 13 30	C	Good 1826 V S	297
P		13 9×9 5 upto 21 8 17	C	Good	—
P		17 7×12 7 upto 35 10 21	C	Good 1918 V S	For colophon see S No 300
P	D Skt Poetry	27 9×13 3 21 10 40	C	Good 1710 V S	Unpublished
P		26 6×14 6 19 12 35	C	Good	
P		26 6×13 9 upto 9 12 30	Inc		First page missing
P		23 4×15 8 upto 212 13 30	C		—
P		23 4×15 8 upto 205 13 30	C		—
P		31×22 2 upto 54 27 34	C		3400 ślokas Register size

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
1120	*Patra 15*	Triṁśat caturviṁśati pūja	Śubhacandra Bhava Śarma	—
1221	*skt Guṭakā 12*	Triṁśat caturviṁśatikā pūja	,	—
1222	*r 5 ka*	Triṁśat-caturviṁsatikā pūjā		—
1223	*skt Guṭakā 5*	Triṁśat caturviṁsatikā pūja		—
1224	*skt Gutaka 14*	Triṁśat caturviṁśatikā pujā	Pt Sādharaṇa	—
1225	*r 30 (ka)*	Tripañcaśat kriyā vratodyapana	Bhaṭṭaraka Devendra Kīrti 1616 V S	—
1226	*r 30 (kha)*	Tripañcāśat kriya vratodyāpana		—
1227	*r 30 (ga)*	Tripañcāśat kriyā vratodyapana	,	—
1228	*skt Gutakā 8*	Tripañcāśat kriyā vratodyāpana		-
1229	*skt Guṭaka 7*	Tirthaṅkara acāryānām Arghyaṇi	—	
1230	*Guṭakā 3/20*	Varddhamāna jina pañca kalyānaka	—	
1231	*r 12 (ka)*	Vasudhara-mahavidyā with ṭikā	—	-

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	27 3×15 2 upto 49 12 50	Inc	Good	First 13 pages are missing
P		28 3×13 9 upto 62 14 30	C		—
P		27 3×15 2 61 11 37	C		Grantha saṁkhyā 1500
P		23 4×13 9 upto 238 20 20	C		Copy-size 1550 ślokas
P		20 9×15 2 upto 139 17 30	C		—
P		26 6×15 2 8 12 32	C		Unpublished
P		25 4×15 2 8 12 30	C		
P		27 9×13 9 8 10 42	C		
P	,	21 5×17 7 upto 22 16 27	C		—
P		24 7×11 3 upto 169 9 36	C	Good 1587 V S	6 ślokas For colophon see S No 290
P		13 9×13 3 upto 86 13 20	C	Good	—
P	,	20 3×12 7 20 10 31	C	Good 1958 V S	Copy size, Unpublished

Dıg Jaın Saraswatı Bhandar Naya Mandır Dharmapura Delhı

1	2	3	4	5
1232	2 (*kha*)	Vedıpratısthā	—	—
1233	r 2 (*ga*)	Vedıpratısthā (Mandapapratıstha vıdhana)	—	—
1234	r 2 (*gha*)	Vedıpratısthā (Mandapapratıstha vıdhana)	—	—
1235	r 1 / a	Vedıpratıstha patha	—	
1236	*skt Gutaka 16*	Vıdehaksetra puja	Ha sakırtı	—
1237	*skt Gutaka 26*	Vıdeha pujā	—	—
1238	*skt Gutaka 8*	Vıghnahara parśvanathastaka	Bhattaraka Mahıcandra	
1239	*skt Gutaka 13*	Vımsatı tırthankara jına puja		
1240	*skt Gutaka 9*	Vımśatı tırthankara jına puja	—	
1241	*skt Gutaka 15*	Vımśatı tırthankara jına puja		
1242	*skt Gutakā 19*	Vımśatı tırthankara jına pūja		
1243	*skt Gutaka 23*	Vımśatı tırthankara jına puja	—	
1244	*skt Gutaka 28*	Vımśatı tırthaṅkara jına pūjā	—	—

(*Pūjā pāṭha, Vidhāna etc*)

6	7	8	9	10	11
P	D skt Poetry	34 2×16 4 10 14 44	C	Good 2442 V N S	Copy size Unpublished
P		30 4×17 7 10 9 33	C	Good 1973 V S	,
P		16 4×15 2 12 12 23	Inc	Good	
P		33 6×20 3 32 14 55	C		Unpublished
P	D skt Poetry Ap	17 7×15 8 upto 69 15 24	C	Good 1928 V S	—
P	D skt Poetry Hindi	18 9×16 4 upto 20 13 25	C	Good	--
P	D skt Poetry	21 5×17 7 upto 24 16 27	C		For colophon see No 302
P	D skt Poetry Hindi	22 8×18 9 upto 11 20 25	C		
P		17 7×17 7 upto 18 11 30	C		—
P	D skt Poetry	21 5×11 3 upto 87 19 17	C	Good 1805 V S	-
P	D skt Poetry Ap	19 6×15 2 upto 49 17 17	C	Good	Book size
P		19 6×15 2 upto 28 20 15	C	Good 1842 V S	—
P		18 9×12 7 upto 31 9 23	C	Good	—

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura Delhi

1	2	3	4	5
1245	*skt Gutakā 13*	Vimśati tirthankara jina puja	—	—
1246	*skt Gutaka 10*	Vimsati tirthaṇkara jina puja	Bhaṭṭa Narendra kirti D/o J[illegible]atakirti	—
1247	*r 46 (ka)*	Vimsati tirthaṇkara pujā	Devagaṇi D/o Badiśa	
1248	*skt Gutaka 5*	Vimśati tirthaṇkara puja	—	
1249	*Patras 37*	Vimśati tirthaṇkara puja	Brahmadasa	
1250	*skt Gutaka 29*	Vimśati tirthankara puja	—	
1251	*skt Gutakā 15*	Vimsati tirthaṇkara puja	—	
12[illegible]2	*skt Gutaka 25*	Vimsati tirthankara pujā	—	
1253	*skt Gutakā 6[illegible]*	Vimśati tirthankara puja	—	
1254	*skt Guta[illegible]a 37*	Vimsati tirthankara pujā	—	
1255	*skt Gutakā 50*	Vimśati tirthaṇkara pūjā	—	
1256	*skt Gutaka [illegible]*	Vimsati tirthankara pūja	—	
1257	*skt Gutaka 7*	Vimśati vidyamana jina puja	—	

(*Pūjā pātha Vidhāna etc*)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	21 5×16 4 upto 27 18 21	C	Good 1763 V S	
P		23 4×15 4 upto 200 13 30	C	Good	
P		26 6×15 2 2 12 33	C		Unpublished
P		25 4×11 3 upto 9 9 40	C		–
P		21 5×15 2 upto 27 18 20	C		–
P		18 9×15 8 upto 16 12 22	C		–
P	D Skt Poetry Hindi	20 9×16 4 upto 15 18 20	C		–
P		15 8×13 9 upto 132 14 20	C	,	–
P		15 8×13 9 upto 5 13 21	C		—
P		17 1×13 9 upto 13 10 20	C		
P		16 4×10 7 upto 17 15 12	C		
P		18 9×16 4 upto 19 12 30	C		-
P		20 3×15 2 upto 11 20 20	C		

Dig Jain Saraswati Bhandar Naya Mandir Dharmapura, Delhi

1	2	3	4	5
1258	*r 11 (ka)*	Vivaha paddhati	—	—
1259	*skt Guṭakā 3*	Vividha pūjārghyaṇi	—	—
1260	*skt Guṭaka 63*	Yogendra puja	—	—
1261	*skt Guṭakā 0*	Śāntikā vidhana puja	Pt Dharmadeva	—

(Pūjā pāṭha Vidhana etc)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	22 8×13 9 8 10 36	C	Good 1839 V S	Unpublished
P		20 3×15 2 upto 39 13 25	C		
P		15 8×13 9 upto 128 12 2	C		—
P		17 7×14 6 upto 109 14 24	C	Good	First 65 pages are missing

दिल्ली-जिन-ग्रन्थ-रत्नावली

परिशिष्ट

1. आभरणपूजायां देवभूषस्य कथा

Opening सुवर्णमिरश्मिभास्वत् प्रभायामन्यत्मलम् ।
जिनेन्द्र सुखभूत्स स्यात् देवभूषणभूपवत् ॥

Closing तदा ताभ्यामुक्त तवार्पणाय

2 आदिपुराण

Opening श्रीमते सकलज्ञानसाम्राज्यपदमीयुषे ।
धर्मचक्रभृते भर्त्रे नम ससारभीयुषे ॥

Closing यो नाभेस्तनयोऽपि विश्वविदुषा पूज्य स्वयभूरिति,
त्यक्ताशेषपरिग्रहोऽपि सुधियां स्वामीति य शब्दते ।
मध्यस्थोपि विनेयसत्वसमितेरेवोपकारी मतो,
निर्दानोपि बुधैरुपास्यचरणो य सो स्तुत शान्तये ॥

Colophon पातिसाह श्री साहिजहां राजो लाहुर स्थाने लिखित श्वेताम्बर रामजी लिखापित पौष सुदी २ स० १७१० गुरुवार सुश्रावक पुण्यप्रभावक अगरवाल ज्ञाति शृगार हार साहि दामोदर दास चिरजीवी ।

विशेष दामोदर दास कटा हुआ है । पृ० २३५ के बाद श्लोकों की क्रम सख्या नहीं है ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १०२
जि० र० को०, प० २९
आमेर भडार के ग्रथ, पृ० ११
रा० सू०, पृ० २९

3 आदिपुराण

Opening श्रीमते ससारमीयुषे ।

Closing यो नाभेस्तनयो स्तुत शान्तये ।

Colophon इति पञ्जिका समाप्ति सवत् १९३१ ज्येष्ठा शुक्ला १३ गुरुवासरे लिखत बखतावर सिंह अगरवालेन शुभमस्तु लेखकपाठकयो ।

विशेष श्री हरसुखराय जी द्वारा व्यवस्थित जैन पुस्तकालय की सवत् १९४३ की प्राचीन मुहर लगी है । कहीं-कहीं ऊपर-नीचे सूक्ष्म अक्षरों में दो

पंक्तियाँ हैं, शेष मोटे अक्षरों मे है। कही-कही सूक्ष्म अक्षरों की पंक्ति एक-एक है और कहीं बिल्कुल नहीं है। कही सूक्ष्म पंक्तियाँ तीन तीन हैं। लघु पंक्तियो मे टिप्पणियाँ हैं। सूक्ष्म अक्षर वाली पंक्ति मे ७० अक्षर तथा मोटी मे ३८ अक्षर हैं। कागज मोटा और मजबूत है।

4 आदिपुराण

Opening ॐ नम सिद्धेभ्य, श्री सारस्वत्यै श्रीविद्यानंदिगुरुभ्यो नम
श्रीमते ससोरमीयुषे ॥

Closing यो नाभेस्तनयो शान्तये। (सटिप्पण)

Colophon संवत् १६६५ वर्षि (वर्षे) फागुण वदि २ रवौ श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्रीकुन्दकुन्दस्वामिचिरमभट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीसकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीभुवनकीर्तिदेवास्ततपट्टे श्री ज्ञानभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीविजयकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्रीसुमतिकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीगुणकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीवादिभूषणस्तदगुरुभ्राता ब्र० श्रीभीमास्तच्छिष्य ब्रह्मश्री मेघराज पठनार्थं गुजरदेशे अहमदाबाद मोडिमपुर शुभस्थाने श्रीआदिनाथ चैत्यालये गुणसमुद्र श्री समस्तश्रीसघेन ज्ञानावर्णीकमक्षयार्थं केवलज्ञान प्राप्त्यर्थ इद श्री आदिष श्री आदिपुराण लिखापयित्वा ब्र० मेघराजाय दत्तम् ब्र० श्री मेघराजेन स्वशिष्याय ब्रह्मकेशवाय तस्मै इदम् पुस्तकम् दत्तम्। ब्रह्मसबजी पठनार्थ।

विशेष टिप्पणी जहाँ कही लिख दी हैं, व्यवस्थित नही हैं। लिपि सुन्दर नही है। कागज अति प्राचीन है। क्रमांक ३ की भाति मुहर लगी है। पष्ठ मात्रा मे लिखी गई प्रति है। ये बलात्कार गण की ईडर शाखा के भट्टारक है।
देखो—भट्टारक सम्प्रदाय, पृ० १५८

5 आदिपुराण

Opening पूर्ववत।

Closing अंतिम पृष्ठ नही है।

विशेष यह प्रति पानी मे भीगी सी प्रतीत होती है, स्पष्टत नही पढ़ी जा सकती। बीच मे किसी और की भी हस्तलिपि है।

6 आदिपुराण

Opening पूर्ववत्।

Closing अंतिम पृष्ठ नहीं है।

विशेष — अंतिम पृष्ठ नहीं है। ४७वें पर्व के ३६६ श्लोक तक ही है। प्रत्येक पृष्ठ के बीचों बीच चार अक्षर इस ढग से लिखे हैं जो पृष्ठ की सुन्दरता को बढाते हैं। अक्षर बारीक हैं पर सुन्दर हैं।

7 आदिपुराण टीका

Opening — प्रणम्य वीर विबुधेन्द्रसस्तुत निरस्तदोष वृषभ महोदयम्।
पदार्थससिद्धजनप्रबोधक महापुराणस्य करोमि टिप्पणम्॥

Closing — विहार शब्द वाच्य प्रासाद अथवा वीनी पक्षिणा धारक प्रासादेन पुनर्नारीजनो (पत्र २५वा)

8 अनतव्रत कथा

Colophon — स्फरिद्दे वे द्रकीर्ति विविधजननुतस्तस्य पट्टाश्चिचदो,
रुद्रो विद्यादिनदिगुरुमलतया भूरिभव्याब्जभानु ।
तत्पादाभोजभृ ग कमलदललसल्लोचनश्चद्रवक्र,
कर्तामुष्यव्रतस्य श्रुतसमुपद सागर सक्रियाद्व ॥

9 अनन्त-चतुर्दशी कथा

Opening — श्रीवृषभादिजिन नत्वा अनतस्य कथानक।

Closing — अनन्त विद्वानम् पुरुषो वा स्त्रियो वा य करोति स ईदृग्विध फल प्राप्नोति।

विशेष — अत मे यन्त्र भी है।

10 आराधना कथाकोष

Opening — श्रीमद्भव्याब्जसद्भानुल्लोकालोकप्रकाशकान्।
आराधनाकथाकोष वक्ष्ये नत्वा जिनेश्वरान्॥

Closing — तेषाम् पादपयोजयुग्मकृपया श्रीजैनसूत्रोचिता।
सम्यग्दशनबोधवृत्ततपसामाराधना सत्कथा॥
भव्यानां वरख्यातिकातिविलसत्कीर्तिप्रमोद श्रिये।
कुर्यु सरचिता विशुद्धसुभदा श्रीनेमिदत्तेन वै॥ ७२॥

Colophon — जात श्रीमति मूलसघतिलके सारस्वते सच्छुभे।
गच्छे स्वच्छतरे प्रसिद्धमहिमा श्रीकुन्दकुन्दान्वये॥
श्रीजैनागमसिधुवर्द्धनविधुर्बुध(विद्व)ज्जनै सेवित ।
श्रीमत्सूरि मतल्लिकागुणनिधिर्जीयात्प्रभाचद्रवाक॥ ६८॥
श्रीमज्जैनपदाब्जसारमधुतच्छ्रीमूलसघाग्रणी।
सम्यग्दर्शनसाधुरोधविलसच्चारित्रचूडामणि ॥

विद्यानंदिगुरुप्रपद्मकमलोल्लासप्रदो भास्कर ।
श्रीभट्टारकमल्लिभूषणगुरुर्भूयात्सदा समगो ॥ ६९ ॥
श्रीसर्वज्ञविशुद्धभक्तिनिरतो भव्यौघसबोधक ।
कामक्रूरीड(?)दुर्गदलयेक वीरवो निष्ठुर ॥
ज्ञानध्यानरत प्रसिद्धमहिमा रत्नत्रयालकृत ।
कुर्याच्छ्रमं शता प्रमोदजनक श्रीसिंहनदी गुरु ॥ ७० ॥
प्रोद्यत्सम्यक्तरत्नो जिनकथितमहासप्तभगीतरगे ।
निर्धूतैकातमिथ्यामलमलनिकर क्रोधनक्रादिदूर ॥
श्रीमज्जैने द्रवाक्यामृतविशदरसो श्रीजिनेन्द्रप्रबुद्धि ।
जीयात्मे सूरिवर्यो व्रतनिचयलसत्पुण्यपुण्यै श्रुताद्धि ॥ ७१ ॥

महाराज श्रीसवाई जैसिंहजी विजैराज्ये श्री सवाईजयपुरमध्ये लिखितमिद पुस्तक ।

विशेष ५००० श्लोक प्रमाण । १०० कथाएँ हैं । कुदकुद के उत्तराधिकारी प्रभाचद द्वारा लिखित गद्य की पद्य रचना है ।

देखो—प्रकाशित जैन साहित्य, पृ० १०४, १०५
राजस्थान जैन भडार सूची III प० २२५
जिनरत्न कोष, प० ३२ I

11 भद्रबाहु-चरित्र (४ अध्याय)

Opening सद्बोधभानुना भित्वा जनानामातरतम ।
य स मतित्वमापन्न सन्मति सन्मतिं क्रियात् ॥

Closing श्वेताशुकमतोद्भूतिमूढान् ज्ञापयितुं जनान् ।
वरीरचमिम ग्रथ न स्वपाडित्यगर्वत ॥

Colophon इति श्रीभद्रबाहुचरिते आचार्यश्रीरत्ननदिविरचिते श्वेताम्बर मतोत्पत्ति आपलि सघोत्पत्तिवर्णनो नाम चतुर्थोऽधिकार समाप्त । लिखत जती वस्तुपालेन मुनिना । उपयुक्ततिथौ मगसिर सुदी ११ शनिवासरे स० १८०४ ।

श्लोक सख्या ४९८ देखो—प्र० जै० सा०, प० १९३
(१२९+९३+९९+१७७) जि० र० को०, प० २९१

12 भद्रबाहु-चरित्र

Opening क्रमांक ११ की भाति ।

Closing क्रमांक ११ की भाति ।

Colophon लिपिकृत श्रीसवाई जैपुर नगर मध्ये स० १८६१ मासोत्तममासे शुभे कृष्णपक्षे अष्टम्यां तिथौ । शुभ भवतु ।

श्रु

13. भद्रबाहु-चरित्र

Opening क्रमांक ११ की भांति ।

Closing क्रमांक ११ की भांति ।

Colophon भाद्रपद शुक्ला १४ सं० १८६१ वर्षे सपादजया जयपुरे श्रीमन्महा राजाधिराजमहाराज श्रीसवाई जयसिंहजी राज्य प्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दान्वये भ० श्री देवेन्द्रकीर्तिजिदाम्नाए साहगोत्रे धर्ममूर्ति श्रीसाहमोतीरामजिन्क तत्पुत्र साह श्रोहेरतराम तत्पुत्रा त्रया प्रथम शिवलाल द्वितीय कालूराम तृतीय मोहनलाल ऐतेषां मध्येरेकतर श्रीसिवलालेन इदम् भद्रबाहुचरित लिखाप्य ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं घटापित ।

विशेष क्र० सं० ३ की भांति मुहर है ।

14 भद्रबाहु-चरित्र

Opening क्र० ११ की भांति ।

Closing क्र० ११ की भांति ।

विशेष अंत में आशाधर विरचित सागारधर्मामृत का "न्याय्योपात्तधन इत्यादि श्लोक उसकी व्याख्या सहित श्रावक का लक्षण लिखा है । लिपि काल व प्रशस्ति नहीं है । हस्तलिपि सुवाच्य नहीं है । क्र० सं० ३ की भांति मुहर लगी है ।

15 भर्तृहरिशतक (नीतिशतक) सटीक

Opening यां चिन्तयामि सतत मा च ।
टीका—युगादिदेवोप्ययुगादिदेव पुरा द्वितीयोपि सदाद्वितीया ।।

Closing भर्तृहरिभूमिपतिना रचितमिद नीतिरीति सर्वस्व ज्ञातेयमत्र मुह्यति धीरोधीरोष मान स्यात् । १३ ।

विशेष अंतिम दो पृष्ठों पर टीका नहीं है ।

देखो—जि० र० को०, पृ० ३७०
रा० सूची II, पृ० १००, २८६, २६२

16 भर्तृहरिशतक (शृंगारशतक) सटीक

Opening श्री परमात्मने नम ।
चूडोत्तंसितचारुचंद्रकलिकाचचच्छिखाभास्करो
लीलादग्ध· ··· · ·· · प्रदीपोहर ।। १ ।।

Closing ·· प्रतिसीरास्य च निकेत्यम ।। ११३ ।।

17 भर्तृहरिशतक (वैराग्यशतक) सटीक

Opening तस्मै शाताय तेजसे परब्रह्मणे नम

Closing ग्रस्य देवस्य निर्माणे किमपि स्थिर नास्तीत्यागम ॥ १०६ ॥

18 भर्तृहरिशतक (नीति-शृगार-वैराग्यशतकत्रयम्)

Opening ग्रज्ञ सुखमाराध्य रजयति । १ ।

Closing नागोभाति लोकत्रय विध्युना ॥ २ ॥

19 भविष्यदत्त-चरित्र

Opening श्रीमत त्रिजगन्नाथ नमामि वषभ जिनम ।
इन्द्रादिभि सदा यस्य पादपद्मद्वयी नता ॥

Closing ते भवन्ति बललक्षणशुद्धा श्रीधरामलमुखा जनमुख्या ।
प्राप्तचिन्तितसमस्तसुखार्था शुभ्रकीर्तिधवलीकृतलोका ॥ ५६ ॥

Colophon दिवाण जी दौलतराम जी वाचनार्थम् ।

विशेष लिपि सुपाठय नही है ।

देखो—ग्रामेर सूची, प० १०७
राजस्थान सूची, प० ७४ २१६
जि० र० को०, प० २९३ II

20 भविष्यदत्त चरित्र

Opening प्रथम दो पत्रो के ३१ श्लोक नही हैं। टिकास्मभवेदत्र से उपलब्ध है ।

Closing ते भवन्ति कृता लोका ।

Colophon गोपाचलदुर्गे राजा डुगरसोराज्यप्रवतमाने श्रीकाष्ठासघे माथुरा वये पुष्करगणे श्रीसहस्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे ग्रा० श्रीगुणकीर्तिदेवास्तत्पट्टे शिष्या श्रीयश कीर्तिदेवास्तैन निजज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थ इदम् भविष्यदत्त-पचमीकाव्य लिखापित ।

विशेष २१०० श्लोक प्रमाण । लिपि सुवाच्य है । देखो—भट्टारक सप्रदाय पृ० २१७

21 बृहत्-हरिवशपुराण

Opening सिद्ध ध्रौव्यव्ययोत्पादलक्षण द्रव्यसाधनम् ।
जैन द्रव्याद्यपेक्षात साधनाद्यथ शासनम् ॥

Closing व्युत्सृष्टापरसघस तति बृहत्पुन्नाटसंघान्वये ।
प्राप्त श्रीजिनसेनसूरिकविता लाभाय बोधैर्युत ॥

इष्टोय हरिवंशपुण्यचरित श्रीपर्वत सवतो ।
व्याप्ताशामुखमण्डल स्थिरतर स्थेयात् पृथिव्या चिरम् ॥ ५५ ॥

Colophon

शाकेषु अष्टशतेषु सप्तसुदिश पञ्चोत्तरेषूत्तराम् ।
पातीन्द्रायुधनाम्नि कृष्णनृपजे श्रीवल्लभे दक्षिणाम् ॥
पूर्वां श्रीमदवन्ति भूभृति नृपे वत्सादिराजेऽपरा ।
सौर्य्याणामधिमण्डल जययुते वीरे वराहेऽवति ॥ ५३ ॥
कल्याणै परिवर्द्धमानविपुलश्रीवर्द्धमाने पुरे ।
श्रीपार्श्वालयनन्नराजवसते पर्याप्तशेष पुरा ॥
पश्चादोस्तटिकाप्रजाप्रजनितप्राज्यार्चनावर्चने ।
शान्ते शान्तिगृहे जिनस्य रचितो वश हरीणामयम् ॥

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० २५३
आमेर भडार सूची, पृ० ६३
जि० र० को०, प० ४६०
जैन प्रशस्ति सग्रह, प० ७३

22 चन्द्रप्रभचरित्र (१८ सग)

Opening

श्रिय क्रियाद्यस्य सुरागमे स वोग्रजो जिन ।

Closing

सश्लिष्टामथ तस्य भूधरयते स्व स्व पद स्वर्गिण ॥ ९५ ॥

Colophon

बभूव भव्यांबुजपद्मबन्धु पतिमुनीना गणभृतसमान ।
सद्गुणीर्देशगणाग्रगण्यो गुणाकर श्रीगुणनदी नामा ॥ १ ॥

गुणग्रामाभोधे सुकृतवसतेमत्र महसा-
मसाध्य यस्यासीना किमपि महीशासितुरिव ॥

स तस्याद्य शिष्य शिशिरकरसौम्य सभवत् ।
प्रविख्यातो नाम्न विविधगुणनदीति भुवने ॥ २ ॥

मुनिजननुतपाद प्रास्तमिथ्यापवाद ।
सकलगुणप्रसिद्धस्तस्य शिष्य प्रसिद्ध ॥

अभवदभयनदी जैनधर्माभिनदी ।
स्वमहिमजितसिंधुर्भव्यलोकैकबधु ॥ ३ ॥

भव्याम्भोजविबोधनोद्यतमते भस्वित् समानत्विष ।
शिष्यस्तस्य गुणाकरस्य सुधिय श्रीवीरनदि स भूत ॥

स्वाधीनाखिलवाङ्मयस्य भुवनप्रख्यातकीर्ते सता ।
ससृत्सुव्यजयत यस्य जयिनो वाच कुतर्कांकुशा ॥ ४ ॥

शब्दार्थसुन्दरस्तेन रचित चारुचेतसा ।
श्रीमच्चन्द्रप्रभस्येद चरित मौक्तिकोज्ज्वल ॥ ५ ॥

स श्रीवर्मं नृपो बभूव विबुध सौधर्मकल्पेस्तत ।
तस्माच्चाजितसेनचक्रभृतभूयश्चाच्युतेन्द्रस्तत ॥ ६ ॥
यश्चाजायत पद्मनाभनृपतिर्यो वैजयतेश्वरो ।
यस्यास्तीर्थंकर स सप्तमभवे चन्द्रप्रभु पातु न ॥ ७ ॥

विशेष वादिराज के पार्श्वनाथ चरित्र में इसका उल्लेख है जो ६४७ शक संवत् में रचा गया था। अत यह कृति इससे पूर्व की है।

२२०० श्लोक प्रमाण। लिपिकाल—भाद्रपद शुक्ला ४ स० १८६६ गुरुवासरे।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १२१
रा० सू० VI, प० ६८ २१०
रा० सू० II, प० २४५
जि० र० को० प० ११६ XIII

23 चन्द्रप्रभचरित्र (१८ सर्ग)

Opening श्रिय क्रियाद्यस्य स वोग्रजो जिन ।

Closing सश्लिष्टामथ स्व स्व पद स्वर्गिण ॥

विशेष प्रशस्ति क्र० स० २२ की भांति।

कार्तिक कृष्णा ७ बुधवासरे स० १८७२ में गिरधारीलाल श्रावक पठनार्थमिद काव्य भोपालमिश्रेण मेरवन नगर्यां लिपिकृत। २२२० श्लोक प्रमाण।

24 चन्द्रप्रभचरित्र

Opening क्र० स० २२ की भांति।

Closing क्र० सं० २२ की भांति।

Colophon भट्टारकश्रीदेवेन्द्रकीर्तिना दत्त विबुधाय रूपशिने पठनार्थं चम्पावत्या मध्ये।

विशेष क्र० स० ३ की भांति मुहर है।

25 धन्यकुमारचरित्र (७ अध्याय)

Opening नम श्रीवर्द्धमानाय पञ्चकल्याणभागिन ।
जिनाय त्रिभुवनाथाय मुक्तिभर्त्रे गुणाश्रय ॥

Closing भवेयु श्रीमते धन्यकुमाराख्यसुयोगिन ।
चरित्रस्याखिला श्लोका सार्धाष्टशत सख्यका ॥

Colophon आश्वीजसुदि १ संवत् १६२१ वर्षे आचार्यअनन्तकीर्तिदेवस्तच्छिष्य ब्रह्म रायमल्ल लिखित पठनार्थं ।

विशेष ८१० श्लोक प्रमाण । लिपि सुवाच्य नहीं है । क्र० सं० ३ की भांति मुहर है ।

देखो—प्र० जैं० सा०, पृ० १६०
आमेर सूची, पृ० ७५
जि० र० को०, प० १८७ (V)
रा० सू० II, पृ० १८,२२३
रा० सू० III, पृ० ७०,२१२

26 धन्यकुमारचरित्र

Opening सिद्धान्तलेखनगुरुश्रवणादेवपूजनसयमगुणोत्पन्नेषु तथाकारयत श्रेष्ठी

Closing सर्वार्थसिद्धिभाक् सिद्धि जगत्पूज्यो ददातु न ।

Colophon भट्टारक श्रीलक्ष्मीचदपट्टे भ० श्रीधर्मचद ब्रह्म मतिसागर-पठनार्थं दत्त । भ० श्री देवेन्द्रकीर्ति श्री धर्मचद्र श्री धर्मभूषण भ० देवेन्द्र-कीर्तिसबधि भ० श्रीकुमुदचदसबधि ।

विशेष बीच मे लाल स्याही से वृत्त (गोल) बने हैं । जि० र० को० के पृष्ठ १८७ पर सस्कृत गद्य वाले धन्यकुमारचरित्र III का उल्लेख है, पर यह वही है अथवा नहीं यह विचारणीय है ।

27 धर्मशर्माभ्युदय काव्य (२१ सर्ग)

Opening श्रीनाभिसूनोश्चिरमघ्रियुग्म ... प्रतिबिम्बमेण ।

Closing अभजदायविचित्रै स्व पद नाकिलोक ॥ ८४ ॥

विशेष महाकवि ने "वाक्पतिगोडवहो" का उल्लेख किया है अत रचना तत्कालीन है । इसकी रचना माघ के शिशुपाल वध जैसी है ।

देखो—प्र जै सा , पृ० १६२
रा० सू० III, पृ० २१०
जि० र० को०, पृ० १९३

28 द्रौपदी-प्रबन्ध

Opening अष्टे ...... ।
...... ॥ १ ॥

Closing ...... प्रबन्धो ......

जिनकथितसुमार्ग चकृते भव्यराशि ।
द्रौपद्याश्चरित्रमेतदिह पिण्डीकृतार्यासने
अष्टचतुशतानि गदिता सूरिरस्य जिनसेन वा ॥ ६५ ॥

विशेष भादों वदी १० मगलवार स० १६७२ या १८७२ लिखा है। अक्षर मिटे होने से स्पष्ट नही पढ़ा जाता है।

29 द्विसधान-महाकाव्य व्याख्या (पद कौमुदी) १८ सर्ग

Opening श्रीमान् शिवानदन ईशवद्यो भूयाद्विभूत्य मुनिसुव्रतो व ।
सद्धमसभूतिनरेन्द्रपूज्यो भि ने द्रनीलोल्लसदगकाति ॥ १॥
जीयान्मृगेन्द्रो विनयेन्द्रनामा शवित्सदाराजितकठपीठ ।
प्रक्षीबवादीभकपोलभित्ति प्रमाक्षरस्वैनखिरविदार्य ॥ २ ॥
तस्यात्र शिष्योऽ जनि देवनदी सद्ब्रह्मचर्यव्रतदेवनदी ।
पादाम्बुजद्वन्दमनिद्यमच्य तस्योत्तमागेन नमस्करोमि ॥ ३ ॥

Closing केन गुरुणा सूरिणा किमाख्येन दशरथेनेति शेष ।

Colophon प्रशस्ति सुव्रत नत्वा नेमि चापि प्रशस्यते ।
शिरसा सु प्रशस्तस्य शास्त्रदातु प्रचक्ष्महे ॥ १ ॥
श्रीमदमलसकलमडलसुधांशुधवलां सुमरालगा वाणीम् ।
अविरलविपुलकलाखिलपदपक्तिविधायनी समभिवद्य ॥ २ ॥
तदनुजिनमता तर्भासिभावावभासि
स्वगुणवराणा नाममाला विशालाम् ।
मनसि तमसि दीपोद्योतवत्द्योतयती
महमपिहि समीडे कु दकु दा वयानाम् ॥ ३ ॥
मूले जिनमतसुरतरुमूले निलेमले विपुले ।
सघेऽमृतविततरमाकष्टिकेरभूरि भारतीगच्छे ॥ ४ ॥
धर्मे दुरि प्रज्वलशीललीलकुलाल यश्चापि कलालयोभूत् ।
तदीयपट्टे ऽजनि रत्नकीर्तिकीर्त्याकिते शेषसशेषविश्व ॥ ५ ॥
तत प्रगर्वाद्रितटी हरीणा दूर्वादिना मूर्ध्नि धृताघ्रियुग्म ।
अभूदनेकातमनामृताब्धे विवृद्धवेलाविभव प्रभे द्र ॥ ६ ॥
पट्टे ततो नमदशेषमहीशमाललग्नलिपक्रमरजस्तिलकान्यभूवन् ।
कल्याणकारिकमलाकुचकेलिदारित पापाहरित समभूदिह पद्मनदी ॥७॥
तपसा शासन जैन यशसा सकले जगत ।
पद्मनद्यार्यवर्येण गुरुणा धवलीकतम् ॥ ८ ॥
जिनमतकजभानो प्राकसुधाभानवोमी ।
मनसि मतसो त कस्य भव्यस्य चक्रु ॥ ९ ॥

अपि च अविचलराय' सानुरागस्य लोके।
जनितवितलचिन्ता पद्मनंदीन्द्रसूरे ॥ १० ॥

तस्यावसानेऽद्यतमोवितानें पृसृत्वेरध्वस्तसमस्तदोष ।
प्रासोदयोव सदय सदैव शुभंक्रिया चित्रकर शुभेन्दु ॥ ११ ॥

अनुदयमुदयोय यस्य सत्कटकामा-
मलिकुलमलिनानां पकजानां विधत्ते ।
सकलकुवलयेव प्रीतिमेति प्रवृद्धि
नयति जिनमताब्धि सोमजीयाच्छुभेन्द्र ॥ १२ ॥

इन्द्रप्रस्थपुरे रम्ये सुजने समलकते।
इदम् काव्य विलिखत छाजूरामेण शमणा ॥ १३ ॥

विशेष यह पद कौमुदी व्याख्या अप्रकाशित है पर धनजय कविकृत मूल रचना प्रकाशित है। भादो सुदि २ गुरुवार स० १९८० शाके १८४५ (बाणाब्धिनदमूसख्ये शके)।

देखो—आमेर सूची, प० ७२
रा० सू० III, पृ० ६६
जि० र० को०, प० १८५ III
प्र० जै० सा०, प० १५६

30 हनुमान्-चरित्र (१२ सग)

Opening

सद्बोधसिंधुचन्द्राय सुव्रताय जिनेशिने ।
सुव्रताय नमो नित्य धमशास्त्राथसिद्धये ॥

Closing

प्रमाणमस्य शास्त्रस्य द्विसहस्त्रमित बुधै ।
श्लोकानाम् हि मतव्य हनुमच्चरिते शुभे ॥ ९८ ॥

Colophon

जनेन्द्रशासनसुधारसपानपुष्टो देवेन्द्रकीर्तियतिनायकनैष्ठिकात्मा ।
तच्छिष्यसंयमधरेण चरित्रमेतत सृष्ट समीरणसुतस्य महर्द्धिकस्य ॥ ९२ ॥

विशदशीलस्वरधुनीमिलातलकराजहस सोत्सवाय क्रीडनप्रिय ।
स्वमर्तसिंधुवर्द्धनप्रकृष्टयामनीत पीनतेजसोद्भुतप्रभामित ॥

सुरेन्द्रकीर्तिशिष्यविद्याविनयनगमर्दनैकपक्षित ।
कलाधरातदीयदेशानामवाप्य शुद्धबोधमाश्रितोऽजितो जितेन्द्रियस्य भक्तिक ॥ ९३ ॥

गोलभृ गारवशे नभसि दिनमणि वीरसिंहो विपश्चित् ।
भार्या पीथाल प्रतीता तनुरुहविदितो ब्रह्मदीक्षाश्रितोभूत् ॥

तत्रोच्चैर्शास्त्रमेतत कृतै मिति सुतरां शीलराजस्य सूरे ।
श्रीविद्यानंदिशास्तत्कृतविधिवशात् सर्वसिद्धप्रसिद्धे ॥ ९४ ॥

इद श्रीशैलराजस्य चरित दुरितापहम् ।
रचित वृषुकच्छे श्रीनेमिजिनमंदिरे ॥ ६५ ॥
धर्मार्थी लभते वृष धनुयुतो वृद्धि च नि स्वोधनम् ।
पुत्रार्थी सुकुलोचित च तनय कामांश्च कामी लभेत ॥ ६६ ॥
मोक्षार्था वा मोक्षमांशु लभते प्रोक्तेन सान्द्रेण किं ।
ह्यं तत शैलमुनीन्द्रराजरचितान् सर्वार्थसिद्धिप्रिया ॥ ६७ ॥

विशेष प्रारभ के २१ श्लोको मे आचार्यों को नमस्कार किया गया है ।

देखो—जि० र० को०, पृ० ४५६ II
आमेर सूची, प० १६०
रा० सू० III, प० २२०
रा० सू० II, पृ० २० एव ५३४

31 हरिवंश पुराण (३६ सग)

Opening सिद्ध सम्पूर्णभव्यार्थसिद्धे कारणमुत्तमम् ।
प्रशस्तदर्शनज्ञानचारित्रप्रतिपादितम् ॥

Closing रक्षा सघस्य कुर्वन्तु जिनशासनदेवता ।
पालयतोऽखिल लोक भव्यसज्ज्ञानबल ॥

विशेष ज्येष्ठ शुक्ला ११ स० १७७३ । सग ३६ के श्लोक ३२वें से ४७वें तक गुरुपरम्परा वर्णित है ।

32 हरिवश-पुराण (३६ सग)

Opening क्र० ३१ की भाति ।

Closing क्र० ३१ की भाति । सज्ज्ञानबल की जगह वत्सला पाठ है ।

Colophon सवत्सरेऽग्नीन्दुवस्वेकमिते (१८१३) कार्तिकमासे शुक्लपक्षे सप्तमी दिवसे सवाई जयपुरनाम्नि नगरे महाराजाधिराजश्रि श्री माधवसिंहजीकस्य राज्ये प्रवर्त्तमाने साह श्रीजोधराज कारोपित श्री वृषभनाथचैत्याल्ये श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ०डि(?)श्री नरेन्द्र कीर्ति सुरेन्द्रकीर्ति(?)तत्पट्टोदयाद्रिदिनमणिसदृश भ०(?)देवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे गाम्भीर्यौदार्यादिगुणमणिगणशोभित दक्ष भ० महेन्द्रकीर्ति तदाम्नाये खडेलवालान्वये बऊगोत्रिय साह श्री कल्याणदासजीकस्तद्भार्याकल्याणदे तत्पुत्रौ द्वौ साह शोभाचन्द्रजीकस्तद्भार्या शोभागदे कल्याणदासजीकस्य द्वितीयपुत्र साह श्री अनोपचन्द्रजीकस्तद्भार्या अनोपदे शोभाचन्द्रस्य द्वौ पुत्रौ प्रथम साह तिलोकचन्द्र तद्भार्या तिलकादे तत्पुत्रश्चिरजीव मनसाराम-स्तद्भार्या मनसुखदे 'तस्या बधे खुशालचन्दजीकस्य पुत्री देवदर्शनदत्त स्वांत करणाम गुरुभक्तिकरणतत्परया स्वशरीरसौन्दर्यगुणेन दूरीकृतकाम-

ललवा शरीरमाहात्म्यमानवेदं हरिवंशपुराण नाम शास्त्र लिखाप्य स्वज्ञानावरणकर्मक्षयाय ब० जि श्री महेन्द्रकीर्तिजीकाय प्रदत्त।

विशेष लिपिकाल—आसोज सुक्ला १२ भौमवासरे स० १८१३ शाके १६७८/६।

देखो जि० र० को० ४६० VIII प्रथम १४ सर्ग जिनदास जी के गुरु सकलकीर्ति द्वारा रचे गये हैं। क्र० स० ३ की भांति मुहर लगी है।

देखो—आमेर सूची, प० १६१
जैन ग्रंथ प्रशस्ति सग्रह I, पृ० १००
प्रशस्ति सग्रह II, पृ० ७०
रा० सू० II, प० २१८
„ III पृ० २२४

33 हरिवंश-पुराण

Opening क्र० सं० ३२ की भांति।

Closing क्र० सं० ३२ की भांति।

विशेष अंतिम पृष्ठ न होने के कारण सभी महत्वपूर्ण सामग्री अप्राप्य है।

34. हरिवंश-पुराण

Opening सिद्ध ध्रौव्य शासनम्।

Closing व्युत्सृष्टा पृथिव्या चिरम्॥

विशेष ६५०० श्लोक प्रमाण। प्रारंभ मे कुछ टिप्पणियो की प्रतिलिपि दो-तीन व्यक्तियों द्वारा की गई प्रतीत होती है।

35 जम्बूस्वामी-चरित्र (११ सर्ग)

Opening श्रीवर्द्धमानतीर्थेश वंदे मुक्तिवधूवरम्।
कारुण्यजलधिदेव देवाधिपनमस्कृतम्॥

Closing एकविंशतिसख्यानि शतान्यत्र चरित्रके।
त्रिंशद्युतानि श्लोकाना शुभाना सातिनिश्चितम्॥

विशेष सरस्वतीगच्छे भ० सकलकीर्ति के शिष्य जिनदास ब्र० द्वारा रचित।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १२७
आमेर सूची, प० ५६
रा० सू० I, पृ० ६८,६६ २१० १३१
जि० र० को०, पृ० १२३ VIII

36 जिनदत्त कथा (२ सर्ग)

Opening
महामोहतमश्छन्ना भुवनाभोजभानव ।
सतु सिद्धागमासंगसुखिन संपदे जिना ॥

Closing
अत्र प्रमाण प्रथित समस्त ग्रन्थस्य पिंडीकृतवृत्तराशे ।
जेय सहस्रसहित नवत्या नि सशय विद्भिरमुष्य सार ॥

विशेष
१०९० श्लोक प्रमाण । प्रारभ में कुछ टिप्पणियां सी हैं ।

देखो—प्र० ज० सा०, प० १२८
आमेर सूची, प० ५९
रा० सू० III प० ६९
जि० र० को०, प० १३५ III

37 ज्ञानसूर्योदय नाटक

Opening
अनाद्यनतरुपायपचवर्णात्ममूर्त्तये ।
अनतमहिमाप्ताय सदोकारनमोस्तु ते ॥ १ ॥

Closing
मूलसघे समासाद्य ज्ञानभूष बुधोत्तम ।
दुस्तर हिमवाभोधि सुतर मन्यते हृदि ॥ १८० ॥
तत्पद्मामलभूषण समभवद् गबरीये मते ।
चचद्वहकर स भाति चतुर श्रीमत्प्रभाचद्रमा ।
तत्पट्टेऽजनि वादिवदतिलक श्रीवादिचन्द्रो यति ।
तेनाय व्यरचि प्रबोधतरणि भव्याब्जसबोधन ॥

Colophon
वसुवेदरसाब्जांके वर्षे माघे सिताष्टमीदिवसे ।
श्रीमन्मधूकनगरे सिद्धोऽय बोधसरभ ॥

विशेष
माघसुदी ८ स १६४८ मे रचित ।
नादीपाठ के बाद प्रस्तावना मे—कमलसागर कीर्तिसागर, सरस्वती गच्छे मूलसघे प्रभाचंद्रस्य शिष्य वादिराजसूरि निर्मितमिदम् नाटक ।

देखो—प्र० ज० सा०, पृ० २५७
आमेर सूची, पृ० १६७
रा० सू० II, पृ० २७ २५६
रा० सू० III, पृ० ८९
जि० र० को०, पृ० १४९ I
जै० ग्र० प्र० स० I पृ० २५

38 कर्णामृत पुराण

Opening
लीलावासमलक्ष च श्रीपति परमेश्वरम् ।
अलक्ष ज्ञानिनां वन्दे पुरु पावनशासनम् ॥ १ ॥

Closing - पुण्यात्स्मरन्नी ननु देहिन श्रिय सौजन्मराज्य पुलरेव गौरवम्
श्रीपुरमल्लात्मजवर्द्धमान ॥ १०१वां पत्र

Colophon इति श्रीकर्णामृतपुराणे धर्मशास्त्रे तत्वोद्वारे भ० श्रीरत्नभूषणाम्नायालकार-श्रीपूरमल्लापतिच्छविराचार्यश्रीकेशवसेनकृष्णजिष्णुविरचिते ब्रह्म चारीश्वरशिष्य ब्रह्म वर्धमानसहायस्य सापेक्षे ··स्कध ।

विशेष ग्रथ लगभग पूर्ण है। सम्भवत अत के दो एक पत्र न हों। ११वा अध्याय आरभ हुआ है। रचना महत्वपूर्ण प्रतीत होती है।

देखो—भट्टारक सप्रदाय, पृ० २६७
जि० र० को०, पृ० ६८
जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० ५५

39 कर्पूरमजरी नाटक

Opening भद् तो दुसरेस्सईय कइणोए दतुवासाहूणो अन्नाणपि परपभद्दुद्धिरा वाणी वइल्लपिया।

Closing सम्मता कर्पूरमजरीणाम नाडिका महाकइणो सिरिरायसेहर रसविदा।

Colophon श्रीनन्नकडपुर्यां विद्वज्जनज्ञानधीशृ गारसाटिका नवरसकपूर मजरी नाम नाटिका सूयद्विजगोत्रीया६ गुणीया पुत्रयोगिनीदासेन निजभक्त्या व्यलेखि प्रदत्तो वा पद्मतिलकमिश्रेभ्य पुण्यधी ।
पाठातर लिख्यते।

विशेष लिपिकाल वसाख सुदि ५ स १५०७। जीर्णोद्धार की जरूरत है।

40 किरातार्जु नीयम (१८ सग)

Opening श्रिय कुरूणामधिपस्य द्वैतवनेचर ॥

Closing व्रजजयरिपुलोक धमपुत्र ननाम ॥ ४८ ॥

देखो—जि० र० को०, पृ० ६१

41 कुमारसभव (८ सग)

Opening अस्त्युत्तरस्या पथिव्यामिव मानदण्ड ।

Closing समदिवस तज्जलेषु ॥ ॥६३ ॥

Colophon चैत्रशुक्ला ३ स १६६४ भौमवासरे लिखित सदानदमिश्रेरात्मपठनाथ निगमोद्वोघे इदम् पुस्तकम् ।

देखो—जि० र० को०, पृ० ६३ I

42 महाभारत (शान्तिपर्व)

Opening शान्तिमग्नौ द्वौ भ्रातरावस्माकं पुरतश्चक्रभ्रमे पतितौ निमज्जनोन्मज्जन चक्रतु

Closing इदम् भारता तमत शांति पर्ववचन श्रुतिपर हि प्रायश सर्वशास्त्रं किंतु विरला एतादृशा पुरुषवरा मोक्षमार्गधुरधरा अतो मुमुक्षणा शत्रावप्युपकारपरेणैवभवि ।

विशेष अध्याय की समाप्ति पर 'प्रथमद्वारविहार समाप्त', 'द्वितीयद्वारविहार समाप्त' आदि इस प्रकार लिखा है। इस तरह इसमे सात द्वारविहार हैं।

43 महावीर-पुराण

Opening जिनेशे विश्वनाथाय स्वामिने नम ।

Closing इच्छ (?) योत्रस्नेह तदभूतये सस्तवे ॥

विशेष लाल स्याही का प्रयोग हुआ है। लिपि साधारण है।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० २००

जि० र० को०, पृ० ३०७

44 मल्लिनाथ पुराण

Opening नम श्रीमल्लिनाथाय स्वामिने निशम्

Closing अस्य मल्लिचरित्रस्य चतु सप्तति सम्मिता ॥

विशेष दो दो पृष्ठ जुडे हुए हैं।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १९८

जि० र० को०, पृ० ३०३ X

45 मेघदूत (खण्डकाव्य)

Opening कश्चित्कान्ता रामगिर्याश्रमेषु ।

Closing श्रुत्वा वार्ता भोजयामास शश्वत ॥ १२६ ॥

देखो—जि० र० को०, पृ० ३१३

46 मुनिसुव्रतनाथ-पुराण

Opening देवेन्द्रार्चितसत्पाद पकज नत सिद्धये

Closing स्फुटु दत्तचर्यांशु मेघोदयो ॥ ८९ ॥

Colophon रघुपतिरिव ब्रह्मचारीश्वरस्तु ॥ ९० ॥

[illegible] हितमाततान ॥ ६८ ॥

विशेष — इन [illegible] श्लोकों में ग्रन्थकार की प्रशस्ति है। कार्तिक शुक्ला १३ सं १६८२ में ग्रन्थ रचा गया। कृष्णदास के भाई मंगल तथा पिता हर्ष थे। आमेर वाली प्रति सं १८५० में लिखी गई थी।

देखो—जि० र० को०, पृ० ३१२ I
आमेर सूची, पृ० ११३
जै० ग्र० प्र० सं०, पृ० I ६७
रा० सू०, पृ० II १७
प्रशस्ति संग्रह (कस्तूरचंद कासलीवाल) पृ० ४७

47 नागकुमार-चरित्र (५ सर्ग)

Opening
श्रीनेमिं जिनमानम्य सर्वसत्त्वहितप्रदम् ।
वक्ष्ये नागकुमारस्य चरितं दुरितापहम् ॥

Closing
श्रुत्वा नागकुमारचारुचरितं श्रीगौतमेनोदितम्
भव्यानां सुखदायकं भवहरं पुण्यास्रवोत्पादकम् ।
नत्वा तं मगधाधिपो गणधरं भूत्वा पुरं प्रागमत्
श्रीमद्राजगृहं पुरंदरपुराकारं विभूत्यासमम् ॥ ६१ ॥

विशेष ५३४ श्लोक प्रमाण। सं० १६६१ अथवा १६७१ है क्योंकि कटा हुआ है। इसे श्रुतपंचमी कथा भी कहते हैं। इसमें व्रतों की कथाएँ हैं।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १६५
आमेर सूची, पृ० ८१
जि० र० को०, पृ० २०० IV
जै० ग्र० प्र० सं०, पृ० I १३४

48 नागकुमार-चरित्र (५ सर्ग)

Opening
श्री नेमिं··· ··· ···दुरितापहम् ।

Closing
श्रुत्वा नागकुमार··· ···विभूत्यासमम् ।

Colophon
संवत् १६९० (३+ यह लिखकर काटा गया है) वर्षे ज्येष्ठसुदि २ रवीवासरे [illegible] लिखापितं [illegible] चैत्यालये [illegible]मध्ये ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं [illegible] ज्येष्ठे मध्यो न उपदेशकर्पित राग [illegible] [illegible]।

विशेष क्र० सं० ३ की भांति सुन्दर [illegible] है। कई हाथों से लिखी गई प्रति है। क्र० सं० ४७ को देखो।

49 नवरत्न-काव्यम्

Opening धन्वन्तरिक्षपणकामरसिंहशंकुवेतालभट्टघटखर्परकालिदासा ।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपते सभाया रत्नानि व वररुचि नव
विक्रमस्य ॥ १ ॥

Closing उत्खाता प्रतिरोप कुसुमिताश्चि वल्लघू वधयन्
नत्युच्चान्नमय पृथूश्च लघयन्विश्लेषय सहतान्।
तुच्छा कटकिनो बहि निगमय म्लाला मुहु सिञ्चयन्
मालाकार इव प्रयोगनिपुणे राजा चिर नदतु ॥

50 नेमिनाथ पुराण (१६ सर्ग)

Opening श्री मन्नेमिजिन नत्वा सौख्यदायकम् ।

Closing घातिकाति भव्या पवित्र । २६५ ।

विशेष क्र० स० ३ की भांति मुहर लगी है । प्रारभ में लाल स्याही का प्रयोग है पर अंत मे नहीं है । आमेर सूची में नेमिजिनचरित्र नाम है तथा लिपिकाल १८४५ है ।

देखो—जि० र० को०, पृ० २१८
प्र० जै० सा०, पृ० १६६
आमेर सूची पृ० ८४
ज० प्र० प्र० स० I, पृ० १५७, १४

51 नेमिनाथ-पुराण

Opening श्री मन्नेमिजिन सौख्यदायकम् ।

Closing घातिकाति वोत्र भव्यापवित्रम् ।

Colophon संवत १६६८ वर्षे भादवासुदि १४ मगलवासरे मोजाबादनगरे महाराजाधिराजा श्रीमानसिंघ जी राज्यप्रवतमाने श्रीमूलसघे नद्याम्नाए बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुन्दाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनदीदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० चन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० देवेन्द्रकीर्तिस्तदाम्नाऐ लोहाड्यागोत्रे सा० बाला तस्य भार्या वाल्मदे तयो पुत्र २ प्रथम सा० ऊधा तस्य भार्या उतिमदे द्वितीयपुत्र सा० राईमल तस्य भार्या रयणादे तयो पुत्र प्रथम सा० वीरम तस्य भार्या वहरगदे द्वितीयपुत्र सा० अमरा तस्य भार्या अमरादे तृतीयपुत्र मेहा तस्य भार्या मेहूलदे गोधासाह जोधा तस्य भार्या जुवणादे तयो पुत्र साह करमचद द्वितीयपुत्र सा० धरमा तृतीयपुत्र सा० पदारथ चतुथपुत्री लाडाइ तेषां मध्ये हरिवसशास्त्र सोलाकारणव्रत की निमित्त घटापित । भ० श्रीचन्द्रकीर्ति तत शिष्य आचार्यशुभचन्द्राय दत्त ।

विशेष क्र० स० ५० में एक पंक्ति की पुनरावृत्ति हुई है। ४३७७ श्लोक प्रमाण। क्र० स० ३ की भाति मुहर लगी है।

देखो—प्रशस्ति सग्रह, पृ० २६
जं० ग्र० प्र० स०, पृ० १५७

52 नेमिनिर्वाण काव्य (१५ सग)

Opening श्रीनाभिसूनोपदपद्मयुग्म मणीयिन यै ॥

Closing अहिछत्रपुरोत्पन्न वाग्भट्टकवि । ८७ ॥

विशेष क्र० स० ३ की भाति मुहर लगी है। जिनरत्न कोष में कवि को सोम का पुत्र तथा वाग्भट्टालकार का कर्ता भी माना है। पर जै० ग्र० प्र० स० I मे छाहड का पुत्र बतलाया है और वाग्भट्टालकार का कर्ता नही माना है। पाटान्तर निर्देश भी दिये गये हैं। लिपिकाल कार्तिक कृष्णा १३ भौमवासरे स० १८६८।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १६६
रा० सू० II, पृ० २४८
जि० र० को०, पृ० २१८ II
ज० ग्र० प्र० स० I, प० ८

53 & 53A निर्दोष-सप्तमी कथा

Opening पद्मप्रभमह वदे पद्माभ पद्मलांछनम्।
पद्मपूज्य गदाम्यत्र निर्दोषसप्तमीव्रतम् ॥ १ ॥

Closing छित्वा स्त्रीलिंगक देव जातो लक्ष्मीपतिर्पुन ।
तद्दृष्टान्तमहो ज्ञात्वा भव्य कुर्वन्तु साम्प्रतम् ॥ ५ ॥

54 पद्मचरित्र

Opening शकर वरदातार जिन नत्वा श्रुत सुरै ।
कुर्वे पद्मचरितस्य टिप्पेत गुरुदेशनात् ॥

Closing लाटवागडि श्रीप्रवचनसेन पडितात्पद्मचरितस्सकर्ण्यो बलात्कार गणश्री श्रीनद्याचार्यसक्त शिष्येण श्री श्रीचद्रमुनिना। श्रीमद्विक्रमादित्य-सवत्सरे सप्ताशीत्यधिकवर्षसहस्र श्रीमद्धाराया श्रीमतो राजे भोजदेवस्य पद्मचरिते।

Colophon पौष वदि ५ रवौ १८६४ वर्षे मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाम्नाए लिखी बसकरमध्ये लेखकदोषसोधनात् पडितस्य।

विशेष क्र० सं० ३ की भांति मुहर लगी है।

देखो—जै० ग्र० प्र० स० I पृ० १६३
जि० र० को०, पृ० २३३, IX

55 पद्मपुराण (१२३ पर्व)

Opening सिद्धम् सम्पूर्णभव्यार्थ चारित्रप्रतिपादनम्।

Closing इदमष्टादशप्रोक्तं त्रयोविंशतिसंगतम्॥

विशेष क्र० स० ३ की भांति मुहर लगी है।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १७१
जि० र० को०, पृ० २३३
आमेर सूची, पृ० ८७

56 पद्मपुराण

Opening सिद्ध सपूर्णं प्रतिपादनम्।

Closing इदमष्टादश त्रयोविंशतिसगतम्॥

Colophon लिखत सुखानद। मानसिंहसुत वासी सुथान सुसावर के गोत्र वैनाडा लिपि लिखी सुडाने मधि सवत सत्रैस पचहत्तरा मिति पौष वदि ७ वार बुधवासरे शुभ कल्याण।

जाइसी पुस्तक दृष्टवा ताइसी लिखत मया।
जदि सुद्धमसुद्ध वा मम दोषो न दीयते॥
सज्जनस्य गुणग्राह्य दोषतिक्तगुणार्णवम्।
अय सुद्धकृत तस्य मोक्खसौक्खप्रदायकम्॥

विशेष प्रारभ में लिपि अच्छी है।

57 पाण्डव पुराण (२५ पर्व)

Opening सिद्ध सिद्धार्थसर्वस्व सर्वज्ञ नौमि सिद्धये।

Closing तदहं शास्त्र वक्ष्यामि शुभचन्द्राय कथ्यते॥ ८४॥

Colophon फाल्गुन कृष्णा २ सवत् १८८६ बुधवासरे लिखित श्री मिश्र भगवानदासेन लिखापित श्री जैनधर्मोपासकेन श्रावक श्री सनेहीलालेन समाप्तम् दिल्लीनगरे।

विशेष ६००० श्लोक प्रमाण। क्र० स० ३ की भांति मुहर भी है। अंतिम पर्व के ६५ श्लोक से ८४वें श्लोक तक गुरु परपरा वर्णित है। कवि ने १२ ग्रंथ तथा कई स्तोत्र रचे हैं। पाडवपुराण श्रीपाल वर्णी की सहायता से रचा गया था। ये मूलसंघीय महाराज विजयकीर्ति के उत्तराधिकारी थे।

देखो—जि० र० को०, पृ० २४३
आमेर सूची, पृ० ६८
प्र० जै० सा०, पृ० १८१

58. पाण्डव-पुराण

Opening सिद्ध ... सिद्धये ।

Closing इदह ... कथ्यते ॥

Colophon पांडु पुत्र पाचों भये पाचों का सनवध ।
स्यामावती सुथान में भये सभी निर्ग्रंथ ॥
सत्रह सै चौसठ समय अश्वनि वदि रविवार ।
तिथि अष्टम कू लिपिकरी परसा ऋषि सुविचार ॥

विशेष क्र० स० ३ की भांति मुहर लगी है। लिपिकाल-आश्विन वदी ८ रविवार १७६४ स० । देखो—क्र० स० ५७ ।

59 पार्श्वनाथ चरित्र (पार्श्वनाथ पुराण) १२ सर्ग

Opening श्रीवधूनवसभोग' दामवेन्द्राञ्चिता ये ।

Closing श्री जैन सारस्वत श्री नदिसघेस्विति वह्निनद्य ॥ ६४ ॥

विशेष ६४ से ७० तक प्रशस्ति है। रचनाकाल-कार्तिक सुदी ३ स० १०७२ (नगवार्द्धिरप्रगणने) ६८वा श्लोक देखें। लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्ण प्रवार बीसर ( ) सपतवार स० १८६१

१५६४ की पुराण प्रति पर से उतारी। इस पर भ० शुभचद की पजिका टीका भी है। वादिराज का समय चालुक्य वशी महाराज जयसिंह देव II अहनिलवाड के समकालीन १०१५-१०४५ A D माना जाता है। १३५६ श्लोक प्रमाण। क्र० स० ३ की भाति मुहर लगी है। ये कवि मतिसागर के शिष्य थे जो नदिसंघीय श्री बलदेव के शिष्य थे।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १८२
जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० ४४
जि० र० को०, पृ० २४६ I

60 प्रद्युम्न चरित्र (१६ सर्ग)

Opening श्रीमतं सन्मतिजिनं' बोधितु नो शशाक य ।

Closing चतुसहस्रसंख्यात सर्वज्ञप्रसादत ॥ ७२ ॥

Colophon सहोरानगरमध्ये पूज्य दुनीचंद का चेला रतपू कु० तवसिद लिखतं वलभत ऋषि श्री ।

विशेष यह कृति दो प्रकार की उपलब्ध है—(I) १४ सर्गों मे ४८५० श्लोक प्रमाण तथा (II) १६ सर्गों मे ६००० श्लोक प्रमाण ।

देखो—प्र० ज० न० सा० पृ० १७६
आमेर सूची, पृ० ६४
रा० सू० III, प० २१३
जि० र० को० पृ० २६४

61 प्रद्युम्न-चरित्र (१६ सर्ग)

Opening श्रीमत शशाक य ।

Closing चतुसहस्र तीर्थकरप्रसातदत ।

Colophon फाल्गुनवदि ७ मगल सवत १७५६ वर्षे लिखत उगरसेण ऋषि तस्य शिष्य पूज्य दासू ऋषि तस्य शिष्य मिहराऋषि लिखत पीपापुरमध्ये आत्मार्थे शुभ भूयात् । लि० आचार्य श्री कनककीर्तिस्तस्य शिष्य प० सदा रामेन चि० टोडरमलस्य पठनार्थं प्रदत्त स १११६ मि० पौष बदी ११ ।

विशेष यह सवत शंकास्पद है । प्रथम पष्ठ पर कुछ ज्योतिष सबधी श्लोक हैं । क्र० स० ३ की भाति मुहर है । देखो—क्र० स० पृ० ६०

62 पुरदरविधान कथोपाख्यान

Opening उमास्वामिनमहत शिवकोटिं महामुनिम् ।
विद्यानदि गुरु नत्वा पुरदरविधि ब्रुवे ।

Closing आनदादकलकदेवचरणाभोजालिना दीक्षितो
विद्यानदिमहात्मना श्रुततपोमूर्ति परार्थे हिताम् ।
साधूना क्षुतसागर प्रियतम कल्याणकीर्त्याग्रहा
श्चक्रे चारुपुरदरव्रतविधिं सिद्धागनालालस ।।

विशेष क्र० स० ३ को भाति मुहर है । देखो—जि० र० को० पृ० २५३
जै० प्र० प्र० स० I २१२

63 पुण्याश्रव कथाकोश (१६ अध्याय)

Opening श्रीवीरजिनमानम्य पुण्याश्रवाभिधानकम् ।

Closing श्रीमत चारु मुक्तिलाभ लभन्ते ।

देखो—प्र० ज० सा०, पृ० १८४
आमेर सूची, पृ० १०२
जि० र० को०, पृ० २५२
जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० १५२

64 रघुवंश काव्य (२ सर्ग)

Opening वागर्थाविव परमेश्वरौ ।

Closing अथ नयन लोकपालानुभावे ।

विशेष किसी के अध्ययनार्थ लिखाई गई होगी !

देखो—जि० र० को०, पृ०३२५

65 रोटतीज कथा

Opening प्रणिपत्य महावीरं त्रलोक्यग्रहनायकम् ।
रोटतीजव्रत वक्षे भव्याना हितकारकम् ॥ १ ॥

Closing एतत रोटतीजव्रत य नर नारी च करोति भावेन सास्वतं सुख प्राप्नोति— ।

66 शान्तिनाथ चरित्र (१६ सर्ग)

Opening नम श्रीशान्तिनाथाय जगच्छातिविधायिने।
कृत्स्नकर्मौ घशाताय शातये सवकमणाम् ॥

Closing अस्य शातिचरितस्य ज्ञेया श्लोका सुलेखक ।
पचसप्तत्यधिकास्त्रिचत्वारिंशच्छतप्रमा ॥

विशेष क्र० स० ३ की भाति मुहर है। लिपि दो प्रकार की है।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० २२४
जि० र० को०, पृ० ३८०

67 शांतिनाथ-चरित्र

Opening नम श्रीशातिनाथाय शातये ।

Closing अस्य प्रमा ।

Colophon आसौज शुक्ला ५ रविवासरे स १८६८ लिप्यकृत महात्मा संभुराम सवाई जयनगरे।

विशेष क्र० स० ३ की भांति मुहर है।

68 शांतिनाथ-चरित्र

Opening प्रणिपत्याहित सर्वान् वाग्देवी स स्तनापि ।
गद्यबंधेन वक्ष्यामि श्रीशांतिचरित्र मुदा । १ ।

Closing संपूज्य करेण निर्मितायां शिबिकायां भगवन्तम् निक्षिप्य नैऋत्यदिशि अगुरुकाष्ठाश्रिता विरचिता चन्द्रिका मधु

69 शान्तिनाथ-पुराण

Opening नम श्रीशांतिनाथाय ... ...सर्वकर्मणाम् ।

Closing संस्थापानं सुविजन्मनि भवेद्यावच्च मुक्तिर्मम ।

Colophon फागुण वदि १४ दैत्यवार सं० १७६२ माथुरगच्छे पुष्करगणे श्री क्वरसेन आम्नाए आचार्य श्री क्षेमकीर्तितत्पट्टे श्री महेन्द्रकीर्तितत्पट्टे श्री विजैकीर्ति चिरजीयात् भूमडले तत्शिष्य लिखित हर्षाब्धि स्वयं वाचनार्थं लिपीकृतमिद पुस्तिक शुभ की साहदरा मध्ये योगिनीपुर पार्श्वे । लिखित हर्ष सागर आगे पोथी शांतिनाथ पुराण की आसानद को दिई रुपये आठ दिए पोथी की लिखाई दीई हरषाकू दिए । ये पोथी शांति काल ई आसानद ने अपने पढने के निमित्त सांतिनाथ पुराण की सं० १७६२ ।

70 सप्तव्यसन-चरित्र (७ सर्ग)

Opening प्रणम्य श्रीजिनान् सर्वकर्मार्थदायकान् ।

Closing विभीषणस्य रामस्य वेगत ॥ ६६ ॥

विशेष सोमकीर्ति के गुरु भीमसेन धर्मसेन के शिष्य थे । १६७६ श्लोक प्रमाण । प्रति खडित और अपूर्ण है ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० २३४
जै० र० को०, पृ० ४१

71 सप्तव्यसन-चरित्र (७ सर्ग)

Opening प्रणम्य श्रीजिनान् दायकान् ।

Closing यो वा पठति विमृश्य भव्यापि भावना युक्तो,
लभते सौख्यमनिश ग्रंथ सोमकीर्तिना रचित ।

साधुद्वयसख्योऽय सप्तषष्ठिसमन्वित ।
सप्तैव व्यसनद्योदिच कथा समुच्चया तत ॥ ६७३ ।

इत्यार्षे श्रीधर्मसेनात श्रीभीमसेनशिष्य श्रीसोमकीर्तिविरचिते सप्तव्यसनकथासमुच्चये परस्त्रीव्यसनफलवर्णनो नाम सप्तमसर्ग । परमा-ऋषि लिखित ।

72 सिद्धचक्र-कथा

Opening अथ अष्टानिका की कथा ।

Closing प्रणम्य परमात्मानं जगदानंद दायकम् ।
सिद्धचक्रकथा वक्ष्ये भव्यानां शुभहेतवे ॥ १ ॥

Closing शुभमस्तु सर्वजगत ,
श्रीपद्मनंदीमुनिराजपट्टे शुभोपदेशी शुभचंद्रदेव ।
श्रीसिद्धचक्रस्य कथावतारं चकार भव्यांबुजभानुमाली ॥ १ ॥
सम्यग्दृष्टिर्विशुद्धात्मा जिनधर्मे च वत्सल ।
आलोक कारयामास कथां कल्याणकारिणीम् ॥ २ ॥

Colophon भ० श्री १०८ जगत्कीर्ति तच्छिष्य प० रवीवसी तच्छिष्य प० खुस्याल इद लिखते । खुस्यालचंद्रेण स्वहस्तेन इदं पुस्तकं स्वपठनार्थं लिपीकृत चन्द्रप्रभालये । क्वापि नागराजेन लिखित ।

विशेष इसका उल्लेख आचार्य ने अपने पाडवपुराण में भी किया है । चैत्र कृष्णा ४ दीधितवासरे (रवि) स० १८२५ में लिखी गई ।

देखो—जि० र० को०, पृ० ४३६

73 शिशुपाल-वध (२० सर्ग)

Opening श्रिय पति मुनि हरि । १ ।

Closing श्रीशब्दरम्य शिशुपालवधाभिधानम् ॥ ८४ ॥

देखो—जि० र० को०, पृ० ३८४

74 श्रेणिक-चरित्र (पुराण) १५ सर्ग

Opening श्रीवर्द्ध मानमानन्द हुतकर्मसमुच्चयम् ।

Closing तिष्ठतु यावदभितो * मध्यभूता ॥ २४ ॥

Colophon लिखित मुनिविमल सुश्रावक पुण्यप्रभावक जैनी लाला प्रतापसिंह जी स्वात्मार्थे परममनोज्ञ ज्येष्ठ सुदि ५ मगल दिने स १८०७ ।

विशेष प्रत में श्लोक १०७ से ११६ तक सज्जन-दुर्जन चरित्र वर्णन है । ११७ से १२२ तक आचार्य ने अपनी गुरुपरपरा रूप में प्रशस्ति दी है जो जै० ग्र० प्र० स० I पृ० ४६ पर प्रकाशित है ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० २२४
आमेर सूची, पृ० १५७
रा० सू० II, पृ० १६,२३१
रा० सू० III, पृ० २१६
जि० र० को०, पृ० ३६६

75 श्रेणिकचरित्र (१५ सर्ग)

Opening श्रीवर्द्धमानमानंद * कर्मसमिचयम् ॥

Closing चन्द्रार्कहेमगिरि * * *** मध्यभूता ॥

विशेष — अंतिम सर्ग के ११७वें श्लोक से ही रचनाकार का पता चलता है, कहीं और नामोल्लेख या प्रशस्ति नहीं है। अंतिम १० श्लोकों में गुरु-परम्परा वर्णित है। कहीं कहीं टिप्पण भी है।

76 श्रेणिकचरित्र

Opening — जिनं प्रणम्य सर्वज्ञं विज्ञात सचराचरम्।
चरितं निरवद्यस्य श्रेणिकस्य ब्रुवे शृणु॥

Closing — वारिषेणादयो मुक्त दद्युरानंदमंदिरम्।

77 श्रीपालचरित्र (७ सर्ग)

Opening — चतुर्विंशतितीर्थेशान् नमसाम्राज्यनायकान्।
श्रीमतस्त्रिजगन्नाथान् वंदेऽनंतगुणार्णवान्॥

Closing — चतुःश्लोकाधिकावसुम् शतश्लोकभवानि च।
पिंडीकृतश्चरित्रस्यास्यात्र श्रीपाल भूयात्॥

देखो—जि० र० को०, पृ० ३९८ (XXVIII)
आमेर सूची, पृ० १५६
रा० सू० II, पृ० १९२३३

78 श्रीपालचरित्र (७ सर्ग)

Opening — चतुर्विंशति ... गुणार्णवान्॥

Closing — चतुश्लोक ... श्रीपाल भूयात्॥

विशेष — लिपिकाल फागुन सुदी २ रविवासरे सं० १६४३।

79 श्रीपालचरित्र

Opening — अर्हत संस्तुवे सिद्धान् वंदे निर्ग्रथनायकान्।
श्रयामि पाठकान् सेवे साधूनाराधये मुदा॥

Closing — सिद्धचक्रव्रतात्सोऽयमीदृशाभ्युदयो बभौ।
निःश्रेयसमितोऽस्मभ्यं ददातु स्वर्गति प्रभु॥

Colophon — श्रीविद्यानंदिपादाब्जे मत्तभ्रागणधीमता।
श्रुतादिसागरेणेय सपत्पालकथा कृता॥

विशेष श्रुतसागर के गुरु विद्यानंदि थे जो पद्मनंदि के प्रशिष्य और देवेन्द्र कीर्ति के शिष्य थे। अत श्रुतसागर का समय स १५६० के लगभग अनुमानित किया जाता है। देवेन्द्रकीर्ति और विद्यानंदि के लिए देखो, भट्टारक-सम्प्रदाय पृ० १६६-१७२।

देखो—जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० १६

80 सुभाषितावली

Opening जिनाधीश नमस्कृत्य ससाराबुधितारकम्।
स्वान्यस्य हि तमुद्दिश्य वक्ष्ये सद्भाषितावलीम् ॥

Closing जिनवरमुखजात ग्रथित श्रीगणेन्द्रैं
त्रिभुवनपतिसेव्य विश्वतत्वैकदीपम्।
अमृतमिव सुमिष्ट धमबीज पवित्र,
सकलजनहिताथ ज्ञानतीर्थं हि नीयात् (जीयात्) ॥

विशेष यह एक रजिस्टर है जिसमे उदयचद लिखित देवस्तवन हिन्दी, सस्कृत देवपूजा, चौबीस ठाणा की गाथाएँ और सस्कृत दशनपाठ भी है।

देखो—आमेर सूची, पृ० १४७
रा० सू० II, पृ० ४४,७४,२८८
रा० सू० III पृ० ६६,३३७
जि० र० को०, पृ० ४४६

80 A सुभाषितावली

Opening क्र० स० ८० की भाति।
Closing क्र० स० ८० की भाति।

81 सुभाषितरत्नावली

Opening जिनाधीश सद्भाषितावलीम ॥
Closing जिनवर नीयात् ॥
Colophon लिपीकृत बालकष्णस्य पठनार्थं ज्येष्ठ वदि ७ बुधवार स १८५८

82 सुभाषितरत्नावली

Opening जिनाधीश • • सद्भाषितावलीम् ॥
Closing : जिनवर नीयात् ॥
Colophon दक्षनदेशे नवरंगाबाद (औरगाबाद) नगरे प० कस्तूरविजय लिखत ला० बसतमल्लजीस्य वाचनार्थं। भादवसुदि १ स० १५८०८ मध्ये।

83 सुभाषितरत्नावली

Opening जिनाधीशं ... सद्भाषितावलीम ॥
Closing जिनवर ... नीयात् ॥

84 सुभाषित-रत्नसदोह

Opening जनयति मुदमन्तभव्य ... साहृति भारती व ॥
Closing आशीर्विध्वस्तक ... व्यवतनि शेषसग ।३७।
Colophon चार श्लोको की प्रशस्ति 'भट्टारक सप्रदाय' के पृ० २१३ पर प्रकाशित है।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० २५०
आमेर सूची, पृ० २१४
रा० सू० II, पृ० २८८
रा० सू० III, पृ० २३६
जि० र० को, पृ० ४४५
भट्टारक सप्रदाय, पृ० २१३

85 सुभाषित रत्नसदोह

Opening जनयति ... भारती व ॥
Closing आशो ... सप्तत्रिश मतम् ।
Colophon भूतभूतवसूच द्रसयुते विक्रमाकगतवत्सरे शुभे ।
मागशुक्लहरिवासरे शनौ पुस्तक लिखितवान्दिला ऋषि ॥
माघशुक्ला ७ शनिवासरे स० १८५५ लिखितम् ।

86 सुभाषित-रत्नसदोह

Opening जनयति ... भारती व ॥
Closing आशी ... सप्तत्रिशन्मतम् ।
Colophon श्री मुद्गल पातिसाह श्रीहमाऊराज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसिघे सरस्वती-गच्छे नदिसघे बलात्कारगणे श्रीकु दकुन्दाचार्यान्वये गुणगरिष्ठान् लब्ध-प्रतिष्ठान् अबोधजीवप्रतिबोधकान् लघुसम्मेदगिरिउद्धरणतपोबललब्धाति-शयान् श्रीमाणिक्यचन्द्रदेवान् तत्पट्टे त्रयोदशविधिचारित्रान् देवकीर्ति-देवान् तत्पट्टे भा० श्री० जिनचन्द्रदेवान् । श्री माणिक्यचंद्र शिष्यणी बाई भवानी तयो शिष्यणी बाईमदनश्री तयेद शास्त्र स्ववाचनार्थं लिखापित । लिखित बोद्धदासेन । मगसिर सुदी ५ चन्द्रवासरे स० १६१२ श्रवणनक्षत्रे ।

87. सुभाषितार्णव

Opening — चन्द्रनाथं जिनं नत्वा जितघातिचतुष्टयम् ।
सुभाषितार्णवं वक्ष्ये ज्ञानविज्ञानकारणम् ।।

Closing — लोकप्रिया सितिमुजा सुविजेन ज्ञान
तस्मिन्विधौ सति हि (अपूर्ण है)

विशेष — प्रति में ग्रंथकार का नामोल्लेख नहीं है पर जि० र० को० पृ० ४४६ से शुभचद्र का अनुमान किया जाता है ।

देखो—जि० र० को०, पृ० ४४६
आमेर सूची, पृ० २१४, २१७
रा० सूची II, पृ० ४४, २८८
रा० सूची III पृ० ६६, २३७

88 सुभाषित ग्रंथ

Opening — जिनाधीश नमस्कृत्य ससाराबुधितारकम् ।
स्वान्यस्य हितमुद्दिश्य वक्ष्ये सद्भाषितावलीम् ।

Closing — तेषा मागल न भवेत् ।३५३। सकलकुजनसेव्याश्च

89 सुभूमचरित्र (सुभोमचक्रिचरित्र)

Opening — श्रीमत त्रिजगन्नाथ प्राप्तानतचतुष्टयम् ।
सरताऽर जिनाधीश संसारोत्तारकारणम् ।

Closing — एव सुभौमचक्रेसो भावितीर्थकृत श्रुतम् ।
चारित्ररत्नचद्रोऽह यथाशास्त्रमवर्णयम् ।७७।।

विशेष । — २६ छदों की प्रशस्ति 'जैन-ग्रंथ-प्रशस्ति-सग्रह' प्रथम भाग पृ० ६० पर प्रकाशित हो चुकी है ।

90. सुदर्शनचरित्र (८ सर्ग)

Opening — नम श्रीवर्धमानाय धर्मतीर्थप्रवर्तिने ।
त्रिजगत्स्वामिनेऽनतशर्मणे विश्वबाधवे ।।

Closing सर्वे पिण्डीकृता श्लोका बुधैर्नवशतप्रमा ।
चरित्रस्यास्य विज्ञेया श्रीसुदर्शनयोगिन ॥

Colophon कामालपुरामध्ये लखी ।

देखो—प्र० जै० सा०, प० २४६
आमेर सूची पृ० १४६
जि० र० को०, प० ४४४ II

91 सुदर्शनचरित्र (१२ सर्ग)

Opening ज्ञानरत्नाब्धितारेश राजीवभास्करम् ॥

Closing पचते परमेष्ठिन भूयाद्भवापनुदे ॥

Colophon ३० छन्दो की प्रशस्ति जैन ग्रंथ प्रशस्ति संग्रह भाग I पृ० १० पर प्रकाशित है ।

देखो—जि० र० को०, पृ० ४४४ III
आमेर सूची, प० १४५
रा० सू० III, प० ७६
जै० ग्र० प्र० स० I, प० १०
भट्टारक सप्रदाय, प० १७०

92 सूक्तमुक्तावली (सिन्दूर प्रकरण)

Opening सिन्दूरप्रकरस्तप करिशिर क्रोडे कषायाटवी,
दावार्चिनिचय प्रबोधदिवसप्रारभसूर्योदय ।
मुक्तिस्त्रीकुचकुभकुकुमरस श्रेयस्तरो पल्लव,
प्रोध्यास क्रमयोर्नखद्युतिभी पार्श्वप्रभो पातु व ॥

Closing अभजदजितविद्यो वादिवागदाद्रिवज्रम्
नपतिविबुधव द्यो गौरसेनाद्रिकजे ।
मधुकरसमता य सोमदेवेन तेन
व्यरचि मुनिपराज्ञा सूक्तमुक्तावलीयम् ।१००।
अभजदजितदेवाचार्यपट्टोदयाद्रि-
द्यु मणिविजयसिंहाचार्यपादारविंदे ।
मधुकरसमता यस्तेन सोमप्रभेण
व्यरचि मुनिपराज्ञा सूक्तमालीयम् (मुक्तावलीयम्) ।१०२।

सोमप्रभाचार्यमया च यत्र पुसा तम पकमपाकरोति ।
तदप्यमुष्मिन्नुपदेशलेशे निशम्यमाने निशमेति नाशम् ।१०३।

Colophon इति सोमदेवाचार्यविरचितसूक्तमुक्तावलीय समाप्ता ।
चञ्चलरामेण स्वपठनार्थं लिखितम् ।

देखो—जि० र० को०, पृ० ४४१, ४४८, ४४६
प्र० जै० सा०, पृ० २५१
आमेर सूची, प० २१४, १४७
रा० सूची II, पृ० २६
रा० सूची III, पृ० १००, २३७

93 सूक्तमुक्तावली सटीक

Opening सिंदूरप्रकरस्तप पातु व ॥

Closing यो धम्म कोप कथम् ॥४८॥

Colophon श्रीचन्द्रकीर्तिसूरीणा सद्गुरूणा प्रसादत ।
सिंदूरप्रकरव्याख्या क्रियते हृषकीर्तिना ॥२॥

विशेष शेष सदर्भ के लिए क्र० स० ६२ देखो ।

94 सुकुमालचरित्र (६ सग)

Opening नम श्रीविश्वनाथाय नित्यानदगुणाप्तये ॥

Closing सुकुमालचरितस्यास्य एकाशतशतप्रमा ॥६४॥

Colophon आषाढ वदि ३ गुरुवासरे स० १८२६ शाके १६६४ प्रवत्तमाने श्रीमूल-सघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकु दाम्नाए श्री परमपूज्य आचाय श्रीशुभचद जी तच्छिष्य पडित सदारामजी तच्छिस्य श्री गुलाबच द्रे ण लिखीनीय मालपुरानगरमध्ये च द्रप्रभचैत्यालये लिखी उत्तराषाढनक्षत्रे ।

देखो—आमेर सूची, पृ० १४४
प्र० जै० सा०, पृ० २४८
जि० र० को, पृ० ४४३ I

95 सुकुमालचरित्र (६ सग)

Opening नम श्री गुणाप्तये ॥

Closing सुकुमाल शतप्रमा ॥

96 सुकुमालचरित्र

Opening नम श्री गणाप्तये ॥

Closing सुकुमाल शतप्रमा ॥

Colophon स० १८२८ वर्षे आसोजवदी १३ लिखत मौजा ऋषिछपरौलीमध्ये मीनासहित ।

97 त्रिकालचतुर्विंशति कथा

Opening प्रणम्य श्रीमहावीर गौतम च मुनि त्रिधा ।
त्रिकालचतुर्विशत्या वृते चाक्ष्मकथा महा ।

Closing विधत्ते यो नरो नारी (तीज) व्रतम्जिनोदितम् ।
सभवेत्सुखभाग स गुणनदीव सोद्भुतम् ॥३५१॥
इति रोट-तीज-कथा समाप्तम् ।

विशेष यह कथा किसी अन्य ग्रथ से सबधित है क्योकि इसका तथा इसके रचनाकार का कही उल्लेख नही मिलता है ।

98 उत्तरपुराण (मूल)

Opening श्रीमान् मनोमलम् ॥

Closing अनुष्टुपछन्दसा लेखकै ॥

विशेष क्र० स० ३ की भांति मुहर लगी है ।

देखो—रा० सू०, पृ० III २१२
आमेर सूची, पृ० १५
जि० र० को०, पृ० ४२
प्र० जै० सा०, पृ० १०७

99 उत्तरपुराण (मूल)

Opening श्रीमान् मनोमलम् ॥

Closing अनुष्टुपछदसा लेखकै ॥

Colophon यस्यानता पदनखेन्दवबिबचुम्बि-
चूडामणिप्रकटस मुकुटा सुरेन्द्रा ।
अतिविस्तरभीरुत्वशादवशिष्ट सग्रहीतममलधिया
गुणभद्रसूरिणेद प्रहीणकालानुरोधेन ।

विशेष २० श्लोको की प्रशस्ति मे गुरुपरम्परा वर्णित है ।

100. [illegible] (पूर्वार्द्ध , उत्तरार्द्ध)

Opening श्रीमान् ..... मनोमलम् ॥

Closing अनुष्टुप् लेखकैः ॥

Colophon उत्तरार्द्ध कार्तिक सुदी २ स० १७४४ श्रीविहारे लिखितम् ।
पूर्वार्द्ध मगसिर सुदी १५ स० १७४५ लिखित श्रीयामलीपुरे ।

101 वैराग्यशतक (मूल)

Opening या चिन्तयामि मा च ॥

Closing ब्रह्मांडमडलीमात्र किं लोभाय मनस्विन ।
शफरीस्फुरतेन्नाब्धिक्षुब्धता जातु जायते ॥११॥

Colophon इति अवधूतचर्याकथन दशम दशकम् ।

विशेष शेष सन्दर्भ के लिए क्रमाक १७ देखो ।

102 वैराग्यशतक

Opening चूडोत्तसित प्रदीपोहर ॥

Closing क्षण बालो भूत्वा भ्रमति पुरुष कर्मवशग ॥

Colophon चैत्रसुदो ३ गुरौ स० १५२२ लिखत माउरण मूठौतिया उपाध्य ।

विशेष शेष सन्दर्भ के लिए क्रमाक १७ देखो ।

103 विक्रमादित्य पंचविंशतिका

Opening साहसतश्चमीम ।
उत्तालवेतालगणैरलंकृतं रौद्र महारौरवशुभ्रसन्निभम् ॥६१॥
(अपूर्ण)

Closing स्वस्तिरस्तु तव स्वामिन् मिथ्यादु कृतिदानत ।
इत्युदित्वा चितामध्ये प्रविष्टा सा सती वरा ॥७३॥
पुरीति वासिनी लोका ... ... (अपूर्ण)

104 वृषभनाथ-चरित्र (२०-अध्याय)

Opening — श्रीमत त्रिजगन्नाथमादितीर्थंकर परम् ।
फणेन्द्र द्रनरेन्द्राच वदेऽनतगुणाणवम् ॥

Closing — अष्टाविंशाब्धिकामो षटचत्वारिंशन्नत प्रमा ।
अस्याद्धर्हच्चरित्रस्य सुश्लोका पिण्डीकृता बुधै ॥

Colophon — वैसाख वदी ८ स० १८२५ सुश्रावक पुण्य प्रभावक देव गुरु भक्ति कारक सार्धमि मुलतानि लाला लिखायत तत् पुत्र राजाराम तत्पुत्र चि० गोकुलचद पठनार्थं धमनुद्योत हेत लिखापित । आत्माराम अनदीराम दीपचदिये के माथे ।

विशेष — ४६२८ श्लोक प्रमाण । लिपि स्पष्ट है । क्रम स० ३ की भाँति मुहर है ।

देखो—जि० र० को०, प० २८ ५७ ३६५
आदिनाथ पुराण I
ऋषभदेव चरित्र V

104A वृषभनाथचरित्र

Opening — पूववत् ।

Closing — जिनवरमुखजात वर्द्धित श्रीगणेशरमलगुणनिधान विश्वलोकाग्रदीपम् ।

विशेष — १८० श्लोक तक ही है ।

देखो—जि० र० को०, प० २८

104B वृषभनाथचरित्र

Opening — पूववत् ।

Closing — पूववत् ।

विशेष — प्रति अत्यधिक जीर्ण है । अतिम पत्र खडित होने के कारण पारदर्शी कागज से चिपका है । लाल स्याही पढ़ी नही जाती । लिपिकाल कार्तिक वदी ७ स० १६९८ पढा गया ।

105 यशस्तिलकचम्पू (८ आश्वास)

Opening — श्रिय कुवलयानन्द मानसवासिनी ॥

Closin — श्री मानस्ति स देवसंघ काव्यक्रम ॥

विशेष — सोमदेव के गुरु नेमिदेव थे जो गौड सघीय यशोदेव के शिष्य थे । यह

रचना राष्ट्रकूटवंशीय क्षेमेन्द्र III के शासन काल मे चैत्रमास मदन १३ शक स० ८८१ में रची गई थी। ५ छदों की प्रशस्ति है जो प्रकाशित प्रति में देखी जा सकती है।

देखो—प्र० ज० सा० पृ० २०६
आमेर सूची, पृ० ११५
रा० सू०, III पृ० ७४
रा० सू०, II पृ० २५१
जि० र० को०, पृ० ३१८

105 A यशोधरचरित्र पजिका

Opening यशोधरमहाकाव्ये सोमदेवैर्विनिर्मिते।
श्री देवेनोच्यते पञ्जी नत्वा देवजिनेश्वरम्॥

Closing चतुर्दशगुणस्थानानि भवन्ति गतिइन्द्रियकाययोगनेद च

Colophon लिखत गोपालमिश्रेण गिरधारीलालपठनाथ मगसिर सुदी ११ सोमवार स० १९९६ शाके १७६१।

विशेष यशस्तिलकचपू (८८१ शक स०) की पजिका टीका है।

देखो—जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० १२४

105 B यशोधर-चरित्र

Opening प्रणम्य शकर देव सवज्ञ जितम मथम्।
रागादिसवदोषघ्न मोहनिद्राविवर्जितम्॥

Closing नदीतटाख्यगच्छे यशोधरसज्ञकम्॥

Colophon स० १६९५ वर्षे श्रावण वदि १२ रविवासरे योगे पञ्चानगरमध्ये लिखत चतुर्मुनिसषशिष्य जीवणऋषि लेखक-पाठकयो शुभ भवतु।

विशेष सोमकीर्ति के गुरु भीमसेन थे जो सरस्वती गच्छीय रामसेन के उत्तराधिकारी थे। रचनाकाल स० १५३६ पौष कृष्ण ५ रविवार है। पूरी प्रशस्ति के लिए जै० ग्र० प्र० स०, पृ० १०६ देखो।

देखो—जि० र० को०, पृ० ३२० XIX
आमेर सूची, पृ० ११७
जै० ग्र० प्र० स०, पृ० I १०६
रा० स० III, पृ० ७५, २१७
रा० सू० II, पृ० २२८

105 C यशोधरचरित्र (८ सग)

Opening जितारातीन् जिनान्नत्वा सिद्धान् सिद्धार्थसपद ।
सूरीनाचारसम्पन्नानुपाध्यायास्तथा यतीन् ॥१॥

Closing सम्यक सिद्धगिरो विमुच्य वितनु योगेन योगीतनु ,
जातश्च द्रमरीचिरोचिकचिरोकल्पे सुर सप्तमे ।
ये चान्ये यतयो विशालमतय कल्याणमित्रादय
ते सर्वेऽपि यथायथ तमभवत्कल्याणता सच्छ्रिया ॥

देखो—जि० र० को०, पृ० ३२० XI
रा० सू० III, पृ० ७५, २१७
जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० ७

105 D यशोधरचरित्र (८ सग)

Opening श्रीमत वृषभ व दे वृषद त्रिजगद्गुरुम् ।
अनतमहिमोपेत धमसाम्राज्यनायकम् ॥

Closing नवैवास्य शतानिवत् तथा षष्ठाधिकान्यपि ।
श्लोकसख्यापरिणिया सवग्रन्थस्य लेखकै ।

Colophon मागशीर्ष १० स० १७४७ बुधवासरे श्रीमूलसघे नद्याम्नाए बलात्कार गणे सरस्वतीगच्छे कु दकु दा वये म० श्री जगद्भूषण तत्पट्टे म० विश्व-भूषण तत्पट्टे गोलालारा वये ब्रह्मश्री विनयसागर तच्छिष्य प० हरिकिशन स्वयमेव लिखापित धर्मोपकरणम् ।

देखो—जि० र० को०, पृ० ३२० XVII
आ० सू०, पृ० ११७
प्रशस्तिसंग्रह कासलीवाल, पृ० ५३
रा० सू II, पृ० १८, २२७, २२८
रा० सू० III, पृ० ७५, २१७

(दर्शन तथा आचार-शास्त्र)

106. अध्यात्म पत्र

Opening श्रीमत्परमगभीर स्याद्वादामोघलांछण ॥

Closing मधुबिन्दु समान इन्द्री के सुख लहु खडा बयस्क न प्रतिपा लह । प्रमादमागव्यवहार

107 अध्यात्मोपनिषद्

Opening नमो दुर्वाररागादिवैरिवारनिवारणे।
अर्हते योगिनाथाय महावीराय नामिने ॥

Closing शोभनभृज्वायतमूर्तिकं सस्थान शरीरसन्निवेशो यस्य स सुसस्थान ।

Colophon इति परमार्हत श्रीकुमारपालभूपालशुश्रूषिते आचार्यश्रीहेमचन्द्रसूरि-विरचिते अध्यात्मोपनिषदि चतुर्थप्रकाश समाप्त ।

विशेष क्र० स० ३ की भाति मुहर भी है । जि० र० को०, पृ० ६ के अनुसार 'अध्यात्मोपनिषद्' के रचयिता यशोविजय गणी हैं जबकि इस प्रति में हेमचन्द्र सूरि का नाम दिया है । जि० र० को० मे हेमचन्द्र की कृति का नाम 'अध्यात्मविद्योपनिषद्' लिखा है । रा० सू० II मे नामोल्लेख है पर पृष्ठ सख्या नही दी है ।

108. आचारांग टीका

Opening जयति समस्तवस्तुपर्यायविचारापास्ततीर्थक

Closing भ राशिमुच्चैराचारमार्गप्रवणो लोक ॥

Colophon लिपिकृत मिश्र आसारामेण नगरवरोलीमध्ये । लिखापित श्वेताम्बराम्नाए विजयगच्छे पल्लीवालान्वये जैनधमप्रतिपालक धर्ममूर्ति सुश्रावकश्री दीवान जोधराज जी तेनेद पुस्तक लिखापित । बगिहागोत्रे वासी हरसाणा का सुसवासी दीम का ।

विशेष प्रति में टीकाकार का कोई उल्लेख नही है पर जि० र० को०, पृ० २४ (V) पर आरभ में 'जयति समस्त ' इत्यादि दिया है । इससे वह यही ग्रथ प्रतीत होता है । लिपिकाल माघसुदि १२ रवौ स० १८२७ ।

देखो—आ० सू०, पृ० ६
जि० र० को०, पृ० २४ (V)

109 आचार-वृत्ति (१२ सर्ग)

Opening श्रीमच्छुद्धेद्धबोध सकलगुणनिधि निष्ठिताशेषकायम् ।
वक्तार सत्प्रवृत्तेर्निहितमतिमता शक्रसवदितांघ्रि ॥

Closing शुद्धं वाक्यं सुसिद्धा कलिमलमथनी कायसिद्धिर्मुनीनाम् ।
स्थेयाज्जने द्रमार्गे विरतरमवनौ वा सुहाव ।

Colophon वत्ति सर्वार्थसिद्धि सकलगुणनिधि सूक्ष्मभावानुवृत्ति ।
आचारस्यातनीते परमजिनपते रूयातनिर्दोषवृत्ते ।

विशेष टीका का नाम शोधनीय विषय है। लिपिकाल—आषाढ सुदि १३ स० १८६२।

देखो—जि० र० को०, पृ० २४ II आचारागसूत्र टीका I
रा० सू० II, पृ० १४८ आचार सार वृत्ति
रा० सू० III, पृ० २३ आचारसारवृत्ति

110 आलापपद्धति

Opening गुणाना विस्तर वक्ष्ये स्वभावाना तथैव च।
पर्यायाणा विशेषेण नत्वा वीर जिनेश्वरम् ॥

Closing यथादेव तस्य धनमिति सश्लेषसहितवस्तुसवध विषयोऽनुपचरिता सद्भूतव्यवहारनय यथा जीवस्य शरीरमिति।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १०६
आमेर सूची, प० १३
रा० सू० II पृ० १२ ८०, १६४
रा० सू० III, पृ० १६६ (I)

111 आलापपद्धति

Opening गुणाना जिनेश्वरम् ॥

Closing यथादेव शरीरमिति ॥

Colophon लिखत आषाढ वदि २ सोमवासरे स० १७९३ वर्षे लिखिता माघमध्ये अग्रवालज्ञातीयनरसिंहेन। लिखापित साहू मलजी तत्सुतचतुरभुजजी व लच्छीरामजी तत्सुत गूजरमल भरणमलगोतका मूव।

विशेष क्र० स० ३ को भाति मुहर है। देखो—क्र०स० ११०

112 आलापपद्धति

Opening गुणाना जिनेश्वरम् ॥

Closing यथादेव ... ... शरीरमिति ॥

विशेष विशेष सन्दर्भ के लिए क्र० सं० ११० देखो ।

113. आलापपद्धति (नयचक्र)

Opening गुणाना ... जिनेश्वरम् ॥

Closing यथादेव ... शरीरमिति ,।

Colophon लिखित कार्तिक वदि १२ सं० १७९२ श्रीजहानावादमध्ये । लिखापित च विद्वद्वय षटशास्त्रनिर्वाहिकारक ऋषिराजश्री ।

विशेष बालचन्द पढा जाता है जो स्याही से मिटा है । प्रथम पृष्ठ पर कुछ टिप्पणी भी हैं ।

क्र० सं० ३ की भांति मुहर है ।

114 आलापपद्धति

Opening गुणाना ... जिनेश्वरम् ॥

Closing यथादेव ... शरीरमिति ॥

Colophon हस्ताक्षराणि पं० मुन्नीलाल जैनस्य स्वपठनार्थं लिपिकृत कार्तिक शुक्ला २ ।

विशेष संवत का उल्लेख नही है । वैसे लिखावट आधुनिक ही है ।

115 आत्मानुशासन

Opening लक्ष्मीनिवासनिलय ... मोक्षाय भव्यानाम् ॥

Closing जिनसेनाचार्य ... कृतिरात्मानुशासनम् ।२७० ।

विशेष क्र० सं० ३ की भांति मुहर है ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १००-१०१
आमेर सूची, पृ० १०
रा० सू० II, पृ० १०, १७६, ३८४
रा० सू० III, पृ० ३९, १९१
जि० र० को०, पृ० २७

116 आत्मानुशासन

Opening क्र० सं० ११५ की भांति ।

Closing क्र० सं० ११५ की भांति ।

विशेष — विशेष सन्दर्भ के लिए क्र० सख्या ११५ देखें। प्रारम्भ में पृष्ठ १० श्लोक ६८ तक हिन्दी मे विश्लेषण किया गया है। शेष मूल सस्कृत है।

117 आत्मानुशासन

Opening — क्र० स० ११५ की भाति।

Closing — क्र० स० ११५ की भाति।

विशेष — सन्दर्भ के लिए क्रमांक ११५ देखें।
क्र० स ३ की भाति मुहर है।

118 आत्मानुशासन

Opening — क्र० स० ११५ की भांति।

Closing — क्र० स० ११५ की भाति।

क्र० स० ३ की भाति मुहर भी है। इसमे श्लोक सख्या क्यो बढ रही है यह शोधनीय है।

119 आत्मानुशासन टीका

Opening — वीर प्रणम्य भववारिनिधिप्रपोत-
मुद्योतिताखिलपदार्थमनल्पपुण्यम्।
निर्वाणमार्गमनवद्यगुणप्रबंध-
मात्मानुशासनमहं प्रवहं प्रवक्ष्ये॥

Closing — मोक्षोपायमनल्पपुण्यममल ज्ञानोदय निमल
भव्यार्थ परम प्रभेन्दुकृतिना मुक्ते पदे।
व्याख्यान वरमात्मशासनमिद व्यामोहविच्छेदत
सूक्तार्थेषु कृतादरैरहरहश्चेतास्यल चिस्पलम्॥

Colophon — लिपीकृत लालचन्द्र महात्मा। आसौज वदी ८ स० १८७४ शुक्रवासरे।

विशेष — क्र० सं० ३ की भाति मुहर है। शेष सन्दर्भ के लिए क्रमाक ११५ देखें।

120 भगवती-आराधना

Opening : — दर्शनज्ञानचारित्रतपसमाराधनाया स्वरूप विकल्प तदुपाय साधकान् सहायान् फल च प्रतिपादयन्तु।

Closing — नमः सकलतत्त्वार्थप्रकाशनसहोदये ।
भव्यचक्रमहाम्बुरुहरत्नाय सुखदायिने ॥
श्रुतायाज्ञानतमसे प्रोद्यद्धर्मं विवेस्तथा ।
केवलज्ञानसाम्राज्यभाजे भव्यैकबान्धवे ॥

चन्द्रनंदिमहाकर्मप्रकृत्याचार्यप्रशिष्येण आरातीयसूरिचूलामणिना नागनंदिगणिपादपद्मोपसेवाजातमतिलवेन बलदेवसूरिशिष्येण जिन-शासनोद्धरणधीरेण लब्धयशःप्रसरेणापराजितसूरिणा श्रीनंदिगणिना वचोदितेन रचिताराधना टीका विजयोदयनाम्ना टीका समाप्ता ।

Colophon — जैनश्रवणतुलसीवीरामेण लिलेख फागुन सुदी ३ शनिवासरे सं० १८६३ ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १६१
आमेर सूची, पृ० १०५
रा० सू० II, पृ० १६३, ३८६
जि० र० को० पृ० २८९ (I)

121 भावसंग्रह

Opening — श्रीमद्वीर जिनाधीश मुक्तीश त्रिदशार्च्चितम् ।
नत्वा भव्यप्रबोधाय वक्ष्येऽहम् भावसंग्रहम् ॥

Closing — भूयाद्भव्यजनस्य विश्वमहित श्रीमूलसंघश्रिये
तत्राभूद्विनयेन्दुरद्भुतगुण श्रीसल्लदुग्धार्णव ।
तच्छिष्योऽजनि भद्रमूर्तिरमलस्त्रैलोक्यकीर्ति शशी
येनैकांतमहातम प्रमथित स्याद्वादविद्याकरै ।१२७।
दृष्टि स्वस्तटिनी महीधरपति ज्ञानाब्धिचन्द्रोदयो
वृत्तश्रीकलिकेलिहेलनलिन शांतिक्षमामंदिरम् ।
काम श्वालमरसप्रसन्नहृदय सगच्छमाभास्कर
तच्छिष्यः क्षितिमण्डले विजयते लक्ष्मीन्दुनामा मुनि ।१२८।
श्रीमत्सर्वज्ञपूजाकरणपरिणतस्तस्वर्चितारसालो
लक्ष्मीचन्द्र कुहिलपद्मप्रकर मधुकरश्रीवामदेव ।
सुधी उत्पत्तिर्यस्य जाता शशिविशदकुले नैगमश्रीविशाले ।
सोऽयं जीयात्प्रकाम जगति रसलसद्भावशास्त्रप्रणेता ।२९।

Colophon — लिपिकृतम् ब्राह्मण सालिगराम श्रीमालि चैत्र सुदी ९ रविवासरे सं० १९०० लिखापित ।

विशेष — प्रति अत्यधिक जीर्ण है । पत्र एक दूसरे से चिपके हुए हैं, निकालने में टूटते हैं । जीर्णोद्धार शीघ्र होना चाहिए । वामदेव लक्ष्मीचन्द्र के शिष्य थे

और लक्ष्मीचन्द्र नैगमगच्छीय विनयचन्द्र के शिष्य थे।

देखो—जि० र० को०, पृ० २६६ III
प्र० जै० सा०, पृ० १६५
आ० सूची, पृ० १०८
रा० सू० II, पृ० १६४
रा० सू० III, पृ० १८१

122 भावसंग्रह

Opening : श्रीमद्वीर ... भावसंग्रह ।
Closing भूयाद्भव्य ... प्रणेता ।२६।
Colophon : लिपीकृत पौषवदी ६ सं० १६६५ ।
विशेष शेष सन्दर्भ के लिए क्रमांक १२१ देखो।

123 भव्यजनवल्लभ (श्रावकाचार)

Opening प्रणम्य त्रिजगत्कीर्ति जिनेन्द्र गुणभूषणम् ।
सक्षेपेणैव सवक्ष्ये धर्म्म सागरगोचरम् ॥

Closing इत्येष धर्मग्रहिणा मयोक्त यथागम स्वल्परुचीविनेयान् ।
विशोध्य विस्तारयत प्रयत्नात्सत सद्गुण (रु)
भूषणाद्य ॥ ५० ॥
विख्यातोऽस्ति समस्तलोकवलये श्रीमूलसघो नद्य
स्तत्रातद्विनये दुरक्षुतमति श्रीसारुदोश्रुत ।
तच्छिष्योऽजनि मोहतभृद स्त्रैलोक्यकीर्तिम नि ,
तच्छिष्यो गुणभूषण समभवत्स्याद्वादचूडामणि ॥ ५१ ॥
तेनाय भव्यचित्रादिवल्लभाख्या सता कृते ।
सागारधर्मो विहित स्थेयादा पृथ्वीतले ॥ ५२ ॥
अस्त्यत्र वश पुरपाटसज्ञ समस्तपृथिवीपतिमाननीय ।
त्यक्त्वा स्वकीया पुरलोकलक्ष्मी मुक्तज न्म ॥ ५३ ॥
तत्प्रसिद्धोऽजनि कामदेव पत्नी च तस्याजनि नामदेवी ।
पुत्रौ तयो नेमि-लक्ष्मणाख्यावभवत् राधालक्ष्म्याविव ॥
रत्न रत्याबने शशिजलनिधेराम्भोद्भव श्रीपते

वांतश्रीगुणभूषणाश्रय तत सम्यक्त्वव्रतांकित ॥ ५५ ॥

यस्त्यागेन जिगाय कल्पतरुपतिं न्यायेन वाचस्पतिं,
नैर्मल्येन निशापतिं गणपतिं सद्धैर्यभावेन च ।
गाम्भीर्येण सरित्पतिं तत्पतिं सद्धर्मसद्भावनीं,
तच्छ्रीदृग्गुणभूषणो भति नतो नेमिश्विर नदतु ।। ५ ।।
श्रीमद्वीरजिनेशपादकमले चेत षडङ्घ्रि सदा,
हेयाहेयविचारबोधनिपुण बुद्धिश्च यस्यात्मनि ।
दान श्रीकरकुञ्जले गुणतति देहे
रत्नत्रितम हृदि स्थितमसौ नेमिश्विर नन्दतु ।। ५७ ।।

Colophon रत्ने लिखित चैत्रसुदि ५ शनि दिने स० १५७६ ।

124 चर्चापत्र

Opening वाचनाप्रच्छने सानुप्रेक्षापरिवर्तनम् ।
सद्धर्मदेशन चेति ज्ञातव्या ज्ञानभावना ।।

Closing रागद्वेषाद्यभावस्वरूपेण परिणतत्तो जीवस्ततो परिणततनो आगमभाव सामयिक एव न्यायो यथास्वमुत्तरेऽपि योज्य ।

Colophon ए चर्चापत्र फागई का पडित अमरचदजी काथ पत्रासूं उतारया छे स० १८५५ का साल मे महाग्रहस्तु

विशेष पृ० २६ के बाद कोई अ य लिपिकार प्रतीत होता है । प्रति मे ग्रथ या ग्रथकार का कही उल्लेख नही है । केवल मुख पृष्ठ पर तथा अतिम पृष्ठ ४५ पर कोने में 'चर्चापत्र' लिखा है । क्र० स० ३ की भाति मुहर लगी है ।

देखो—जि० र० को०, पृ० १२२ ।

125 चारित्रसार (भावनासार-सग्रह)

Opening अरिहनन-रजोहनन रहस्यहर पूजनार्हमहन्तम् ।
सिद्धान् सिद्धाष्टगुणान् रत्नत्रयसाधकान् स्तुवे साधून् ।

Closing तत्त्वार्थराजवृत्तिमहापुराणेष्वाचारशास्त्रेषु च विस्तरोक्त ।
आख्यात् समासादनुयोगवेदी चारित्रसार रणरगसिंह ।।

Colophon इति सकलागमसयमसपन्नश्रीमज्जितसेन भ० श्रीपादपद्म प्रासादासादितचतुरनुयोगपारावारपारगधर्मविजयश्रीचामुण्डमहाराजविरचिते भावनासारसग्रहे चारित्रसारेऽनगारधर्म समाप्त ।

विशेष ग्रंथ संख्या १८००

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १२३
आमेर सूची, पृ० ५६
रा० सू० II, प० ७, १५२
रा० सू० III, प० २५
जि० र० को०, पृ० १२२

126 चारित्रसार

Opening अरिहनन ... साधून् ॥

Closing तत्वाथ धम ॥

Colophon लिखापितमिद पुस्तक आश्विन सुदी १० स० १७७६ वर्षे श्रीमत् खरतराचार्यगच्छीय श्रीसिद्धिवधनोपाध्यायगणीनां शिष्येण विद्वद्गुण विलासगणिना स्वपठनार्थं श्रीदिल्लीमध्ये ।

विशेष क्रमाक १२५ देखो ।

127 चौबीस ठाणा

Opening गइइंद्रिय काए जोए वेदे कषाए नाणेय ।

Closing मि?थ्य मि?क्षायक कुलसर्व इति चौबीस ठाणा समाप्ता ।

128 चौबीस ठाणा

Opening : गइ इंदिएण काए सण्णि आहारे । १ ।

Closing एक एकत्रे २८ प्रकृति वधक ।

129 चौबीसी ठाणा

Opening गयदिये च काये • सम्मत्रणीहारे । १ ।

Closing : मनुष्यकुलकोडि लाखकुलकोडि । १४ एव ऐकसाढा निन्यान कुल कोडि लाख सपूरण ।

130 छयालीस ठाणा

Opening २४ तीर्थंकरों के नाम, विमान तें आगता

Closing सद्दो बधो सुहमो थूलो सधाणभेदतमछाया ।
उद्दोदादवसहिया पुग्गलदव्वस्स पज्जाया ॥ ४ ॥

131 द्रव्यसंग्रह बृहट्टीका

Opening प्रणम्य परमात्मानं सिद्धं त्रैलोक्यवंदितम् ।
स्वाभाविकं चिदानन्दस्वरूपं निर्मलाव्ययम् ॥ १ ॥

Closing द्रव्य संग्गहमिणं शुद्धबुद्धैके स्वभावपरमात्मादिद्रव्याणां संग्रहो द्रव्य-संग्रह ।

Colophon मालवदेशे धारानामनगराधिपतिभोजदेवाभिधानके कलिकाल-चक्रवर्तिसंबधिन श्रीपालमहामंडलेश्वरस्य संबधिन्या श्रमनामनगरे श्रीमुनि-सुव्रतस्य चैत्यालये । ३ ।

शुद्धात्मद्रव्यसंवित्तिसमुत्पन्नसुखामृतरसास्वादविपरीतनारकादिदुःख पभीतस्य परमात्मभावनोत्पन्नसुखसुधारसपिपासितस्य भेदाभेदरत्नत्रय-भावनाप्रियस्य भव्यवरपुण्डरीकस्य भांडागाराद्यनेकनियोगाधिकारि सोमा भिधा राजश्रेष्ठिनो निमित्त श्रीनेमिचंद्रसिद्धांतदेव इद ग्रंथ प्रारभ्यते ।

देखो—रा० सू० II, पृ० १४०
रा० सू० III, पृ० १७, १६०
जि० र० को०, पृ० १८२ (२)

132 द्रव्यसंग्रह

Opening क्र० स० १३१ की भांति ।

Closing क्र० स० १३१ की भांति ।

Colophon श्री कुरुजागलदेशे तत्र समस्तकाजावलिसमलकृतसुलितान अकबर-राज्यप्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भ० देवसेण तत्पट्टे भा० विमलसेन तत्पट्टे भ० धर्मसेन तत्पट्टे भ० भावसेन तत्पट्टे भ० सहस्र-कीर्ति तत्पट्टे भ० गुणकीर्ति तत्पट्टे भ० यशःकीर्ति तत्पट्टे भ० मलयकीर्ति तत्पट्टे भ० गुणभद्रसूरि तत्पट्टे भ० भानुकीर्ति तस्य शिष्य मंडलाचार्यमुनि-कुमारसेणेति, तदान्वये अयोतिकान्वए भूषणे सिंघलगोत्रे सिरसावे वास्तव्ये वट्टसेटे चोलियाणिपत्रा ।

विशेष शेष सन्दर्भ के लिए क्रमांक १३१ देखो ।

देखो—भट्टारक सम्प्रदाय, पृ० २४६

133 द्रव्यसंग्रह

Opening क्र० स० १३१ की भांति ।

Closing क्र० स० १३१ की भांति ।

134 द्रव्यसंग्रह

Opening क० स० १३१ की भांति।
Closing क० स० १३१ की भांति।
Colophon लिखापित चौधरी सोहलु लिपिकृत सुदर्शनेन कार्तिक सुदी १३ स० १६६८

135 द्रव्यसंग्रह

Opening क० स० १३१ की भांति।
Closing क० स० १३१ की भांति।
Colophon श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दान्वये भ० श्रीपद्मनन्दी तत्पट्टे श्रीशुभचन्द्र तत्पट्टे श्रीजिनचन्द्र बघेरवालान्वये पंडितगोत्र संघाधिपति सीहाभार्या महकू तयो पुत्र संघइ खिमधर खेमसी, हवाला काल्हा माल्हा कोल्हा एतेषा मध्ये साह काल्हा भार्या कोद्री तयो पुत्रकरण छीहल इद पुस्तक द्रव्यसंग्रह प० समूधरयोग्य प्रदत्त।

ब्राह्मण गावि दसुत ब्राह्मणव्यासनाथ लिखित श्रावण वदि ११ स० १४६२ गुरुवासरे।

136 द्रव्यसंग्रह

Opening क० स० १३१ की भांति।
Closing क० स० १३१ की भांति।

137 द्रव्यसंग्रह

Opening जीवमजीव दव्व सव्वदा शिरसा ॥
Closing दव्वसग्गहमिण णेमिचदगुणिणा भणिय ज ज ।५६।
Colophon इति द्रव्यसंग्रहटीका भ० श्रीसहस्रकीर्तिकृता समाप्ता।

देखो—जि० र० को०, पृ० १८२ (३)

138 धर्मामृत टीका (भव्यकुमुदचन्द्रिका)

Opening श्रीवर्धमानमानम्य मन्दबुद्धिप्रबुद्धये।
धर्मामृतोक्तसागार—धर्मटीका करोम्यहम् ॥
Closing खरपानहापनामपि यत्नेनेति भद्रम् ॥
विशेष प० आशाधर जी ने दो टीकाए लिखी—भव्यकुमुदचन्द्रिका और ज्ञानदीपिका पंजिका।

देखो—जि० र० को०, पृ० १९४ I
प्र० जै० सा०, पृ० १३ २४५
आ० सू०, पृ० २,१६८
रा० सू० III, पृ० १४८

139. धर्मामृत (अनगार)

Opening क्र० स० १३८ की भांति ।

Closing क्र० स० १३८ की भांति ।

Colophon चन्द्रचन्द्रवसुचन्द्रसम्मते वत्सरे नगरे करोलिके ।
ज्येष्ठपक्षसुपक्षवलक्षके तिमजयामृत पूर्णना वषतु ॥
ज्येष्ठ सुदि स० १८११ ।

140 धर्मपरीक्षा (२१ सर्ग)

Opening श्रीमान्नभस्वत्रय तीर्थंकरा श्रये न ॥

Closing सवत्सराणा विगते सहस्रे ससप्ततौ विक्रमपार्थिवस्य ।
इद निषिध्या यमत समाप्त जैने द्रधर्मामृतयुक्तिशास्त्रम् ॥

देखो—प्र० जै०, पृ० १६१
प्रा० सू० पृ० ७६
सू० II, पृ० २६, १८४
जि० रा० को०, पृ० १८६ III

141 धर्मपरीक्षा

Opening क्र० स० १४० की भांति ।

Closing क्र० स० १४० की भांति ।

विशेष इस प्रति मे पृ० २०१ पर 'ससप्तो' लिखा है। तदनुसार इसका लेखनकाल स० १०७० होना चाहिए पर तु क्रमाक १४० वाली 'ग' प्रति मे "सप्त सप्ततौ" पद मिलता जो अशुद्ध है। जि० रा० को० मे भी स० १०७० दिया है।

142 धर्मपरीक्षा

Opening क्र० स० १४० की भांति ।

Closing क्र० स० १४० की भांति ।

143 धर्मपरीक्षा

Opening क्र० स० १४० की भांति ।

Closing यावत्सागरपोषितो ॥

Colophon नवोद्रिनागोदुधसख्यितेषु श्रीविक्रमाकस्य नृपत्वकालात् ।
गतेषु वर्षेषु च राधमासे तिथावुभाया सितभासि सौम्ये ।१।

जिनाधिराजाघ्रिपदोरुहालियों रामनारायणसूनूराद्य ।
नाम्ना विविचन्द्र इति प्रसिद्धस्तदर्थमेषाभयकाव्य लेखि ।२।

विशेष — विशेष सदर्भ के लिए क्र० स० १४० देखो ।

144 धर्मप्रश्नोत्तर

Opening — तीर्थेशान श्रीमतो विश्वहितकरान ।।
Closing — एकादशशतै धर्मप्रभाषणं ।६८।
Colophon — इदम् पुस्तक जैसंघपुरा जिहानाबाद का साधरम्या का चैत्यालय कोष्ठे है ।
विशेष — यह ग्रथ प्रश्नोत्तर श्रावकाचार, प्रश्नोत्तरोपासकाचार, श्रावकाचार आदि नामों से भी प्रसिद्ध है ।

देखो—जि० र० को० पृ० १६०
प्र० जै० सा०, पृ० १६१
रा० सू० II पृ० १६०

145 धर्मप्रश्नोत्तर

Opening — क्र० स० १४४ की भाति ।
Closing — क्र० स० १४४ की भाति ।
Colophon — १११६ प्रश्न । १५०० श्लोक ।
विशेष — क्रमाक १४० देखो ।

146 धर्मसग्रह श्रावकाचार

Opening — श्रिय दद्यात्स वो देवो सौख्यायानन्तवत् ।
Closing — चतुर्दशशता यस्य तत्वसशय ।। ११४४० ।
Colophon — लिखत दयाचद जेष्ठ वदि ११ स० १८७४ शनिवासरे ।
विशेष — प्रति मे लेखक का नाम नही है, पर श्लोको की स० इसमें तथा जि० र० को० पृ० १९४ VII पर मिलती है । तदनुसार लेखक का नाम निश्चित हो जाता है ।

देखो—जि० र० को०, पृ० १९४ VII
प्र० जै० सा०, पृ० १६२
आ० सू०, पृ० ७६
रा० सू० II, पृ० ७,१५६
रा० सू० III, पृ० ३०,१८५

147 धर्मसंग्रह श्रावकाचार

Opening	क्र० सं० १४६ की भाँति।
Closing	क्र० सं० १४६ की भाँति।
Colophon	श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाम्नाए भ० पद्म नंदी तत्पट्टे सकलकीर्ति तत्पट्टे भुवनकीर्ति तत्पट्टे ज्ञानभूषण तत्पट्टे वसुंधराचाय श्रीज्ञानकीर्ति तत्पट्टे रत्नकीर्ति तत्पट्टे यशकीर्ति तत्पट्टे गुणचंद्र तत्पट्टे खेमचन्द्रोपदेशात् धर्मसंग्रहश्रावकाचार समाप्त। लिखात सुगुनचंद हरसुखराय का बेटा फागुण (मागुण) सुदि ५ सं० १८७४।

148 धर्मोपदेशपीयूष

Opening	श्रीसर्वज्ञं प्रणम्योच्चं केवलज्ञानलोचनम्। सद्धर्मं देशयाम्येष भव्यानां शर्महेतवे॥
Closing	बाणांबुधिक्षितिधरोषधिनाथसंख्ये संवत्सरेऽसित नभोदिननाथतिथ्यां। वारे कवेर्मतिमता सुखकारणाय व्यलेखि छत्रपतिनाऽकपुरेऽतिरम्ये॥
Colophon	आषाढवदि रवौ सं० १८४५ लिखितं।

149 धर्मोपदेशपीयूषवर्ष श्रावकाचार

Opening	श्रीसर्वज्ञं प्रणम्योच्चं केवलज्ञानलोचनम्। सद्धर्मं देशयाम्येष भव्यानां शर्महेतवे॥
Closing	गच्छे श्रीमति मूलसंघतिलके सारस्वतीये शुभे विद्यानंदिगुरुप्रपट्टकमलोल्लासप्रदो भास्करः। श्रीभट्टारकमल्लिभूषणगुरुः सिद्धांतसिंधुर्महा- स्तच्छिष्यो मुनिसिंहनंदिसुगुरुः जीयात्सतां भूतले॥
Colophon	चैत्रसुदी १४ गुरुवासरे सं० १८७३ लिखितं।

देखो—जि० र० को०, पृ० १९६
रा० सू० II, पृ० १५६
रा० सू० III, पृ० ३०,१८५
आमेर सूची, पृ० ७६
जै० ग्र० प्र० सं०, १८

150 गोम्मटसार सटीक (२२ अध्याय)

Opening	नेमिचन्द्रं जिनं कुर्वे कर्णाटवृत्तिं॥

Closing — आर्य्यार्यसेन गुणगणसमूह सधार्य जिनसेनगुरु ।
भुवनगुरुर्यस्य गुरु स राजा गोम्मटो जयतु ।।

Colophon — श्रीमदप्रतिहतप्रभावस्याद्वादशासनगुहाभ्यतरनिवासिसिंहायमानसिंह-नदिमुनीन्द्राभिनदितगगवशललामराजसर्वज्ञाद्यनेकगुणनामधेयभागधेयश्रीम-द्राचमल्लदेवमहीवल्लभमहामात्यपदविराजमानरणरगमल्लसहायपराक्रमगुणरत्नभूषण - सम्यक्त्वरत्ननिलयादिविविधगुणनामसमासादितकीर्तिकान्त श्रीमच्चामुण्डराय प्रश्नावतीर्णकचत्वारिंशत्पदनाम सत्वप्ररूपणाद्वारेणाशेष विनेयजननिकुरवातबोधनाथ नेमिचन्द्रसिद्धान्तचक्रवर्ती शास्त्रमकरोत् । कार्णाटिकीवृत्तिर्वर्णिश्रीकेशवै कृत ।

विशेष — इसका गुणस्थानक व पचसग्रह भी नाम दिया जाता है। आरभ मे पत्र सख्या २४० का उल्लेख है जबकि भीतर केवल २११ ही पत्र हैं। इसकी प्रथम टीका अभयचद्र की है और दूसरी केशववर्णी की।

देखो—प्र० जं० सा० प० ११६
आ० सू०, पृ० ५३
रा० सू० II, पृ० १२८
रा० सू० III, ६
जि० र० को० पृ० ११०

151 गोम्मटसार जीवकांड

Opening — नेमिचन्द्र ... कर्णाटवृत्तित ।।

Closing — आर्यायसेन ... जयतु ।।

Colophon — श्री-अलवरनगरमहादुर्गे पातिसाह महम्मदराज्यप्रवर्तमाने श्री-काष्ठा सघे माथुरान्वये पुष्करगच्छे ।
जेठ वदि ३ गुरुवासरे स० १६१२ ।

152 गोम्मटसार कर्मकांड (९ अध्याय)

Opening — पणमिय शिरसा णमि ... समुक्कित्तण वोक्ष ।।

Closing — गोम्मट्टसारसूत्रलेखने ... चिरकाल जयतु ।।

Colophon —
यत्रस्तै त्रिभिलभ्याहत्य पूजानरामरै ।
निर्वांति मूलसघोऽय नद्यादा च प्रतारकम् ।१।
तत्र श्रीसारदोगच्छे वलात्कारगणान्वय ।
कुदकुदमुनीन्द्रस्य नद्याम्नायोऽपि नदतु ।२।
यो गुणैर्गणभृत्गीतो भट्टारकशिरोमणि ।
भक्त्या नवीमित भूयो गुरु श्रीज्ञानभूषणम् ।३।

कर्णाटप्रायदेशेशमल्लिभूपालभक्तित ।
सिद्धान्तपठितो येन मुनिचन्द्र नमामि तम् ।४।

येऽभ्यर्थधर्मवृद्धियथ मह्य सूरिपद ददौ ।
भट्टारकशिरोमणिरय प्रभेन्दु स नमस्यते ।५।

त्र विद्यविद्याविख्यात विशालकीर्तिसूरिणा ।
सहायेभ्य कृतौ चक्रे क्षितौ च य प्रथम मुदा ।६।

सूरे श्रीधमचन्द्रस्याभयचन्द्रगणेशिन ।
वर्णिलालान्भिव्याना कृते कर्णाटवृत्तित ।७।

रचिता चित्रकूटे श्रीपाश्वनाथचैत्यालयेऽमुना ।
साधुसघसहस्राभ्या प्राथितेन मुमुक्षुणा ।८।

गोम्मटसारवृतिर्हि न व्याद्धव्यै प्रवर्तिता ।
शोधयित्वागमाद केचित विरुद्ध चेदकुश्रुता ।९।

निग्र थाचायवर्येण त्रैविद्यचक्रवर्तिना ।
सशोध्याभयचद्रेण लिखिता प्रथमपुस्तिका ।१०।

वर्षे भारतसज्ञकेऽत्र विदिते तीर्थे शुभे सन्मते ।
वर्षाणावरशून्यजीव (६०४) विगते श्रीविक्रमश्चाभवत् ।
शाके तस्य भयाग्निजीवकमिते (१६३७)
श्रीमत्स मतितीथनाथगणभृत् श्रीगौतमाख्यो मुनि ।
बुद्धीद्धादिसुऋद्धिमाश्च विजयी श्रीमत्सुधर्मश्चि या ।
जबूस्वामिसमाह्वयोत्र विदिता कैवल्यदग्बोध या ।
तच्छिष्यो मुनिनाथवृ दगणयो सेना तनामाजिन ।

देखो—प्र० जै० सा, पृ० ११६
रा० सू० II, पृ० १२६, ३४६, ३५०, ३८६
रा० सू० III, पृ० ६,११२,१७७
जि० रा० को०, पृ० ११०

153 गोम्मटसार सटीक

Opening — पणमिय वोच्छ ॥
गोम्मटसार जयतु ॥

Closing — श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भ० श्री हेमचद्र तच्छिष्य पद्मनंदि तत्पट्टोदयकर कसूर्योदयात् पचरसत्यागी भ० श्रीयश कीर्ति तत्पट्टे सिद्धान्तजलसमुद्रान तपरसनिस्तारकान् आ० गुणचद्र तेनेद पुरातनप्रति खडितोद्धारं करापित । भादव सुदि सं० १६६७ ।

154 इष्टोपदेश

Opening स्य स्वयभावाप्ति नमोस्तु परमात्मने ।

Closing इष्टोपदेशमिति उपयानि भव्य ।५१।

Colophon लिखत सवाई जैपुर मे बखतावर सिंह जनी भादो वदि ३ दीतवारे स० १८८३ लिखापित श्रीसुखरायजी ला० दरवारीमलजी ।

विशेष टिप्पण भी हैं। प्रति मे रचनाकार का नामोल्लेख नही है।

देखो—जि० र० को० पृ० ४० I
प्र० ज० सा०, पृ० १०७
श्रा० सू०, पृ० १४
रा० सू० II, पृ० ३५८, ६४, ८१ ८३ ८६
रा० सू० III, पृ० २३८

155 इष्टोपदेश

Opening क्र० स० १५४ की भाति ।

Closing क्र० स० १५४ की भाति ।

156 जिनसहिता

Opening मगल भगवानह मगल भगवान जिन ।
मगल प्रथमाचार्यो मगल वृषभेश्वर ॥

Closing सभद्रो वा प्रकल्पोऽथ रथोभव व्यासाऽस्मि पचतान ।
स्यादुक्ताश ज्ञापितोछेय १०६१

विशेष जन पूजा कम विषय पर चर्चा की गई है। शक स० १०४१ म रचित जिनेन्द्र कल्याणाभ्युदय' मे इसका उल्लख मिलता है।

देखा—जि० र० का० पृ० १३७ I
रा० सू०, II पृ० १४

157 ज्ञानार्णव (42 अध्याय)

Opening श्रीगुरुभ्या नम ।
ज्ञानलक्ष्मीघनाश्लषप्रभवान दनन्दितम ।
निष्ठितार्थमज नौमि परमात्मानमव्ययम ॥

Closing ज्ञानार्णवस्य माहात्म्य चित्त को वेत्ति तत्त्वत ।
यज्ज्ञानात्तीयते भव्यदु स्तरोऽपि भवार्णव ॥

Colophon — अष्टे श्रीविक्रमस्य रसेशमूर्तीन्दुकुलायुते सहिमासे शुक्ले पक्षे तिथावेकादश्या जैवास्टकदिने श्रीमदुत्तराधिगछाधीश श्रीहसराजसूरयस्तच्छिष्येण ।

विशेष — इन्होने अकलकदेव और जिनसेन का नामोल्लेख किया है । पर ये पाण्डवपुराण के कर्त्ता शुभचन्द्र (१६०८ VS) से भिन्न है क्योकि प० आशाधरजी (१२९० VS) ने अपने इष्टोपदेश की टीका मे ज्ञानाणव के कुछ पद उद्धृत किये हैं ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० २५७
आ० सू०, पृ० १६६
रा० सू० II, पृ० १५,२०२,३४६
रा० सू० III, पृ० ४०,१६२
जि० र० को, पृ० १५०

158 ज्ञानार्वण मूल

Opening — क्र० स० १५७ की भाति ।

Closing — क्र० स० १५७ की भाति ।

Colophon — लिपीकृत श्रावणवदी ३ बुधवासरे स० १८६१ वर्षे जपुरमध्ये लिखापित छावडा गोते सगहीजी श्रीरामचद्रजी ।

159 ज्ञानावण मूल

Opening — क्र० स० १५७ की भाति ।

Closing — क्र० स० १५७ की भाति ।

160 ज्ञानावण मूल

Opening — क्र० स० १५७ की भाति ।

Closing — क्र० स० १५७ की भाति ।

Colophon — वस्वतरिक्षमुन्यके युत द्वे मासे चाश्विन ।
सुतिथौ पौणमास्या च शुचिपक्षे हि भागवे ।१।
निखिलगुणगरिष्टो नायकोऽभू मुनीश ।
सकलविनित तत्वस्तत्पदे रामदास ।२।
श्रीजिनसमयसमुद्रो हसराजो मुनीन्द्रो
यतिगुणगणयुक्तस्तत्पदेऽभूत्कल्याण ।३।
नयनसुखगछेशो विद्यते
हेतोव्यलीखीद भावदेवेन साधुना ।४।
मुनिमल्लराज तच्छात्रो मुनीन्द्रो गणनायक ।

तच्छात्रो मुनिमाधवदास तच्छात्रो मुनि विधीचन्द्रो
तच्छात्रो भावदेवेन ऋषिणा ।

विशेष — बीच बीच मे लिपि स्वच्छ और सुदर है । शेष सन्दर्भ के लिए क्रमाक १५७ देखो ।

161 ज्ञानार्णव मूल

Opening — क्र० स० १५७ की भांति ।

Closing — क्र० स० १५७ की भाति ।

Colophon — श्री मूलसघे नद्याम्नाए बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनदि तत्पदे भ० शुभचद्र तत्पदे भ० जिनचद्र तत्पदे भ० श्रीप्रभाचद्रदेवा मार्गशीर्षसुदि ३ शुक्रवासरे स० १६०६ उत्तराषाढनक्षत्रे ।

विशेष — कही कही टिप्पणियाँ भी है । ग्र थ तो पूर्ण है पर प्रशस्ति अधूरी है । शेष सदर्भ के लिए क्रमाक १५७ देखो ।

देखो—भट्टारक सप्रदाय, पृ० ११२

162 ज्ञानार्णव मूल

Opening — क्र० स० १५७ की भाति ।

Closing — इति जिनपतिसूत्रात्सारमुद्धृत्य किञ्चित
स्वमतिविभवयोग्य ध्यानशास्त्र प्रणीतम ।
विबुधमुनिमनीषाम्भोधिचद्रायमाण
चरतु भुवि विभूत्य यावच्चन्द्रीन्द्रचन्द्रान ।।

विशेष — अन्य प्रतियो की अपेक्षा इसमे ४ श्लोक कम है तथा अन्तिम श्लोक भी बदला हुआ है । शेष सदर्भ के लिए क्रमाक १५७ देखो ।

163 ज्ञानार्णव मूल

Opening — क्र० स० १५७ की भाति ।

Closing — क्र० स० १५७ की भाति ।

164 ज्ञानार्णव मूल

Opening — येवकेवलम ।।१६।।

Closing — इति जिनपति शास्त्र ।।

विशेष — प्रति अपूर्ण और बहुत जीर्ण है । पहला तथा ११० से १२४ तक के पत्र नहीं है । पत्र दो पर एक कागज लगाकर निम्न प्रकार लिखा है—

"श्री राये साहिब पहले १ और पन्ना जोडकर भेजा था आपने देखा होगा। आपकी आज्ञिया अनुसार १ और पन्ना जोडकर भेजता हू देख लें। पन्ना बिला जोडे भी भेजता हूँ। फरमावे किस तरह जोडा जावे। चारो ४ तरफ उसके ग्रथ लिखे हुए हैं जब तक कोई और लिखारी जोडने वाले के पास न भेजेगा इसका जोड़ना बोहूत ही कठिन है।"

उपयु क्त लेख से प्रतीत होता है कि इस प्रति का जीर्णोद्धार कराने का प्रयत्न किया गया होगा पर बगल मे टिप्पण होने के कारण वह न हो सका।

165 ज्ञानार्णव

Opening सविपका इति ज्ञेयो य स्वकर्मफलोदय।
प्रतिक्षणसमुद्भूतश्चित्ररूप शरीरिणाम्॥

Closing इति जिनपतिसूत्रात् यावदादीन्द्रचन्द्रान्।४०।

विशेष प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ के ११६ पत्र नही है। शेष सन्दर्भ के लिए क्रमाक १५७ देखो।

166 ज्ञानार्णव टीका

Opening शिवोऽय वैनतेयश्च स्मरश्चात्यव कीर्तित।
आणिमादि गुणाऽनघ्यरत्नवार्धिबु धैमत॥

Closing आचार्यैरिह शुद्धतत्त्वमतिभि श्रीसिहनद्याह्वय,
सप्राध्य श्रुतसागर कृतिवर

विशेष प्रति अपूर्ण है।

देखो—जि० र० को०, पृ० १५०
जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० ७१

167 कर्मविपाक

Opening जिनेन्द्रान धर्मचक्राकान् हतघातिरिपून परान्।
नष्टाष्टकर्मकायाश्च सिद्धान ' ॥

Closing निरुपमसुखवार्द्धान् ज्ञानमूर्तीन् विदेहान्।
वसुवरगुणभूषान् सिद्धनाथाननन्तान्।

विशेष कागज चिपका देने से अक्षर छिप गये हैं। पृष्ठमात्रा में लिखित होने से प्रति सोलहवी सदी की प्रतीत होती है। इसका हिन्दी अनुवाद ब्र० जिनदास ने स० १५२० के लगभग किया था। ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है।

देखो—भट्टारक सम्प्रदाय, पृ० १५३
आमेर सूची, पृ० २३

168 लघुनसूत्र

Opening अविकल्पविषय एक स्थाणु प्रभृष श्रुतोऽस्ति यत्र

Closing व्याप्तिपक्षधमत्ययो प्रतीतिमपेक्ष्य यथानुमान जाय

169 लब्धिसार (क्षपणासार) 19 अध्याय

Opening जयत्यन्त्यमहत सिद्धा शरणोत्तममगलम् ।

Closing वादरलोभस्य प्रथमा वृत्तिभवति ।

विशेष यह गोमट्टसार का एक छोटा सा परिशिष्ट है ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० २११
रा० सू० III, पृ० २१
रा० सू० II, पृ० १४५, ३८६
जि० र० को०, पृ० ३३७

170 लाटीसहिता (7 सग)

Opening ज्ञानान दात्मान नमामि तीथकर महावीरम् ।
यच्चिति विश्वमशेष व्यदीपि नक्षत्रमेकमिव नभसि ॥

Closing अक्षरमात्रपदस्वर शास्त्रसमुद्रे ॥

Colophon अकबर के राज्य काल मे फामन के लिए लिखी गई । लेखक माणिकचद्र जैन पालम ग्रामवासी । रचनाकाल आश्विन सुदी १० रविवासरे स० १६४१ ।

देखो—प्र० जै० सा० पृ० २१२
रा० सू० II पृ० १७०
रा० सू० III पृ० १८७
जि० र० को० पृ० ३३८
भट्टारक सम्प्रदाय पृ० २२३ २२४, २३०, २३२, २४३

171 मूलाचार

Opening

पचषष्ठयाधिका श्लोका त्रयत्रिशच्छतप्रभा ।

Closing अस्याचारसुशास्त्रस्य ज्ञेया पिण्डीकृता बुधै १२३२ ।

Colophon लिखत दयाचद्र फागुन सुदी ८ सोमवार स० १८७३

देखो—आ० सू०, पृ० ११३, २०१
रा० सू० II, पृ० १६६
रा० सू० III, पृ० ३३
जि० र० को०, पृ० २५ (३)

172. नियमसार (१२ अध्याय)

Opening त्वयि सति परमात्मन् मादृशान्मोहमुग्धान
कथमतनुवशत्वान्बुद्धकेशान्यजेऽहम् ।

सुगतमगधर वा वागधीश शिव वा
जितभवमभिवन्दे भासुर श्रीजिन वा ॥

Closing यावत्सदा गतिपथे रुचिरे विरेजे तारागणै परिवृत सकलेन्दुबिंबम् ।
तात्पयवत्तिरपहस्तितहेयवत्ति स्थेयात्सता विपुलचेतसि तावदेव ॥

Colophon लिपिकृत मातमा गुमानीराम का पुत्रमुराराम चैत्रवदि १२ बुधवार
स० १८६१ ।

विशेष प्रति मे सिद्धसेनादि चार आचार्यों का उल्लेख है जबकि जि० र०
को पृ० २१३ (१) पर दश आचार्यों का उल्लेख किया गया है। दो
छदो की प्रशस्ति भी है जो प्रकाशित ग्र थ मे देखी जा सकती है।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १६८
आ० सू०, पृ० ८३
रा० सू० II पृ० ३५७
रा० सू० III, पृ० १८५
जि० र० को०, पृ० २१३ (१)

173 पद्मनदीपचविंशतिका सटीक

Opening कायोत्सर्गायतागो प्रोज्झतो विस्फुलिंग ॥
Closing मया पद्मनन्दिमुनिना पद्मनदीमुनौ ॥
विशेष क्रमांक १८० भी देखें ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १७१
जि० र० को०, पृ० २३३
रा० सू० II, पृ० ७१, १९७, ३९५
रा० सू० III, पृ० ३०, २५६
भट्टारक सम्प्रदाय, पृ० १४४ ,१३१

174 पद्मनदीपंचविंशतिका सटीक

Opening क्र० स० १७३ की भाति ।
Closing क्र० स० १७३ की भाति ।

175 पद्मनंदीपंचविंशतिका सटीक

Opening क्र० स० १७३ की भांति ।

Closing क्र० स० १७३ की भाँति ।

Colophon लिपीकृत पौष सुदी १२ सं० १७६१ उदयचद ऋषिणात्मार्थे बुध्यणानगरे शुभस्थाने शुभ भवतु ।

विशेष शेष सदभ क लिए क्रमाक १७३ देखो ।

176 पद्मनंदीपंचविंशतिका मूल

Opening क्र० स० १७३ की भाति ।

Closing क्र० म० १७३ की भाति ।

Colophon माघसुदि १ मगल वासरे स० १५६४ श्री हिसार पेरोजाकोटे पाति साहि हमाऊ राज्य प्रवतमाने श्रीगौनमाम्गिणी नामाम्नाए अग्रोतकान्वये गर्गगोत्रे सेविवसे साधु श्रीभीखा तस्य भाया कुलिचदही तस्य पुत्रा त्रीणि प्रथम पुत्र आगमाध्या मरसरसकान द्वितीय पाडे छाजू तस्य भार्या डूकणही तस्य पुत्रौ द्वौ, प्रथम पुत्र दीपचद तस्य भार्या लाहलही तस्य पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र साहजाटू तम्य भार्या मेघही तस्य पुत्रौ द्वौ चि० भानुसिधु द्वितीय वेगादीपा पुत्र डूजा चि० धमदास तस्य भार्या जिणदासही तस्य पुत्र एक खेतपाडे छाजू पुत्र शातिदासु तस्य भार्या रूपो तस्य पुत्रो चैक ठकुरा तस्य भार्या साही तस्य पुत्र चक सहारू भीखा पुत्र द्वितीय श्रीजिन प्रभावना गधुरधौरेय नुप्रतिष्ठाचाय पाडे जज स

Colophon शेष सदभ के लिए क्रमांक १७३ देखो ।

177 पद्मनंदीपंचविंशतिका मूल

Opening क्र० स० १७३ की भाति ।

Closing क्र० स० १७३ की भाति ।

Colophon लिखत माह वदि ५ शनौ स० १७७० प० सौभाग्यविजयेन आगरा-नगरे ।

विशेष शेष सन्दभ क लिए क्रमाक १७३ देखो ।

178 पद्मनंदीपञ्चविंशतिका मूल

Opening क्र० स० १७३ की भांति ।

Closing क्र० स० १७३ की भांति ।

179 पद्मनंदीपञ्चविंशतिका (अपूर्ण)

Opening सि सभाव्यते । तस्मात्साम्य सदा पातु व ।३।

Closing इत्याध्यायहृदि स्थित तुलामय

विशेष शेष स दभ के लिए क्रमाक १७३ देखो ।

180 पद्मनंदीपञ्चविंशतिका

Opening हे सरस्वति ! त्वत्पादपकजद्वय त्वदीयचरणारविन्द द्वय

Closing सवत्र लोके वय दोषा सग्राह्या आदरणीया इति गर्विते ।

विशेष पद्मनदी कृत श्रुतस्तुति, सुप्रभाताष्टक, जिनपूजादशक, करुणाष्टक आदि रचनाए हैं ।

देखो—जि० र० को०, पृ० ४४५ सुप्रभाताष्टक
" , पृ० १३५ जिनपूजादशक
" " पृ० ६८ करुणाष्टक

181 पचससारस्वरूपनिरूपण

Opening पचससारमुक्तेभ्य सिद्धेभ्य खलु सवदा ।
नमस्कृत्वा प्रवक्ष्येऽह पचससारविस्तर ।।

Closing पचविधे ससारे कमवशाज्जैनदेशित मुक्ते ।
माग पश्यन प्राणीना दुखा भ्रमती ।।

Colophon पाडे खेतु को बेटो पाड पारस तिहि की पोथी ।

विशेष रा० सू० (पृ० १८५) मे भी लेखक का पता नही, पर लिपिकाल माघ सुदी ४ स० १८४१ है ।

देखो—प्रा० सू०, पृ० ६१
रा० सू० III, पृ० १८५
जि० र० को०, पृ० २२६

182 पञ्चास्तिकाय टीका (द्वि० स्कन्ध)

Opening
सहजानन्दचत न्यप्रकाशाय महीयसे ।
नमोऽनेकान्तविश्रान्तमहिम्ने परमात्मने ।।

Closing
स्वशक्तिससूचितवस्तुतत्त्वव्याख्या कृतेय समयस्य शब्दै ।
स्वरूपगुप्तस्य न किंचिदस्ति कतव्यमेवामृतचन्द्रसूरे ।।

Colophon
लाहोर मध्ये लिखत का वा गी योग ।

विशेष
वीरसेनाचाय ने धवला मे इसका उल्लेख किया है ।

देखो—प्र० ज० सा० पृ० १७३
श्रा० सू०, पृ० ६२
रा० सू० II पृ० १४२
रा० सू० III, पृ० १६, १८०
जि० र० को०, पृ० २३१ (I)

183, 184 पञ्चास्तिकाय टीका

Opening
क्र० स० १८२ की भाति ।

Closing
क्र० स० १८२ की भाति ।

185 पञ्चास्तिकाय टीका (प्रदीप)

Opening
प्रणम्य पादाम्बुरुहाणि भक्त्या मनोवच कायकृताहृदीशाम ।
प्रवच्म्यथास्त्यागविचारसूत्रस्फुटीकृते टिप्पणक विशिष्टम ।।

Closing ।
सन्मागतत्वविविधाथमणिप्रकाश श्रीमत्प्रभेन्दुरचितो नविदतरथ्य ।
ज्योतिप्रभाप्रहतमोहमहाधकार पचास्तिकायभुवने ज्वलति प्रदीप ।।

देखो—जि० र० को०, पृ० २१३

186 परमार्थोपदेश

Opening ।
नत्वानन्दमय शुद्ध परमात्मानमव्ययम ।
परमार्थोपदेशाख्य ग्रन्थ वच्मि तदर्थिन ।।

Closing ।
ये मुनिवेशसुसयमयुक्ता द्वेषरागमदमोहविमुक्ता ।
सन्ति शुद्धपरमात्मनिरक्तास्ते जयन्तु सतत जिनभक्ता ।२७२।

विशेष : भट्टारकसम्प्रदाय के अनुसार 'तत्त्वज्ञान तरगिणी' के कर्त्ता भुवनकीर्ति के शिष्य ज्ञानभूषण हैं तथा सिद्धान्तसार भाष्य, परमार्थोपदेश आदि ग्रन्थो के कर्ता वीरचद्र के शिष्य ज्ञानभूषण है।

देखो—जै० ग्र० प्र० स०, प्रस्तावना, पृ० ५१
भट्टारक सम्प्रदाय, पृ० १४२, १५४, १८३, १९७, १९८

187 परमात्मप्रकाश सटीक

Opening चिदानन्दकरूपाय सिद्धात्मने नम ॥
Closing परमपयगयाण भासऊ केवलो को विवोहो ॥
Colophon : इति परमात्मप्रकाश कोडोहडा ग्रन्थ समाप्त ।

188 प्रबोधसार (३ अध्याय)

Opening अकारादिणकारान्तान शेषैरष्टादशाक्षरै ॥
Closing भव्याना हृदये तत्त्व भव्यैन बुध्यते ॥
विशेष ४२९ श्लोक प्रमाण। कही कही पसिल से सशोधन हुआ है ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १७७
आ० सू०, पृ० १९२
रा० सू० II पृ० ३२४
रा० सू० III, पृ० ३१
जि० र० को०, पृ० २६६

189 प्रबोधसार

Opening : क्र० स० १८८ की भांति ।
Closing क्र० स० १८८ की भांति ।

190 प्रश्नोत्तरोपासकाचार (२४ सर्ग)

Opening जिनेश वृषभ वन्दे वृषद वृषनायकम ।
वषाय भुवनाधीश वृषतीर्थप्रवतकम् ॥
Closing शून्याष्टाष्टद्वयाकाख्य सख्यया मुनिनोदित ।
नदते चावनौ ग्रन्थो यावत्कालान्तमेव हि।१४३।

Colophon लिखत श्रावणशुक्ला १४ शनिवासरे स० १८२८ प० शिरोमणि खुश्याल रुष तच्छिष्य मगतरुष तत शिस्य सोभारुष निजहेतु पठनाथ श्वेतावर उत्तराधिगच्छे सलावानगरमध्ये।

विशेष क्रमाक १४४, १४५ भी देख।

देखो—जि० र० को०, पृ० २७८
प्र० ज० सा० पृ० १७६
आ० सू०, पृ० ६७
रा० सू० II, पृ० ६, १६०
रा० सू० III, पृ० ३१, ३२, १८६
भट्टारक सप्रदाय, प० १३७

191, 192 प्रश्नोत्तरोपासकाचार (२४ सग)

Opening क्र० स० १६० की भाति।

Closing क्र० स० १६० की भाति।

193 प्रश्नोत्तरोपासकाचार (२४ सग)

Opening क्र० स० १६० की भाति।

Closing क्र० स० १६० की भाति।

Colophon : श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नन्द्याम्नाए कुदकुदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनदीदेवा तत्पट्टे भ० शुभचद्र तत्पट्टे श्रीजिनचद्र तत्पट्टे भ० प्रभाचद्र द्वि० शिष्यमडलाचाय श्रीरतनकीर्ति तत्पट्टे भ० हेमचद्र द्वि० आ० श्रीभुवनकीर्ति तदाम्नाए खडेलवालान्वये चादूआड गोत्रे सा० गाल्हा पुत्र सा० जोक भार्या पाटनदे सा० आसा तस्य भार्या सफल सा० चेला तस्य भार्या चादणदे तस्य द्वौ पुत्रौ सा० गूजर तस्य भार्या गो दे द्वि० पुत्र गढमन सा० जोधा तस्य पुत्र वीका सा० आसा पुत्र य प्रथम पुत्र कौजू द्वि पुत्र दास इद शास्त्र चत्रसुदी ६ स० १६०६ गुरुवासरे लिखापित।

194 प्रवचनसार टीका (तत्त्वदीपिका)

Opening सर्वव्याप्येकचिद्रूपस्वरूपाय परमात्मने।
स्वोपलब्धिप्रसिद्धाय ज्ञानानन्दात्मने नम ॥

Closing

आनन्दामृतपूरनिर्भरवहत्कैवल्यकल्लोलिनी
निर्मग्न जगदीक्षणक्षममहासंवेदनश्रीमुखम् ।
स्यात्काराकजिनेशशासनवशादायासयन्तूल्लसत्
स्व तत्त्व वृतजात्यरत्नकिरणप्रस्पष्टमिष्ट जना ॥

Colophon

व्याख्येय किल विश्वमात्मसहित व्याख्या तु गुम्फे गिरा,
व्याख्यातामृतचन्द्रसूरिरिति सा मोहाज्जनो वल्गतु ।
वल्गत्वद्य विशुद्धबोधकलया स्याद्वादविद्यावलात् ।
लब्ध्वैक सकलात्मशाश्वतमिद स्व तत्त्वमव्याकुल ॥

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १७८
आमेर सूची, पृ० ६६
रा० सू० II, पृ० १८२, ३८६
रा० सू० III, पृ० १६३
जि० र० को०, पृ० २७०

195 प्रवचनसार टीका (तत्त्वदीपिका)

Opening — क स० १६४ की भाति ।

Closing — क स० १६४ की भाति ।

Colophon — लिखित मिश्र भगवानदास इद्रप्रस्थमध्ये भादोसुदि ७ स० १८८६ शनिवासरे जैनधमप्रतिपालक लाला गिरधारीलालेन लिखायित ।

196, 197 प्रवचनसार टीका (तत्त्वदीपिका)

Opening — क० स० १६४ की भांति ।

Closing — क० स० १६४ की भाति ।

198 प्रवचनसार टीका (तत्त्वदीपिका)

Opening — क० स० १६४ की भांति ।

Closing — क० स० १६४ की भाति ।

Colophon — लिखत आषाढ वदि २ स० १७०७ ग्रन्थ सख्या २५००

विशेष — पांडुलिपि भीग जाने से कुछ अक्षर मिट गये हैं ।

199 प्रवचनसार टीका (तात्पर्य वृत्ति)

Opening — क० स० १६४ की भाति ।

Closing क्र० स० १९४ की भाति ।

200 प्रायश्चित्त पाठ

Opening जिनचन्द्र प्रणम्यहमकलक समस्तत ।
प्रायश्चित्त प्रवक्ष्यामि श्रावकाणा विशुद्धये ॥

Closing प्रायश्चित्तमनथ प्रतिसिध्य गच्छेद्राट्रपतिप्रविहीण ।

Colophon बसाखसुदी १५ स० १९०८ ला० गिरधारी लाल जी वास्ते ।

विशेष इस प्रति मे ६० श्लोको के बाद ३३ श्लोक और ह तथा लिखा है इत्यार्षे श्रीएकसधिविरचिते प्रतिष्ठासारसग्रहे प्रायश्चित्तविधिर्नामाष्टादश परिच्छेद ।" इस वाक्य से प्रतीत होता है कि अतिम ३३ श्लोक किसी अन्य ग्रन्थ के है ।

देखो—प्र० ज० सा० पृ० १८०
रा० सू० II प० १७२
रा० सू० III प० १८६
जि० र० को० प० २७९

201 प्रायश्चित्तसमुच्चय टीका

Opening शुद्धात्मरूपमापन्न प्रणिपत्यगुरोगु रुम ।
निबन्धन विधास्येऽह प्रायश्चित्तसमुच्चये ॥

Closing उत्तमक्षमामलसलिल सत सत ।

Colophon य श्रीगुरूपदेशेन सज्जनानाम ॥

देखो—ज० ग्र० प्र० स० I, पृ० ११९
जि० र० को० पृ० २८० I, टीका
प्र० ज० मा० पृ० १८०
आ० सू०, पृ० १९४
रा० सू० II, पृ० १४ १९२, ३८४
रा० सू० III पृ० ३१, १८६

202 प्रायश्चित्तसमुच्चय

Opening सयमामलसद्रत्न रत्नत्रयविशुद्धये ॥

Closing चूलिकासहितो शोधयन्तु विमत्सर ॥ १६६ ॥

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १८०
जि० रा० को०, पृ० २८०

203 पुरुषार्थसिध्युपाय मूल (जिनप्रवचनरहस्य कोष)

Opening तज्जयति परमज्योति . पदार्थमालिका यत्र ।।
Closing वर्णैं कृतानि चित्रै न पुनरस्माभि ।।२२६।।
विशेष प० आशाधरजी ने अपने 'धर्मामृत' मे इसकी करिकाओ का उल्लेख किया है। मेघविजय ने अपनी 'मुक्तिप्रबोध' मे इसे 'श्रावकाचार' नाम दिया है।

देखो —प्र० जै० सा०, पृ० १८४
आ० सू०, पृ० १०२
रा० सू० II पृ० ८,१५६,३८४
रा० सू० III, पृ० ३२,१८५
जि० र० को, पृ० २५३

204 पुरुषार्थसिध्युपाय (जिनप्रवचनरहस्य कोष)

Opening क्रम स० २०३ की भाँति।
Closing क्रम स० २०३ की भाँति।
विशेष इसमे दो कारिकाए कम हैं।

205 पुरुषार्थसिध्युपाय मूल

Opening क्र० स० २०३ की भाँति।
Closing क्र० स २०३ की भाँति।[1]
विशेष इस प्रति मे ग्रन्थ क्र० २०३ से ४ कारिकाएँ तथा ग्रन्थ क्र० स० २०४ से २ कारिकाएँ कम हैं।

206 पुरुषार्थसिध्युपाय मूल

Opening क्र० स० २०३ की भाँति।
Closing क्र० स० २०३ की भाँति।
Colophon लिखत पौषसुदि १५ स० १६०२

207 रत्नकरण्ड-श्रावकाचार मूल

Opening नम श्रीवर्द्धमानाय दर्पणायते ।।
Closing सुखयतु सुखभूमि दृष्टिलक्ष्मी ।।५।।

देखो —प्र० जै० सा०, पृ० २०८
आ० सू०, पृ० १२०
रा० सू०, II, पृ० १६७
रा० सू० III, पृ० ३४
जि० र० को०, पृ० ३२६

208 रत्नकरण्डश्रावकाचार (उपासकाध्ययन टीका)

Opening श्रीसमतभद्रस्वामीरत्नान्त रक्षणोपायभूत करडक।
Closing स श्रीरत्नकरडकामलरवि ससृत्सरित्शोषको।
जीयादेव समन्तभद्रमुनय श्रीमत्प्रभेदु: जिन ॥

209 रत्नकरण्डश्रावकाचार (उपासकाध्ययन टीका)

Opening समन्तभद्रनिखिलात्मबोधन जिन प्रणम्याखिलकमशोधने।
निबधन रत्नकरण्डके पर करोमि भव्यप्रतिबोधनाकरम् ॥
Closing स श्री जिन ॥
Colophon लिपिकृता कार्तिकसुदी ५ सनिवासरे स० १८७६ सवाईजयनग्रमध्ये महाराजाधिराज सबाई जयसिंह राज्ये लिखापित सा० श्रीहरसुखरायजी, चि० सुगुनचन्द्र जी चि० भारत राम अमीचद। लिखि लालचद महात्मा बेटा सीताराम का।

210 रत्नकरण्डश्रावकाचार (उपासकाध्ययन टीका)

Opening क्र० स० २०७ की भाति।
Closing क्र० स० २०७ की भाति।
विशेष मस्कृत गुटका न ७ मे पत्र १५२ से प्रारम्भ है।

211 षडदर्शनसमुच्चय

Opening सद्दर्शन जिन नत्वा वीर स्याद्वाददेशकम्।
सवदशनवाच्योऽथ सक्षपेण निगद्यते ॥
Closing लोकायितमतेऽप्येव सक्षपोऽय निवेदित।
अभिधयतात्पर्याथ पर्यालोच्य सुबुद्धिभि ॥८७॥
Colophon लिपिकृत उदयच द्रेण स्वपठनार्थ श्रावणवदि ५ स० १८६६

देखो —रा० सू० II, पृ० १३
रा० सू० III, पृ० १६६
जि० र० को०, पृ० ४०२ I

212 षडदर्शनसमुच्चय

Opening। क्रमाक २११ की भाँति।
Closing क्रमाक २११ की भाँति।
Colophon दिल्लीमध्ये लिपिकृता फागुनसुदी १३ शनौ स० १९०३

213 षड्दर्शनसमुच्चय सटीक

Opening यज्ज्ञानदपणतले विमले त्रयस्य ये केचिदथनिवहा प्रकटीबभूवु ।
तेऽद्यापि भान्ति कलिकालजदोषभस्मप्रोद्दीपिता इव शिवाय समेऽस्तु वीरा ॥

Closing इत्यादि विमृश्य श्रयस्कर रहस्यमभ्युपगतव्य कुशलमतिभिरिति ॥

Colophon लिखत कालूराम म्हात्मा लिखापित लाला जीवन सुखरायजी दिल्ली मध्ये वसाखसुदि १ शुक्रवासरे स० १८८४

विशेष प्रति मे देवप्रभ का नामोल्लेख नही है।

214 षड्दर्शनसमुच्चय सटीक

Opening क्रमांक २१३ की भाँति ।

Closing : क्रमाक २१३ की भाँति ।

Colophon मुनिनेत्रवाणचन्द्रमध्ये मासि दिनहरे ।
षड्दशनस्य टीका चालिखद्देव प्रभाभिध ॥
लिपिकृत मोहनर्षिणा श्रीसज्ज्ञानप्रसादेन व (?) रपुरे चतुर्मासि स्विनेन ।

विशेष ८७ श्लोको की १२४४ श्लोको मे टीका हुई है।

215 सज्जनचित्तवल्लभ

Opening नत्वा वीरजिन श्रुण्वन्तु सतो जना ॥

Closing वृत्तं विंशतिभि ससारविच्छित्तये ॥२५॥

विशेष मल्लिषेण रचित अन्य ग्र थ है—नागकुमारचरित्र, सरस्वतीकल्प, कामचण्डालीकल्प ज्वालिनीकल्प भरवपद्मावती कल्प सटीक, महापुराण आदि ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० २३०
रा० सू० II, पृ० ३६०, ३७३, ३८६
जि० र० को०, पृ० ४११
जै० ग्र० प्र० स० I प्रस्तावना, पृ० ६१, ७२

216 समाधितन्त्र

Opening येनात्मा . सिद्धात्मने नमः ॥

Closing युत्कापरत्रबुद्धि तदधिगम्य समाधितन्त्रम् ॥

विशेष १०६ वां श्लोक येनात्मा प्रभु' नहीं है। इसे लेकर डा० पी० एल० वैद्य और श्री जुगलकिशोर मुख्तार मे मतभेद है। डा० वैद्य का कथन है कि पद्य २, ३, १०३, १०४, १०५ प्रक्षिप्त है जबकि मुख्तार सा० इसे नहीं मानते। समाधिशतक की जगह समाधितन्त्र लिखा है।

217 समाधिशतक सटीक

Opening येनात्माबुध्यनात्मैव तस्म सिद्धात्मने नमः ।।
Closing येनात्मा बहिरन्त श्रीमत्प्रभेन्दुः प्रभु ।।
विशेष क्रमाक ३ की भाँति मुहर है ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० २३७
आ० सू०, पृ० १३७
रा० सू०, II पृ० १२, १०७, १४६, २०७
रा० सू० III, पृ० ११०
जि० र० को०, पृ० ४२१

218 समाधिशतक सटीक

Opening क्रमाक २१७ की भाँति ।
Closing क्रमाक २१७ की भाँति ।
Colophon लिखपित लाला सुखराय दरबारीमल जी लिखित बखतावरसिंह जनी भादो सुदी ७ शूक्रवासरे स० १८८३ वर्षे सवाई जपुर मध्ये ।
विशेष कही कही शब्दार्थ तथा टिप्पणी भी है ।

219 समाधिशतक सटीक

Opening सिद्ध जिने द्रममल प्रणिपत्य वीरम् ।।
Closing : क्रमाक २१७ की भाति ।

220 समाधिशतक सटीक

Opening : क्रमाक २१७ की भाँति ।
Closing क्रमाक २१७ की भाँति ।
Colophon श्रीमूलसघे नद्याम्नाए बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुन्दाचार्यान्वये म० श्री १०८ विजयकीर्ति आचाय श्री त्रिलोकेदुकीर्ति तत्सिष्य पाड दयाचद लिखत भानुपुर मध्ये फागुन सुदी १ दीतवार स० १८१६
विशेष क्रमाक ३ की भाँति मुहर है ।

221 समयसारपद्य (प्रस्ताविका)

Opening वीतराग जिन नत्वा ज्ञानानदैकसपदम् ।
वक्ष्ये समयसारस्य वत्त तात्पर्यसज्ञकम् ।।
Closing इति द्वात्रिंशतादृतो परमात्मानमीक्षिते ।
योनन्यगतस्त्वेतस्को यात्यसौ पदमव्ययम् ।।३३।।
विशेष १५ श्लोको के बाद "सत्वेषु मैत्री इत्यादि श्लोक प्रारम्भ होता है ।

222 समयसार तात्पर्यवृत्ति

Opening वीतराग जिन तात्पर्यसंज्ञिक ।।
Closing जयऊ रिसिपउमनंदि जिनसासण सुरई ।।
Colophon श्रीखरतरगच्छे भ० श्रीजिनप्रभसुरि,सताने प० भानुतिलक तच्छिष्य लिखत परमानन्देन अकबरराज्ये काकापुरे कार्तिक वदि ३ गुरौ स० १६६०
विशेष टीकाकार का प्रति मे उल्लेख नही है ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० २३५
जि० र० को०, पृ० ४१८ (२)
आ० सू०, पृ० १३६ (२)

223 समयसार आत्मख्याति (1 अध्याय)

Opening नम समयसाराय सवभावातरच्छिदे ।।
Closing स्वशक्तिससूचित कर्तव्यमेवामृतचद्रसूरेः ।।
Colophon उदितममृतचद्र स पन्नस्वभावम् ।
लिपकरत म्हात्मा दयाचद सवाई जनगरमध्ये वदि १२ दीतवारे स० १८६२

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० २३५
आ० सू०, पृ० १३५
रा० सू० II, पृ० १८६, ३८६
रा० सू० III, पृ० ४३
जि० र० को०, पृ० ४१८

224 समयसारकलशा आत्मख्याति टीका

Opening क्रमाक २२३ की भाँति ।
Closing क्रमाक २२३ की भाँति ।
Colophon । श्री मूलसघे भारतीयगच्छे बलात्कारगणे भ० श्री विद्यानदि आम्नाए भटारकमल्लिभूषण तत्पट्टे श्री लक्ष्मीचद, तत्पट्टे श्री अभयचद (पुन) । तत्पट्टे श्रीरत्नकीर्ति तत्पट्टे भ० कल्याणकीर्ति तद्गुरुभ्राता ब्रह्मश्रीकल्याण सागरस्येद पुस्तक ।

लिपिकृत मनसारामेन दीघपुरमध्ये वैसाखसुदी ८ बुधवासरे स १८३१ लिखापित पल्लीवाल गगगोत्रे श्रीदीवानजोधराजजीकस्य शुभ श्री जिनमदिरभडारे स्थित ।
विशेष क्रमाक ३ की भाँति मुहर है ।

225 समयसारकलशा आत्मख्याति टीका

Opening : क्रमाक २२३ की भाँति।
Closing क्रमाक २२७ की भाँति।
Colophon : श्रीमत्पट्टणानगरे श्रीमदुपाध्याय श्रीज्ञानसिंह गणीवराणां शिष्येण धनजीकेन श्रावण १३ स १७३५ वर्षे लिपिकृतम्।

226 समयसारकलशा आत्मख्याति टीका

Opening क्रमाक २२३ की भाति।
Closing : क्रमाक २२७ की भाति।
विशेष कही-कही टिप्पण भी दिये है। अत मे सप्तभगी (स्यादस्ति, स्याद्-नास्ति इत्यादि) की अवतारणा की गई है।

227 समयसारकलशा आत्मख्याति टीका

Opening सिद्धान्ताच्चालिखामीद अथभारस्य टिप्पणम्।
आनदरामसज्ञस्य वाचनाय च शुद्धये ॥
Closing क्रमाक २२३ की भाँति।
Colophon कु दकुदेण मुणिणा गाहा कथा समयसारसव्वस्स।
रइसा कलसाणूण अभयचरणामपसूरीहिं॥
लिखापित ला० आरतीराम जी लिखत दयाचंद म्हात्मा वासी जपुर का हाल दीली स्याहजिहानाबाद मे लाला साहेब मदिर मध्ये। माह वदि १४ स० १८७२
विशेष पत्र ७९ के दाय कोने पर "नित्यविजयनामाह भावसारस्य टिप्पन आनदराम सज्ञस्य वाचनाय व्यलीलिखम्" इत्यादि निर्दिष्ट है।

228 समयसारकलशा आत्मख्याति टीका

Opening क्रमाक २२७ की भाँति।
Closing क्रमाक २२७ की भाँति।
Colophon लिखत भादों सुदी ६ स० १८७९ वर्षे शुभचिंतक दयाचद लिखापित गिरधारीलाल बेटा सुगुनचद्र का पोता लाला हरसुखराय का दीली स्याह-जिहानाबाद मध्ये।
विशेष · २६३ श्लोक और कुछ गद्य मे यह टीका लिखी गई है। क्रमाक ३ की भाँति मुहर है। इन्ही लाला सुखराय ने धमपुरा दिल्ली, हस्तिनागपुर, शाहदरा, सोनीपत आदि स्थानो में विशाल जैन मदिर बनवाये थे। ये दिल्ली के बादशाह के खजांची थे। इनके पूर्वज हिसार से दिल्ली मे आ बसे थे। ये ऐतिहासिक पुरुष माने जाते हैं। राजा की उपाधि से भी ये विभूषित थे।

229 32 समयसारकलशा आत्मख्याति टीका

Opening क्रमांक २२७ की भाँति ।
Closing : क्रमांक २२७ की भाँति ।

233 समयसारकलशा आत्मख्याति टीका

Opening क्रमांक २२३ की भाँति ।
Closing आत्मास्वभावनातिक्रमादात्मैव आत्मैक. (अपूर्ण)

234 समयसारकलशा आत्मख्याति टीका

Opening गर सवज्जनशील पतितोऽपि ततो न ।१७।
Closing क्रमांक २२३ की भाँति ।

235 समयसारकलशा आत्मख्याति टीका

Opening क्रमांक २२३ की भाँति ।
Closing रागादीनामुदयमदय कोऽपि नास्यावृणोति ।।१७१।।
Colophon : इति बंधो निष्क्रान्त । इति समयसारव्याख्यामात्मख्यातौ सप्तमाङ्क ।

236 सम्यक्त्वकौमुदी

Opening श्रीवर्द्धमानमानम्य सम्यक्त्वगुणहेतवे ।।
Closing उर्ध्वगमनमथ विपर्ययदीप्यतेव ।।१७७।।
Colophon पूज्यऋषि श्री प० उत्तमजीप्रसादात् लिखत ऋषि कष्ला अलवर कौगढ लीपीकृत पानिसाहनवरगसाहराजे आसौज सुदी पूर्णिमा स० १७२३

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० २३९
आ० सू०, पृ० १३२, १३३
रा० सू० III, पृ० ८१
जि० र० को०, पृ० ४२४

237 सारचतुर्विंशतिका

Opening श्रीमान् यो नाभिसुनू काता सुभर्ता ।।
Closing तुर्विंशति सुहेतुवाचके ।।

देखो —रा० सू० II, पृ० २६५
जै० ग्र० प्र० स० I प्रस्तावना, पृ० ११

238 सारसमुच्चय (प्रयसारसमुच्चय)

Opening देवदेव जिन नत्वा वक्ष्ये ।।
Closing नमः परमसद्ध्यान कारिणेऽरिष्टनेमये ।।३३१।।
Colophon प्रयतु कुलभद्रे न प्रयसारसमुच्चय ।

विशेष । जि० र० को० के अनुसार ३२८ श्लोक माने गये हैं ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० २४६
आ० सू०, पृ० १४०
रा० सू० III, पृ० ३७
जि० र० को०, पृ० ४३३

239 षट्पाहुड सटीक

Opening काऊण णमोयार जहाकम समासेण ।।
Closing एव अमुना प्रकारेण शाश्वत सुख लभते ।।१०७।।
Colophon । लिखत (चैत्र ?) वदि ६ स० १७६२ शाके १६२७
विशेष सस्कृत टीका व छाया है ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० २३०
आ० सू०, पृ० १५६
रा० सूची II, पृ० १८४ ३३२, ३६४, ३८४, ३८६, ३८६
रा० सूची III, पृ० ४३, ११०
जि० र० को०, पृ० ४०१ १८

240 षटपाहुड सटीक

Opening क्रमाक २३६ देखो, सदभ के लिए भी ।
Closing । क्रमाक २३६ देखो, सदभ के लिए भी ।

241 षटपाहुड सटीक (६ अध्याय)

Opening दृग्वत्तसूत्रबोधाख्य भावमोहसमाह्वयम ।
षटप्राभृतमिति प्राहु कुदकुदगुरूदितम् ।।

Colophon । अथ श्री विद्यानन्दभट्टारकपट्टाभरणभूत श्रीमल्लिभूषणभट्टारकाणा मादेशात् अध्ययणवशात् बहुश प्राथनावशात कलिकालसवशविरूदावली विराजमाना श्री सद्धर्मोपदेश कुशला निजात्मस्वरूप प्राप्ति कि पच-परमेष्ठीचरणान प्राथयत । सवजगदुपकारिण उत्तमक्षमाप्रधानतपोरत्न भूषितहृदयस्वला भव्यजनजनकतुल्या श्रीश्रुतसागरास्तस्य श्री कुद-कुदाचायविरचित प्राभृत ग्रथ टीकयत । स्वरुचिविरचितसदृष्टय

नानाशास्त्रमहार्णवैकतरणे यदबुद्धिरिद्धश्रिया,
पूर्णा पुण्यकविप्रमोदजननीसारैव नौकायते ।
यत्पादाम्बुजयुग्ममाप्य मुनिभृ गरिवापीयते,
स श्रीमान श्रुतसागरो विजयता येनस्तपो हृषतिः ।।७।।
श्री मत्स्वामिसमन्तभद्रममल श्रीकुदकुदाह्वयम,
यो धीमानकलकभद्रमपि च श्रीमत्प्रभेन्दुप्रभु ।।

विद्यानन्दमविसितु कृतमना श्रीपूज्यपाद गुरु,
वीक्ष न श्रुतसागर सविनया वैभिद्य धीमन्तु तम् ।।
श्रीमल्लिभूषणगुरोर्वचनादलघ्यान्मुक्तिश्रिया सहृतमागम-
मिच्छतेयम् ।
षटप्राभृते सकलसंशयशत्रुहती टीकामृता कृतधियां श्रुतसागरेण ।।

देखो—जै० ग्र० प्र० स० I पृ० प्रस्तावना १७
प्रशस्ति सग्रह करतारचद, पृ० १७४
जि० र० को०, पृ० ४०१ (१)

242 षटपचाशिका सटिप्पण

Opening प्रणिपत्य रविं मूर्ध्ना वराहमिहरात्मजेन पृथुयशसा ।
प्रश्ने कृताद्यगहना पराथमुद्दिश्य सद्यशसा ।।

Closing सोम्ययुतोर्वे सोम्यो सदृष्ट चाष्टमक्षीस्यम ।
यश्च तस्माद्देशादन्य स वाच्य पिता तस्य ।।१३।।

इति षटपचाशिकाया सामा योऽध्याय सप्तम । इति षटपचासिकाया सप्तर्ष्या

विशेष इस प्रति मे कर्ता एव टीकाकार का नामोल्लेख नही है । जि०र०को० पृ० ४०१ के आधार पर ही कर्ता माना है । सभवत यह ज्योतिष ग्रथ है । प्रारम्भ मे वराहमिहिर का नाम आता है ।

243 सिद्धान्तसारदीपक

Opening श्रीमन त्रिजगनाथ सवज्ञ सवदर्शिनम् ।
सवयोगीन्द्रवद्यांघ्रि वदे विश्वार्थदीपकम ।।

Closing एते लोकोत्तरस्यैव भेदाश्चत्वार ईरिता ।
सिद्धान्तार्थ परिज्ञाप्य श्रीतीर्थेशमुखोद्भवा ।।१०१।।

सवत ठारा से सही आसोज सुदी १० शनिवार ।
विज जु दशमी लिपि करी मनसाराम विचार ।
इन्द्रप्रस्थ के बीच ही महमदस्याह के राज ।
पोथी लिखि बनाय कै पठन पठावन काज ।।

विशेष श्लोक १०१ से ११४ तक प्रशस्ति है लेकिन उसमे ऐतिहासिक मूल्य की कुछ भी सामग्री प्राप्त नही होती ।

देखो—आमेर सूची १४३
रा० सू० II, पृ० १४७ (२४६)
रा० सू० III, पृ० २२, १८२
जि० र० को०, पृ० ४४०
जै० ग्र० प्र० स० I, प्रस्तावना, पृ० ११८

244 सिद्धान्तसारदीपक

Opening क्रमाक २४३ की भाँति ।
Closing क्रमाक २४३ की भाँति ।
Colophon ग्रथेऽस्मिन पचचत्वारिंशतश्लोकपिंडिता ।
षोडशाग्र बुधर्जेया सिद्धान्तसारशालिनी ॥१॥
वासवानगरमध्ये पौष वदी ३ स० १७६२ वर्षे लिपिकृता ।
विशेष २० छदो की प्रशस्ति मे कोई ऐतिहासिक सामग्री नही है ।

245 सिद्धान्तसारदीपक

Closing क्रमाक २४३ की भाँति ।
Opening क्रमांक २४३ की भाँति ।
Colophon विलाला साह चूहडमल लिखाइय खुस्यालचद पठनाथ ढढामदेशे वसवानगरमध्ये श्रीग्रादीश्वरचत्यालये लिपिकृता भादो सुदी प्रतिपदा स० १७६४ ।

246 सिद्धान्तसारदीपक

Opening देखें क्रमाक २४३ और २४४
Closing देख क्रमाक २४३ और २४४
Colophon सोधितमाचायकनककीर्ति भ० नरेन्द्रकीर्तिशिष्येण स० १७३५ वर्षे

247 सिद्धान्तसारदीपक

Opening देख क्रमाक २४३
Closing देखे क्रमाक २४३
Colophon शुभभसद्योग सपादजयनगरे रामगजमध्ये श्रीमदृषभदेवालये पडितोतम प० श्री १०८ रामकृष्ण जी तच्छात्र नगराजेन सुखकरणात्मपठनार्थं इद ग्रथम श्रावण वदी ५ कुजवासरे स० १८३८ वर्षे लिखित श्रीमन्महाराधिराज श्री सवाईप्रतापसिहराज्यप्रवतमाने ।

248 सिद्धान्तसार (६ वां ग्रध्याय)

Opening ग्रथ पूर्वोक्तलोकस्य घनाकारेण रज्जुभि ।
ग्रधोमध्योर्ध्वोत्तमेषु पृथक सख्या निगद्यते ॥
Closing मुनिगणपतिसूरीन पाठकान विश्वसाधून् ।
रथसमगुणसमुद्रान नौम्यह तद्गुणाप्त्ये ॥११०॥

विशेष — सुदशनमेरु भद्रशाल वन के चैत्यालयो का वणन है। नीचे कुछ वाद्य-यन्त्रो तथा औषधियों से सम्बन्धित श्लोक हैं।

249 सिद्धान्तसारदीपक

Opening — देवकुरुत्तरक्षेत्रयो प्रत्येक बाण एकादशसहस्राष्टशतद्विचत्वारिंशद्यो जनाति

Closing — ग्रन्थेऽस्मिन पचचत्वारिंशत् सिद्धान्तसारसालिनी। ११६॥

Colophon — श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनदी देवास्तत्पट्टे भ० श्रीसकलकीर्तिस्तत्पट्टे भ० भुवनकीर्ति स्तत्पट्टे भ० श्रीयान (ज्ञान) भूषणस्तत्पट्टे भ० श्री विजयकीर्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचद्रदेवास्तच्छिष्य ब्रह्मवछा पठनार्थं देवपल्ली वास्तव्य श्री आदिनाथचत्यालये, हूवड ज्ञाति श्रेष्ठी देवसी भार्यासीन्य सुत नरपति भार्या नायकडभातृनारद एतै सह ज्ञानावरणीकमक्षयार्थं सिद्धान्तसारदीपक लिखाप्य दत्त ब्रह्मवछा पठनार्थं भादो सुदी १० कुज (मगल) वार स० १५६२ वर्षे।

विशेष — बीच मे अनेक पत्र नही है।

250 सिन्दूरप्रकर सटीक (सूक्तमुक्तावली)

Opening — सिन्दूर पातुव ॥

Closing — अभजत मुक्तावलीय ।१००॥

Colophon — सिदूरप्रकराख्यस्य व्याख्यायाम् हषकीर्तिभि सूरिभि ।
विहिताया तु सामान्यप्रक्रमोऽजनि ॥१॥
तपोगणे नागपुरीयपूर्वे श्रीचन्द्रकीर्त्या द्वयसूरिराज्ञा।
तेषाम विनेयषभहषकीर्ति सूरीश्वरो वृतिभि मामकार्षीत ॥

लिखत फागुन वदि १३ स० १७६१ वर्षे दाय जिनहस गणिता प० महीचद पठनहेतवे।

शेष सन्दभ के लिए क्रमाक ९२ व ९३ देखिए।

251 सिन्दूरप्रकर मूल (सूक्तमुक्तावली)

Opening — देखें क्रमाक २५०।

Closing — देखें क्रमाक २५०।

विशेष — समाप्ति के बाद १६ श्लोको में मुक्तावली की प्रशसा और फल का वणन किया गया है। टीकाकार का नामोल्लेख नही है। सभवत हषकीर्ति के अतिरिक्त कोई और हो। सन्दर्भ के लिए क्रमाक २५० देखो।

252 सिन्दूरप्रकर (सूक्तमुक्तावली)

Opening देखें क्रमांक २५०, ६२, ६३

Closing : देखें क्रमांक २५० ६२, ६३

Colophon लिखित रामकृष्णन फागुन वदि ३ स० १८६८

253 सिन्दूरप्रकर (सूक्तमुक्तावली)

Opening सिंदूर पातु व ॥

Closing सोमप्रभाचाय गुणास्तनोतु ॥

Colophon सवत्सरे नदशराद्रिचद्रे (१६५६) मासे शुभे कार्तिक सज्ञके च तिथौ नवम्या रविवारे पूर्णीकृतोऽय मनसार्षिकेन ।

विशेष श्लोको की सख्या ६८ है। सदभ के लिए क्रमाक २५०, ६२, ६३ देखो।

254 सिन्दूरप्रकर सटिप्पण (सूक्तमुक्तावली)

Opening क्रमाक २५० की भाँति।

Closing क्रमाक २५० की भाँति।

Colophon इति श्री सिंदूरप्रकणमाटिप्पणिकर अन्वय दसमाश्च। आलिखत वैद्य नवनिध्यस्स्वपठनाथ। लिखत श्रावण सुदी सोमवासरे स० १८७३।

255 श्लोकवार्तिक

Opening : श्री वद्धमानमाध्याय घातिसघातघातनम।
विद्यास्पद प्रवक्ष्यामि तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकम ॥

Closing : विध्वसात्साधीयसी प्रतिष्ठिता च निर्वाणमार्गोपदेशस्य प्रवर्तिका (अपूण ७८ वा पत्र)।

256 श्लोकवार्तिक

Opening वादिति चेत। न सूत्रस्य प्रतिपादनोपायत्वात्तेषामपि गमकत्वोपपत्ते। (पत्र २८७)

Closing सम्माग त्रितयात्मकोखिलमलप्रक्षालप्रक्षम (पत्र ४२२)।

Colophon पुस्तक लिखापित आदिनाथ चैत्यालये महाराजा श्री सवाई जगत सिंहजी राज्ये सवाई जैननगरमध्ये अबाबती बाजार सगही दीवाणस्योजी रामजी का देहुरामध्ये लिखायत। लिखत उदयचद लुहाडया बैसाख सुदी ३ बुधवार स० १८६२।

विशेष ग्रथ सख्या २२०००। साथ मे ४१८ से ४२१ पत्र किसी अन्य श्लोकवार्तिक की प्रति के भी हैं। प्रति मे जो पत्र नही है वे है —आदि के

२८६, बीच मे २८८, २६० से २६५ तक, ३१५ से ३६८ तक, ३७३ से ४०२ तक ।

257 श्रावकाचार

Opening क्रमांक १२३ देखो ।
Closing क्रमाक १२३ देखो ।
Colophon साधु नेमिदेव नामाकिते ।

देखो—रा० सू० III, ३६

258 सुप्रभाचायदोहा टीका (सुप्पय दोहा) ।

Opening : इक्कहिं घरवे धामणतु अणहिं घरिधाइहिं रोविजुह ॥
Closing असौ जीव चतुगतिषु दुखानि भुजति कदाचित् सुख न प्राप्नोति ॥
Colophon लिखो अणदराम जी कादंपुरा मे श्रावण सुदी ४ सोमवार स० १८३५ शाके १७०० ।
विशेष सुप्रभाचाय दोहा नाम अन्यत्र नही मिलता । रा० सू० II, पृ० ४ ई पर 'सुप्पय दोहा'' उल्लिखित है । सस्कृत टीका भी है । प्रति महत्वपूण है क्योकि अन्य भडारो मे उपलब्ध नही है ।

259 स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा सटीक (१२ अध्याय)

Opening शुभचद्र जिन नत्वा वक्ष्ये शुभश्रिये ॥
Closing अनुप्रेक्षा इति प्रोक्ता मुक्तिवल्लभा ॥
Colophon लिखिताग्रवाल ज्ञातीय नरसिहेन सौरवरी के चैत्यालय विराजमान माह सुदी ३ रवौ स० १७६६

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० २४२
प्रा० सू०, पृ० ४६
रा० सू० II, पृ० १६१
रा० सू० III, पृ० ४६
जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० ४२
जि० र० को०, पृ० ८५

260 स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा सटीक

Opening देखें क्रमांक २५६
Closing देखें क्रमांक २५६
Colophon : श्री सवाई जैपुरमध्ये महाराज सवाईमाधोसिंहराज्येषा पुस्तिका लिपिकृता श्वे० जैराम दासेन आषाढ सुदी ४ मगल वासरे स० १८२१ वर्षे ।

261 स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा (सटीक)

Opening देखे क्रमाक २५६

Closing देखे क्रमाक २५६

Colophon
स्वामी कार्तिके शास्त्र ए सस्कृत लिखो बनाय।
फतेचद सुत प्रतापजी वाचो तुम चितलाय॥
लिखत द्वि० भादवा वदि ११ रवौ स० १८०६।

262 स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा (सटिप्पण)

Opening तिउवण तिलय णदऊणणीऊ॥

Closing अथोत्थमगल सशुवे णिच्चम् ॥१८६॥

Colophon लिखत पौष सुदि शुक्र वासरे स० १८८६ चचलरामेण स्वपठ नाथ लिखत।

विशेष टिप्पण केवल ५२ पत्र तक (७७ वी गाथा तक) है शेष मूल गाथाए हैं।

263 तत्त्वज्ञानतरगिणी (१८ अध्याय)

Opening प्रणम्य श द्धचिद्रूप तस्य लब्धये॥

Closing न लाभमानकीत्यर्थ प्रीति सवात्र कारणम ॥१६॥

Colophon देखो भदारक सप्रदाय प० १४२

विशेष तीन पत्रो पर टिप्पणी भी है, शेष पर नही।

भ० ज्ञानभूषण, मूलसघीय सकलकीर्ति के उत्तराधिकारी भट्टा० भुवनकीर्ति के शिष्य थे।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १४६
आ० सू०, पृ० ६५
रा० सू० II, पृ० २, १३२
जि० र० को०, पृ० १५२

264 तत्त्वज्ञानतरगिणी

Opening क्रमाक २६३ देखो।

Closing क्रमाक २६३ देखो।

Colophon लिखत तोत्र श्रीमद्विष्टकसेन शालमध्ये ऋषि खुस्यालचन्द्रेण।
शेष सदभ के लिए देखें क्रमाक २६३।

265 तत्त्वार्थराजवार्तिक

Opening । प्रणम्य सर्वविज्ञान वक्ष्ये तत्त्वार्थवार्तिकम्॥

Closing प्राज्ञैर्ना छद्मस्थ परीक्ष्या॥

विशेष १६००० श्लोक प्रमाण ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १५०
आ० सू०, पृ० ६६
रा० सू० II, पृ० १३३, ३८७
रा० सू० III, पृ० १५
जि० र० को०, पृ० १५६ (१०)

266 तत्त्वार्थरत्नप्रभाकरवृत्ति सटीक

Opening त्रकाल्य द्रव्यषटकम ज्ञानचारित्रभेवा ॥
Closing अल्प बहुत्व ज्ञातव्य । एव विचाय मोक्षपदाथभावना ज्ञातव्या ॥
Colophon जै० ग्र० प्र० स० I पृ० १७२ १७४ देखें ।

प्रति अपूर्ण सी प्रतीत होती है । ग्र० स० २४०० श्लोक प्रमाण है। टीका सस्कृत मे है, पर प्रश्न कैसे कौन, किसही कू इत्यादि हिन्दी में ही हैं ।

देखो—आ० सू०, पृ० ६६
रा० सू० II, पृ० १३२
रा० सू० III, पृ० १५, १७८
जि० र० को०, पृ० १५० (१४)
जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० १७२

267 तत्त्वार्णरत्नप्रभाकरवृत्ति

Opening सो नवस्मि वीरणाह मोखपुरिपत्तो ॥
Closing एव विचाय मोक्षपदाथभावना ज्ञातव्या ।
Colophon देखो—जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० १७२
लिखत जेठ सुदी ५४ बुधवासरे स० १९९०

सदर्भ के लिए देखो क्रमाक २६५

268 तत्त्वार्थसार

Opening मोक्षमागस्य तद्गुणलब्धये ॥
Closing वर्णा पदाना कर्तारो पुनर्वयम् ॥

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १५०
आ० सू०, पृ० ६६
रा० सू० II, पृ० १३३
रा० सू० III, पृ० १७९

विशेष जि० र० को०, पृ० १५३ के अनुसार इसमे एक अध्याय तथा ६१४ श्लोक हैं। सप्त पदार्थ का वणन है।

269 तत्त्वार्थसार

Opening देखे क्रमाक २६८
Closing देखे क्रमाक २६८
Colophon लिखत आषाढवदि १० बुधवासरे स० १६२१

270 तत्त्वार्थसार

Opening देख क्रमाक २६६
Closing देख क्रमाक २६६

271 तत्त्वार्थसर्वार्थसिद्धि (तत्त्वार्थवृत्ति)

Opening मोक्षमार्गस्य तद्गुणलब्धये ॥
Closing येनेद प्रतिहत गणार्च्चितपादपीठम् ॥
Colophon लिखत आश्विन वदी १४ सोमवासरे स० १८७४ जसिंहपुरामध्ये प्रागदासमोहाका जनी भाई।

देखो—प्र० जै० सा० पृ० २४०
आ० सू०, पृ० १३८
रा० सू० II, पृ० ५
रा सू० III, पृ० २२
जि० र० को०, पृ० १५५ (६)

272 तत्त्वार्थसर्वार्थसिद्धि

Opening देख क्रमाक २७१
Closing देखे क्रमाक २७१
Colophon जगत्सारे हि सारेऽस्मिनर्हिंसाजलसागरे।
नगरेनागराकीर्णे विस्तीर्णापणपण्यके ॥
लिखत आषाढसुदी ११ स० १७५२ गुरुवासरे ब्रह्मक्षेमेण। (नाम पर स्याही फेरी गई है)

स दभ के लिए क्रमाक २७१ देखो।

273 तत्त्वार्थसर्वार्थसिद्धि

Opening देखें क्रमाक २७१
Closing देखें क्रमाक २७१

Colophon संवत्सरेऽस्मिन् श्रीनपति विक्रमार्कनिधियुगमुनिककुभे १८७४ सं०
सवम के लिए क्रमांक २७१ देखो।

274 तत्त्वार्थ श्लोकवार्तिक

Opening श्री वर्द्धमानमाध्याय श्लोकवार्तिकम् ॥
Closing प्रोज्जज्योति प्रक्षालज प्रथम ॥
Colophon । लिखत आषाढ सुदि ६ सं० १९०० शुभचिन्तक दयाचंद महात्मा सवाई जैपुरमध्ये।

१८००० श्लोक प्रमाण। देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १५०
रा० सू० II, पृ० १४५, ३८७
रा० सू० III, पृ० १५
जि० र० को०, पृ० १५६ (१२)

275 तत्त्वार्थसुखबोधवृत्ति

Opening विनष्टमवकर्माणं जगतो गुरुम् ॥
Closing सिद्धा सख्येयगुणा बहुत्वमागमाद्बोधव्यम् ॥
Colophon । शुद्धव्रतप प्रकटयतु।
विशेष ३००० श्लोक प्रमाण। आदि अन्त के तीन पृष्ठ अन्य पृष्ठो के कागज से भिन्न हैं।

देखो—रा० सू० III, पृ० १३
जि० र० को०, पृ० १५६ (१३)
जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० ६१

276 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Opening मोक्षमार्गस्य तद्गुणलब्धये ॥
Closing णवमेसवरणिज्जर तहु दहसुत्ते ॥
विशेष विंटरनित्ज के अनुसार यह श्वेतांबरी रचना है पर अधिकारी विद्वानो का कथन है कि यह उस काल की रचना है जब दि०-श्वे० भेद उग्र नही थे।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १५१
जि० र० को०, पृ० १५४ II
रा० सू० II, पृ० २८, ८३
रा० सू० III, पृ० ११, १२

277 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Opening त्रकाल्य द्रव्य ज्ञानचारित्रभदा ॥
Closing तवयरण वयधरण दुक्ख निवारेह ॥
विशेष प्रारम्भ मे सबसे ऊपर ज्योतिष का एक श्लोक है जिसमे किस दशा मे कब जाना चाहिए का विवरण है। संदभ के लिग क्रमाक २७६ देखो।

278 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Opening त्रैकाल्य द्रव्य ज्ञानचरित्रभेदा ॥
Closing देखे क्रमाक २०६
Golophon लिखत मगसिरवदि १ बुधवार स० १८६३
सदभ के लिए क्रमाक २७६ देखो।

279 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Opening मोक्षमागस्य तद्गुण लब्धये ॥
Closing तवयरण वयधरण ॥
Colophon लिखत चम्पालाल माघ वदि ७ गुरुवासरे स० १६४८ श्रीनयेमदिर जी मे दस सूत्र जी विरजमान किए मिती भादो कृष्ण १४ रविदिने स० १६४६ मुशी रिशक लाल।

280 83 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Opening त्रकाल्यद्रव्यषटकम चारित्रभदा ॥
Closing तवयरण दुक्ख निवारेण ॥
सदभ के लिए क्रमाक २७६ देखो।

284 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Opening त्रकाल्य चारित्रभेदा ॥
Closing णवमेसवरणिज्जर मुनिवर वदेहि ॥

285 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Opening त्रकाल्य द्रव्यषटकम ज्ञानचारित्रभेदा ॥
Closing तत्त्वाथसूत्र मुनीश्वर ॥

286 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Opening मोक्षमागस्य तद्गुणलब्धये ॥
Closing तवयरण दुक्ख निवारेइ ॥

287 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Openıeg त्रैकाल्य द्रव्य चारित्रभेदा ॥
Clossng तत्त्वार्थसूत्र मुनीश्वरम् ॥

288 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Opening मोक्षमार्गस्य तद गुणलब्धये ॥
Closing दशाध्याये मुनिपुगव ॥

289 तत्त्वाथ सूत्र मूल

Opening देखे क्रमांक २७६
Closing देखे क्रमाक २७६

290 तत्त्वाथ सूत्र मूल

Opening देखे क्रमाक २७६
Closing देखे क्रमाक २७६
Colophon स० १५८७ आश्विनशुक्ल ११ सौमवासरे (अद्येह श्री घनौघदुर्गे) श्री चन्द्रप्रभुचैत्यालये श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये भ० पदमनदी तत्पट्ट भ० देवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ० विद्यानदी तत्पट्टे भ० मल्लिषेण तत्पट्ट भ० लक्ष्मीचद तस्यप्रियशिष्य आ० शुभचन्द्रेणोपदेशात गधारवास्तव्य पुण्यपुरुष गाधी धरण्य तस्य भार्या वाईहा वाई तयो पुत्रदानेन श्रिया समदृश सम्यक्त्वेन श्रेणिकसमान गाधीभोजा तस्य भार्या पुन्यपवित्रा बाई पुहती तयो पुत्र गाधीवद्धमान एतेषा मध्ये गाधीभोजाख्येन कमक्षयाथ द्रव्य दत्त्वा लिख रुपये प्रदत्तम ।
विशेष इस प्रति का जीर्णोद्धार होना आवश्यक है। प्रथम ५ पत्र नही हैं।

291 तत्त्वाथसूत्र मूल

Opening देखे क्रमाक २७६
Closing देखे क्रमाक २७६
Colophon लिपिकृत गोकुलचद्र
विशेष प्रति रजिस्टरनुमा है। मोटे-मोटे अक्षरो मे साफ साफ लिखा है। गुटके मे कुल १७७ पत्र हैं।

292 तत्त्वाथसूत्र मूल

Opening देखे क्रमाक २७६
Closing देखे क्रमाक २७६

Colophon लिखत पौह वदी ६ स० १७६३ वर्षे परसराम षोहरीमध्ये सगहीजी नराइणदास पठनार्थे ।

293 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Opening देखे क्रमाक २७६
Closing देखे क्रमाक २७६
Colophon पाणीपथनगरे प० श्रीनयचन्द्रेण वैसाखसुदी ७ स० १८०५ रविवारे अश्लेषा नक्षत्रे गडयोगे लिपीकृता ला० हुलासराय लिखापित ।

294 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Opening देखे क्रमाक २७६
Closing देखे क्रमाक २७६
Colophon चैत्र वदी १० शनिवार स० १८४२
विशेष प्रारभ के पत्र नही हैं, तृतीय अध्याय २४ वे सूत्र से प्रारभ है ।

295 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Openinp देखे क्रमाक २७६
Closing देख क्रमाक ३७६
विशेष प्रथम २० पत्र नही है । यह ग्रथ अजितप्रसाद ने १० माच १९१८ को मदिरजी को समर्पित किया ।

296 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Opening देखे क्रमाक २७६
Closing देखे क्रमाक २७६

297 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Opening देखो क्रमाक २७६
Closing देख क्रमाक २७६
Colophon लिपिकृतम आसौज वदी ६ स० १८२६ सवाई जयपुरमध्ये वास्तव्य श्वेतावर जयरामदासेन लिपिकृतम् ।

298 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Opening देखे क्रमाक २७६
Closing देखे क्रमाक २७६

299 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Opening देखे क्रमाक २७६
Closing देखे क्रमाक २७६
Colaphon आ० (आसौज आषाढ) कृष्ण ७ भगो स० १८७१ लिपिकाल।

300 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Opening देखे क्रमाक २७६
Closing देखे क्रमाक २७६
Colophon लिपिकाल कार्तिक सुदी २ चन्द्रवार स० १९१८

301 तत्त्वार्थसूत्र मूल

Opening देखे क्रमाक २७६
Closing देखे क्रमाक २७६

302 तत्त्वार्थसूत्र सटीक (तत्त्वाथ वृत्ति या तत्त्वाथ दीपिका

Opening सिद्धोमास्वामीपूज्य श्रुतोद वयाख्य ॥
Closing सरयावाचा यथा एक द्वौ वहव व ॥

303 तत्त्वाथवृत्ति (तत्त्वाथदीपिका)

Opening सिद्धोमास्वामीपूज्य जिनवरवषभ वीरमूर्तिरसमाप्तम।
श्रीमत पूज्यपाद गुणनिधियत्सत्प्रभाचन्द्रमिन्द्रम् ॥
श्री विद्यानन्द्यधीश गतमलकल कायमानम्य वक्ष्ये।
तत्त्वाथसूत्रवृत्ति निजविभवतयाह श्रुतोदन्वयाख्य ॥
Closing श्रीवद्धमानमकलक समन्तभद्र श्रीपूज्यपाद सदुमापतिपूज्यपादम।
विद्यानदिगणस्त्रमुनीन्द्र सेव्य भक्त्या नमामि पटितश्रुतसागराप्त्यै ॥
Colophon इत्यनवद्य गद्यपद्यविद्याविनोदितप्रमोदपीयूषरसपानात् पावनमति सभाजन रत्नराजमतिसागरयतिराजराजितार्थेन समर्थेन तकव्या०छदोऽलकार साहित्यादिशास्त्रनिशितमतिना
Colophon लिखित कार्तिक वदी ५ स १७९२ नारायणदास स्वपठनाथ महाराज सवाई जैसिंह के राज्य मे। ८००० श्लोक प्रमाण।

देखो—जि० र० को०, पृ० १५० (१६)
रा० सू० III, पृ० १३
आ० सू०, पृ० ६७
भट्टारकसप्रदाय, पृ० १८१

304 तत्त्वार्थ टीका भाषानुसारिणी

Opening वीर प्रणम्य सर्वज्ञ तत्त्वार्थस्य विधीयते।
टीका सक्षेपत स्पष्टा मदबुद्धिविबोधनी ॥

Closing द्वाविंशति सहस्राणि द्वेशतवततथापरे,
अशीतिऽधिकाराद्वाभ्या टीकाया श्लोकसग्रह।

Colophon स्याद्वादकेतुर्जिनमीनकेतुर्नावा विसेतुजनसौख्यहेतु
जिनेन्द्रचद्र प्रणमन्नरेन्द्र कुर्यात्प्रभाव प्रकटप्रभाव ॥
यद्यत्र क्वाप्यवद्य स्यादर्थे पाठे मया कृतम्।
तदा शोध्य बुधैर्वाच्यमनत शब्दवारिधी ॥६२॥

इदम शास्त्र श्री प्रिया न गोपालाय चुन्नी लाल कुदीया मारफत लाला गनेमला की। लिखत चत्रकृष्णा ११ शुकवार १६१७ पौष वदि प्रतिपदा रविवासरे स० १८२४ मे प सुखराम ने पूण किया।

विशेष इसमे सिद्धिविनियश्चय और सृष्टिप्रकाश का भी उल्लेख किया है। लिपिकाल की दो तिथियां दो हस्तलिपियो मे अकित हैं। सिद्धसेन गणि के गुरु भास्वामिन थे जो सिंहसूर के शिष्य थे।

305 त्रलोक्यदीपक (३ अध्याय)

Opening देखो ज० ग्र० प्र० स० I, प० २०८
Closing देखो ज० ग्र० प्र० स० I पृ० २०४
Colophon देखा ज० ग्र० प्र० स० I, प० २०४

लिखतमिद पुस्तकम फाल्गुन वदी १२ स० १८२७ शाके १६६२ भौमवासरे रामपुरामध्ये लिखायत साहाजी श्री गुमानीराम जी द्विज ज्ञाति दसोरा मिश्र अखरामेण लिपिकृत।

विशेष ४५७ स ४६५ श्लोक तक प्रशस्ति है। ध्वजा, मानस्तभ आदि के चित्र है तथा गणना के चाट बने है।

देखो—रा० सू० II, पृ० २८३, २८५
रा० सू० III, प० ६३
जि० र० को०, प० १६५ (१)
ज० ग्र० प्र० स० I, प० २०४

306 त्रलोक्यसार

Opening णीलासुपासपासाणेमिमुणि सुव्वया कि एट्टा ॥८३७॥
Closing णेदी सरग विमाणग जिणालया होंति जेद्दाहु ॥६६६॥
Colophon पुस्तक लिखायत हरसुखराम जी का बेटा सुगुनचद्र पठनाथ जेठसुदी ५ स० १८७४ साहजी आरत राम जी तत्पुत्र अमीचद।

विशेष ये अमीचद सभवत पालमवासी लेखक ही है।

307 त्रिभगीसार

Opening सवज्ञ सुबोधामिमा ॥

Closing पदकमलयुगल मदनप्रभाव ॥

Colophon प्रणम्य परमात्मान जिन निखिलवेदिनम् ।
ग्रथविस्तारयोव त्ति वक्ष्ये कर्णाटभाषया ॥
श्री श्रुतमुनि हि कौश्लीक कर्णाटटीका करोति के मुनिनोक्तम् ।
प्रणम्य वीर गुरुपूज्यपादम् श्रीनेमिचन्द्रम सगुरु सदैव ।
वद्यम समाश्रित्य यथागमटीका वक्ष्ये निजभाषया ॥२॥
श्रीमदप्रनिहता प्रति मनुष्य तिपद नि क्रम केवलज्ञान तृतीयलोचना-लोक्तितकृतम ।

विशेष यह प्रति श्रु तमुनि की कन्नड टीका पर आधारित है। ग्रथ के आदि मे मगलाचरण की प्रशस्ति ज० ग्र० प्र० स० I, पृ० २८ पर देखो।

जि० र० को०, पृ० १६२ I
ज० ग० प्र० स० I प० २८ प्रस्तावना प० २६

308 त्रिभगीसार

Opening देख क्रमाक ३०७

Closing देखे क्रमाक ३०७

Colophon पूज्य श्री अर्यानी ऋषि शिष्य दुर्गे नाम्नोति ऋषि लिखत जेठ वदी ३ गुरुवासरे म० १६१५ आत्मावबोधनाथ। जलमागयज्ञामिधानेन नगरे लिखितमिद पुस्तक। २७०० श्लोक प्रमाण।

शेष सदभ के लिए क्रमाक ३०७ देखो।

309 त्रिभगीसार

Opening देखे क्रमाक ३०७

Closing देखे क्रमाक ३०७

Colophon अथवा समाधिना मरण प्राणात समाधि मे ममयोग्य दिशतु कृपा करोतु।

विशेष प्रशस्ति के कुछ छद सारहीन हैं। शेष जै० ग्र० प्र० स० I, प० २६ पर प्रकाशित है।

310 त्रिलोकसार सटीक

Opening यस्योक्ति शीतल वत्तिमह करिष्ये ॥

Closing यज्जगता धृता मुदया तनोतु ॥

Colophon आसापल्या सुधी भव्यावबोधक ॥
लिपिकाल चैत्र वदि १ सोमवार स० १५७४

विशेष महाराज चामुण्डराय के ज्ञानवर्द्धन के लिए लिखी गई थी। कुछ गाथाए आचाय के शिष्य माधवचद त्रविद्य ने भी जोडी हैं।

देखो—जि० र० को०, प० १६२ (२)
प्र० जै० सा०, पृ० २५६
आ० सू०, प० १६४
रा० सू० II, प० २८४
रा० सू० III, प० २३४
ज० ग्र० प्र० स० I, प० ३२
भट्टारक सम्पदाय, प० १८६

311 त्रिवर्णाचार (५ अध्याय)

Opening श्रीमत सकलज्ञान त्रिवर्णाचारमुत्तमम ॥
Closing पायश्चित्त य करोत्येव सतनोति ॥१०॥

विशेष सकलकीर्ति कृत त्रिवर्णाचार का उल्लेख अ य सदभ ग्रथो मे नही मिलता है।

312 त्रिवर्णाचार (१३ अध्याय)

Opening श्रीचद्रप्रभदेवचरणौ स्वर्गादिसौख्यार्थित ॥१॥
Closing श्लोकाना यत्र श्रोतु सुखपदम ॥१२६॥
Colophon श्रीमूलसघ वरपुष्करारये ग्रथश्च पूर्णीकृत ।
Colophon लिपिकृत आस्विन वदी १३ स० १८६१ जैपुरमध्ये लिखायित श्री दीवान सगही जी श्री रामचन्द्र जी स्वपरहिताय।

विशेष ग्रथ सरया २७०० । रचनाकाल कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा रवौ स० १६६७। जि० र० को० के पृ० १६३ पर यह सवत १६६६ दिया है जो गलत है। भूल से ७ को ६ लिखा गया है। क्योकि 'तत्त्वरसत्तुचदकलिते " मे तत्त्व के ७ अक माने जाते है। अत १६६७ सही है।

देखो—प्र० ज० सा०, पृ० २५६
रा० सू० II, प० ७ १५५
रा० सू० III, प० १८४
जि० र० को०, पृ० १६३ I
ज० ग्र० प्र० स० I प्रस्तावना, पृ० २६

313 उपासकाचार

Opening श्रीमज्जिनेन्द्रचन्द्रस्य . श्रमसतायनश्रमम् ॥१॥
Closing शरीरमडलशीलम्. सत्येनैवोज्ज्वल मुखम ॥१०१॥

देखो—जि० र० को० पृ० ५६ के अनुसार १०३ छद
रा० सू० II, प० १५०, ३४६
रा० सू० III, पृ० १३२
भट्टारक सप्रदाय पृ० २१४, २३८

314 उपासकाध्ययन (वसुनन्दि-श्रावकाचार)

Opening सुरवई तिरीडमणि सेसतच्चत्थम् ॥१॥
Colophon पच्च सया पणसुत्तराणि विथरियव्वो वियड्ढेहि ॥

देखो—रा० सू० II, पृ० १०७ ३८७, १५०
रा० सू० III, पृ० ३५
जि० र० को० पृ० ५६, ३६६ (XVII)
जै० ग्र० प्र० स० I, प्रस्तावना पृ० ५७

315 उपदेशरत्नमाला (षटकर्मोपदेश रत्नमाला)

Opening वदे श्रीवृषभ पुरुषोत्तमम् ॥
Closing पचाचाररता मोक्षार्थिनम ॥२४॥
Colophon op श्रीमूलसघे समभूजिनाक्ष ॥२५॥
Colophon clo सहस्रमितथैव बुधै ॥४२॥

लिखत दयाचदेन माघवदी १ स १८८२ रचनाकाल श्रावण सुदी ६ स १६२७। ग्रथ सख्या ३१००।

विशेष भ० सकलभूषण के गुरु शुभचन्द्र थे जो सरस्वती गच्छीय विजयकीर्ति के शिष्य थे। इस ग्रथ का नाम 'षड्कर्मोपदेश रत्नमाला' भी है।

देखो—रा० सू० II, पृ० १४६
रा० सू० III, पृ० २३
जि० र० को०, पृ० ५१
प्रा० सू०, पृ० १६
जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० १६
प्रशस्ति सग्रह कस्तूरचन्द, पृ० १-४
भट्टारक सम्प्रदाय पृ० २४

316 विदग्धमुखमण्डन सटीक (४ अध्याय)

Opening सिद्धौषधानि प्रवचनानि चिर जयंति । १॥
Closing पूर्णचन्द्रमुखीरम्या मदनोज्वरम ॥७४॥
देखो—जि० र० को०, पृ० ३५५

317 विदग्धमुखमण्डन सटीक (४ अध्याय)

Opening देखे क्रमाक ३१६
Closing देखे क्रमाक ३१६
प्रस्तुत प्रति मे लिपिकाल स० १४६५ नही मिला, अपितु गत्ते पर छपे लेखानुसार ज्ञात किया गया ।

318 विदग्धमुखमण्डन सटीक (४ अध्याय)

Opening देखे क्रमाक ३१६
Closing देखे क्रमाक ३१६
Colophon लिखत फागुन सुदी २ स० १८८६ श्री मिश्रभगवानदासस्य लिखायित ला० गिरधारीलाल ।

319 योगशास्त्रप्रकाश (अध्यात्मोपनिषद)

Opening दशस्वापि कृता दिक्षु यत्र सीमा न लघ्यते ।
ख्यात दिग्विरतिरतिप्रथम तद्गुण व्रतम ॥१॥
Closing प्रसन्नवदना पूर्वाभिमुखो वाप्फर्दिङमुख ।
अप्रमत्तसुसस्छानोध्यातोद्धयानोद्युतो भवेत ॥३७॥
Colophon इति परमाहृत श्रीकुमारपालभूपालसुश्रुषतो आचाय श्रीहेमचन्द्र विरचिते आध्यात्मोपनिषदि सजात पटबधे श्री योगशास्त्रे द्वादशप्रकाशे चतुथ प्रकाश । कुरावर ग्रामे भानुमूर्ति पठनाथ ।

320 योगशास्त्रप्रकाश (अध्यात्मोपनिषद)

Opening पादानव क्रमणषु च स्थानेषु वेष्टानियमा कागुप्तिसुसापरा ॥४४॥
Closing सन्निधे निघयस्तस्य कामगव्यानुगामिनी ।
इचमरा किंकरायते सतोषो यस्य भूषण ॥१४॥
Colophon इति परमाहृतो द्वि० प्रकाश । गणि विवेक सुदरेण लिखित ।
देखो—जि० र० को०, पृ० ३२३

321 आप्तमीमांसा वृत्ति (देवागम टीका)

Opening श्रीवर्द्ध मानमभिवद्य कृतिरलक्रियते मयास्य ॥१॥

Closing स श्रीस्वामीसमन्तभद्र स्याद्वादमार्गाग्रणी ।

Colophon इति फेणामडलालकारस्योरगपुरस्याधिपसूनोश्च स्वामीसमन्तभद्र देवस्य वाप्तमीमांसालकृतौ १० परिच्छेद ।

प्रचडपण्डिताग्रणीसेवितस्य कविगमकि वाग्मित्वा गुणालकृतस्य सवकलाकुशलस्य श्रीजगन्नाथवादिन पुस्तक स्थेयाश्चिरम् ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १०४
रा० सू० II, पृ० १६६
रा० सू० III, पृ० ४७, २४०
जि० र० को०, पृ० १७६ (VI)

322 आप्तमीमासा वृत्ति (देवागम टीका)

Opening देवागमनभोयान त्वमसि नो महान् ॥

Closing समन्तभद्रदेवाय वसुनदिसमागमा ॥

विशेष प्रारम्भ के ५ पत्रो मे प्रस्तावना है तथा प्रशस्ति मे समन्तभद्र स्वामी की प्रशसा की गई है । साथ ही आप्तमीमासा और प्रमाण परीक्षा के विषय मे उल्लेख है । क्रमाक ३४३ देखो । सन्दर्भ के लिए क्रमाक ३२१ देखो ।

323 आप्तमीमांसा वृत्ति (देवागम टीका)

Opening देखे क्रमाक ३२२

Closing देखे क्रमाक ३२२

324 आप्तपरीक्षा

Opening प्रबुद्धाशेषतत्त्वार्थ मोहध्वातप्रभेदिने ॥

Closing आप्तपरीक्षालकृतिका सदुपाय प्रकटितो येन ॥

Colophon भाई जौहरीलाल गोधा नये मंदिर से बाचने कू लाये मिती स० कू सो मदिर मे रख आये थे सो नही मालूम कौन ले गया सो अब यह ग्रथ बदले मे सुगुनचदजी ने नया मदिर मे भेंट कीया । सुन्दरलाल प्यारेलाल ने वैदवाडा सु० जात लखडेवाल श्रावग गोत्र गोधा ने जैपुर से लिखायकै लाये मिति मर्गासर सुदी १४ स १९९२ ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १०३
रा० सू० II, पृ० १९३
रा० सू० III, पृ० १९६
जि० र० को०, पृ० ३०

325 आप्तपरीक्षा

Opening देखे क्रमाक ३२४
Closing देखे क्रमाक ३२४
Colophon विद्यानदिहिमाचलमुख पद्यविनिर्गता सुगभीरा।
आप्तपरीक्षा टीका गगावच्चिर जयतु ॥
श्रीशास्त्रीजी लिखायत लाला गिरधारीलाल जी लिखित माघ सुदी १३ मगलवासरे स० १८८४ लेखकस्यौचन्द ।

शेष सदम के लिए क्रमाक ३२४ देखे।

326 आप्तपरीक्षा

Opening देखे क्रमाक ३२४
Closing देखे क्रमाक ३२४
Colophon लिखायित श्री सगही जी श्री दिवान रायचन्द्रेण लिपिकृत फागुन वदी १० चन्द्रवासरे स० १८६१ श्री सवाई जैपुरमध्ये।

शेष सदभ के लिए क्रमाक ३२९, ३३० देखें।

327 अष्टसहस्री सटीक १० अध्याय (देवागमस्तोत्र)

Opening श्रीवद्ध मानमभिवद्य कृतिरलक्रियते मयास्य ॥
Closing श्रीमदकलकशशधर कृतिरष्टसहस्री सतामृद्धय ॥
Colophon वर्षे नेत्रषडश्वसोमनिहिते ज्येष्ठे च मासे
शुक्ले पक्ष इति त्रयोदशदिने श्रीतक्षकाख्ये पुरे।
नेमिस्वामीगहे स्वलीलिखदिद देवागमालकृते,
प्रस्ते पूज्यनरे द्रकीर्तिसुगुरो श्रीलालचन्द्रो बुध ॥
अष्टसहस्री पुस्तक ज्येष्ठ शुक्ला १३ स १७६२ त्रिकाल त्रिशुद्धया लालचन्द्रो लक्ष्मीदास शिष्य प्रतोन नमामीति।
विशेष पृ० २८ तक कोई टीका नही है।

देखो—प्र० ज० सा०, पृ० ९७
आ० सू०, पृ० ७
रा० सू० II, पृ० १९३
रा० सू० III, पृ० ४६
जि० र० को०, पृ० १९

327 A अष्टसहस्री सटीक (देवागमस्तोत्र)

Opening देखे क्रमाक ३२७
Closing देखे क्रमाक ३२७

Colophon खरतरगगनागणगणमभणे साधुसघमूधन्य ।
धन्यात्मा जिनवध नसूरीरभूत्तस्य सतानो ॥
चन्द्रोपलाघमलचादकुलप्रतोन प्रोत्सर्पिकैरवकदम्बकह्लासहेतु ।
श्रीजैनचन्द्रक इहचद्रकरावदान कीर्तिकलकविधुत समुदत्प्रकाशम् ॥२॥
तत्पट्टोदयपवतीयशिखरे चचत्तयो विभरै
श्रीमान् श्रीजिनरत्नसूरितर्णि तीव्रप्रतायोभ्युदेत ॥३॥
तत्पाणि सलिल जन्मनि बालमरालद्यु ति द्यु त चक्रे ।
केसर्या श्राविकया सुशीलया लेखमिदेम ॥१५॥
तैरपि च विनयवध नगणये निजशिष्यगणधुरीणाय ।
सम्राट हषवधन युताण्यपाणयनिरवापि ॥१६॥

Colophon लिपिकाल आश्विन वदी १३ स० १७०८ ते सपध्य के देहुरे जसघपुरा के निछराव लिए श्रीवमदास हरिसघ चढाई केसर्या श्राविका द्वारा लिखी गई ।

शेष सन्दभ के लिए क्रमाक ३२७ देखो।

327 B अष्टसहस्री टीका

Opening अथ अष्टसहस्री को तिलक महामीरष लिख्यते ।
अष्टसहस्री अस्मदजिनाभिधान गुराञ्जत त्रिधा तेषा पूणम्याथ वक्ष्येह भव्य सेविदां ॥१॥

Closing समन्तभद्रेण उत्सर्पिणीकाले भविष्यतीथकरपरमदेवेन महाकविना ।

विशेष पत्र ६७ पर प्रभाचन्द्र गणिना इत्यादि उल्लिखित है।

328 अष्टशती (आप्तमीमांसा देवागम टीका)

Opening उद्दीपीकृतधमतीथमचला रिद्राभि वदित ॥१॥
Closing श्रीवधमानमकलक परिणौमि समन्तभद्रम् ॥१४॥
Colophon लिपिकाल—वैशाख सुदी २ बुधवासरे स० १६३८

प्र० जै० सा०, पृ० ६७
रा० सू० II, पृ० १६३
जि० र० को० पृ० १६, १७८

329 अष्टशती (आप्तमीमांसा, देवागमटीका)

Opening देखे क्रमाक ३२८
Closing देखे क्रमाक ३२८
Colophon जोहरीलाल ये पुस्तक मागकर लाये श्री सुगुनचन्द जी के मदिर से सो जाता रहा (खो गया) इनही मे सुधार आये सो उठा पता लगा नही सो नकल उतराय कर दीनी। सुन्दरलाल प्यारेलाल जात गोधा खडेलवाल सरावगी वदवाडा सु नोछावर दीनी ४ अखरडके चार मिती चैत्र वदी १० स० १९६२
विशेष देखो क्रमाक ३२४ तथा शेष सदभ के लिए ३२८ देखे।

330 अष्टशती (आप्तमीमांसा, देवागम टीका)

Opening । देखे क्रमाक ३२८
Closing । देख क्रमाक ३२८
Colophon लिखापित साधु दीपच द्रण लिखित प० प्रमेण आषाढ सुदी पूर्णिमा भौमवासरे स० १७५८

शेष विवरण के लिए क ३२८ देखो।

331 अष्टशती (आप्तमीमासा, देवागम टीका)

Opening देखे क्रमाक ३२८
Closing । देख क्रमाक ३२८
Colophon । लिखत जठ सुदी १३ स० १८७९ श्री शुभचितक दयाचद लिखापित गिरधारी लाल।

सदभ के लिए देखो क्रमाक ३२८

332 चाणक्यनीति

Opening प्रणम्यशकर देव शास्त्रमुत्तमम ॥१॥
Closing । अतिशोकभयप्राण धारातपो वथा ॥१५॥

333 चाणक्यनीति (लघु)

Opening । प्रणम्य शकर देव ब्रह्माण च जगदगुरुम् ।
Closing परवेश्माभिलाषिणी कुत्सिता त्यक्तलज्जा च ।

334 न्यायदीपिका

Openeing । श्रीवर्धमानमहन्त न्यायदीपिका ॥
Closing तयो नयप्रमाणाभ्याम वस्तुसिद्धिरितिसिद्ध सिद्धा तपर्याप्तागमप्रमाणम्।

Colophon श्रीवर्द्धमान भट्टारकाचार्य गुरुकारुण्यसिद्धम् सिद्धसारस्वतोदय श्री आचार्य अभिनव धर्मभूषणयति विरचितायां न्यायदीपिकायां आगमप्रकाश समाप्त ।

प्र० जै० सा०, पृ० १६४
आ० सू० II, पृ० ८२
रा० सू० II, पृ० १६७
रा० सू० III, पृ० ४७, १६६
जि० र० को, पृ० २१६ II

333 न्यायदीपिका

Opening देखे क्रमाक ३३४
Closing देखे क्रमाक ३३४
Colophon दिल्लीमध्ये समाप्ता चैत्र वदी शुक्रवासरे स० १८७०

शेष सन्दर्भ के लिए देखे क्रमाक ३३४

336 न्यायदीपिका

Opening देखे क्रमाक ३३४
Closing देखे क्रमाक ३३४
Colophon सद्गुरुवर्द्ध मानेशो वर्द्ध मानदयानिधे ।
श्रीपादस्नेहसबधात्सिद्धेय न्यायदीपिका ॥
लिखित आषाढ सुदी ८ गुरुवासरे स० १८८६

शेष सन्दर्भ के लिए देखें क्रमांक ३३४

337 न्यायदीपिका

Opening देखे क्रमांक ३३६
Closing देखे क्रमाक ३३६
Opening लिखत श्रीकुसुमपुरे प० श्रीगीतसागरेण आश्विन कृष्णा ६ बुधवासरे स० १७४६ ग्रथ स० १००० ।

शेष सन्दर्भ के लिए देखो क्रमाक ३३४

338 परीक्षामुख मूल

Opening प्रमाणादर्थससिद्धि सिद्धमल्प लघीयस ।
Closing परीक्षामुखमादर्शम् परीक्षादक्षवद्धाम ॥७५॥
विशेष अकलकदेव की न्यायमीमांसा पर आधारित ।

देखो—प्र० ज० सा० १७५
भा० सू०' पृ० ६३
रा० सू० II, पृ० १६८, ३५६, ३८५
रा० सू० III, पृ० ४८
जि० र० को०, पृ० २३८
जै० ग्र० प्र० स० I प्रस्तावना पृ० ६६

339 परीक्षामुख मूल (६ अध्याय)

Opening । देखे क्रमाक ३३८
Closing । देखे क्रमाक ३३८

सदभ के लिए क्रमाक ३३८ देखो।

340 परीक्षामुख मूल (६ अध्याय)

Opening देखे क्रमाक ३३८
Closing देखे क्रमाक ३३८
Colophon उदयचन्द्रे ण स्वपठनाथ लिपिकृतम वैसाख वदी ६ स० १८६६

विशेष 'प्रकरणवाक्ययुतिनवाधिकद्विशतमिता' के अनुसार २०६ सूत्र हैं जबकि क्रमाक ३३८ वाली प्रति मे २०७ सूत्र हैं। जि० र० को० मे भी २०७ का ही उल्लेख है।

स दभ के लिए क्रमाक ३५६ देखो।

340 A परीक्षामुख मूल ६ अध्याय

गुटका ११ पत्र १६ तथा प्रशस्ति को क्रमाक २६१ देखे ।
सदभ के लिए क्रमाक ३५० देखे।

341 प्रमाणनिर्णय

Opening श्रीवर्द्धमानमानम्य वण्यते मया ॥
Closing : तान्नौमिन तेन मूर्वा श्री हेमसेन मतिसागरारय मुनि दयापालमहामुनि च। श्रीमदव्याकरणोन्नताग्रजस्वर खडूक्वदष्टोत्कट स साहित्यवरोरुकेसरस्त वासुर तम् सिहवद् यद्वाक्यपरवादिवारणगणध्वंसोद्भवादुत्तम ते नन्दन्तु मुनीन्द्र व सुकृतिन श्रीवीरात्मजा

Colophon वर्षे नेत्रकृशानुतत्त्वकुयुते (१७३२) मासे नभस्ये तिथावष्टम्यां हरि-जन्मजोद्भव युताया तक्षकाख्ये पुरे।

उदग्रे लघुमाननिर्णयमव पुस्त तु वादीभिना।
सत्स्यात्कारविराजित तिमिरह श्रीवादिराजोदभव। स० १८६२

विशेष ३६ वाँ पत्र तथा अन्य कुछ पत्र बीच-बीच मे फटे हैं।
लिपिकाल १७३२ तथा १८६२ दोनो मिलते हैं।

देखो—जि० र० को० २६८
प्र० जै० सा, पृ० १७७
रा० सू० II, पृ० १६८
जै० ग्र० प्र० स० १ प्रस्तावना, पृ० ४, ३६

342 प्रमाणनिर्णय

Opening श्रीवधमान मया ।।
Closing कथ तत्र प्रामाण्य परिचिंतयन ॥
विशेष प्रति अपूण है। कही कही टिप्पण भी हैं।

स न्दभ के लिए क्रमाक ३४१ देखो।

343 प्रमाणपरीक्षा

Opening जयति निर्जिताशेष विद्यानद जिनेश्वर ।
Closing इति प्रमाणस्य परीक्ष्य विद्याफलमिष्टमुच्चकै ॥
विशेष प्रथम ६२ पत्रो मे आप्तमीमासा है । क्रमाक ३२२ की प्रति मे भी इसका उल्लेख है।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १५३, १७७
आ० सू०, पृ० ६६
रा० सू० II, पृ० १६६, १६८
जि० र० को०, पृ० २६८

344 प्रमाणपरीक्षा

Opening देखें क्रमांक ३४३
Closing देखे क्रमांक ३४३

शेष सन्दर्भ के लिए क्रमांक ३४३ देखो।

345 प्रमाणपरीक्षा

Opening देखें क्रमांक ३४३
Closing देखें क्रमांक ३४३
Colophon प० कल्लोल लिख्यत भादो सुदी ५ स० १५५२ खडेलवाल ज्ञाति।

स० पक्ति पदमा पक्ति स० सुरिजन तस्य प० धरस पठनार्थं आत्मार्थे महभूत शास्त्र पठामि कल्याण ।

शेष सन्दर्भ के लिए क्रमांक ३४३ देखो

346 प्रमाणपरीक्षा

Opening देखे क्रमांक ३३८
Closing देखे क्रमांक ३३४

347 प्रमाणप्रमेय कलिका

Opening जयति निर्जिताशेष विद्यानदा जिनेश्वरा ॥
Closing : काल कलिर्वा शक्तेरपवादहेतु ॥
Colophon : लिपिकृत प्रथम भार्दो सुदी ६ रवौ स० १८७१ शुभचिंतक लेखक दयाचद म्हातमा ।

देखो—रा० सू० II पृ० १९८
जि० र० को०, पृ० २६८

348 प्रमेयकमलमार्तण्ड ६ अध्याय (परीक्षामुख वृत्ति)

Opening सिद्धधाममहारिमोहहनन श्रीवद्धमान जिनम ॥
Closing श्रीपदमनदी रत्ननदिपदे रत ॥१४॥
विशेष परीक्षामुख के सूत्र अकलक स्वामी की यायमीमासा पर आधारित है ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १७७
रा० सूची II, पृ० १९८
जि० र० को०, प० २६६ २३८, (परीक्षामुख)
ज० ग्र० प्र० स० १ प्रस्तावना प० ६९ ७०

349 प्रमेयकमलमातण्ड (परीक्षामुख वृत्ति)

Opening देख क्रमांक ३४८
Closing देखे क्रमांक ३४८

शेष विवरण के लिए क्रमांक ३४८ देखो ।

350 प्रमेयकमलमातण्ड (परीक्षामुख वृत्ति)

Opening णां तरत्व प्रशक्तिरिति अथानुमानात्त (१५२ I पत्र)
Closing आयुकर्मैव हि प्रधान मागस्तच्छरीरो (२०२ वां पत्र)

विशेष अपूर्ण प्रति ।

सन्दर्भ के लिए क्रमांक ३४५ देखो ।

351 प्रमेयरत्नमाला

Opening	नतामरशिरोरत्न मारवीरमदच्छिदे ॥
Closing	अकलकशशाकयत व्यक्तमेतेन ॥
Colophon	प्रशस्ति के चार श्लोक हैं जिसमे माणिक्यनदी का उल्लेख है ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १७७
आ० सू०, पृ० १६३
रा० सू० II, पृ० १६८
रा० सू० III, पृ० ४८
जि० र० को०, पृ० २७०
ज० ग्र० प्र० स० १ प्रस्तावना, पृ० ५६, ५७

352 प्रमेयरत्नमाला

Opening	देखे क्रमांक ३५१
Closing	देखे क्रमांक ३५१
Colophon	देखे क्रमांक ३५१

शेष सन्दर्भ के लिए क्रमाक ३५१ देखो ।

353 स्याद्वादमजरी

Opening	यस्य ज्ञानमनतवस्तुविषय बुद्धि विधत्ताम मम ॥
Closing	महत्त्व तारतम्य च तारतम्यमपि स्फुटम ॥ २४ ॥
Colophon	४ श्लोको की प्रशस्ति है ।

विशेष इसमे हेमचन्द्राचाय का उल्लेख है जिससे ज्ञात होता है कि रचनाकार हेमचन्द्राचाय और टीकाकार मल्लिषेण हैं, पर जि० र० को०, पृ० ४५७ से ज्ञात होता है कि रचनाकार मल्लिषेण ही हैं, हेमचद्र कृत कोई स्याद्वादमजरी नही है ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० २३६
जि० र० को०, पृ० ४५७
रा० सू० II पृ० २०१
रा० सू० III पृ० ४८,४६

354 स्याद्वादमजरी

Opening देखे क्रमांक ३५३
Closing देखे क्रमाक ३५३
Colophon : देखे क्रमाक ३५३

सन्दभ के लिए क्रमाक ३५३ देखो।

355 स्याद्वादरत्नाकर

Opening सिद्धये वद्ध मान प्रदीपाकुरायात ।।
Closing श्रीरत्नप्रभसूरिरल्पतरधी प्रस्तप्पति प्रजल्पत ।।
देखो—जि० र० को०, पृ० ४५७, २६७ पर 'प्रमाणनयतत्त्वलोकालकार II

356 तकसग्रह

Opening निधाय हृदि विश्वेशम क्रियते तकसग्रह ।।
Closing : कणादन्यायमतयो ग्चितस्तकसग्रह ।।
Colophon लिपिकाल—फागुनसुदी १३ मगलवासरे स० १६२६ ।

देखो—रा० सू०, II पृ० १६५
रा० सू० III पृ० ४६, १६६
जि० र० को० पृ० १५६

357 तकसग्रह

Opening देख क्रमाक ३५६
Closing देखे क्रमाक ३५६

सन्दभ के लिए ३५६ देखो।

358 तकसग्रह

Opening देख क्रमाक ३५६
Closing देखे क्रमाक ३५६
Colophon : अक्षरविन्यास विकोष लक्ष्मणदासाख्य वदभकेन कृत माघवदी ४ स० १८७० श्रीरामाय नम ।

सन्दभ के लिए ३५६ देखो।

359 तकसग्रहदीपिका

Opening विश्वेश्वेसा वभूति तकसग्रहदीपिका।
Closing तस्मात्पदाथज्ञानात्मोक्ष परमप्रयोजनमिति सवरमणीयम।

प्रति मे टीकाकार का उल्लेख नही है।

देखो—जि० र० को०, पृ० १५६ II (१)

360 तर्कसंग्रहदीपिका

Opening देखे क्रमाक ३५६

Closing देख क्रमांक ३५६

क्रमाक ५ की भाँति मुहर है।

सन्दर्भ के लिए ३५६ देखो।

361 धातुपाठ

Opening भूसत्ताया उदात्त परस्मैभाषा राधवृद्धो स्पर्द्धसंघर्षे

Closing पुछादिषु धात्वर्थ इत्येव सिद्धम। इति स्वार्थव्यश्चकारादय ॥

Colophon लिखत दयाचद कार्तिक वदी ८ स० १८८२।

362 हेमप्रक्रिया

Opening प्रणम्य शभुसर्वज्ञ कामद ज्ञानद गुरुम।
प्रक्रिया हेमचन्द्रीया कुर्वे बालप्रबोधधी ॥

Closing प्राग्वाटान्वय सभवत्समभवत श्रीविक्रमस्सत्तम ।
तेजस्वी विनयान्वितो गुणनिधिर्दाता दयालु सुधी ॥
तस्यासीत्तनयोति निर्मलयश सन्मानदानार्थिन ।
श्रीमान सागरसज्ञक नयनिधि विद्विज्जनानदित ॥ १ ॥
तत्पुत्रपरमप्रधान पुरुष श्रीतू भखाभुभुजा
मान्याऽभूद्भुवि विश्रुतभक्तिनिरत स्वज्ञातिभूषामणि ।
तत्भार्यापतिदेवताश्च परमा पदमति पद्माभा।
वीराख्य सुतमादिम प्रशुषु—व्यान्य कुकुदाभिधम् ॥ २ ॥
तावेतावति सुदरी परमयो पोतोश्रियान्स्वकीर्त्या
निर्मलित क्षमातल मिलद्वादवादे न्यायहो
वार्तातिनिगमाततत्त्व विबुध व्याव्यापणेकागुता
सा प्राप्राति महोदयोर तितरा श्री मन्नृसिंहप्रियो ॥ ३ ॥
या वीरसिंहो स्थितयामनीषी सप्रक्रिया शब्द निधि च हैमी
चकार कारुण्यतया बुधाना मनोविनोदाय विबोधनाय ॥ ४ ॥
यावद्धरानयानागा यावच्चन्द्रार्कसागरा ।
वीरसिंहस्तत्तावत्प्रक्रिया तु विजयताम् ॥ ५ ॥

Colophon : सवत्युगवसुरसराज्ञापरिवत्सरे श्रीसुव्रतीरघी श्री मदवृहत्तरखरतर गच्छ श्रीयुगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराणाम् तच्छिष्यसुख्याय प० सरल

चद्र गणि तच्छिष्यमुख्य श्रीसमयसुन्दरोपाध्याय तच्छिष्य प० मेघकीर्ति गणि तच्छिष्य रामचन्द्रेण प्रक्रिया लिखि।

लिपिकाल—वैसाखसुदी ६ स० १६८४ सोमवार।

देखो—जि० र० को०, पृ० ४६२

363 हेम व्याकरण

Opening : श्री। समथ पदविधि परिभाषेय समथ परसवधीविधि समर्थो वेदितव्य।

Closing : पुनरधिग्रहण जितिसज्ञा प्रतिषेधाथमेव नत्वीयमिति। इतिविभक्त्यर्था

विशेष प्रति मे रचना तथा रचनाकार का नाम नही मिला, पर पत्र २४ पर "हेमाचाय कृत" लिखा है।

364 जनेन्द्रव्याकरण महावत्ति टीका

Opening लक्ष्मी ... स्वयम्भुवे ॥

Closing इत्यादि चतुष्टय समन्तभद्राचायस्य मतेन भवति नान्येषाम।

Colophon लिखत गुलाबचन्द आषाढसुदि ६ गुरुवार स० १८७६।

देखो—जि० र० को०, पृ० १४६ (१)
प्र० जै० सा० प० १४८
आ० सू०, प० ६४
रा० स० II, पृ० २५७
रा० सू० III, पृ० ८७

365 जनेन्द्रव्याकरण महावृत्ति टीका

Opening देव देव ... विरच्यते ॥

Closing ... अन्यभ सज्ञाविधो ॥

विशेष प्रति अपूण है।

366 जनेन्द्रव्याकरण महावत्ति टीका

Opening : देखे क्रमाक ३६५

Closing : क्रमाक ३६४ के आगे "तथव वचोदाहृतम"।

विशेष प्रारभ मे देवनदि का कई बार नामोल्लेख मिलता है। जैनेन्द्रव्याकरण के दो भाग हैं—लघु और वृहत्। लघुभाग की टीका अभयनदी ने की है और वृहद् भाग की टीका, जिसमे ७०० सूत्र हैं, सोमदेव ने की है।

सदर्भ के लिए क्रमाक ३६४ देखो।

367 जैनेन्द्रव्याकरण महावृत्ति टीका

Openinp देखें क्रमाक ३६५
Closing देखे क्रमाक ३६६
विशेष ग्रथ सख्या १८००

सन्दर्भ के लिए क्रमांक ३६४ देखो।

368 जैनेन्द्रव्याकरण मूल (पचाध्यायी)

Opening लक्ष्मी स्वयभुवे ॥
Closing चतुष्टय समन्तभद्रस्य ** ॥
Colophon लिखत जति गोकुलचन्द आषाढ वदि ६ स० १८७६।

369 जैनेन्द्रव्याकरण (पंचाध्यायी)

Opening क्रमाक ३६४ की भांति।
Closing पश्य ललात तपपर (अपूर्ण) अध्याय २ पाद २ सूत्र ३८ वृ
सन्दर्भ के लिए क्रमांक ३६४ देखो।

370 जैनेन्द्रव्याकरण (पचाध्यायी)

Opening व्यतिशत्व न भवति नात क्य एवेति विपरीतो नियमो नाशकनीय (पत्र २६ I)
Closing प्राप्त अथ गोत्रमादेर ण प्राप्त प्रकृतित्वमेतेषा भावि (पत्र १३३)
सन्दर्भ के लिए क्रमाक ३६४ देखो।

371 काशिकान्यासपचिका (वृत्तिविवरणपजिका)

Opening ऊ जयंति ते सदा सत सर्वांगायैरुपार्जितम्।
गुणाना सुमहद्ध वो दोषाणाम् तु विवर्जितम्॥
अन्यत सारमाकृष्य कृतैषा कशिका यथा।
वत्तिरस्या यथाशक्ति क्रियते पजिका तथा॥
विशेष यह पाणिनी कृत अष्टाध्यायी की काशिका टीका है। तृतीय अध्याय नही है।

देखो—जि० र० को०, पृ० ६१

372 काशिका वृत्ति

Opening वृत्तौ भाष्ये तथा धातु क्रियते सारसंग्रह ॥१॥
Closing : इष्टक्षुपसख्यनवती शुद्धगणा वृत्तिरियं काशिका नाम।
Colophon इति जयादित काशिकाया वृत्तौ प्रथमाध्यायस्य चतुर्थ पाद ।

373 लघुसूत्रपचक

Opening इष्ट चराचर येन वेदिकाले प्रचक्ष्यते ॥
Closing अष्टौ सिद्धगुणा ।१७। त्रिविधा सिद्धा ।१८।
इति अर्हत्प्रवचने पचमोऽध्याय ।
विशेष चौथा अध्याय नही है। प्रति अपूण है।

374 प्रबोधचन्द्रिका

Opening हरिहरगुरुभक्त सवलोकानुरक्तस्त्रिभुवनगतिकीर्ति कान्तकन्दपमूर्ति ।
रणरिपुगणकालो वै जलक्षोणिपालो जयति जयति दाता सवकर्मविघाता।१।
चन्द्रावतीवदनचन्द्रचकोर विक्रमादित्यदेवतनयो नयतत्त्ववेत्ता ।
चौहाणवशतिलक पटनाधिनाथो राजा पर जयति वैजलदेवनामा ॥२॥
Closing इति प्रबोधचन्द्रिकायाँ कृतौ वैजलभूपते ।
एषा विशेषसुभगा समाप्ता सधिचन्द्रिका ॥
इति रामचन्द्राचायविरचिता प्रबोधचन्द्रिका समाप्ता ।

देखो—जि० र० को०, प० २६५

375 शब्दरूपावली

Opening रामो हरि करीभूभत पु सिनायका ॥
Closing अथ कारकानि लिख्यते कमरि प्रथमोक्ता सैव चाय (अपूण)
विशेष सस्कृत शब्दो के रूप हैं।

376 समासचक्र

Opening आदौकतृ पद वाच्यम् कुर्यादिते क्रियते पदम ॥
Closing अमानानि माननय। क्रियन्ते ते यथा सपद्यन्ते तथा भूता मानिता ॥
Golophon समासचक्रमिदम् गोविन्दारयस्य सर्वरमणीय पाठको जयतितराम ॥

377 सारस्वतकृदन्त प्रक्रिया

Opening लक्ष्मीनृसिंह प्रणिपत्य काश्या लिखेयम् गणप्रसादात् ।
Closing अवताद्वो तपत्कज ।

देखो—जि० र० को०, पृ० ४३३
आ० सू०, पृ० १४०
रा० सू० II, पृ० २८, २६१, ३२७
रा० सू० III, पृ० ८७, २३१

378 सारस्वत लघु (आख्यात-प्रक्रिया)

Opening अथ आख्यातप्रक्रिया निरूप्यते—भ्वादिधातुसज्ञाधातो प्रत्यया...

Closing आदेशात् श्री सरस्वत्या गुरुपदानुसरणात् ।
बालानां शीघ्रबोधाय कृतं सारस्वत लघु ॥

सन्दर्भ के लिए क्रमाक ३७६ देखो ।

379 सारस्वतव्याकरण

Opening देखें क्रमाक ३७८, सन्दर्भ के लिए भी ।

Closing देखें क्रमाक ३७८ ।

380 सारस्वतव्याकरण

Opening : प्रणम्य परमात्मान प्रक्रिया नातिविस्तरा ॥१॥

Closing लोकाक्षेपस्य सिद्धि प्रक्रया चतुराचिताम् ॥१॥

Colophon इति श्रीपरमहसपरिव्राजकाचार्यश्रीअनुभूतिस्वरूपाचार्यविरचिताया सारस्वतव्याकरणे कृदन्तप्रक्रिया समाप्ता । लिखत भादो सुदी १४ शनिवार स० १८७६ ।

विशेष जि० र० को० के अनुसार यह जैन व्याकरण है । अनेकात, जुलाई ७७ दृष्टव्य है ।

381 सारस्वतव्याकरण

Opening क्रमाक ३८० की भाति ।

Closing इकण् अधिक शेषनिपात्या कल्पादय ।

Colophon इति तद्धित प्रक्रिया समाप्ता । इति परमहसपरिव्राजकाचार्यश्री-नरेन्द्रपुरीश्रीचरणविरचिते सारस्वतव्याकरणस्यादि समाप्त ।

विशेष इस प्रति में अनुभूतिस्वरूपाचार्य का नामोल्लेख नही मिलता, अपितु श्री नरेन्द्रपुरी श्रीचरण का नाम है ।

382 सारस्वतव्याकरण

Opening दीर्घविसर्गो देवा अकाराज्जसोभसुक् क्वचिद्वक्तव्य देवा स ब्राह्मणा स (पत्र १०१) ।

Closing अस्य द्वितय नयोविययास्य त्रिनयं द्वयं त्रय शेषा निपात्या कल्या-दय । इति तद्धित प्रक्रिया (पत्र २१) ।

शेष सन्दर्भ के लिए क्रमाक ३७६ देखो ॥

383 सिद्धान्तचन्द्रिका पूर्वार्द्ध

Opening श्रीमते रामानुजाय नम । मातो इदमधिक्रियते त्वादि मिथाभवतो भ्वादिधातुसज्ञा ।

Closing दात्यौह दार्वसम श्रेयसे ।

विशेष रचनाकार के नामो मे रामभद्राश्रम, रामचन्द्र शर्मा, रामचन्द्राश्रम आदि का भी उल्लेख मिलता है ।

देखो—जि० र० को० प० ४११ र० (आख्यात प्रक्रिया)
रा० सू० II पृ० २१, २६४
रा० सू० III, पृ० २३१
आ० सू०, पृ० १४२

384 सिद्धान्तचन्द्रिका पूर्वार्द्ध

Opening • वृतैर्द्धातोऽस्ति वादय प्रत्यय स्यु ।

Closing मुग्ध आस्वादच्चमित्यन्त वहाच्चे । इत्याख्यातप्रकिरा ।

विशेष प्रति क्रमाक ३८७ से मिलती जुलती है ।

देखो—जि० र० को०, पृ० २०

385 सिद्धान्तचन्द्रिका पूर्वार्द्ध

Opening नमस्कृत्य महेशानं··· कुर्वे सिद्धान्तचन्द्रिका ।।

Closing शिशपाया विकार शाशयर्यमित्यो होपत्यदात्यौह दार्व सत्र ।

सन्दर्भ के लिए क्रमांक ३८३ देखो ।

386 सिद्धान्तचन्द्रिका उत्तरार्द्ध

Opening श्रीरामानुजाय नम । कृत्कर्तरी ·· ··

Closing लोकाच्छेयस्य सिद्धियथा मातरादे

सन्दभ के लिए क्रमांक ३८३ देखो ।

387 सिद्धान्तचन्द्रिका उत्तरार्द्ध

Opening : श्रीकृष्णचरणकमलाभ्याम्' ··भ्वादिधातुसज्ञा ।।

Closing : मुग्ध लावण्यमित्यमहुरच्चे । इत्याख्यात प्रक्रिया ।

सन्दर्भ के लिए क्रमांक ३८३ देखो।

388 सिद्धान्तचन्द्रिका (विभक्त्यर्थ)

Opening : देखें क्रमांक ३८४
Closing रामाश्रमस्यानुमतमुद्दीपन ''कारकनिर्णय दृष्टव्यम् । इति विभक्त्यर्थाः
सन्दर्भ के लिए क्रमांक ३८३ देखो ।

389 सिद्धान्तचन्द्रिका पूर्वार्द्ध

Opening मुनित्रय नमस्कृत्य कौमुदीय विरच्यते ।
Closing अभिव्यक्तौ साहचर्येणेत्यर्थ । योगविभागादन्यत्रापि द्वन्द्व इत्यते ।
इति तद्धित द्विरुक्तप्रक्रिया ।

390 सिद्धान्तचन्द्रिका उत्तरार्द्ध

Opening : श्रीत्राहंन्ती चणे गुण्यै विर्भुविजयतेतराम् ।।
Closing : महोजिदीक्षितकृति भवानीविश्वनाथयो ।।

391 वयाकरण-भूषणसार

Openin श्रीलक्ष्मीरमणं नौमि ' ''जगदेतद्विवतते ।।
Closing भूषणसारेण भूषये शेषभूषण ।।
Colophon : लिपिकाल चैत्र सुदी १ गुरौ स० १८६१ ।
देखो—जि० र० को०, पृ० ३६६
रा० सू० II, पृ० २६०

392 काव्यप्रकाश टीका

Opening : नियतिकृतनियम ' कवेजयति ।।१।।
Closing आकाशकायमुनिभूत लक्षितेऽस्मिन्नाब्दे मघावसितकामतिथावपूरि ।
सद्विज्ञकैरवविकाससमुन्नतश्रीम्मोंदाय मम्मटसुधांशुकृत प्रकाश ।।

393 काव्यप्रकाश मूल

Opening देखे क्रमाक ३९२
Closing दावा दोषा यथायोग' 'पृथक् प्रतिपादिताम् ।।
Colophon : लिपिकाल चैत्रसुदी २ गुरुवार स० १८८८

394 अज्ञात (?)

Opening ते हंसीकीर्ति' स्वर्णावगाहनमिव शब्दश्चेत्येषा उपमानोपमेय,
साधारणधर्मोपमावाचकानां ....
Closing : संभावनायामिव शब्दप्रयस्यापप्रतीति तथात्व... ..

395 कुवलयानन्दकारिका

Opening : अमरीकवरीभार-भ्रमरीमुखरीकृतम् ।

Closing : दूरीकरोतु दुरितम् गौरीचरणपंकजम् ॥
एव पचादशान्यान्यलकारान्विबुबुधा ॥१७७॥

देखो—रा० सू० III, पृ० १६६

396 श्रुतबोध मूल

Opening : मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुस्त्रिनकारो कथितोन्तलघुस्त ॥

Closing : चत्वारो यत्र वर्णा स्रग्धरालक्षणम् ॥

Colophon : इति श्रीकविकालिदासकृतौ श्रुतबोध छदैविचार सपूण ।
लिपिकाल वैसाखवदि ४ शनौ स० १८६१ शाके १७२६

देखो—जि० र० को, पृ ३९८ I
रा० सू० III, पृ० ८६,२३३

397 श्रुतबोध मूल

Openung : छन्दसा लक्षण येन श्रुतबोध विस्तरम् ॥

Closing : देखें क्रमाक ३९६

विशेष लिपिकाल माघवदि ५ स० १८९६

सदर्भ के लिए क्रमांक ३९६ देखें

398 वाग्भटालकार

Opening श्रिय दिशतु वो देव यदागमपदावली ॥

Closing दोषैरुज्झितमाश्रित सारस्वताध्यायिन ॥

Colophon लिपिकाल—भाद्रपद शुक्ला ६ चन्द्र वासरे स० १८७१

विशेष प्रति मे नामोल्लेख नही है। अत जि० र० को० ३४६ I के आधार पर ग्रन्थ निणय किया गया है।

देखो—जि० र० को, पृ ३४६ I
प्र० जै० सा०, पृ० २१३
भा० सू०, पृ० १२५
रा० सू० II, पृ० ४२,२८०

399 वृत्तरत्नाकर

Opening सुखसतानसिद्ध्यर्थम् · ··शंकर लोकशंकरम् ॥

Closing : यशोऽभूत्काश्यपस्य·· ···रचितमिद वृत्तरत्नाकराख्यम् ॥

Colophon : लाला गिरधारी लाल पठनार्थं श्रावण सुदी १३ सं० १८७० भौमवासरे ।

देखो—जि० र० को०, पृ० ३६४
रा० सू० II, पृ० ४२,२७२,३८७
रा० सू० III, पृ० २३३
प्रा० सू०, पृ० १२६

400 वृत्तरत्नाकर

Opening देखे क्रमांक ३६६

Closing : देखे क्रमांक ३६६

Colophon : लिखितमिदम् पुस्तक नित्यानंदेन प० रतनचद्रपठनार्थम् ज्येष्ठ वदि १ चन्द्रवासरे स० १८७६ ।

सन्दर्भ के लिए क्रमाक ३६६ देखो ।

401 वृत्तरत्नाकर सटीक (सेतु टीका)

Opening प्रस्फुरन्मधुपचु बितपापद्मकं जातजतियकजतीयम् ।
बुध्यते किल जडोपि च यस्मात् सारुण तदिह धाम नमाम ॥१॥

Closing त्र्यबकेश्वरपुरीकृतवासादग्निहोत्रिकुलनीरधिचन्द्रात् ।
पुण्यपूर्वपुरुषोत्तम भट्टादुद्बभूव सुकृती हरिभट्ट ।१।
वेदवाक्यनिचयावचयेन प्रक्षितो विधिरिवेह बुधोघो ।
लोकगीतविमलाय कीर्ति सोपि सज्जनमणिजयतिस्म ॥२॥
तस्मादुद्भूतकीर्ति पुन सुकृतभरान्मत्रतत्रस्वतत्र
साधूनामग्रगण्यो मददलनविधो मानवानां शरण्य ।
काशीक्षेत्राधिवासी हृतकठिनमहच्छत्रुषड्वगदंभ
श्रीमान्याजिभट्ट सुरयजवरत शुद्धधीराविरासीत् ॥३॥
सेतुस्तत्तनयेन शैवनगरे सद्वृत्तरत्नाकरे
नैतु भास्करशर्मना विरचित पार बुधाना गणम् ।
तेनाय ससुरासुरेन्द्रनिकरव्यालोलमौलिस्खल-
त्मंद्ररत्नमरीचिविरजितपदो देवो रवि प्रीयताम् ॥४॥
तरितुमवीकर यदिह वृत्तरत्नाकर
मही सुमनसामहं गमनहेतु सेतु अदु ।
हरेरिव महोदधौ कपिनिबद्धसेतौ
स्फुरज्जयंतु महिमा गुरोश्चरणयो समुज्जृ मते ॥५॥
अग्निवह्निहयभूमितवर्ष (१७३३) सद्वसंतसमये मधुशुक्ले ।
श्रागतं प्रतिपदीह समाप्ति सेतुरेषबुधसंघमुदेस्तु ॥६॥

Colophon : रचनाकाल—वैसाख सुदी प्रतिपदा स० १७३३
लिपिकाल—मगसिर सुदी १२ रवौ स० १८७०
शाके १७३५

402 अमरकोष (नामलिंगानुशासन)

Opening यस्य ज्ञानदयासिंधो चामृताय च ।।
Closing यावद्देहनिवासिनी ~कठे गत नित्यश ।।३।।
Colophon : लिपिकाल—श्रावणसुदी ११ भौमवासरे स० १६०६
देखो—रा० सू० II, पृ० ३०,२६६
रा० सू० III, पृ० ८८,२३२

403 अमरकोष (नामलिंगानुशासन)

Opening देखे क्रमाक ४०२, सदर्भ के लिए भी।
Closing : देखें क्रमाक ४०२, सदर्भ के लिए भी।

404 अनेकार्थध्वनिमजरी

Opening शब्दाम्भोधियतोनत कुतोन्यत् श्रृणुयान्नर ।
अनुमानैकमानाय तस्मै वागात्मने नम ।।१।।
Closing : सघाते पूरणे पूर श्रूर श्रूर नरेश्वर ।
श्रुकरकोमलो काव्ये सुभयो बधुसैन्ययो ।।१।।
Colophon : लिखत दयाचन्द्रेण वैसाखसुदी १० भौमवासरे स० १८७६
देखो—जि० र० को०, पृ० १०
विशेष जि० र० को० मे इस कृति के हेमचन्द्र द्वारा रची होने की सम्भावना व्यक्त की नई है। संभवत यह 'बधुसेन' की रचना हो जैसा कि अतिम छन्द के अतिम शब्द से ज्ञात होता है।

405 अनेकार्थध्वनिमजरी पद्याधिकार III

Opening : शुद्धवर्ण अनेकार्थ श्रद्धानादिवानिश ।।१।।
Closing : सघाते बुधसप्तयो ।।१६।।
Colophon : लपिकाल कार्तिक वदी १ स० १८३२ चन्द्रवासरे।
विशेष क्रमाक ४०४ से इसमे पाठ भेद है।

406 त्रिकाण्ड-कोष

Opening प्रबोधमाधातुमखण्डितानां······ प्रकाशोऽखिल वाङ्मयाब्धे ।।
Closing : सस्याक साध्वर्ग······· · ··भेदास्च दर्शिता ।।६५।।

इत्युक्तमेव कृतिरियम् महेश्वरकवे,

देखो—जि० र० को०, पृ० १८५

407 एकाक्षरी नाममाला

Opening अभिधानं प्रवक्ष्यामि नानाशब्दार्थविस्तरम् ।
साक्ष्य चाक्षरं यत्र एकाक्षरमुदाहृतम् ॥

Closing : अकारादि क्षकारान्तं वर्णानां च पृथक् पृथक् ।
अभिधानं समासेन कथित बुधसंस्तुतम् ॥३६॥

विशेष संस्कृत वर्ण माला के प्रत्येक अक्षर का अर्थ वर्णित है ।

देखो—जि० र० को०, पृ० ६१ (IV)

408 मैथिली-कोष

Openinp ॐ वृषभांकाय नमस्तस्मै• विभावयति जाह्नवी ॥

Closing विशालाक्षो हरे तार्क्ष्यो कटाक्षसहितेऽपि च ॥

409 नाममाला हैमी (अभिधानचिन्तामणि)

Opening : प्रणिपत्यार्हत सिद्ध " " सांग्ना माला तनोम्यहम् ॥१॥

Closing : ननु यस्या ह्रिरोक्तो" " " " ""क्तौ नम ॥१७८॥

Colophon इत्यभिधानचिन्तामणौ नाममालायां सामान्यकांड षष्ठ समाप्त ।

देखो—जि० र० को०, पृ० ४६३
प्रा० सू०, पृ० २१६
रा० सू० II, पृ० ३०,२६६

410 नाममाला लघु

Opening : प्रणम्य परमात्मान सच्चिदानन्दमीश्वरम् ।
गृहणाम्यहं नाममालां बालानाम मनोरमाम् ॥१॥

Closing : श्रीमन्नागपुरीयकाह्वयतया तपागच्छाविदास सज्जया सूरिप्रभुचन्द्रकीर्तिगुरवस्तेषां सानुग्रहात्, भूपातिसजनोचिता लघुतरां श्रीनाममाला मिमा चक्रे श्रीगुरुहर्षकीर्तिरखिल श्वेतांबर ग्रामणी ।

भूद्वीपवर्षसरिदद्रिविमानवातातारादि यावत् वायु वातानि यावत् ।
यावन्मुदविरततो भुवि पुष्पवतौ तावत्स्थिरा विजयतां वत नाम-माला ॥३३॥

Colophon : सकलपंडितोत्तम श्री १०८ महिमासागरगणि तच्छिष्य प० श्रीसागरगणि तच्छिष्य मतिसागरेण लिखितं माघवदि १० सं० १८११ भूताढा मध्ये ।

देखो—जि० र० को०, पृ० २३५

411 नाममाला मूल (धनञ्जय निघण्टु)

Opening तन्नमामि पर ज्योति ' 'उन्मीलयत्यपि ॥
Closing अर्हत्सिद्धिमितिछाया शरणे तव मगलान् ॥४६॥

इतिधनजयस्य कृतौ निघण्टुसमये शब्दसकर्णस्वरूपनिरूपणो द्वितीय-परिच्छेद ।

विशेष इसका एक श्लोक वीरसेन के 'धवल' मे मिलता है जो शक स ७३८ की रचना है। सम्भवत धनजय को यह श्लोक प्राचीनतम साधन से उपलब्ध हुआ हो। (देखो, षट्खडागम, अमरावती १६३६ ई०) । नाममाला मे अकलक पूज्यपाद और द्विसधान काव्य का भी उल्लेख है।

देखो—जि० र० को०, पृ० २११
प्र० जै० सा०, पृ० ६१०
रा० सू० II, पृ० २३२
रा० सू० III, पृ० २६७,३३३,३४१,३०
आ० सू०, पृ० १८८

412 नाममाला मूल (धनञ्जय निघण्टु)

Opening : तन्नमामि पर ज्योति . ॥
Closing : प्रमाणमकलकस्य पूज्यपादस्य लक्षणम् ।
द्वि सधानकवे काव्य रत्नत्रयमपश्चिमम् ॥२०॥
कवेधनजयस्येद सत्कवीना शिरोमणे।
प्रमाण नाममालेति श्लोकाना च शतद्वयम् ॥२०२॥
ब्रह्माण समुपेत्य वेदनिनदव्याजात्तुषाचराचल-
स्थानस्थावरमीश्वरं सुर-नदीव्याजात्तथा केशवम् ।
अप्यंभोनिधिशायिनं जलनिधिध्वानोपदेशादहो,
फूत्कुर्वन्ति धनंजयेन च भिया शब्दा समुत्पीडिता ॥२०३॥

413 नाममाला मूल

Opening : देखें क्रमाक ४१२ तथा सदर्भ के लिए क्रमांक ४११ ।
Closing : देखें क्रमाक ४१२ तथा सन्दर्भ के लिए क्रमाक ४११ ।

413 A नाममाला

Opening देखें क्रमांक ४११ ।
Colophon : जेठ सुदी ६ शुक दिन स० १५०३ को गुटका लिखा गया था पर नाममाला के बाद के पत्र ३८ पर स० १७४२ में कुछ लिखा गया, जो पढ़ा नहीं जाता। लिपिप्रशस्ति 'चौबीस ठाणा' में पढ़ो।

414 नाममाला सटीक

Opening : देखें क्रमांक ४११ और ४१२

Closing : श्रीपूज्यपादमकलंकमनंतबोधं विद्यादिनंदिनमिनं च समन्तभद्रम् ।
कल्याणकीर्तिममलं प्रणिपत्य वीरं भाष्यं करोमि परमं बुधबुद्धि-
सिध्यै ॥१॥

सरस्वत्याः प्रसादेन रच्यतेऽमरकीर्तिना ।
भाष्यं धनंजयस्येदं बालानां धीविवृद्धये ॥२॥

Colophon श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीकुमुदचन्द्र, तत्पट्टे श्रीधर्मचन्द्रस्योपदेशात् कायंरजकपुरवास्तव्य बघेर-वाल जाति पठवलीयागोत्रे सा० द दासा, सुतसा० जिणासा, भार्या तोपरी, तयो सुतौ सा० सोनी द्वितीय सा० रूदा एते स्वज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं भ० श्रीरामकीर्ति, तत्पट्टे भ० श्रीपद्मनंदि, तच्छिष्याय ब्रह्मचारी गोविन्दाय, धनजयनाममालाया टीकापुस्तकम् दत्तम् ।

Colophon लिपिकाल—चैत्रसुदी स० १७०६ ।

415 शब्दसन्दोह-संग्रह

Opening : व्याबाहृत कृतंकार्यं ''कुर्वेऽनेकार्थसंग्रह ॥१॥

Closing : महहेत्युद्भूते ' मन्त्रणयोरपि ॥६०॥

विशेष : ग्रन्थ संख्या १६०० श्लोकप्रमाण। यह अभिधानचिंतामणि का पूरक भाग है।

देखो—जि० र० को, पृ० ३७४,१० (अनेकार्थसंग्रह)
रा० सू० III, पृ० २३२
रा० सू० II, पृ० २६५
मा० सू०, पृ० ५

416 तकारादिश्लोक-व्याख्या

Opening : ता तां ता ती तो ' ' 'तु तोतां ॥
अस्य श्लोकस्य व्याख्या—हे तात्, हे पिता ! ... ..

Closing : अति ता आधिक्यं यस्यां सा तथा त

Colophon : लिखत श्यामलाल मथुराजीमध्ये मृगुसिरवदि ६ मृगवासरे सं० १८११ ।

417 भद्रबाहुसंहिता

Opening : नत्वा सर्वज्ञजिनं'' '''''''पूर्वाचार्यशासनक्रमत ॥१॥

Closing : इत्थं स भाविपुरुष '''''नियतायामपि वृत्तिमेषाम् ॥३६॥

Colophon : जगन्नाथ चौबे इन्दौर शहर मध्ये तुकुगंज उदासीन आश्रम मार्फत श्री गोधा पन्नालाल के कहे से लिखा मार्ग शीर्ष वदि ८ सं० १९९० ।

418 बृहज्जातक (२६ अध्याय)

Opening : मूर्तित्वे परिकल्पित शशिभृतो वर्त्मा पुनर्जन्मना
Closing : दिनकरमुनिगुरुचरणप्रतिपातकृतप्रसादमतिनेदम्

419 बृहज्जातक-विवृत्ति

Opening : ब्रह्माजशंकररवीन्दु विवृणोमि कृत्स्नम् ॥१॥
Closing : क्रूरैर्गु हैरित्यादि (पत्र २४ पर)
Colophon : इति भट्टोत्पलविरचितायां बृहज्जातकविवृतौ राशिभेद प्रथमोध्याय समाप्त ।

देखो—जि० र० को० पृ० २५८

420 हठ-प्रदीपिका

Opening : ॐ श्रीआदिनाथाय नमोस्तु तस्मै येनापदिष्टा हठयोगविद्या ।
विराजिते प्रोन्नतराजसौधमारुढमिच्छोराधे रोहिणीव ॥१॥
Closing : चित्तं स्थिर यस्य विना वलवात्सरा व योगी स गुरु प्रसेव्य ।

421 ज्योतिप्रकाश

Opening
प्रणम्य सम्यग्नाभेय पुरुषोत्तमीश्वरम् ।
जनैंतिथिपत्रस्य रचना वच्मि काचन ॥१॥
श्री हरिविजयसूरे साम्राज्ये तपोगणे ।
प्रवचनकनका कषोपल प्रोन्मील च शीलभूषणगणिन ।
करकमलसिद्धिभाजश्चारित्राचारदृढरुचये ॥४॥
तेषा कृपाकुशोगाभिरूप्यो विशेष्य विनयमति ।
कुरुते गुरुस्तेजोभिर्ज्योतिरिदम् स्पष्टमिह जैनम् ॥५॥

Closing :
श्रीमुक्तीलश्रावी तत्पुत्तपूज्य सूरिसूर्योऽपि हीर ।
कनक विमलशीलोन्मीलहृन्मतश्री कमलमधुरकीर्ति-
र्धाम' सिद्धि जन्मा तत्पुर्विदितकोतिश्चाह ।

422 लीलावती-सूत्र

Opening : प्रीतिभक्तिजनस्य गतता महनाम्नन्य ॥
Closing : सक्षिप्तमुक्तम् पृथुताभयेन नान्तोऽस्ति यस्माद्गुणितार्णवस्य ॥

देखो—रा० सू० II, पृ० २९१
रा० सू० III, पृ० २५७
जि० र० को०, पृ० ३३८
भा० सू०, पृ० १२३

423 लीलावती-सूत्र

Opening : देखें क्रमांक ४२२, सन्दर्भ के लिए भी।
Closing : देखें क्रमांक ४२२।

424 लीलावती-सूत्र

Opening देखें क्रमांक ४२२।
Closing : येषां सुजातिगुणवर्गविभूषतांगी सपदुपैतिवृद्धिम् ।।११।
Colophon : लिखत रामदयालुना चैत्र वदि २ शुक्रवार स० १८७२।

विशेष क्रमांक ४२२ और ४२३ की प्रतियो मे रचनाकार का उल्लेख नहीं है जबकि इस प्रति में रचनाकार भास्कराचाय का नाम मिलता है। प्रथम दोनों प्रतियाँ इससे मिलती हैं। अत भास्कराचाय ही इनके कर्त्ता हैं यह निश्चित किया जा सकता है।

425 लीलावती-टीका

Opening नत्वा रमापतिचण्डसरस्वतीना स्वमतित परिशोधयतु ।।१।।
Closing : अथेतरजातेषु च य जाताया (पत्र ४४) अपूर्ण प्रति

426 नवकार-आम्नाय

Opening : पचनामादिपदानां पचपरमेष्ठिमुद्रया। जपकृते समस्तक्षुद्रोपद्रवनाश ।।१।।
Closing : नित्य वार १०८ स्मर्यते लाभो भवति ।।४७।।

427 निमित्त

Opening : नमस्कृत्य जिनंवीरं सुरासुरनतक्रमम्।
यस्य ज्ञानांबुधे प्राप्य किंचिद्वक्ष्ये निमित्तकम् ।।
Closing : सर्वेषाम् नियतो वायु सतक्यों नियत ग्रहम्।
करणादिनिमित्त संयुक्तो विशेषेण शुभाशुभ ।।६५।।
Colophon : यह कृति सं० १०८९ में दुर्गदेव रचित 'रिष्टसमुच्चय' के लगभग १०० श्लोकों की अनुकृति है। मुख्तार सा० इसे जाली मानते हैं।
देखो—जि० र० को०, पृ० २१२, २११ (भद्रबाहुसंहिता)

428 पासाकेवली (शकुनावली)

Opening : ॐ नमो भगवती कूष्मांडनी ... ब्रूहि स्वाहा ।१।
Closing : अरे पुरुष थारो सो ... *मनखुस्याल शांति ।।

देखो—हिन्दीपासाकेवली

429 प्रस्तावसागर

Opening : न भूतपूर्वो न च केन दृष्टो ... विनाशकाले विपरीतबुद्धि ।१४।
वसुरध्रवाणचन्द्रे (१५०८) तीर्थे राजप्रयागे
तपसि वकुलपक्षे द्वादशी पूषयामे ।
शिखिनि तनु जुहाव सार्वभौमाधिपत्ये
सकलदुरित ब्रह्मचारी मुकुन्द ।।१५।।

Closing पल्लिवालेषु विप्रेषु निकु बग्रामवासिना ।
भागीरथेन विदुषा कृतोऽयं पद्यसग्रह ।।१२६।।

430 षटपचासिका सटीक

Opening : प्रणिपत्य रवि मूर्द्धना ... *पृथुयशसा ।।
Closing : शनिराहो म्लेच्छाधिपौ इति जानितिदेश ।।
Colophon गुरुप्रसादातिनि लिखत शभूनाथ ब्राह्मण सरस्वति लखण पाण गुरुसगति का माघ सुदी १२ भौमदिने स० १७६६ ।

431 षटपचासिका सटिप्पण

Opening प्रणिपत्य रवि मूर्द्धना वराहमिहिरात्मजेन प्रथुयशसा ।
प्रश्ने कृतार्थगहना परार्थमुद्दिश्य सद्यशसा ।।
Closing : सोम्ययुतोर्थे सोम्यो सदृष्ट चाष्टमक्षीस्य ।
सद्यश्च तस्माद्दृशादन्य स वाच्य पिता तस्य ।।३।।
Colophon : इति षट्पचासिकाया सामान्याध्याय सप्तम । इति षटपचासिकाया सप्तस्याँ ... माघवदी ११ स० १६५८ शुक्रवार ।

देखो—जि० र० को०, पृ० ४०१

432 सिद्धखेती (खेटसिद्धी)

विशेष सभी पत्रो पर चाट व नकशे बने हैं। पत्र ३1 पर स० ११४६ लिखा है।

433 शीघ्रप्रबोध

Opening भासयन्त जगद्भासा तत्त्वभासतमव्ययम् ।
क्रियते काशिनाथेन शीघ्रप्रबोधाय सग्रह ।।

Closing पौषे तु ग्रामहानि स्यात् माघे मेघाविवर्द्धनम् ।
फाल्गुने सर्वसौभाग्यमाचार्येण प्रकीर्तितम् ॥

434 स्वप्नफल

Opening नद उवाच केन स्वप्नेन किं पुण्य तत्सर्वं कथय प्रभो ॥१॥

Colophon इति ब्रह्मवैवर्ते महापुराणे स्वप्नदर्शनं समाप्तम् ।

435 वाराही-संहिता सटीक

Opening यस्योदयास्तसमये सुरमुकुटनिघृष्टचरण ॥

Closing आचार्यप्रवरस्य बोधजलधे पार तितीर्षुजनो
व्यामुह्य नाभिधेयरत्ननिचयाकातुरो भ्राम्यति ।
इत्येव विधमाकलय्य करुणामालव्य भट्टोत्पल-
श्चक्रे तत्कृतिसहिताविवरणो स्थेय प्लव कीर्तये ॥

Colophon यदत्राधिक सूत वा भ्रात्या त्वज्ञानतोऽपि वा ।
फाल्गुनस्य द्वितीया तु मसितायां गुरोर्दिने ॥
वस्वाष्टाष्टमिते ८८८ शाके कृतेय विवृतिर्मया ।
वराहमिहिराचार्यरचिते संहिताण वे ॥
अर्थिनामुत्पलश्चक्रे स्वाप्तये विवृतिप्लवम् ।
सागरवेदमुनींदुमि (१७४४) सहिते संवत्सरे शस्ते ।
नवगगनरसशशिभिर्मिते शाके च तपसिमासे ज्येष्ठ ।
शासति धरणिवलयमवरंगशाहिभूपाले
दृष्ट्वादर्शान्विहलान्सम्यग्सं-शोध्य वाराही ।
व्यलिखत्प्रद्युम्नमिश्रो धीमान्काश्मीरदेशीय ।
सावत्सरि कविपद्विन्मिश्रस्य परीक्षणार्थमिमा ।

टीकाकाल—फागुन बदी २ स १०२३ शाके ८८८ गुरौ ।
लिपिकाल-ज्येष्ठ सं० १७४४

436 विवेकविलास (१२ अध्याय)

Opening शाश्वतानन्दरूपाय तमःस्तोमैकभास्वते ।
सर्वज्ञाय नमस्तस्मै कस्मैचित्परमात्मने ॥१॥

Closing : स श्रेष्ठः पुरुषाग्रणी स सुभटो (?)······
निर्मोहः समुपार्जयत्यथ पदं लोकोत्तरं शाश्वतं ।१२।

देखो—जि० र० को०, पृ० ३५१ II
रा० सू० II, पृ० २८६

437 यंत्रमंत्रसंग्रह

Opening वश्यं जनानां सर्वेषां विधेयत्वमुदाहृतम् ।
वापीदेवता चन्द्रश्च सूर्यपत्रताम्रदूर्वाजैरिकम् ॥

Closing सौभाग्यम् भूतिमिच्छता । इति महालक्ष्मीमन्त्रोऽयम् ।

438 यंत्रसंग्रह

Opening ये यत्र प्रणव यत्र गोरोचन कु कुमकसाठी ।

Closing राजद्वारे पगडी में रख कर जावे ।

विशेष कृति मे चौकोर नक्शे बने हैं ।

439 कालज्ञानम् (अध्याय)

Opening कालज्ञान कलायुक्त शंभुना यच्च भाषितम् ।
येन षण्मासन पूर्वम् मृत्युर्ज्ञायेत् रोगिणाम् ॥

Closing मुस्ताग्ल च गुडपी च नागरिक च कारिका ।
कणाचूर्णसम क्वाथ दोषज्वरविनाशनम् ॥३९॥

Colophon लिखापित लक्ष्मणेन स्वात्महेतवे हाथरसमध्ये भादो वदि ६ शनि वार स० १८९५ ।

440 माधवनिदान सटिप्पण

Opening प्रणम्य जगदुत्पत्ति …त्रैलोक्यशरण शिवम् ॥

Closing सवमेकीकृतमत्र … मात्यमातकसतति ॥

441 माधवनिदान

Opening देखे क्रमाक ४४०

Closing १३०१ विगतक्लम सतार्य व्यथ विमलेन्द्रिय युक्त (अपूर्ण)

442 माधवनिदान

Opening देखें क्रमाक ४४०

Closing देखें क्रमांक ४४०

ग्र थ सख्या ६४५०

Colophon लिपिकाल आषाढ़ सुदी १३ सं० १७९० ।

443 मृत्युपरिज्ञान

Opening , अरिष्टानि शृणु महाराज शृणु वक्ष्यामि तानि तु ।
येषामालोकान्मृत्यु मित्र जानाति योगवित् ॥

Closing   सरक्तमूत्रनिभं कृत्स्नं वातपित्तस्य लक्षणम् ।
नीलां चास्थिमतं वाति कृष्णे च म्रियते ध्रुवम् ॥७३॥

Colophon :   भूतेषुत्रषिसोमाब्दे (१७५१) ज्येष्ठमासे शुभे दिने ।
जीवस्य शुक्ल सप्तम्यां अलेखीच च मोहनी ॥
लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला ७ स० १७५१ ।

444 मूत्रपरिज्ञान

Opening :   देखें क्रमांक ४४३, सम्वत के लिए भी ।
Closing :   देखें क्रमांक ४४३, सम्वत के लिए भी ।

445 शतश्लोकी

Opening :   भैषज्यद्विजतारकाधिपतेरप्येति क्षयेश
क्षयक्षीणांग शरण शरण्यागतानां गुण्यं यमतिष्ठिते ।
तदेव तरणि प्रणम्य मनसा सौख्याय कुर्म शत
श्लोकी षोडशोक्त चूर्ण गुटिका लेहाज्यतैलादिकाम् ॥१॥

Closing :   तत्रामीषुधनेश केशवविधौ वंशो वरिष्टो क्रमा-
द्वक्तो शिष्य सुतस्तयो कृतिमिमामिति श्रीवोपदेव कवि ॥

Colophon   लिखतं मिश्रभगवानदत्तेन भादो सुदी ५ स० १८९७ भौमवासरे लिखापितं ला० गिरधारी लाल जी ।

विशेष   प्रति में ग्रन्थ का नामोल्लेख नहीं है पर रा० सू० II पृ० २६६ पर इस रचनाकार की कृति का नाम 'शतश्लोकवैद्यक' लिखा है। आदि श्लोक के 'श्लोकी' पद से भी इसका संकेत मिलता है।

देखो—जि० र० को० पृ० ३७१

446 स्वर्णाकर्षण-पद्धति

Opening   मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सर्वसिद्धकर परम् ।
प्रणवं पूर्वमुच्चार्य वाग्भव तदनन्तरम् ॥१॥

Closing :   पठित्वा कवच योऽप्यन्तं स जीवात् सुखेन यथासुख विहरेत् ।

Colophon :   इति भैरवयामले उमामहेश्वरसंवादे स्वर्णाकर्षणभैरवपद्धति समाप्ता ।

447 वैद्यजीवन सटिप्पण

Opening   प्रकृतिसुभगकान्ते प्रीतिमार्यं रमाया
दिशतु किमपि धाम श्यामलं मंगलं वः ।

Closing ,   मायुर्वेदविदो विचारचतुरो धन्वन्तरि वैद्यकम्

समाज्ञानविदां दिवाकरसुधांशोमि त्रियामापति ।
उत्त''''''कविता कुतोमितिमतां भूभृत्सभाभूषण
कविता कृता वैद्यजीवनमिदम् लोलिंबराज कवि ।२।

Colophon — लिपिकाल—श्रावण १० च वार (संभवत चन्द्रवार) स० १८६५ ।

देखो—रा० सू० III, पृ० २४७
रा० सू० II, पृ० ३४

448 वैद्यक ग्रन्थ ?

Opening — पारदामृतलवंगगधकभाग जुग्म मोरचेनमे
श्वेत अत्र जातिक्रममर्द्धं भाग तं चिति च फलरसेन
मर्दीत सेव्यता सकलरोगन्नाशनं । रा वाण गुटिका रसापान ।

Closing — अमिपीला वत मान विनय हृदुष सहो न जाय ।
मानस हृत मरवो भलो जो विष दैन बुलाय ।३९।

विशेष — ग्रन्थ और ग्रन्थकार का नामोल्लेख नही है । श्लोक सख्या ३७ एव ३८ हिन्दी मे हैं । बाकी सब सस्कृत में हैं ।

449 योगशत

Opening : कृत्स्नस्य तन्त्रस्य गृहीतधाम्नाश्चिकित्सेताद्विप्रसृतस्य दूरम् ।
विदग्धवैद्यप्रतिपूजितस्य करिष्यते योगशतस्य बंध' ॥

Closing : गुणाधिकं योगशतस्य बंध प्राप्त मया पुण्यमनुत्तम यत् ।
नानाप्रकारमपनीरभूत कृत्स्न च जतेन भवत्यरोगम् ।३।

Colophon — लिखापित प० गिरधारीलालजी श्रावक लिखत गुलजारीमल श्रावक पालमग्राममध्ये वैसाखसुदी १३ स० १९०६ ।

विशेष — पूरनसेन की टीका के अनुसार इसके कर्त्ता 'वररुचि' हैं ।

देखो—जि० र० को०, पृ० ३१३ I

450 अकलंकाष्टक

Opening : त्रैकाल्य सकलं' '' 'मया वक्ष्यते ॥१॥

Closing : सा तारा खलु'''' 'संताडिते ततस्तत' ॥१६॥

451 अकलंकस्तोत्र

Opening : देखें क्रमांक ४५०

Closing : देखें क्रमांक ४५०

Colophon : देखें क्रमांक २८१

452 अकलंकस्तोत्र टीका (हिन्दी)

Closing — सं० उगणीसै बरपनरा श्रावण शुक्ला तीज शनिउजरा।
लिखि सदा सुख निजहितु काज, आप्तज्ञानकू होऊ जहाज।

विशेष — लिपिकाल—कार्तिक सुदी २ चन्द्रवार सं० १६१८।

453 अम्बिकाकल्प (७ अध्याय)

Opening : वदेऽहम् वीरसनाथ शुभचन्द्र जगत्पतिम्।
येनाप्येत महामुक्तिवधूस्त्रीहस्तपालनम्॥

Closing — नाम्नाधिकार प्रथितोऽयम यन्त्रसाधनकमण।
समाप्त एष मत्रोऽयम पूर्णी कुर्यात् शुभवन॥

विशेष : जिनदत्त के आग्रह पर यह ग्रन्थ लिखा गया था।

देखो—जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० १७०
जि० र० को०, पृ० १५ (अंबिका स्तोत्र)

454 अपराध-क्षमा-स्तोत्र

Opening — श्रेय श्रियां मगलकेलिसद्म नरेन्द्रदेवेन्द्रननाभिरय।
सर्वज्ञसर्वातिशयप्रधान चिर जयतु ज्ञानकलानिधानम्॥१॥

Closing : किंत्वर्हन्निदमेवकेवलमहो सद्बोधिरत्न शिव
श्रीरत्नाकरमगलैकनिलय श्रेयस्कर प्रार्थये॥२४॥

455 भैरवपद्मावतीकल्प १० अध्याय (पद्मावतीकल्प)

Opening — श्रीमच्चातुर्णिकायाम् वक्ष्यते बधुसेनै।

Closing — पार्श्वं पर्वते गधमादने तस्य पर्वतस्य प्राग्दिग्नागेकुमारी सपूर्णलक्ष।

विशेष — पत्र संख्या २ की छठी पंक्ति तथा ७२ की अंतिम पक्ति मे ग्रन्थकार का नामोल्लेख है।

देखो—जै० ग्र० प्र० सं० I, पृ० १४६
जि० र० को०, पृ० २३५, २६६
प्र० जै० सा०, पृ० १६७
रा० सू० II, पृ० ४०

456 भैरवपद्मावतीकल्प मूल

Opening — कमठोपसर्गदलनं • • • • ••भैरवपद्मावतीकल्पम्॥

Closing पद्मावली स्तोत्रमिद सर्वार्थकामांश्च सदा लभत् ॥
सन्दर्भ के लिए क्रमाक ४५५ देखें।

457 भक्तामर-स्तोत्र मूल

Opening भक्तामरप्रणतिमौलि जनानाम् ॥
Closing स्तोत्रस्रज समुपैति लक्ष्मी ॥४८॥

देखो —जि० र० को०, पृ० २८७
प्रा० सू०, पृ० १०६
रा० सू० II, पृ० ४६,८२
रा० सू० III, पृ० ३५,११,१०५
प्र० ज० सा० पृ० ११०

458 भक्तामर-स्तोत्र मूल

458 देखे क्रमाक ४५७ सन्दर्भ के लिए भी।

कोठारी माणिकचद जी वाचनार्थं श्री वासवालानगरे प० प्रेमचन्द्र लिपिकृतम।

459 देखे क्रमाक ४५७, सन्दर्भ के लिए भी।

460-68 देख क्रमांक ४५७

469 भक्तामर स्तोत्र मूल

Opening भक्तामर पतितां जनानाम ॥
Closing नववाणखेटकुमिते (१९५९) च शरदि धवलीयमाधके।
हस्तगुणितशरके लिखति स्म च वै तिथौ शनिदिने मुनाणव ॥
ललितेश्वरस्य कृपया समरचिगणितस्य चन्द्रिका।
यो भटिति च हमीरहरेर्निकटे छजुजि विबुधपराजित ॥२॥

विशेष लिपिकाल —माघ सुदी १० शनिवार स० १९५९।

460 भक्तामर-स्तोत्र मूल

470-472 देखें क्रमाक ४५७

473 देखे क्रमाक ४५७, प्रशास्ति के लिए क्रमाक २९०

474 देखें क्रमाक ४५७ तथा प्रशस्ति के लिए क्रमांक २९१

475 देखे क्रमाक ४५७ तथा प्रशस्ति के लिए क्रमांक २९२

476 देखे क्रमाक ४५७

477 देखें क्रमांक ४५७ तथा प्रशस्ति के लिए क्रमांक २६४

478 देखें क्रमांक ४५७ तथा प्रशस्ति के लिए क्रमांक २६७

479 देखें क्रमांक ४५७

480 देखें क्रमांक ४५७ तथा प्रशस्ति के लिए क्रमांक २६६

481 देखें क्रमांक ४५७ तथा प्रशस्ति के लिए क्रमांक ३००

482 देखें क्रमांक ४५७

483 भक्तामर-स्तोत्र मूल (मंत्र सहित)

Closing — देखें क्रमांक ४५७

Colophon — लिपिकाल कार्तिक वदी ११ स० १६६८ आगरानगरमध्ये युगप्रधान भ० श्री जिनदत्तसूरिविजयराज्ये बहुरामोपे सुश्रावक साह [illegible]दास स्वपठनाय लिपिकृतम् ।

484 भक्तामर-स्तोत्र

Opening — देखें क्रमांक ४५७

Closing — ५२ वाँ पद्य है।

Colophon — जेठ शुक्ला १५ स० १९४८ लिखत चंपालाल।

विशेष — अन्य प्रतियों मे प्राय ४४ या ४८ पद्य पाये जाते हैं जबकि इस प्रति ५२ पद्य हैं। वैसे ५४ पद्य भी मिले हैं जिनका डा० याकोबी ने जर्मन भाषा मे अनुवाद किया है।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १६०
जि० र० को०, पृ० २८७
भा० सू०, पृ० १०५
रा० सू० II, पृ० ४६,८२,६५
रा० सू० III, पृ० ११,१०५

485 भक्तामर-स्तोत्र टीका

Opening — देखें क्रमांक ४५७

Closing — भक्तामर टीका सदा पढ़े सुनै जो कोई।
हेमराजशिवसुख लहै तिस मन वंछित होई।

Colophon : लिखतं [illegible] श्रावक पाणीपथी [illegible] [illegible] का पुत्र [illegible] गोत्र शाहजहानाबाद माह [illegible] २ सं० १८४२ में लिखि।

486 भक्तामर स्तोत्र सटीक (ऋद्धिमंत्रसहित)

Opening ॐ ह्री श्री ऋषभनाथाय गोमुखचक्र श्वरीसहिताय अतुलबलपराक्रम मम मनोवाञ्छित पूरय

Closing उनणीस शत विक्रम को सैंतालीस कहावत है
छट्ट तिथि वैसाख कृष्ण की दिन भृगुवार सुहावत है।
नग्र सिकद्राबाद बसया सीता लिखे लिखावत है।
मेरठ मे स्तोत्र लिखो यह सज्जन धम पुकारत है।

विशेष लिपिकाल—वैसाख वदी ६ स० १६४७ भृगुवार। प्रारभ मे पद्यानुक्रमिका है।

487 भक्तामर-स्तोत्र-वृत्ति

Opening : श्रीवद्धमान प्रणपत्य यत्कथित क्रमेण ॥
Closing : वर्णिन कमसी नाम्न रायमल्लेन वर्णिता ।९।

विशेष टीकाकाल—आषाढ सुदी ५ बुध स० १६६७।
लिपिकाल भादो सुदी ५ रवि स० १९२५।

देखो—ज० ग्र० प्र० स० I, पृ० १००
कस्तूरचद प्रशस्ति सग्रह, पृ० ४३
प्र० ज० सा०, पृ० १९०
आ० सू० पृ० १०६
रा० सू० II, पृ० ३,१५०,३०१
रा० सू० III, पृ० १६६
जि० र० को०, पृ० २८८ (६)

488 भक्तामर-स्तोत्र कथा सहित

देखे क्रमाक ४८७, सन्दभ के लिए भी।

Colophon लिखत ज्योतिषी खुशालचदेन आषाढ वदी ८ सं० १७९२ चन्द्रवार।

489 भक्तामर टीका

Opening त्य पादाबुज नत्वा ज्ञानिनोद्‌गत तेजस.। पापकूटा बिली ॥

Closing : पचभूमुनिचन्द्राब्दे पौसे मासस्यामले तथा पक्षे दसम्या श्री जोधराज बुधै विनिर्मिता।

Colophon : पोथी जोधराज की छै। इह पोथी का पत्र २५ अकै २५ इह भक्तामर की टीका छै। इह पोथी मेलासाह के आंबेर के देहुरे चढाई छै। जोध-

राज मोविर्के लिखायकार। ताके इह पोथी सा मेला बोहित योधा के देहुरे की है। जेठ सुदी १३ सं० १७२६ को चढ़ाई छै।

विशेष रचनाकाल—पौष सुदी १० स० १७१५ (पचभूमुनिचन्द्राब्दे ...)

490 भक्तामर स्तोत्र सटीक

देखें क्रमाक ४५७

491 भक्तामर-स्तोत्र सटीक

देखे क्रमाक ४५७

Colophon लिखी तुलाराम बहुरनमल के बेटा ज्ञाति पदमावत पुरवार काष्टासिंगी भादो सुदी ६ गुरुवार स० १७८५।

यह प्रति क्रमाक ४८८ ही जैसी है। ४४ पद्य हैं।

492 भक्तिपाठ श्लोक

गुटका २६ के पत्र१६ पर देखें।

493 भक्ति श्लोक

गुटका २८ के पत्र २४ पर देखे ।

494 भावना बत्तीसी

गुटका २६ के पत्र ७५ पर देखे।

495 भूपालचतुर्विंशतिका

Opening श्रीलीलायतन महीकुलगृह कीर्तिप्रमोदास्पदम्
वाग्देवीरतिकेतन जयरमाक्रीडानिधान महत ।
स स्यात् सवमहोत्सवैकभवन य प्रार्थितार्थप्रद
प्रात पश्यति कल्पपादपदलच्छाय जिनाङ्घ्रिद्वयम् ।।१।।

Closing दृष्टस्त्व जिनराजचद्रविलसद्भूपेन्द्रनेत्रोत्पले
स्नान त्वन्नुतिचद्रिकाभसि भवद्विद्वच्चकोरोत्सवे ।
नीतस्त्वाघनिदाघज क्लमभर शांतिमया गम्यते,
देव त्वद्गतचेतसैव भवतो भूयात्पुनर्दर्शनम् ।।२६।।
उपशम इव मूर्तिच्वलित चन्द्रान्मुनीन्द्रदजनि विजयचन्द्र
सच्चकोरैकचन्द्र जगदमृतसगर्भा शास्त्रसदर्भगर्भा ।
शुचि चरितचरिष्णोर्यस्य धन्वति वाच ।

देखो—जि० र० को०, २६८ कर्ता पैजयादि ।
रा० सू० III, पृ० १०६, २४२,२७८ कर्ता भूपालकवि

पूर्णे पूर्णे फलाप्त्यै जिनेन्द्रभक्ति भवे भवे।
यावत् आमुक्ति मे स्याफला तथाध्ययनं च पुण्यं ।१।
कृतालंकृति तर्कापि शब्दविद्यादि चातुरी ।
तद्भक्तिफलमेतन्न ज्ञाने ज्ञात्वा सुबुद्धित ।८।

देखो—जि० र० को०, पृ० १४ II
भट्टारक सम्प्रदाय, पृ० १११

510 चतुर्विंशतिजिनस्तवन

Opening : सिद्धिप्रिय प्रतिदिन प्रतिभासमानै वितनु भूपदवीक्षणेन ।।१।।
Closing : भव्यानंदकरेण येन महता तात शतामीशित ।।२५।।

देखो—जि० र० को०, पृ० ११४ XIV

511 चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र

Opening स्तुवेहं जगतामीश सर्वदेवशिरोमणिम् ।।१।।
Closing जयति श्रीमहावीरो मोक्षमार्गमसाधयत ।।२४।।
विशेष अन्त मे घण्टाकर्ण स्तोत्र के ४ श्लोक हैं।

512 चतुर्विंशतिजिनस्तुति

Closing वंदे तान्नमरप्रवेशकमुकुट भासूकरारैजिरं ।।
Opening माला यो विधत्ते स्वकण्ठ प्रियपतिरमा श्रीमोक्षलक्ष्मीवधूना ।।१५।।

513-514 चतुर्विंशतिजिनस्तुति (चतुर्विंशति तीर्थंकर जयमाला)

Opening देखे क्रमांक ५१२
Closing अनुगुणनिबद्धामहतां माघनंदि व्रतिरचित सुवर्णानेक ।

515 चतुर्विंशतिसधानकाव्य सटीक

Opening : श्रेयान् श्रीवासुपूज्यो जगन्नाथधीरम् ।।
Closing : पद्मोऽस्मिन् जगन्नाथत ।।
विशेष टीका व रचनाकाल—वैसाखसुदी ५ रवौ सं० १६६६ ।

देखो—जै० ग्र० प्र० सं० I, पृ० ७८
प्र० जै० सा०, पृ० १२०
जि० र० को०, पृ० ११४ (VII)

516 चतुर्विंशतिसंधानकाव्य सटीक

Opening देखे क्रमाक ५०१, सन्दर्भ के लिए भी।
Colophon : कार्तिकबदी १४ सं० १९८० लेखक बालकृष्ण जैन।

517 चतुर्विंशतितीर्थंकर-नामावली

देखें गुटका क्रमाक १९ पत्र 11

518 चतुर्विंशतितीर्थंकर-नामावली

देखें गुटका क्रमाक २० पत्र २

519 चिन्तामणिपार्श्वनाथस्तवन (लक्ष्मीस्तोत्र)

Opening लक्ष्मी महास्तुल्य ।
Closing श्रीपदमप्रभदेवनिर्मितमिद स्तोत्र जगन्मगलम् ।९।

520 चिन्तामणिपार्श्वनाथस्तवन

Opening अजरअमरपार नौम्यहं पार्श्वनाथम् ॥१॥
Closing मदनमदहरश्रीवीरसेनस्य शिष्य
सुभगवचनपूरं राजसेन प्रतीतं ।
पठति जयति नित्य पार्श्वनाथाष्टक य
स भवति शिवसौख्य मुक्तिसीमंतनीश ॥१॥

521 चिन्तामणिपार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening देवेन्द्रनागेन्द्रनरेन्द्रमाला पार्श्वनाथम् ॥
Closing : इतिनागेन्द्रनरामरवंदित पादांबुजधरवरतेजा।
देवकुलवाटकस्थ स जयति चिन्तामणिपार्श्वम् ।७।

522 चिंतामणिस्तवन

विशेष गुटका क० १४ पत्र १९५ पर देखो। 'पुस्तटिका लिखतं ब्रह्मचय श्रीपति की पोथि।' गुटका से पत्र संख्या गलत लिखी हुई है। अन्तिम पत्रो में कुछ हिसाब-किताब (बहीखाता) सा लिखा है जिसमे सं० १७७७, १७९४, १७९६, १८०० की टीपें लिखी हैं। ये सभी बाजार भाव की चिट्ठियां हैं। यह राजस्थानी परम्परा के अनुसार विजयादशमी के उपलक्ष्य में लिखा जाता है। "उत्तर का नीर पश्चिम का घोडा " " " इत्यादि छंद भी लिखा है।

523 दर्शनपाठ

देखे सस्कृत गुटका क १०

524 दर्शनस्तोत्र

दखे सस्कृत गुटका क ६

525 देवभक्ति

देखे सस्कृत गुटका क ७ तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६० ।

526 देववसन

देखे सं० गुट का २३, प्रशस्ति के लिए देख क्रमाक २६४ ।

527 देवागमस्तोत्र मूल (आप्तमीमांसा)

Opening देवागमनभोयान वो महान ॥१॥

Closing इतीयमाप्तमीसासा विहिताहित मिच्छताम ।
सम्यग्मिथ्योपदेशार्थं विशेष प्रतिपत्तये ॥११॥

इसमे गधहस्ति महाभाष्य का उल्लेख मिलता है ।

देखो—जि० र० को०, पृ० १७८
रा० सू० II, पृ० १३,१२३, १६६ ३५६ ३६६,३८४
रा० सू० III पृ० ४७ २४०
प्र० ज० सा०, पृ० १०४ (आप्तमीमासा)

528-30 देवागमस्तोत्र (आप्तमीमांसा)

Opening : देवागमनभो वो महान ॥

Closing यतिपति मुपासते ॥१४॥

531 चक्रेश्वरी स्तोत्र

देखे सस्कत गुटका क० ४

532 एकीभावस्तोत्र सटीक

Opening एकीभाव गत इव मया तापहेतु ॥

Closing वादिराजमनुशाब्दिकलोको भव्यसहाय ॥

देखो—जि० र० को०, पृ० ६२ (III)
प्र० जै० सा०, पृ० ११०
मा०सू०, पृ० १६

रा० सू० II, पृ० ४६,१०७,११२,२६४,३३८,३४२,३४८,३५०,३६०
रा० सू० III, पृ० १०१,१२३,२३८,२७८,३०८

533 एकीभावस्तोत्र सटीक

देखें क्रमांक ५३२।
मेरठनगरे गिरधारीलालेन लिखित आषाढ़ सुदी ११ स० १८७२।

534 एकीभावस्तोत्र मूल

देखें क्रमांक ५३२।

535 एकीभावस्तोत्र मूल

Opening एकीभाव गत इव मया परस्तापहेतु ॥
Closing वादिराजमनुकाव्यकतस्ते वादिराजमनुभव्यसहाय ॥

एकीभावस्तोत्र मूल

536 देखें स० गुटका क्र० २८
सन्दर्भ के लिए क्रमाक ५३२ देखें।

537 देखे प० गुटका क्र० ३३, प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६६।

538 देखें गुटका क्र० ३७, सन्दर्भ के लिए क्रमाक ५३२।

539-43 देखे क्रमाक ५३२।

544 गुरुभक्ति (?)

Opening जाति जरोरूरोगमरणानुरशोकसहस्रदीपिता।
दु सहनरकपतनसत्रस्ता धिय प्रतिबद्धयेत् स ॥१॥
Closing पाणिपात्रपुटाहारा जे याति परमा गतिम् ॥१३॥

545 गुरुभक्ति (?)

Opening ये नित्य व्रतमत्रहोमनिरता ध्यानाग्नि होत्राकुला इत्यादि।
Closing पाणिपात्र पुटाहारा ते याति परमा गतिम् ।१०॥

546 गुर्वावली

Opening प्रणम्य वीर परमात्मसुन्दर गुणै पवित्र विशद स्वभावत।

अहम् गुरुणी वर नाम पद्धति परा प्रवक्ष्यामि विमुक्तहेतवे ॥१॥

Closing धृतचरणविशेष सत्यबोधो विशेष
जयति च गुणभद्र सूरिरानद भूरि ॥३३॥
इति गुरवावली समाप्ता ।

विशेष अ त मे चार पांच श्लोक और भी है जो बगल मे लिखे हुए है ।

547 (?)

Opening भव्यो सम्प्रनि लब्धकालकरणप्रायोग्य लब्ध्यादिक

Closing कम्म वालूय वग्गपुव्व तस्सबधच्चियाण एहू ॥६॥

विशेष अज्ञात रचना है । शीषक का उल्लेख नही है ।

548 जिनचैत्यवन्दना

Opening सद भक्त्या देवलोके रविशशिभुवने व्यतराणा निकाये

Closing : काय सिद्धान्त हेतुस्तथैव प्रणमन्त चित्तमाणदकारी ॥६॥

549 जिनचतुर्विंशति स्तोत्र

Colophon : वंदे तानमर पूरान्विता ॥१॥

Closing अननुगुण लक्ष्मीवधूनाम् ॥

स दभ के लिए क्रमाक ५१२ से ५१४ देखें ।

550 जिनदर्शनपाठ

Opening : दर्शन देवदेवस्य मोक्षसाधनम् ॥

Closing : ससारवारिविरय चुलकप्रमाणम् ॥

551 जिनदर्शनपाठ

Opening : अर्हद्वक्त्रप्रसूत गणधररचित द्वादशाग विशालम ॥१॥
चित्र बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्द्धारित बुद्धिमद्भि ।१।

Closing अट्ठाईदीवथो सामित्यादि सिद्धासिद्धि मम दिसंतु ।५॥

552 जिनदर्शनपाठम्

Opening : देखे क्रमाक ५५१

Closing जन्ममृत्युजरापाप' जिनदर्शनात् ॥३॥

553 जिनदर्शनपाठ

Opening देखे क्रमाक ५५१, ५५२

Closing : अद्य मे सफल " दर्शनादिमे प्रभो ॥४॥

554 जिनदर्शनपाठ

देखें क्रमांक ५५१

555 जिनदर्शनपाठ

देखे क्रमाक ५५१
तीनो चौबीसियो के नाम भी दिये हैं ।

556 जिनदर्शनस्तोत्र

देखे क्रमाक ५५१

557 जिनदर्शनस्तोत्र

देखे क्रमाक ५५१ से ५५५ तक

Colophon लिखतं छाजूरामेण इन्द्रप्रस्थे जैन पाठशालाया मघसिर शुक्ला १३ गुरौ १६४३ ।

विशेष साथ मे चौबीस तीर्थकर तथा विद्यमान बीसतीर्थंकरो के नाम हैं ।

558 जिनदर्शनस्तोत्र

देखे क्रमाक ५५१

559 जिनमगलाष्टक

Opening श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्र ते मगलम् ।१।
Closing इत्थ श्रीजिनमगलाष्टकमिदम् ते मगलम् ।१०।

560 जिनमगलाष्टक

देखे क्रमाक ५५६

561 जिनरक्षास्तोत्र

देखे सस्कृत गुटका क्रमाक ११

562 जिनसहस्रनामस्य मत्राणि

Opening ॐ ह्रीं श्रीमते नम
Closing ॐ ह्रीं समन्तभद्रायनम ॥१२॥

563 जिनसहस्रनामस्तोत्र मूल

Opening स्वयम्भुवे नमस्तुभ्यम् ... ...चिन्त्यवृत्तये ।
Closing स्तुवैति भवका सदैव ...प्रस्तावनामिमाम् ।६२।

देखो—जि० र० को०, पृ० १३८ VII
प्र० जै० सा०, पृ० १२६
आ० सू०, पृ० ६१
रा० सू० II, पृ० ४७,३६४,३७८,३८६
रा० सू० III, पृ० १०२,१०७,११६ २०४,२३६,३०१,३०३

564 जिनसहस्रनामस्तोत्र मूल

देखें क्रमाक ५६३, सन्दर्भ के लिए भी।

565 जिनसहस्रनामस्तोत्र मूल

Opening देखें क्रमाक ५६३

Closing वागटी जिनसेनेन जिननामानि सायकम् ॥
अष्टाधिकसहस्राणि सर्वाभीष्टकराणि च ॥

566 जिनसहस्रनामस्तोत्र मूल

Opening देखे क्रमाक ५६५ तथा शेष सन्दभ के लिए ५६३।

Colophon लिखित आषाढ सुदि ६ स १६४८।

567 जिनसहस्रनामस्तोत्र

Opening श्रीमान पुनर्भवम् ॥

Closing : वाग्भट्टीजिनसेनेन सर्वाभीष्टकराणि च ॥

Colophon लिपिकृत ला० गिरधारीलाल जी पठनाथ श्रावण सुदी बुधवार स० १८७० ।

568-78 जिनसहस्रनाम स्तोत्र मूल

देखें क्रमाक ५६५ तथा शेष सन्दभ के लिए क्रमाक ५६३।

579-82 जिनसहस्रनामस्तोत्र 'लघु' मूल

Opening नमस्त्रैलोक्यनाथाय सर्वज्ञाय महात्मने

Closing नामाष्टकसहस्राणा ये पठन्ति पुन पुन ।
ते निर्वाण पदं यान्तिनिश्चये नात्र सशय ॥

583 जिनसहस्रनामस्तोत्रस्य टीका

Opening : ध्यात्वा विद्यानन्दं समन्तभद्रं मुनीन्द्रमर्हन्तम् ।
श्रीमत्सहस्रनाम्नां विवरणमावच्मि सुसिद्धयै ॥

Closing अर्हन्त: सिद्धनाथस्त्रिविधिमुनिजना भारती चार्हतीह्या ।
संहंस कुंदकुंदो विबुधजनहुताशंहुन पूज्यपाद ।
विद्यानंदोऽकलंक कलिमलहरण श्रीसमंतादिभद्रो
भूयात्मे भद्रबाहुर्भवभयमथनो मगल गौतमादि ॥१॥
श्रीपद्मनंदिपरमात्पर पवित्रो

Colophon लिखित मिश्र हरिचंदस्य लिखायत सिघई लालमनि तत्पुत्र ला० भगवानदासस्य प० दयारामस्य पठनार्थं सिरोज (जि० भेलसा, म०प्र०) मध्ये चन्द्रप्रभुचैत्यालये सहस्रनाम भादो वदि ६ चन्द्रवासरे स० १८११

देखो—जि० र० को, पृ० १३८ III
रा० सू० II, प्र० २६७
रा० सू० III, पृ० १०२,२३६
प्रशस्ति सग्रह कासलीवाल पृ० १३
जै० प्र० प्र० स० I प्रस्तावना पृ० १७

584 जिनसहस्रनामस्तोत्रस्य टीका

देखे सस्कृत गुटका क्र० १०, पत्र १४६ ।

585 जिनसहस्रनामस्तोत्रस्य टीका

देखे सस्कृत गुटका क्र० २८, पत्र २१ ।

586 जिनसहस्रनामस्तोत्र

Opening : णमोकार मत्र

Closing एतेषामेकमप्यर्हन्नाम्नामुच्चारयन्नघै ।
मुच्यते किं पुन सर्वान्यर्थज्ञस्तु जिनायते ॥

देखो—जि० र० को, पृ०' ३८

587 जिनसहस्रनामस्तोत्र टीका

Opening क्रमाक ५८३ देखो ।

Closing : प्रस्ति स्वस्ति समस्तसंघतिलके ...टीका चिर नदतु ॥

588 जिनसहस्रनामस्तोत्र

Opening नत्वा श्रीजिनसेनाचार्यं विद्यानंद समतभद्रमर्हन्तम् ।
श्रीमत्सहस्रनाम्नो टीकामावच्मि सत्सिद्ध्यै ॥

Closing मल्लिभूषणशिष्येण भारत्यानदतेन च ।
सहस्रनामटीकेयं रचितामरकीर्तिना ॥१॥

इति श्रीमदमरकीर्तिसूरिविरचिता प० श्री विश्वसेनानुमोदिता सिंहाधिपति सुधा चदचद्रिका जिनसहस्रनाम टीका समाप्ता।

देखो—रा० सू० IV, पृ० ३९३
जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० १४५
" प्रस्तावना पृ० ७२

589 जिनसहस्रनामस्तोत्र

देखे क्रमाक ५८८

590 जिनसहस्रनाम (स्तुतिविद्या चित्रकाव्य स्टीक)

Opening श्रीमज्जिनपदाभ्यास प्रतिपद्यागसा जये।
कामस्थानप्रदानेश स्तुति विद्या प्रसाधये ।।
नमो वषभनाथाय लोकालोकविलोकिने।
मोहपकविशाखाय भासिने निनभानवे ।।

Closing गत्वैकस्तुतमेव वासमधुना ते मे जिना सुश्रिये ।।

विशेष टीका क प्रारभिक छह श्लोको मे लेखक और टीकाकार का नामोल्लेख है।

देखो—जि० र० को, पृ० १३७ III
प्र० जै० स० पृ० १२९
रा० सू० II, पृ० २९६,३५६

591 जिनस्तवन

Opening श्रीम पवित्रमकलक शरण प्रपद्ये ।।
Closing : मया दु कृत मुचे देवप्रसादत ।८।

592 जिनस्तवन

Opening देखे क्रमाक ५६१ तथा प्रशस्ति के लिए क्र० २९१

593 ज्ञानभक्ति

Opening सम्यग्ज्ञानानि सज्ञाश्रुतमवधिमन पययौ केवल च प्रागुक्ते तेषु ।।
Closing : पच्चक्खाणमणतरिय परोक्षमियर दुग वदे ।।६।।

594-95 ज्वालिनीस्तोत्र

देखे सस्कृत गुटका ४, पत्र ४ और १२

596 कलिकुण्डपार्श्वनाथ स्तोत्र

देखें सं० गुटका क्र० १०, पत्र २३३ पर।

596 A कलिकुण्डस्तवन

देखें सं० गुटका क्र० ८, पत्र ४ पर।

597 कल्याणमंदिरस्तोत्र

Opening कल्याणमंदिरमुदार ' जिनेश्वरस्य ॥१॥

Closing जननयनकुमुदचंद्रप्रभासुरा स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया अचिरान्मोक्ष प्रपद्यन्ते ॥

Colophon दसकत उदैचंद (उदयचंद या दयाचंद) लुहाडया का पठवा वास्ते लिखि वाचै जिहने स० भादों सुदी १३ स० १९६४

विशेष डा० जैकोबी द्वारा जर्मन भाषा मे इसका अनुवाद हुआ है।

देखो—जि० र० को, पृ० ८८
प्र० ज० स०, पृ० ११३
आ० सू०, पृ० २४
रा० सू० II, पृ० ४६,९७,१०९
रा० सू० III, पृ० १०१,११२

598-601 कल्याणमन्दिरस्तोत्रमूल

देखे क्र० ५९७

602 कल्याणमन्दिरस्तोत्र

देखें क्रमांक ५९७, संदर्भ के लिए भी।

लिखत श्रीवर्द्धनेन स १७३६। अन्त में गोरखनाथ मंत्र तथा हनुमंत्र भी हैं।

603-4 कल्याणमंदिरस्तोत्र मूल

देखें क्रमांक ५९७

605 कल्याणमंदिर स्तोत्र मूल

देखे क्रमांक ५९९ तथा संदर्भ के लिए क्रमाक २९०।

606 कल्याणमंदिर स्तोत्र मूल

देखें क्रमांक ५९७ तथा २०१

607 कल्याणमंदिरस्तोत्र मूल

देखें सं० गुटका १६ पत्र२० तथा सदर्भ के लिए क्रमाक ५६७

608 कल्याणमंदिरस्तोत्र मूल

देखे सस्कृत गुटका २७ पत्र ४८ तथा सदर्भ के लिए क्रमाक ५६७
एव प्रशस्ति के लिए २६७

609 कल्याणमंदिरस्तोत्र मूल

देखें सस्कृत गुटका २८ पत्र १०४ तथा सदर्भ के लिए क्रमांक ५६७
एव प्रशस्ति के लिए २६७

610 कल्याणमंदिरस्तोत्र मूल

देखे सस्कृत गुटका ३३ पत्र ५१ तथा सदभ के लिए क्रमाक ५६७
एव प्रशस्ति के लिए २६६

611 कल्याणमंदिरस्तोत्र मूल

देख सस्क्रन गुटका ३४ पत्र ५७ तथा सदभ के लिए क्रमाक ५६७
एवं प्रशस्ति के लिए क्रमाक ३००

612 कल्याणमंदिरस्तोत्र मूल

देखे सस्कृत गुटका ३७ पत्र ५ तथा स०भ के लिए क्रमांक ५६७ एव
प्रशस्ति के लिए क्रमाक ३००

613 कल्याणमंदिरस्तोत्र सटीक

देख क्रमाक ५६७, सदभ लिए भी।
सिघाणा मध्ये प० श्रीइमारतीचद तत्शिष्येण लिपीकृत कार्तिक सुदी ८ म० १६२५ गुरुवासरे।

614 कल्याणमंदिरस्तोत्र सटीक

देखें क्रमाक ५६७, सदभ के लिए भी।
लिखत महात्मा हीरानंद सवाईजयनगरे मध्ये स० १८७१

615 कल्याणमंदिरस्तोत्र सटीक

Opening : प्रणम्य पार्श्वमिष्टार्थं सार्थपूर्तिसुरद्रुमम्।
कल्याणमंदिरस्तोत्रं विवृणोमि यथामति॥

Closing श्रीमत्तपागणनभोगणपद्मबंधु-
र्योऽकब्बरमहीरमणादवाप्तो ।
ख्यातिं जगद्गुरुरिति प्रथितां दधान
श्रीहीरविजयाभिधसूरिरासीत् ॥
तत्पट्टे भ्वरगुणमणिगुणकोहणभूधरापीठे ।
सांप्रताद्भुतयशसो विजयते विजयसेनसूरिवरा ।२।
गीतिरियं वाचकचूडामणि श्रीमत शांतिचन्द्र नामान ।
विद्यागुरुविबुधा विजयता कमलविजयाश्च ॥

विशेष यह श्वेतांबर रचना है ।

देखो—जि० र० को, पृ० ८० II
शेष संदर्भ के लिए ५९७

616 कल्याणमंदिरस्तोत्र सटीक

देखें क्रमांक ६१५

Colophon एषा श्रीसुगुरुणा प्रसादतो नयनवाणरसचन्द्रे (१६५२)
प्रमिते वर्षे रचिता वृत्तिरियकनककुशलेन
पूज्यर्षिश्रीपूलिखूजी प्रसादात्सेवणमांडणर्षिण्मऽलिखत् चैत्र सुदी २
सं० १७५५

विशेष मुगलसम्राट अकबर के काल की रचना है ।

देखो क्रमांक ६१५

617 कल्याणमंदिरस्तोत्र सटीक

Opening तावदत्लगतस्तिमितिस्त्रिजगतीमुद्योतयन्त फणा· ·· ··।

Closing इतिवचनप्रामाण्यादाद्यवकुले एव पश्चात्त्वमासिक प्रतिक्रातव्यम् ॥

118-19 कल्याणमंदिरस्तोत्र मूल

देखें क्रमांक ५९७

620-21 कनकधारास्तोत्रम्

देखें सं० गुटका ३८, पत्र ११८
लिपिकाल कार्तिक बदी ११ सं० १९६८

622 करहेटक पार्श्वनाथ स्तोत्र

देखें सं० गुटका नं० १०, पत्र २२५

623 कल्याणाष्टक

देखें स० गुटका क० २६, पृ० १३०

624 क्षेत्रपालस्तोत्र

देखें स० गुटका ४, पत्र १७

625 लघुचर्यावन्दना

सदर्भ के लिए देखे क० ५७६,५८२
जयस्वामी नमोस्तु   अढाईदीवधोसामीत्यादि ।।

626 लघु सहस्रनाम

देखें सं० गुटका १५ पत्र १६

627 सामायिकपाठ

देखे स० गुटका ७, पत्र १७५

628 लघु सामायिकपाठ

देखे स० गुटका १० पत्र २३८ तथा क्रमाक ६२७

629 लघु स्वयम्भू

देखें स० गुटका ७, पत्र १७८ तथा प्रशस्ति के लिए क० २६०

630 लघु स्वयम्भू

देखे स० गुटका १० पत्र २३८

631 लघु स्वयम्भू

देखे स० गुटका १३ पत्र ३६ तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६२

632 लघु स्वयम्भू

देखें स० गुटका २३ पत्र ५० तथा प्रशस्ति के लिए क्रमांक २६४

633 लघु तत्त्वार्थसूत्र (अहत्प्रवचन)

देखें स० गुटका क० ७, पत्र १७७, तथा प्रशस्ति के लिए क० २६०

634 लक्ष्मीस्तोत्र मूल (चिन्तामणिपार्श्वनाथ स्तोत्र)

Opening   लक्ष्मीमहातुल्य "   गिरी गिरी ।१।
Closing :   श्रीपद्मप्रभदेवनिर्मितमिदम् स्तोत्रं जगन्मंगलम ।१।

देखो क्रमांक ५१७

635 लक्ष्मीस्तोत्र

Opening   देखें क्रमाक ६३४

Closing इति चन्द्रप्रभस्तोत्र समाप्तम् ।
विशेष चन्द्रप्रभ की जगह पार्श्वनाथ होना चाहिए था।

636 लक्ष्मीस्तोत्र

Opening : देखें क्रमांक ६३४
Closing तर्के व्याकरणे च स्तोत्र जग मगलम् ॥१॥

637 लक्ष्मीस्तोत्र मूल

देखे स० गुटका १०, पत्र २४४ तथा संदर्भ के लिए ६३४

638 लक्ष्मीस्तोत्र मूल

देखें स० गुटका २६ पत्र १२६

639 लक्ष्मीस्तोत्र मूल

देखे स० गुटका ३८ पत्र १०५, तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक ६२३

640 महालक्ष्मीस्तोत्र

देखें स० गुटका ४, पत्र ५,

641 महर्षिपर्युपासन

देखें स० गुटका २६, पत्र १२४

642 महर्षिस्तवन (जिनयज्ञपूजाविधानादि)

Opening निर्भेदलोष्ठवलपद्मपुरात्ममेद सविद्धिकस्वरमुदोद्भुतदिव्यवन्तीन्
Closing इति जिनयज्ञविधान । व्योपगायुतमतीथवारामित्याष्टकं दीयते ॥
देखो—रा० सू० IV, ५२१

643 महावीराष्टक

Opening यदीये चैतन्ये मुकुर इव
Closing महावीराष्टक स्तोत्रं परमा गतिम् ॥
रा० सू० IV ४१३

644 महावीरस्तवन

देखे स० गुटका ३८ पत्र ९७

645 मधुमारापामस्तोत्र

देखे स० गुटका ३८ पत्र ३५

646 नागद्रहपार्श्वनाथस्तोत्र

देखें स० गुटका क० १०, पत्र २३४ ।

647 नमिऊणस्तोत्र सटीक

देखें स० गुटका ३८ पत्र १४०

648 णमोकारमंत्र (जिनदर्शनस्तोत्र)

देखो स० गुटका ११ पत्र २, साथ मे जिनदर्शनस्तोत्र तथा २४ तीर्थंकरो के नाम है ।

649 नवग्रहस्तयुक्तस्तुति

Opening श्रीमान्नन्नादिनिधने जिनवासयुक्ते

Closing व्रजन्तु विघ्ना निधन वहिष्टा जिनेश्वरश्रीपदपूजनाद्व ।

650 नेमिस्तुतितिलक सटीक (द्व्याक्षरस्तवन)

Opening श्रीपरमात्मने नम । माने ना नून मानेन नोम्नमुन्नामि माननम् ।
नेमि नामानम मुनीनामिनमानुम ॥१॥

Closing इति स्तुति ये पुरत पठन्ति नेमिजिनव्यंजिनयुग्मसिद्धाम् ।
श्रीवद्धमानोदयशालिनस्ते स्यु सिद्ध बध्वोपरिभोगयोग्याम् ।।१।

Colophon : लिखत लछमनदास हाथरस मध्ये दि० आश्विन वदी ५ स० १८९८

651 पद्मावतीस्तोत्र

Opening प्रणम्य परया भक्त्या देव्या पादाम्बुज त्रिधा ।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्ष्ये तदभक्तिसिद्धये ॥१॥

Closing नित्य प्रभात पठति यो नितरां त्रिशुद्धया
शौच विधाय विमल फणिशेषस्य

सभवत अतिम पत्र नहीं है ।

652 पद्मावतीस्तोत्र

विशेष देखे स० गुटका ४, पत्र २८

652 A पद्मावतीस्तोत्र

देखो सं० गुटका ३८, पत्र ८९

653 पचनमस्कारस्तोत्र

Opening विरिलख्यन् घनकर्मराशिमशनि ससारभूमिभृत ।
स्वर्निर्वाणपुरप्रवेशगमने नि प्रत्यवाय सताम् ।

Closing	स्वयम् अमृत् तिष्ठन्नयपथिचलन् वेहमनि सवलन् प्रयन् किलयपन् वनगिरिरिपु ।
Colophon	पं० श्रीरामराज मलागलानंदज संवत्⋯ ⋯पठनार्थं ।

654 पंचनमस्कारस्तोत्र

Opening	देखो क्रमांक ६५३
Closing	नमस्कारान्पंचस्मृतिखनि खानि च सदायशस्ती विनस्तानिव च हृतयेस्तोत्रकृती ॥

देखो—रा० सू० IV ७४६

655 पंचनमस्कारमंत्र

देखें क्रमांक ६५३

656 पंचनमस्कारस्तोत्र

देखें सं० गुटका क्रमांक पत्र ४, शेष के लिए क्रमांक ६५३
प्रशस्ति के लिए क्रमांक २६१ देखें

657 पंचपदध्यान

Opening	पणतीयसोलछप्पणचदुदुगमेग च जवेह झाणेह । परमेट्ठिवाचयाण अण्ण च गुरुवएसेण ॥
Closing	इति पंचपदध्यान संपूर्णम् ।
विशेष	रचनाकार उमा स्वामि का नाम ग्रंथ मे नहीं मिलता, पर उसके ऊपर बंध टेगस्लिप मे लिखा है ।

658 पंचपरमेष्ठीनमस्कारस्तवन

देखें सं० गुटका ३८, पत्र ११५

659 पंचस्तोत्रसंग्रह

Opening	एकीभाव गत इव तापहेतु ॥१॥
Closing	व्यापारं सहतेस्म⋯ ⋯ संताडिते इतस्तत ॥१६॥
Colophon :	श्रीमूलसंघे कुंदकुन्दान्वये भ० श्रीललितभूषणदेव पं० श्रीरामजी पठनार्थं लिखापितम् सं० ११६६
विशेष	इसमें एकीभाव, विषापहार, भक्तामर कल्याणमंदिर और अकलंकाष्टक इन पाँच स्तोत्रों का संग्रह है ।

660 परमानन्दस्तोत्र

Opening परमानदसंयुक्त निर्विकार निरामयम् ।
परममात्मानं न पश्यन्ति निजदेहे वा वञ्चितम् ॥

Closing काष्ठमध्ये यथा वह्नि शक्ति रूपेण तिष्ठति,
मद्देहस्थ तथात्मान ज्ञानी जानाति नेतर ।

देखो—जि० र० को०, पृ० २३८ II
रा० सू० III पृ० ११२, १३३, १५७, २८८, ३०२

661 परमानन्द स्तोत्र

देखो स० गुटका २८ पत्र ३५

662 परमानन्द स्तोत्र

देखो स० गुटका २६ पत्र १४३

663-65 परमानन्द स्तोत्र श्लोक

Opening परमानदसयुक्त निर्विकार निरामय
ध्यानहीना न पश्यन्ति निज विवस्थितम ।

Closing काष्ठमध्ये यथावह्नि सक्तरूपेण तिष्ठति ।
अह आत्मा शरीरेषु जो जानाति स पडित ।२४।

देखो—क्रमांक ६६०

666 परमपुरुषाष्टोत्तर नाम स्तोत्र

देखो सं० गुटका क्र० ३५ पत्र ६४

667 पार्श्वनाथचिन्तामणिस्तवन

Opening नमद्देवनागेन्द्रमदारमालामरदच्छटाधौतपादारविंद

Closing इति नागेन्द्रनरामरेन्द्रवदितपादाबुजप्रचुरतेजा

668 पार्श्वनाथचिन्तामणियमकस्तोत्र

देखो क्रमाक ६३४ से ६३९

669 पार्श्वनाथ नाममन्त्राक्षर स्तोत्र

देखो सं० गुटका ३३ पत्र १०

670 पार्श्वनाथ स्तवन

Opening किं कर्पूरमय सुधारसमय किं चन्द्ररोचिर्मयम् ।

कि लावण्यमय महार्घ्यमिमदं कारुण्यकेलीमयम् ।

Closing : इति जिनपति पार्श्वं ·· बीज ददातु ।।११।।

671 पार्श्वनाथस्तवन सटीक

Opening वर सवरसवरसवरस भवद भवदभवदभवद ।
सममास ममास ममासममा गमभगगमं ममभवममा ।१।

Closing इति पार्श्वजिनेश्वर ते स्तवन रचित खचित यमकैश्चैकघनम् ।
परिरंजित दक्षतरप्रकर कुरुता शिवसुन्दरसौख्यभरम् ।

672 पार्श्वनाथ स्तोत्र (लक्ष्मीस्तोत्रम्)

क्रमांक ६३४ देखो

Colophon पठनार्थम श्राविगा जीजी लिखत रामसहाय ।

673 पार्श्वनाथ स्तोत्र सटीक

Opening : क्रमांक ६३८, ६६८ देखो

Colophon इन्द्रप्रस्थ पुरे वाच्यमान चिरं जीयात ।

देखो—जि० र० को० पृ० २४७ I
आ० सू०, पृ० १०१
रा० सू० II पृ० ५१, ३०२, ३३५, ३३८, ३४८, २६६, ३५६, ३८३
रा० सू० III, पृ० ११२, २८७
प्र० जै० सा, पृ० १८३

674 पार्श्वनाथ स्तोत्रम

देखे क्रमांक ६३४ से ६३६ ।

विशेष अन्तिम पत्र नहीं है ।

675 पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening ॐ श्रीपार्श्वनाथाय नम । ॐ ह्री ह्रा ह्रूं ह्रौं शुभ मवक
प्रमुदिन वस्यैहि गर्भोत्सवे मातुर्गर्भे विसोख्ताय मुखिता ह्री
काष्ठे ·· ··

Closing देवश्रीहरिषेण पूर्वविभव सो देवचन्द्रस्थित ।
सम्यक्त्वादिगुणावृतो गतमलो भूया जितो न शिव ।५।

देखो—रा० सू० IV, पृ० ६३३

676 पार्श्वनाथस्तोत्र पंजिका

Opening ॐ नमो भगवते श्रीपार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्रपद्मावतीसहिताय'''
Closing इति श्री जीरिका पल्ली स्वामी स्तोत्रार्थं लेशकृत ।
वदन्ति श्रीपाश्वनाथ सूरि श्रीजयकेसरि ॥१॥
Colophon : इति श्री जरिउली श्रीपाश्वनाथ देवाधिदेव स्तोत्र पंजिका सम्पूर्णम् ।
लिपि काल—पौष सुदी १० चन्द्रवार सं० १८५६

677 पाश्वनाथ स्तोत्र

Opening : महानंद कल्याण बल्ली वसतो प्रतापे ग्रनतो प्रभुवेलसतो ।
Closing इसो जाणी नमो प्राणी जगत पीहर नायको ।
करजोडि सेवग वीनवै प्रभु पचमी गति दायको ।१३।

678 पाश्वनाथ स्तोत्र

देखो स० गुटका ७ पत्र ४८ तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६०
देखो—जि० को०, २४७ II, पृ० २४६ II

679 पाश्वनाथ स्तोत्र

दखा स० गुटका ७ पत्र १५७
Colophon श्री मत्पाश्व जिनेन्द्र चन्द्र चलना लग्नस्य दासस्य मे ।
नाम्नो वा श्रुतसागरस्य शिवभद भूया भवच्छित्तये ।१५।

680 पाश्वनाथ स्तोत्र

देखो स० गुटका २८ पत्र ३६
विशेष विभिन्न स्तोत्रो के १ या २ श्लोक लेकर बनाया गया है ।

681 पाश्वनाथ स्तोत्र

देखो स० गुटका २८ पत्र १२०

682 पाश्वनाथ स्तवन

देखो स० गुटमा ३८ पत्र १११

683 प्रभावीकशनि स्तोत्रम्

Opening यत्पुरा राज्यभ्रष्टाय नलाय प्रददौ किल ।
स्वप्ने सौरिस्वयमत्र सवकामफलप्रदम् ॥

Closing एतानि शनि......प्रात उत्थाय य पठेत् ।
तस्य शनैश्चरे पीडा न भवन्ति कदाचन ।६।

684 देखो स० गुटका ७ पत्र १५१ तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६०

685 देखो स० गुटका ३२, पत्र ७

Colophon लिखतमि वाजेराम शुभम् आषाढ़ सुदी ५ बुधवार स० १८४८

686 प्रतिक्रमण आलोचना-विधि

देखो स० गुटका क्र० २६ पत्र ११६

687 पुण्यदानफलम्

देखो स० गुटका पत्र ५ तथा प्रशास्ति के लिए क्रमांक २६१

688 पुण्यश्रवणवचनमस्कारफलम्

देखो स० गुटका पत्र ५ तथा प्रशस्ति के लिए क्रमांक २६१

689 पुण्य शुभोपयोग फलम्

देखो स० गुटका पत्र ८ तथा प्रशास्ति के लिए क्रमांक २६१

690 ऋषिमडलस्तोत्र

Opening : आद्यताक्षरसलिक्ष्यमक्षर वाप्ययस्थितम् ।
अग्निज्वाला समताद्‌बिदुरेखासमन्वितम् ।

Closing इदम स्तोत्रम् महास्तोत्र स्तु परम पदम् ।८५।

691 ऋषिमडलस्तोत्र

Opening देखो क्रमाक ६९०

Colophon पंडित शिवचद फागुन सुदी ६ स १९४१

692 ऋषिमडलस्तोत्र

देखो क्रमाक ६९०

विशेष पांडुलिपि में श्लोक सं० ६२ तथा ६५वां पत्र नहीं है।

693 ऋषिमडलमहास्तवन

देखो सं० गुटका ३८, पत्र ४६

Colophon वहुरागोते श्रीमाल सा० अचलदास पुत्र सा० मल्ला पुत्र सा० खेमिदास मगसिर सुदी १२ स १६६७ वर्षे आगरा नगरमध्ये लिपिकृतम् ।

694 ऋषिमण्डलस्तवन

देखो स० गुटका ८, पत्र ६

Colophon : लिखित रामकृष्णेनेदम् ।

695 ऋषि मण्डलमहास्तवन

देखो स० गुटका ३८, पत्र ४६

696 सहस्रनाम स्तोत्र

देखो क्रमाक ५६३ से ५६० तक

697 सहस्रनाम स्तोत्र

देखो क्रमाक ५६३ से ५६० तक ।

Colophon लिखितमिदम मुरलीधरेण हरितालवासिना श्रावण कृष्णा एकादशी भगुवासरे स० १६४८।

698 सहस्रनाम स्तोत्र

देखो क्रमाक ५६३ से ५६० तक तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६४

699 सज्जनचित्तवल्लभ

देखो स० गुटका न० ७ पत्र १८३ तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६४

700 समाधिशतक (तन्त्र)

देखो स० गुटका ३६ पत्र १७
तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६१

701 सामायिकपाठ

Opening णमोकार मत्र
Closing उत्कृष्ट नयनप्रभावलित

702 सामायिक पाठ

देखो क्रमाक ६६६ ।

विशेष प्रारभ मे ६ छद प्राकृत के हैं। बाद मे सस्कृत शुरू होती है।

देखो—रा० सू० II पृ० ५३, ३०५

703 सामायिक पाठ

Opening पडिक्कमामि भंते
Closing अक्खरपयत्थहीण मत्ताहीण च ज

704 सामायिकपाठ लघु

Opening सिद्धवस्तुवचो भक्त्या सिद्धान् प्रणमतस्सदा ।
Closing वर्तते मुक्ति मानिन्या वशीभूताय ते नम ॥११॥
विशेष श्लोक ५ से १० तक छूटे हैं ।

705 सामायिक पाठ

देखो स० गुटका २६ पत्र १८ ।

706 सामायिक पाठ

देखो स० गुटका ३४ पत्र अतिम २७ तथा प्रशस्ति के लिए क्रमांक ३०० ।

707 सामायिक पाठ लघु

देखो स गुटका ३७ पत्र ६५ ।

708 सामायिक स्तव

देखो स० गुटका ७ पत्र ४६ तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६०

709 सामायिक स्तोत्र

Opening पडिक्कमामि भते इरिया वहिया पविराहणाये अणागुत्ते ।
Closing गुरव पातु नो नित्य ज्ञानदर्शननायका ।
चारित्राणवगभीरा मोक्षमार्गोपदेशक ।
विशेष कर्ता का नामोल्लेख नहीं है पर क्रमाक ७०२ पर वर्णित प्रति का आदि अत भाग इससे मिलता है । उसमे कर्ता का उल्लेख बहुमुनि है अत इसका कर्ता भी बहुमुनि होना चाहिए ।

710 सम्मेदशिखर माहात्म्य (२१ अध्याय)

Opening ध्यात्वा म्यहम् ।
Closing यावच्चन्द्र सनां तिष्ठान् ।११६।
Colophon सम्मेद शिखर पूरब दिशा तीर्थंकर चतुबीस,
सेठ मल्ल कर जोरि के जी सुतराय सुवश ।१।
प्रथम अष्ट संवत्सरे अष्ट चतुर्थ यह साल,
वदि बैसाख रवि पचमी पूरन ग्रथ सहाल ।२।
विशेष ग्रथ सख्या १८०० ।

देखो—जै० ग्र० प्र० सं० I ७२

जि० र० को०। पृ० ४२३
आ० सू०, पृ० २११
रा० सू० III, पृ० ३६, १६०

711 सम्यक्त्वस्तवलाभ

Opening सम्यक्त्वरत्नान्न पर हि रत्न सम्यक्त मित्रान्न पर हि मित्रै ।
सम्यक्त बधुर्न परो हि बधु सम्यक्तलाभान्न परो हि लाभ ।१।

Closing आयुष्य यदि सागरोपममिद व्याधिव्यथावर्जितम् ।
पाडित्य च समस्त वस्तुविषये प्रावीण्यलब्धास्पदाम् ।
जिह्वाकोटियुत च पाटवयुत स्यान्मे धरित्रीतले,
नो शक्नोमि तथापि वर्णितुमल श्रीदेवपूजाफलम् ।८।

712 शान्तिनाथ स्तुति

देखो स० गुटका ७ पत्र १५८ तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६० ।

713 शान्ति स्तव

देखो स० गुटका ३८ पत्र १०६

714 शान्ति स्तवन

Opening शाति शाति निशान्त शान्त शाता शिव नमस्कृत्य ।
स्तोतु शातिनिमित्त मत्रपदै शातये स्तौमि ।

Closing यश्चैना पठति सदा शृणोति भावयति वा तथा योग ।
स हि शान्ति पद यायात् सूरि श्रीमानदेवश्च ।

715 सरस्वती स्तवन

देखो स० गुटका क्र० ६ पत्र ३

716 सरस्वती स्तोत्र

देखो स० गुटका क्र० १४ पत्र १६३

717 सरस्वती स्तोत्र

देखो स० गुटका २५ पत्र ४६ तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६५ ।

718 सरस्वती स्तोत्र (श्रुतदेवता स्तुति)

Opening । जयत्यशेषामरमौलिलालितम् सरस्वती त्वत्पदपंकजद्वयं'

Closing । क्षन्तव्यम मुखरत्वकारणमसौ येनाति भक्ति गुह ।३१।

विशेष ३०वं छद मे पद्मनंदी का नामोल्लेख है ।

719 सरस्वती-स्तुति

देखो स० गुटका नं० १५ पत्र ५६ तथा प्रशस्ति के लिए क्रमांक २६३।

720 सात्मपूजा स्तुति

देखो स० गुटका न० ६६ पत्र ६।

Colophon आश्विन वदी ६ स० १६७८ का प्रारम्भ व समाप्त।

721 सिद्ध भक्ति

Opening रमेद्धा शुद्धा प्रबुद्धा व्यपगतविपदो दर्शनज्ञानचर्या,
सयोगानि प्रताना ॥१॥

Closing : मसारचक्रगमनागतिविप्रमुक्ता नित्यं जरामरणबन्धनशोकहीना ॥६॥

देखो—जि० र० को०, पृ० ४३८।

722 सिद्धचक्रयंत्रोद्धारक बृहत

देखो स० गुटका १४ पत्र २१८

Colophon इति बुधवीरु विरचिता पदमावती पुरवाल प० जिनदास नामांकित सिद्धपूजा समाप्ता।

723 सिद्धप्रिय स्तोत्र सटीक

Opening सिद्धि प्रिय प्रतिदिन भूपदवीक्षणेन ।१।

Closing वतात्समुल्लसितचित्रवच रजयति त्रिसध्यम् ।२५।

देखो—जि० र० को० पृ० ४३८ II
प्र० जै० सा, पृ० २४६
रा० सू० II, पृ० ४६, ५३, ११२, ३३२, ३४४, ३५६, ४५७, ३५६,
३६८, ३६१, ३६३, ३६५
रा० सू० III, पृ० १०६, १४१, १५६, २४४

724-25 सिद्धप्रियस्तोत्र सटीक

देखो क्रमांक ७२३, सन्दर्भ के लिए भी।

लिपिकाल श्रावण वदी १४ शनिवार सं० १८७१।

726 श्लोक

देखो सं० गुटका २८ पत्र ३३ पर।

727 श्लोक और गाथा

देखो सं० गुटका ३८ पत्र ११८ पर

728 स्नपन महोत्सव

देखो स० गुटका १० पत्र २५१ पर।

729 स्नपनविधि लघु

देखो स० गुटका ११ पत्र ६ पर प्रशस्ति के लिए क्रमांक २११।

729A स्नपन विधि लघु

देखो स० गुटका १० पत्र।

730 श्रावकप्रतिक्रमण

देखो स० गुटका ७ पत्र १०० तथा प्रशस्ति के लिए २१०।

731 श्रुतदेवतास्तुति (सरस्वती स्तोत्र)

Colophon इति श्रुतदेवता स्तुति कृति पद्मनदिन ।

732 सूर्यसहस्रनाम

देखो स० गुटका ३८ पत्र ७८

733 सूर्याष्टक

देखो स० गुटका ३८ पत्र ६८

734 सूर्य स्तोत्र

देखो स० गुटका ३८ पत्र ६७

735 स्वयम्भू पाठ लघु

Opening येन स्वय बोध ...प्रणमामि नित्यम् ॥

736 स्वयम्भूस्तोत्र वृहत

Opening : स्वयभुवाभूतहितेन भूतले ... विभूति चक्षुषा।
Closing : वक्तु गुणसंपद सकलं ... समतभद्र सकल ।८।

देखो—सं० गुटका ७ पत्र ८५ पर
जि० र० को, पृ० ४५८
प्र० जै० सा, पृ० २४२

आ० सू०, पृ० ४६
रा० सू० II, पृ० ५३, ७७, ८४, ६६, ११५, ३०५ ३५०
३५६ ३६४, ३८३
रा० सू० III, पृ० ११२ ५८ १०७, १३६

738 स्वयम्भूस्तोत्र लघु

देखो गुटका सख्या ३१ पत्र ७३७ तथा क्रमाक ७३६ भी।

738 स्वयम्भूस्तोत्र बृहत्

देखो गुटका स २८ पत्र ६० तथा क्रमाक ७३५ भी।

739 स्वयम्भूस्तोत्र बृहत् मूल

देखो स गुटका २६ पत्र ६६ तथा क्रमाक ७३५ भी।

740 स्वयम्भूस्तोत्र बृहत मूल

Opening : देखो क्रमाक ७३५

Closing : तद्‌व्याख्यानमदा॰

741-42 स्वयम्भूस्तोत्र बृहत मूल

देखो क्रमाक ७३५, सदभ के लिए भी।

743 स्वयम्भूस्तोत्र लघु

देखो क्रमाक ७३६

744-48 स्वयम्भूस्तोत्र लघु

देखो क्रमाक ७३६ से ७३६ तक

749 स्वयम्भूस्तोत्र बृहत मूल

Opening मानस्तभा सरासि प्रविमलजलसतखातिकापुष्पवाटी

Closing यस्यास्ति शक्ति स वदतु पुरतो जैनग्रथवादी ॥

Colophon लिखत जिनसहाय।

विशेष अन्त में २०४ तक पत्र काट कर निकाले गए हैं।

750 त्रिकालचतुर्विंशति नाम

देखो स० गुटका १० पत्र १५० ।

751 त्रिकालचतुर्विंशतिजिन नाम

देखो स गुटका २ पत्र २००

Colophon हसाभिधो विजयकीर्तिसुपादपद्मभ गच्छको

752 उपासकाध्ययन

देखो स० गुटका ८ पत्र १८६ तथा प्रशस्ति के लिए क्रमांक २६० ।

753 वज्रपजर स्तोत्र

Opening परमेष्ठीनमस्कार पदाथकम ।
आत्मरक्षाकर वज्र पजरात्म स्मराम्यहम ॥

Closing यश्चन कुरुते रक्ष परमेष्ठीपद सदा
तस्य न स्याद् भय व्याधिराधिश्चापि कदाचन ॥

रा० सू० IV पृ० ४१५, ४३२ ।

754 वर्धमानजिनस्तोत्र

विशेष देखो स० गटका क्र० ३८ पत्र ५८, प्रशस्ति के लिए क्र०६२३ ।

755 वर्धमानस्तुति

Opening अनतविज्ञानमतीतदोषमबाध्यसिद्धा तममर्त्यपूज्यम ।
श्रीवर्द्धमानजिनमाप्तमुख्य स्वयभुवास्वानुमहम यतिष्ये ।

Closing इति चतुर्विधिमहोदधि विमलसुविहेतजनगुणनिधिपाल
भूपालासादितसनिधिसुराचार समश्रीमदाचाय श्रीहेमसूरिविरचित
स्याद्वादमजरी नामक प्रकरण समाप्तम् ।

Colophon : श्री नीवाहेडाग्रामे लिखित श्रीजिनवर्धमानसूरि स० १७०६ ।

756 विषापहारस्तोत्र मूल

Opening स्वात्मस्थित पुराण ।१।
Closing वितरति धनजय च ।४०।

देखो—प्र० ज० सा०, पृ० २१७ ।
आ० सू०, पृ० १२७

जि० र० को पृ० ३६१
रा० सू० II पृ० ५१, ६६, १०७, ११२ ३०२
रा० सू० III, पृ० १०६, १०७, १५७, १५८, २३४, २७८, २८७

757-60 विषापहार स्तोत्र मूल

विशेष देखो क्रमांक ७५६, सदर्भ के लिए भी।

761 विषापहार स्तोत्र मूल

देखो क्रमाक ७५६।

Colophon : "इयमहन्मतक्षीरपारावारपावणशशाकस्य मूलसघकृतम्
विषापहारस्तोत्र समाप्तम।

762 विषापहार स्तोत्र मूल

देखो स० गुटका २४ पत्र ११६ क्रमाक ७५६ भी।

763 विषापहार स्तोत्र मूल

देखो स० गुटका ३३ पत्र ५१, क्रमाक ७५६ भी।

764 विषापहार स्तोत्र मूल

देखो स गुटका ३७ पत्र ८३, क्रमाक ७५६ भी।

765 विषापहारस्तोत्र महाप्रभाटीका सहित

Opening वदित्वा सदगुरून्य च ज्ञानभूषणहेतवे।
व्याख्या विषापहारस्य नागचन्द्रेण कथ्यते।

Closing धनजय सुखानि पुन पुन हे जिन दिशतु।

देखो सदर्भ के लिए क्रमाक ७५६।

766 विषापहार स्तोत्र

देखो क्रमाक ७६५ तथा सदभ के लिए ७५६

Colophon लिखित महात्माहीरानन्द सवाईजयपुरमध्ये श्रावण वदी १० भौमवार स० १८७१।

767 विषापहार स्तोत्र

देखो क्रमाक ७६५ तथा सदभ के लिए ७५६।

Colophon लिखित उदयचन्द्रेण पठनार्थं चैत्रसुदी १३ शुक्रवासरे स० १९६५।

768 त्रिविधाम्नायमय स्तोत्र

देखो स गुटका ३८ पत्र ५३
लिखित फागुन वदि २ स १६६७।

769 ममप्रादि

विशेष देखो स० गुटका ३८ पत्र ६२।

770 यतिभावनाष्टक स्तोत्र मूल

Opening आदाय व्रतमात्मतत्त्वममल ज्ञात्वाथ गत्वा वनम्।
नि शेषामपि मोहकर्मजनिता हित्वा विकल्यावलीम्।
ये तिष्ठन्ति मनोमरुच्चिदचलैकत्व प्रमोद गता,
नि कपागिरि वज्जयति मुनयस्ते सवसगोज्झिता ।१।

Closing पात्पारिक्षयवारिदातनयति स्वर्गापवर्गाश्रिया,
श्रीमत्पकजनदिभिर्विरचित चिच्चेतन्य
भक्त्या यो यतिभावनाष्टकमिद भव्यस्त्रिसध्य पठेत।
कि कि सिध्यति वाछित न भुवने तस्यात्र पुण्यात्मन ।६।

देखो—जि० र० को, पृ० ३१७।
रा० सू० II ३८६।
प्रशस्ति के लिए क्रमाक ४६३ भी देखो।

771 यतिभावनाष्टक स्तोत्र मूत्र

Opening अतुलसुखनिधान दशनाक्ष सुवाबु ।१।

Closing देखो क्रमाक ७७०।

विशेष पत्र ६२वा बिल्कुल खाली है। गुटके मे इस रचना का नामोल्लख नही है।

772 यतिभावनाष्टक स्तोत्र

देखो क्रमाक ७७० तथा स० गुटका ७ पत्र ६४, प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६०।

773 यतिभावनाष्टक स्तोत्र

विशेष देखो क्रमाक ७७० तथा स० गुटका २६ पत्र ७१।

774 अभिषेकपाठ

Opening दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटि अभिर्षिचेत ।
Closing सभावयामि पुर एव त्वदीय विम्बम् ।८।
Colophon लिखितम् श्वेताम्बर हरिश्चन्द्र ।

775 अभिषेकपाठ

Opening य पांडुकम्बलसिलागतमादिदेवम ॥
Closing गधोदकं जिनेन्द्रस्य पादाभ्यर्चनमारभेत ॥१६॥

776 अभिषेकपाठ

Opening दूरावनम्रसुरनाथ बहुधा विसिचेत ।
Closing य पाडुकबलसिला ससारयोनिसुर एव स्वदीयविम्वम् ॥

777 अभिषेकपाठ

Opening सौगधसगतमधुव्रतझकृतेन सवणमानमिव गधमनिंदयमादौ ।
आरोपयामि विवुधेश्वरवन्दवद्य पादारविदमभिवद्यजिनोत्तमानाम ।
Closing स्वपदजिनगतो ऽसौ भावपूर्णं द्रवद्यो, माननीयसमथ ।
Colophon स जयतु जिनराजो लालचन्द्रो विनोदी ।
हस्ताक्षर नेमचन्द्र जैन लेखक पालम (देहली) वासी द्वि० जेठ वदी ४ वी० नि० स० २४४६ वि० स० १६८० ।

देखो—जि० र० को० १४
गा० सू० III, पृ० ५०, १६७, ३०६

778 आदिनाथ पूजा

देखो सं० गुटका क्र० १० पत्र २१७।

779 आदित्य (रवि) व्रतोद्यापन

Colophon महीचक्रचलितराजैर्गृहीत मेरुचन्द्र स्तुति वाक्यै
पापतिमिरनाशन क्षीर दूर जय सागर वाछित सुखपूर ।६।

780 अकृत्रिमचैत्यालय वन्दना

Opening कृत्याकृत्रिमचारुचैत्य दुष्कर्मणा शान्तये ॥
Closing णमोकार मंत्र

781 अकृत्रिमचत्यालय वन्दना

Opening   कृत्याकृत्रिम   शातये ॥
Closing   ताव काय पावकम्म   उस्वास ।२७।
विशेष   साथ मे सिद्धो के आठ गुण, षोडश कारणभावना, दशधम आदि के अघ्य भी हैं ।

782 अकृत्रिमचत्यालयवन्दना

Opening   क्रमाक ७८० देखो ।
Closing :   ते सज्ञान दिवाकरा सुरनुता सिद्धि प्रयच्छतु न ।५।

783 अकृत्रिमचत्यालय-वन्दना

देखो क्रमाक ७८८ ।

784 अकृत्रिमचत्यालय-वन्दना

देखो क्रमाक ७८० ।
विशेष   साथ मे 'उदकचदनतदुल   इत्यादि श्लोक लिखकर २० विदेह के तीथकरो के नामो का अघ्य लिखा है ।

785 अकृत्रिमचत्यालय-वन्दना

देखा क्रमाक ७८० ।

786 अकृत्रिमचत्यालय-वन्दना

देखो क्रमाक ७८२ ।

787 अकृत्रिमचत्यालय-वन्दना

देखो क्रमाक ७८० ।

788 अकृत्रिमचत्यालय-वन्दना

देखो स० गुटका १० पत्र २०६ तथा क्रमाक ७७९ से ७८४ तक ।

789 अकृत्रिमचत्यालय-वन्दना

देखो स गुटका २७ पत्र १० क्रमांक ७८० से ७८६ तक ।
विशष   प्रशस्ति के लिए क्रमाक २८८ ।

790 अकृत्रिमचैत्यालय-वन्दना

देखो स० गुटका ३४ पत्र २० तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक ३०० ।

विशष साथ मे बीस तीर्थंकरो के अर्घ्य भी हैं ।

791 अनन्तचतुर्दशी पूजा

Opening स्वामिन सवौषट कृतवाहनस्य,
द्विष्टातेनोह किं स्थापनस्य ।
त निर्मेक्तु ते वषटकार जाग्रत्सानिध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टि ।

Colophon कर्णे बाहौ अंगुल्य धारयेदनतचतुर्दशीवर्षे
उद्योतन कुर्यादन्यथा द्विगुणेव्रतकाय ।

विशेष रचनाकार शातिदास का नाम प्रति मे नही है । अत जि० र० को० तथा इस प्रति मे नत्थी स्लिप के आधार पर लिखा है ।

देखो—जि० र० को०, पृ० ७
रा० सू० II, पृ० ३०७

792 अनन्तनाथ पूजा

Opening देखो क्रमाक ७९१ ।

Colophon लिखायत प० चपाराम लिपिकृत महात्मा स्यभुराम सवाई जयपुर मध्ये वैशाख वदि १३ स० १८६३ गुरुवासरे ।

विशष : रचाकाल के सबध मे इस प्रति मे सवत्षोडश त्रिशतैक नभसि लिखा है ।

793 अनन्तपूजाविधि

देखो स० गुटका २२ पत्र ।

794 अनन्तव्रतपूजा

Opening सकलकल्मषकाननपावक विमलतीथजले वृषदायकम ।
प्रथम तीर्थंकर करुणापर परिभजे परमात्मनिदेशकम् ।

Closing श्रियमपि विदधातु शाश्वत सिद्धरूप कमलसदृशानेत्र अथादि भूषो बरेण्य । इत्याशीर्वाद ।

Colophon काष्ठासघ महोदयाद्रितपन श्रीविश्वसेनानुग
विद्याभूषणसूरिराट् विजयते विद्यानिवासास्पदा ।

तत्पट्टे सुविराजरजितमनो श्रीभूषणं शुद्धिमान
षटभाषा विशदात्म वाक्य कुशलो श्रेयकर शकर ।१।
श्री भूषणेन मुनिना पूजेय निर्मिता वरा
अनतव्रत पूजार्थं करोतु मगल शुभम् ।१।
इति अनतव्रतोद्यापन आ० श्रीभूषणविरचितम् ।

देखो—रा० सू० II, पृ० ५५
रा० सू० III, पृ० १६७

795 अनन्तव्रत पूजा उद्यापन

Opening — श्री सवज्ञ नमस्कृत्य सिद्ध साधू स्त्रिधा पुन ।
अनतव्रतमुख्यस्य पूजा कुर्वे यथाक्रमम ॥

Closing — नद्यादारविचद्रमक्षयतर सघस्य मागल्यकृत ।

विशेष — ग्रथ सख्या ६२५।

Colophon — स० १६३३ शुक्लपक्ष पूर्णिमा गुरुवासरे। जि० र० को० मे १६३० लिखा है। गणचद्राचाय सरस्वती गच्छ के थ।

देखो ज० ग्र० प्र० स० I, पृ० ३४
आ० सू० पृ० १६६
रा० सू० III पृ० २०५
जि० र० को पृ० ७

796 अनन्तव्रतपूजोद्यापन

देखो स० गुटका २२ पत्र १२

797 अकुरारोपण विधि (याबारक विधि)

Opening — वीरदेव जिन नत्वा कथ्यतेऽथाकुराप्पणम् ।
प्रतिष्ठादिसु यत्प्राहु सद्य कम महषय ।१।

Closing — महाभिषेकम् च महोत्सव च नदीस्वर सकुरमेव कुर्यात ॥

798 अतरिक्ष पार्श्वनाथ पूजा

देखो स० गुटका क्र० १० पत्र २२२ पर

799-800 अष्टाह्निका-पूजा

Opening — सर्वोषडाहूय निवेशठाभ्याम् प्रतिभा समस्ता ।१।

Closing जीवति जिन चैत्यानि ' त्रि परीत्य नमाम्यहम ।२।
विशेष अत मे पंचमेरू संस्कृत पूजा का अतिम पद भी है।

801 अष्टाह्निका पूजा

Opening द्विरचासनजिनागारान वासरान।
Closing देखो क्रमाक ७९९।

802 अष्टाह्निका पूजा

Opening आहूय सवौषडिति प्रणीत्वा द्वाभ्या प्रतिष्ठाप्य सुनिष्टितार्थान।
वषट पदैनैव च सन्निधाय नदीश्वरद्वीपजिनान्समर्चे ।१।
Closing आरत्तिय जोवइ कम्मइ धोवइ सग्गाय वग्गह लहु लहइ।
ज ज मणभावइ त सुह पावइ दीणु विकासुण भासुई ।१९।
Colophon लिखत धन्ना ऋषि पूज्य दिल्ली मध्ये लिखापित लाला धरमदासेण भादो सदी ४ रविवार स० १९४१।
विशष उपर्युक्त प्रशस्ति मे 'धरमदासेण' को 'प० शिवचन्द्रण' काट कर लिखा है।

802 अष्टाह्निका पूजा

Opening स्थानासारनाम्न प्रतिपत्ति दिनानि भत्क्या ।१।
Closing देखो क्रमांक ७९९।
विशष १८ श्लोक प्रमाण।

804 अष्टाह्निका पूजा

Opening ऋषभादिवधमानातान् जिनान नत्वा स्वभक्तित ।
सार्द्धद्वयद्वीपजिन पूजा विरचयाम्यहम ।१।
Closing सद्वासंख्यो जनानामिति नर धरनी सदिशत्वच्चकानाम ।१६।
Colophon लिखत मिश्र गोविन्द वास्तव्य माघ हवेलीपालम वदि ७ स १९२३

805 अष्टाह्निका (सार्द्ध द्वयद्वीपपाठपूजा)

Opening देखो क्रमाक ८०४।
Colophon पौह सुदि २ स २४३८ ? यह वी० नि० स० होगा।

806 अष्टाह्निका पूजा

Opening देखो क्रमाक ८०१।

807 अष्टाह्निका पूजा

Opening देखो क्रमांक ८०४।
Closing विजयाधनामतुल्य पचाशनागर जिनालयजिने ।

808 देखो स० गुटका २ पत्र ६१ "कणयाकित्ति इठिध सुइई"

809 देखो स० गुटका १३ पत्र ५४, प्रशस्ति के लिए देखो क्रमाक २६२

810 देखो स० गुटका १५ पत्र २४८, प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६३

811 देखो स० गुटका १५ पत्र २५६, प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६३

812 देखो स० गुटका १५ पत्र ८१ प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६३

813 देखो स० गुटका २३ पत्र २० प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६४

814 देखो स० गुटका ३६ पत्र २३

815 देखो स० गुटका २१ पत्र ११५

816 देखो स० गुटका ८ पत्र ५५

817 बलिविधान यन्त्रोद्धार

देखो स गुटका क्र० १४ पत्र १६० तक।
Colophon इतिश्र शुभचंद्रा मतु सर्वे जिनेन्द्रा

818 भक्तामर पूजा

देखो स० गुटका न० २ पत्र १८८ तक।
Colophon वाइरामकु यह पठनाथ प० कमोदादास तत्शिष्य प० हीरामणि स्वहस्तेन लिखित।

819 भक्तामर पूजा

देखो स गटका न० १५ पत्र १२८ तक। प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६३ देखो।

Colophon श्री काष्ठासत्रे मुनिरामसेनो नदितटाको गुरु विश्वसेनो।
तत्पट्टधारी जनसौख्यकारी तत्पादपद्मार्चनशुद्धभानु ।२।
श्री भूषणो वादि गजेन्द्रसिंह भट्टरकाधीश्वरसेव्यमानो।
डिल्लीप्रवरेणार्पितराज्यमान जीयात्पृथिव्या द्योत ।३।
तस्यास्ति शिष्यो व्रतधारभार ज्ञानादिचनाम्ना जिनसेवकोऽयम।
तेनेव दधाऽयमपूब पूजा भक्तामरस्यात्मविशुद्धयेव ।४।

देखो—जै० ग्र० प्र० स० I भाग, प्रस्तावना पृ० ४६, १७
भट्टारक सप्रदाय पृ० २६५
जैनसाहित्य और इतिहास पृ० ३७५, ४२६ ४४१।

820 भक्तामर पूजा

देखो स० गुटका न० १६ पत्र ६२ तक।

Colophon : लिखित मक्खन मिश्र सं० कार्तिक सुदी ८ रविवार स० १८२८।

821 भक्तामरपूजा यन्त्रमन्त्रसहित

Opening : भक्तामरप्रणति जनानाम।

Closing : मुकतमहल के मिलन को निपट निरमल पथ।
साधारमी मिल पढै गुणै अवगाहो जिन ग्रथ ॥

Colophon : लिखत मोतीराम।

विशेष : तीन पत्र खाली है। पत्रो की सख्या पुन एक से शुरू होती है।

822 भरतक्षेत्रजिन पूजा

देखो स गुटका न २ पत्र २१६ तक।

823 बालपूजाविधि

Opening : अथ पालकृतिविधिशयनादुत्थाय गुरुसमरण,
अथ मत्र प्रात सिरसि शुक्लेऽब्जेद्विनेत्रे द्विभुजा गुरु
वराभयकर सात्य स्मरोत्य नामपूवक ।१।

Closing : असस्कार (?) बलात्कारेण मथुनम्।
आत्मार्थे बाहत मास वीरोपि नर्क व्रजेत् ।१।
इति सद्धजामले तत्रे बाला त्रिपुरसुदरो लघुपूजा पद्धति प्रतिदिन सम्पूणम।

824 चन्दनषष्ठी पूजा

देखो स गुटका क्र० १० पत्र १८२।

825 चारित्रपूजा

Opening : देवश्रुतगुरून्नत्वा विधायक ।१।

Closing : तस्यार्थित्वबसंगतास्वसुमति श्रीब्रह्मसेनोदितम्।
दृष्ट्वा सद्गुरुकोसमुल्लितवाच्चैन्नरेन्द्रो मुनि ।१।

826-28 चारित्रशुद्धिपूजा

Opening विशदतरुसुवक्त्र ज्ञानकन्दकबीज वषभजिन यजेह शुद्धचारित्रवत्तम् ।
निखिलमुनिजनाना मोहन मोदकद शिवसुखपदद प्रणम्येव वक्ष्ये ।

Closing यत्र श्रीकाष्ठसघऽजनि ।मसेन श्रीनेमिसेनोऽजनि विश्वसेन ।
नदीनटका वयवत्तवत्त विद्यागणो भूषणता प्रपन्न ।४।
विद्याविभूषोत्तमपट्टधारी शास्त्रस्य वेत्ता वरदिव्यवाणो ।
जीया पथि या प्रथुवत्तवत्ति श्रीभूषणऽसौ समयावलीह ।५।
चारित्रपूजने सार पूज्य पूज्याथ मुदरी ।
श्री भूषणन रचिता विशोध्याधीयता बुधा ।६।
भाति श्रीदक्षिणदेशे देवगिरि पुरवर
पाश्वनाथ जिनाधीश मडित दुर्गदुर्गम ।७।
तस्य श्रीजिनराजस्य मन्निधौ रचित वर
पूज्य पुण्यप्रकाशाय श्रीभूषणसूरिणा ।८।

Colophon लिपिकृत सवाई जपुरम ये ।

लेखो—रा० सू० III पृ० १६६
जि० र० को० पृ० १२२
भट्टारक सप्रदाय पृ० २६५
ज० ग्र० प्र० स० I प्रस्तावना पृ० ४८ ४६

829 चारित्रव्रतशुद्धिपूजा

Opening चतुर्दशस्वहिंसाथ जीवस्थानेष लापिता ।
वियोग नवकोटिघ्नास्तेष्ट विशशत स्फुटम ।१।

Closing ॐ ह्री कायाकारितप्रतिष्ठापन समितये ।१६। ॐ ह्री कायानु

830 चतुर्विंशतिजिन निर्वाणवरणन

Opening यात्राहृता गणभता श्रुतपारगामी
निर्वाणभूमिरिह भारतवषजानाम ।
तामद्य शद्धमनसा कृपया वचोभि
सस्तोतुमुद्यतमति परिणौमि भक्त्या

Closing इत्यर्हता शमवता च महामुनीना
प्रोक्ता मयात्र परिनिवत्तिभूमिदेश ।
ते मे जिना जितभया मुनयश्चशाला
मिध्या मुरासुरगति निरवद्यसौख्याम् ।१२।

831 चातुर्विंशति तीर्थंकर-पूजा

देखो स० गुटका क्रमाक १३, पत्र अतिम ८४ तक प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६२।

विशेष प्रथम तीन तीथकरो की पूजाएँ हिन्दी मे है।

832 चतुर्विंशति तीथकर-पूजा

Opening आनदमेदुर शरीरमनतबोध गमीरनादविहिता बुधरावरोधम ।
चापीयनाभिजनित युननागगोष धर्मोपदेश जलजीवकृतानुरोधम ॥

Closing शान्ति श्रिय च कल्याण कुवन्तु जिन भाजिन ॥

देखो—जि० र० को०, प० ११६ III
रा० सू० III, प० ५२

833 चिन्तामणि-पूजा

देखा स० गुटका क्र० २ पत्र १७० तक।

834 चिन्तामणि पूजा

देखा गुटका क्रमाक १४ पत्र १७३ तक।

835 दशलक्षणपूजा

Opening उत्तमक्षातिमाद्यन्ते जिनभाषितम ।१।

Closing कोहानलु चक्कऊ फलाइ सुमिहुइ ।

836-37 दशलक्षणपूजा

Opening उत्तमक्षमाद्यमाद्य ते मुत्तम जिनभाषितम ।१।

Closing यो धम दशधा करोति स्वर्गापवर्गस्थिते ।२५।

विशेष जयमाला रइधू कवि की है। साथ मे, सस्कृत स्वयभू स्तोत्र भी है।

838 दशलक्षण जयमाल

इसमे दशलक्षण जयमाल, सोलह कारण पूजा, रत्नत्रयजयमाल तथा निर्वाण पूजा आदि रचनाओं का संग्रह है।

Colophon लिखितं दयाचद भादो वदी ५ स० १८८१।

839 देखो स० गुटका न १३ पत्र ३३ तक तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६२

840 देखो स० गुटका न० १५ पत्र ५० तक तथा प्रशस्ति के लिए क्रमांक २९३

841 देखो स० गुटका न० १७ पत्र १२ तक।

842 देखो स० गुटका न० २३ पत्र ४८ तक। प्रशस्ति के लिए क्र० २९४

843-46 दशलक्षणोद्यापन

Opening विमल गुण समर्द्धि ज्ञानविज्ञानशुद्धि
सभवनससुद्ध चिन्मयूखप्रचडम्।
व्रतदशविधि सार सयज श्रेयसार
प्रथमजनवदीक्ष सदवताद्य जिनेशम ।१।

Closing श्री मूलसघेऽजनि गौतमाख्या श्रीकुदकुदोऽजनि सूत्रकर्त्ता।
श्रीमदुमास्वामी सुपदमनदी श्रीपदमनदी वरसोममूर्ति ।१।
विद्यानदिष्यरमलेभूषणलक्ष्मादि चद्रोमयचद्रदेव।
श्रीमदभयनदिविशालबोध सुद्धो विधानो दशलक्षनाशो ।२।
जायात्सता धमपवित्रदत्ता त्राता सता श्रीश्रुत साराख्ये।
तत्त्वाथयेका प्रकटीचकार जातान्वये विश्वहिताथ हेत्ता ।३।
उसवालपरे ज्ञातो समाख्य पडिताग्रणी।
कृतोपरोधपूजेय पापतापप्रणासिनी ।४।
दशधमपूजा सुमतिसागरोदिताम
स्वगमोक्षप्रदेह्लोके विश्वजीवहितप्रद ।५।

देखा—जि० र० को० पृ० १६८
रा० सू० II, पृ० ६०
रा० सू० III, पृ० ५४
भट्टारक-सम्प्रदाय पृ० २००, १९३
जै० ग्र० प्र० I, पृ० ८७
जै० ग्र० प्र० स I, प्रस्तावना पृ० ४४
रा० सू० IV, पृ० ७९५

847 दशलक्षणोद्यापन

Opening सुव्रताय नमो लोके दशधा हि जिनोदिते।
व्रतेशिने गुणौघाय मोक्षसाधनहेतवे ।१।

Closing ब्रह्मचय व्रत पर ब्राह्मी सुदरी प्रथमजिनसुता वरा।
श्री अभयनन्दि गुरु शील सुसागर सुमतिसागर जिनधमधुरा
इति ब्रह्मचर्यांगपूजा।

848 दशलक्षणोद्यापन

देखो क्रमांक ८४३, ८४७।

Colophon लिखत मिश्रभगवानदलन लिखापित श्रावक लाला ठंढीराम रामस्य उद्यापनाथ भादा वदि अमावस म० १८६८।

849 दशलक्षणोद्यापन

देखो स० गुटका न० ८ पत्र ३६ तक,

850 देवपूजा

Opening ऊ नमो जय जय जय नमोस्तु ३ णमोअरहताण ।

Closing इय णरदेवं नियसुखसत्ति जिण चौबीसहि विनविय भत्तिए।
ए जिणवर जो अणुदिणु झावई सो ससारिण पछै आवइ ॥

851 देवपूजा (स्नपनविधि)

Openin ॐ जय जय नमोस्तु २ णमो अरहताण ।

Closing कल्याण विजयभद्र चिंतिताथमनोरथम ।
श्री देवगुरुप्रसादेन सवमिष्ट भवंतु मे ॥

852 देवपूजा (स्नपनविधि)

Opening ऊ ह्री श्री स्नान विधिस्थान भू शुद्धयतु स्वाहा ।

Closing जिनवरपदपूजा भावपूणकृतासौ स्वपदनिजगतोऽसौ भावपर्णेन्दुवद्या।
जिनवर वरमाला माननीयसमथ सजयतु जिनराजो लालचन्द्रो विनोदी ॥
देवस्य त्रिजगत्पते स्वसहजज्ञानत्रयस्याहत ।
स्नान तीथजन कृत सुकृतवद्दृष्ट श्रुत कारितम्।
तुष्टि पुष्टि मनाकुलत्वममेतत सौख्यश्रिय सपदो।
दद्यात्पुत्र कलत्र मित्र सहितेभ्य श्रावकेभ्य सदा।

Closing दस्तखत रामसग ब्राह्मण के पोथी पूजाकी नगर वाले जतीन लिखाई मालूम रहे।
भादो सुदी ४ गुरुवार स० १८६६ मे पूण हुई।

853-54 देवपूजा

Opening ॐ नमः सिद्धेभ्य जय३ नमोस्तु३, नमो अरहताण ।

Closing इह जाणिय अरहंतावलिहि ॥८॥

855 देखो स० गुटका क्रमाक १५ पत्र २६ तक तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६३

856 देखो स गुटका क्रमाक १८ पत्र ८ तक। लिखत पोष कृष्णा ४ स० १६२६

857 देखो स गटका क्रमाक १६ पत्र ३१ तक।

858 देखा क्रमाक ८५३, शेष सदभ के निए भी।

859 देखो क्रमाक ८५३, शष सदभ के निए भी।

860 देखो क्रमाक ८५३, शेष सदभ के लिए भी।

861 देवपूजा बहत

Opening देखो क्रमाक ८५३।
Closing इयणर दवेंदिय सुय सत्तिय न पछई ग्रावई॥

862 देवपूजा बृहत

Opening दखा क्रमाक ८५३।
Closing सपूजकाना प्रतिपालकाना ॥

863 देवपूजा बहत

Opening दखो क्रमाक ८५३।
Closing प्रशातमतगभीर श्रीमतसवज्ञशासनम ॥

864 देखो क्रमाक ८५३

865 देखो स० गुटका क्रमाक ६ पत्र २७ तक।

866 देखो स० गुटका क्रमाक १० पत्र १५७ तक।

867 देखो स० गुटका क्रमाक १३ पत्र २३ तक तथा प्रशास्ति के लिए क्रमाक २६२।

868 देखो स० गुटका क्रमाक १६ पत्र ३४ तक।

869 देखा स० गुटका क्रमाक २३ पत्र २७ तक तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६४।

870 देखो स० गुटका क्रमाक २३ पत्र ३४ तक तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६५।

871 देखो स० गुटका क्रमाक १३ पत्र १६ तक, तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६२।

871A देखो स० गुटका क्रमाक १४ पत्र १२ तक।

872 देखो सं० गुटका क्रमाक १६ पत्र ६ तक, तथा प्रशस्ति के लिए ८२०।

873 देखो स० गुटका क्रमाक २० पत्र १० तक।

874 देखो स० गुटका क्रमाक २७ पत्र ७ तक, तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६७।

875 देखो स० गुटका क्रमाक ३१ पत्र १२ तक।

876 देखो स० गुटका क्रमाक ३२ पत्र ६७ तक तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६६।

877 देखो स० गुटका क्रमाक ३४ पत्र २७ तक तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक ३००।

878 देखो स० गुटका क्रमाक ३६ पत्र ८ तक। लिपिकाल ज्येष्ठवदि ५ शुक्रवार स० १६५४ लेखक पन्नालाल श्रावक पालममध्ये।

879-85 देवशास्त्रगुरुपूजा

Opening ॐ जय जय नमोस्तु। णमो अरिहंताण णमो सिद्धाण
Closing जे तपसूरा ... झाइया।

886 देवशास्त्रगुरुपूजा बृहत

Opening उदकचन्दनतन्दुलपुष्पक ... नाथमहं यजे॥
Closing ते साधु मम उर बसो हरो हमारी पीर॥८॥

887 धर्मचक्रपूजा

Opening त्रिदलरसदलतद्वहिर्बीजयुग्मतद्वच्चे वान्तराले।
शकलशशिभिव
Closing : निर्दोषो वृषविद श्रीमत्पदार्थं नत॥

देखो—जि० र० को० पृ० १८६
आ० सू०, पृ० ७५
रा० सू० III, पृ० ३०८

888 धर्मचक्रपूजा

देखो स० गुटका क्रमाक १४ पत्र ४२ पर।

889 धाराविधान

Opening : दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटि बहुधाभिसिंचेत ॥
Closing इष्टं मनोरथशतरवि भव्यपुसा त्रिभुवनकपति जिने द्रम् ।७।

890 ध्वजारोपणविधि

Opening श्रीपति सत्वमोशान परब्रह्माणमादरात ।
नत्वाहत प्रवक्ष्यामि तत्प्रतिष्ठापनक्रमम् ॥१॥
Closing आयुर्विपुलता पातु कीर्ति पातु महद्यश ।
पुत्रपौत्रश्वयवद्धिश्च ध्वजदेवप्रसादत ॥८॥

विशेष अत मे दिक्पालो का चाट बना है जिसमे नाम निवास, आयुध, वण वाहन, ध्वजावण आदि का विवरण है।

देखो—जि० र० को० पृ० ११६

891 ध्वजारोपणविधि

Opening देखा क्रमाक ८९०।
Closing चतुथस्थानपय त बलिमेव समाचरेत।
त्रिकालेशवन पूजा घोषणो सहितक्रम ॥३॥

892 द्वादशव्रतपूजा (द्वादशव्रतमडलोद्यापन पूजा)

Opening शतेन्द्रदेवेन्द्रप्रपूजिताघ्रय स्वकातिसनर्जित भानुमूतय ।
पश्यति ये लोकत्रय भवन्तु श्रियश्चतुर्विंशतितीर्थनाथा ॥
Closing इदमषभजिने द्रोऽष्टकस्य भाषाष्टकमयमनघय पापवीलिप्रणष्ट ।
स इह तिलकलक्ष्मी श्रीशावाशेनि सघे विकिर्तिततम
वक्त्र भोजदेवे द्र वन्दे ।

विशेष इन दोनो सूचियो मे "द्वादश व्रत मडलोद्यापन पूजा" भ० देवेन्द्र कार्ति कृत लिखा है।

देखो—जिन रत्न कोष पृ० १८४
आ० सू० पृ० ७२
रा० सू० II, पृ० ३११
रा० सू० III, पृ० २०१, २०५

893 गणधरपूजा

देखो सं० गुटका क्रमाक २ पत्र १७६ तक ।

894 गणधरवलयपूजा

Opening . ॐ ह्रीं अर्हं तत कोषाषटव यत्रध्मात षटदले श्रयादि षटक मत्रमूल
मध्यमागेश षट्के सख्यासव्य श्रीगणशा सुमत्रम ।१।
गणभद्वलयेनापि वेष्टित मत्र रूपिणा ।
सस्थापयामि यत्रेश सवशात्यै गणेशिना ।।२।।

Closing मुक्ता साद्रा लभन्ते विलय विरहित श्रीप्रभाचन्द्रतुल्या ।।२६।।

895 देखो स० गुटका क्रमाक १४ पत्र ५२ तक ।

896 देखो सं० गुटका क्रमाक १४ पत्र १६२ तक ।

897 गणधरवलयपूजा

Colophon श्रीकुन्दादिसुपदमनन्दिजतियो देवेन्द्रकीर्तिगु रु
विद्यानन्दि मुमल्लभूषणरमाचन्द्रादि कीर्तिजति ।

क्रयाच्छ्रीगणदेवरुद्रविपुल मालासुधीसागर ।।

898 गणकुटीपूजा सटीक

Opening जय जय ४ नमोस्तु ४ णमो अरहताण ।

Closing : पचाचाराचरणसचिवाचारणैकक्रियाणा ।
स्फारस्फूजद्गुण चितयश शुभ्रताशाधराणाम ।
तत्सूरीणामिति विधि कृताराधना पादपद्मा
श्रेयोऽस्मभ्य ददतु परमानदनिष्पदसाद्रम ।
टीका व्यधायि सुभचन्द्रसुसूरिणोऽय
श्रीहेमचन्द्र यतिणाग्रहतोभ्रत ।
श्रीपाल बस्ति लिखिता प्रथम सुहेल-
माशाधराष्टक च यस्य यशोमयस्य ।।

Colophon श्री कृष्नगढ़ मध्ये चैत्रवदि ६ सं १७१७ मध्ये लिखितम् ।

विशेष इस टीका में आशाधर शब्द पर्वत, लोकपाल, दिग्गज, राजा लेखक, आचार्य आदि अनेक अर्थो मे प्रयुक्त हुआ है ।

899 गणधरपूजाष्टक

देखो स गुटका क्रमाक १० पत्र २१६ तक ।

900 घण्टाकरणमन्त्र

Opening सवव्याधि विनाशक अक्षरपक्तिभि ।
Closing : सुद्ध होय जप कर तीन काल करै ई का जाप ।

901 गोम्मटसारपूजा

Colophon भाषा रचि टोडरमल शुद्ध मुनि रायमल्ल जनी विशुद्ध ।
जपुर जसिह महीपराय, तह जिनधर्मी जन बहुत भाय ।
यह बनी विशद जयमाल अन, पहिर परमानद भव्य वन ।
विशेष पूजा पस्कृत मे नथा जयमाल हिन्दी मे है ।

902 गोम्मटसारपूजा

देखो क्रमाक ५५ गुटका पत्र १८ तक ।

903-6 गुरुपूजा

Opening सपूजयामि पूज्यस्य गरिष्ठम्य महात्मन ।१।
Closing ए मुनिवर स्वामी नमो सिरनामी दुइकर जोरि विनौं करी ।
दिव्या अति उजली देह सु निरमली कहै जिणदास सुभक्ति करी ।।
विशेष अष्टक सस्कृत मे और जयमाल हिन्दी मे है ।

907 देखो म० गुटका क्रमाक २७ पत्र १६ तक, तथा सदभ के लिए क्रमाक ६०३ ।

908 देखो स० गुटका क्रमाक ३६ पत्र ३ तक । लिपिकाल अश्विन वदी ६ स० १६७८ ।

909 देखो स० गुटका क्रमाक १६ पत्र ४१ तक ।

910 गुर्वावलीपूजा (महर्षिपयु पासनविधान)

देखो स० गुटका क्रमाक १० पत्र २०४ तक ।

911 हेमभारी जिनपूजाष्टक

देखो स० गुटका क्रमाक १० पत्र २१३ तक ।

912 होमपूजा तृतीय

देखो स० गुटका क्रमाक १४ पत्र ८१ तक ।

913 होमपूजा वास्तुपूजा

देखो सं० गुटका क्रमांक १४ पत्र ७३ ।

914 होमविधि

Opening चतुरस्त्र विमानस्य चतुर्दिकस्थोऽग्निकुण्डत ।
होम समाचरेद्रात्रौ शान्तिशुद्धे मिष्ठानके ॥१॥

Closing वार सब देवते ममानि लखित कृत्वा स्वस्थान गच्छ गच्छ ।

915-16 इन्द्रध्वजपूजा

Openieg मकलमत्रकथामततप्यक सकलचारुचरित्रप्रभासितम् ।
सकल मोहमहातम घातक सकलकालकलासप्रविनाशकम ॥१॥

Closing पद्मप्रभुपदमसमानमूर्तो पदमालयसर्जितभुक्तिभागी ।
स मगल भव्यजनाय कुर्यौ सरोजचिह्नाकितविश्वदृष्टि ॥७॥

Colophon लिखित पाण्डे लालचदेन मार्गशीर्ष शुक्ला १३ स० १८८२ चन्द्र वासरे ।

देखो—जि० र० को, पृ० ४०
रा० सू० II, पृ० ३०६, ५७
रा० सू० III, पृ० ५० १६८
प्रा० सू०, पृ० १७१

917 जलयात्रा-विधान

देखो म० गुटका क्र० २ पत्र १६३ तक ।

918-22 जम्बूद्वीप-पूजा

Opening श्रीसर्वज्ञप्रभोनाथ जिनाधीश विदावर ।
दीनबाधव विज्ञप्ति श्रृणु मे जगता पते ॥

Closing निमापयति भव्या जिनार्चा भावभक्तित ।
मुक्ता श्रियं तेत्र गच्छन्ति श्रियमव्ययम् ॥८॥

Colophon श्रीसर्वज्ञ मुखारबिंद जनिता जाताबुधे पारगो,
लक्ष्मीसागर सद्गुरु विजयते यस्य प्रसादाद्दलम ।
मूढोऽहं गुणवानभूदतितरा सर्वज्ञपूजापर
त बुद्धया रचिता मयात्र जिनदासाख्येन पूजापरा ॥१॥
श्रीमल्लक्ष्मीसागरस्यांघ्रियुग्म नत्वा स्वच्चर्तितत्प्रसादान्मयोक्ता ।
जम्बूद्वीपस्य मेर्वादिक्षेत्रस्थानां देवाधीशं चैत्यालयानाम् ॥२॥

सदगोत्रायुसरुपकीर्ति विभवा सर्वार्थससाधिनी। सात्वतपुत्र कलत्र
द्रव्यैकवतमाने जिनेशिना फाल्गुने
शुक्लपंचम्या पूजेय रचिता मया।

विशेष — यह प्रशस्ति कमाक ६१६ पर अकित प्रति मे है।

देखो—रा० सू० II, पृ० ५६
रा० सू० III, पृ० १६३

923 आवारक विधि (अकुरारोपण-विधि)

देखो स० गुटका कमाक २ पत्र १६२ तक।

924 जिनगुणसम्पत्ति पूजा

Opening : त व दे सवगोपेश गोपित गोपित परम।
दशनि दपण यस्य त्रैलोक्य द्विगुणायते ॥१॥

Closing : मोह चिक्वणतायस्तु ते नैवात्र न यस्यति।
तत श्रुतय प्रणीत हि ते सन्तु शरण तव ॥

देखो—जि० र० को, पृ० १३५
रा० सू० III पृ० २०५ ३०८

925 जिनगुणसम्पत्ति पूजा

Opening : जिनवरगुण लब्धि जायते देहभाजा,
सकलगुणनिधाना जन्ममृत्वादि दूरात।

Closing : व्रतविधिशुभभावात भावसुध्यायतोऽत्र
निखिलगुणनिधान त श्रुत स्थापयामि ॥
इति त्वरित फलौघ ज्ञानपारैकहेतु
हततमघनपाप रेन्द्रम।
विपुलजलधि मत्र काति दीप्य दिनेन्द्र
अपगतवरतम चास्तु सिध्यै वृत तत् ॥८॥

926 देखो स० गुटका कमाक ५ पत्र २७७ तक। लिपिकाल जेठवदि ५ सवत १८१४।

227 देखो स गुटका कमाक २२ पत्र २५ तक।

928 जिनपूजाष्टक

Opening   णमो अरिहताण ।

Closing   पुष्पांजलिप्रदानेन सुकृता सन्तु शान्तये ।

विशेष   पाण्डुलिपि के पृष्ठ ६०१ पर छटी पंक्ति मे 'व्याप्ताशाधरमश्नुते च यशो ' से इसका कर्ता प० आशाधर के होने का अनुमान लगाया गया है ।

929 जिनेन्द्रक्षेत्रपालपूजा

देखो स० गुटका क्रमाक ४ पत्र ८ तक । 'कुर्या श्रीजिनदत्तभक्तिषु मनो मे सर्वदा सवथा ।'

930 कलशारोहण-विधि

Opening   नतामरशिरोरत्नप्रभाप्रोतनखत्विषे ।
नमो जिनाय दुर्वारमारवीरमदच्छिदे ॥१॥

Closing :   पत्रनिर्यासिकल्लोल कुष्ट जातेश्च सत्फलम् ।
भद्रमुस्ताप च पत्रपालश्रीगन्धमित्यपि ॥२॥

931 कलिकुण्ड पार्श्वनाथ पूजा

देखो स० गुटका न० १० पत्र २३२ तक ।

932 कलिकुण्ड पार्श्वनाथ-पूजा

सदभ के लिए देखो क्रमाक ९३३

933 कलिकुण्ड पार्श्वनाथ-पूजा

Opening   सिद्ध विशुद्ध महमहानिवेश श्री कलिकुण्डयन्त्रम ॥१॥

Closing   वरखगिन्दु उवसग्गुतिहम् ॥११॥

934 देखो सख्या गुटका क्रमाक २ पत्र १३३ तक ।

935 देखो स० गुटका क्रमाक ११ पत्र ६ तक, तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २८२ ।

936 देखो स० गुटका क्रमांक १३ पत्र ६३ तक ।

937 देखो स० गुटका क्रमाक १४ पत्र १९१ तक ।

938 देखो स० गुटका क्रमांक ३९ पत्र १२ तक ।

939 कलिकुण्ड-पूजा

Opening ॐकार ब्रह्मरुद्ध सुपरिकलित वज्ररेखाष्टमित्र
Closing वरखगिवु भाषतयह गारुडियहंपिहइ विसुजहा उवसग्गतहां।
भव्वयणहणणाणन्दि जिणु सुमरह उवसग्गुतहाँ ॥

940 कलिकुण्डपूजा

Opening : ह्रूँकार ब्रह्मरुद्र विद्याविनासे प्रयुक्ते ॥१॥
Closing श्रीमत्पार्श्वनाथ जिनेश्वरो भयहरो कुर्यात्सता मगलम् ॥११॥

941 कलिकुण्डपूजा

देखो क्रमाक ९३९।

942 कलिकुण्डपूजा

Opening देखो क्रमाक ९३९।
Closing प्रतिदिन महमीडये वर्धमानाद्धिसिद्धिम ॥१०॥

943-44 कलिकुण्डपूजा

Opening देखो क्रमाक ९३९।
Closing कलिलदमनदक्ष वद्धमानाद्धि मिद्धिम ॥

945 कनककुम्भपूजाष्टक

देखो म० गुटका क्रमाक १० पत्र २११ तक। जयमाल नही है।

946 कमदहनपूजा

Opening सकलकर्मविमुक्ताय सिद्धाय परिमेष्ठिने।
नमोऽनेका तरूपाय सिद्धाय शिवशर्म्मणे ॥
Closing श्रब्दे वक्रमिकेऽङ्कवाणनवभूमाने च पौषेऽलिखत,
पक्षे श्वेततरे तिथौ वसुमिते भौमे शुभे वासरे।
इन्द्रप्रस्थपुरे गुणाणनकवि कर्मारिनाशाय व,
सगीताणवसेतु लब्धवर्णावलि ॥
Colophon : दोषहीनो मुन्नालाल क्वचित् स्थानेऽपि शोधित
पौष सुदि ८ स १९५९ भौमवासरे।

देखो—जि० र० को०, पृ० ७१
आ० सू०, पृ० २२

947 48 कर्मदहनपूजा

Opening	देखो क्रमांक ९४६।
Closing	आनन्दाद्भुतधन्यधामनगरीमापद्मपद्माकरी, चर्चा सा भवना मित्रस्य जयतु श्रेयस्करीश्करी॥

949 कर्मदहनपूजा

देखो क्रमांक ९४६।

Colophon	महेससुसकरनिजरमत्र मुनी द्र सुभच द्रमुभास्कर यत्र। पराच्युन सभव शीत सुबाध।

950 देखो स० गुटका क्रमांक ७ पत्र ७१ तक।

951 देखो स० गुटका क्र० ५ पत्र २६३ तक। अखिलनर सुपूज्य सोमचन्द्राग्निसेव्यम ।

952 देखो स० गुटका क्र० १५ पत्र १६५ तक। प्रशस्ति के लिए देखो क्रमांक २६३।

953 देखो स० गुटका क्रमांक २१ पत्र १०७ तक।

954 कर्मक्षपण-पूजा

देखो स० गुटका क्रमांक १४ पत्र १७६ तक।

955 क्षमावणी पूजा

Opening	देवश्रुतगुरू नत्वा स्नापयित्वा महोत्सवे। ततश्चाष्टविधा पूजा कुर्यादव्रतविधायक॥
Closing	वन्दे तत्त्रिनय त्रि या परिणत यन्निश्चयानिश्चितम्

956 क्षमावणी पूजा

Opening :	देखो क्रमांक ९५५।
Closing	दोष न गहियो कोय विचारिक सोधियो।१।
विशेष	अन्त मे मल्लकवि कृत जयमाल है।

957 क्षमावणी पूजा

Opening	अत्रादौ श्रीमति पूजा कर्त्तव्या॥१॥
Closing	कहै मल्ल सरधा करो मुकतश्रीफल होय॥

958 क्षमावणी पूजा

Openin देखो क्रमाक ९५५ ।
Closing दृष्टवा सदबुद्धिको समुल्लिखतवाश्चतन्नरेन्द्रो मुनि। ॥३८॥

959 क्षमावणी पूजा

Opening देखो क्रमाक ९५५ ।
Closing तच्चारित्रमनन्त यन्निश्चयान्निश्चितम ॥

960 क्षमावणी पूजा

देखो म० गुटका क्रमाक १८ पत्र ६१ तक, तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २९३ ।

Colophon य प्राग्वाट सुवशजो विगणणा न मीलसल्लोचन
नक्ष्मीक्ष्मानलतोलितातुलयशा श्रीभावदेवाजस ।
तस्यार्थित्ववशगतस्यसुमति श्रीब्रह्मसेनादिनम
दृष्टवा सदबुधको समुल्लिखितवाश्चतन्नरेन्द्रो मुनि ॥६॥

961 क्षमावणी पूजा

देखो म गुटका क्रमाक २५ पत्र ४६ तक तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २९५ ।

962 क्षमावणी पूजा

देखो स० गुटका क्रमाक ३१ पत्र ६८ तक ।

Colophon भावदेवमहाभक्त्या प्रेरितेन मनीषिणा ।
श्रणिकेन नरेन्द्रेण रत्नत्रयविधि कृत ॥८॥

963 क्षेत्रपाल पूजा

Opening मध्या पदमस्य पूर्वस्मिन भागे कुमुन्मगिका ।
दक्षिणे अजनाभिश्च पश्चिमेश्चामरा विधि ॥

Closing : जिनवाणि नमेपिणु जिनसुमरेपि सुण धरि धरि थापो भावधरे ।
दुनिहिनासय पावपणासयो विल्हारय पइ शिद्धवरो ॥

क्षेत्रपाल पूजा

964 देखो क्रमाक ९६२ । पाठ-भद बहुत है ।

965 देखो स० गुटका क्रमाक ४ पत्र २२ तक ।

966 देखो सं० गुटका क्रमांक ४ पत्र ८ तक।

967 देखो स० गुटका क्रमाक २२ पत्र २२ तक।

968 क्षीरजलनिधिपूजा (पार्श्वनाथ-पूजा)

देखो स० गुटका क्रमाक १० पत्र २२१ तक। जयमाल भी है।

969 क्षीरोधानीपूजाष्टक

दखा स० गुटका क्रमाक १० पत्र २१४ तक।

970 लघु अभिषेकपाठ पूजा

Opening श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवन्द्य
Closing देखा क्रमाक ७७७

971-72 लघु अनन्तव्रत-विधि

Opening तस्यादौ प्रथमो तावन स्तुति प्रारब्धा। अनन्तान त ससार दुःख ज्वलनवारिदम् ॥
Closing सूय नागनरेन्द्रशक्रसुखद दद्युरनन्तव्रतम ॥

973 मलिनवस्त्राष्टक

देखो स० गुटका क्रमाक १० पत्र २१० तक।

974 मेघमालाव्रतोद्यापन

Opening श्रीमन्नादिजिन नत्वा नताताादिगणाधिप।
तपश्रीमेघमालाख्य स्थापनादि करोम्यहम ॥१॥
Closing पुत्रपौत्रादिक वर्द्धि धनधान्यादिक बहु।
मेघामालाव्रतपूजा कुर्यात्सिप्राप्नुयान्न ॥

देखो—जि० र० को० पृ० ३१३
आ० सू०, पृ० ११४
रा० सू० III पृ० २०४

975 मेघमाला-व्रतोद्यापन

Opening देखो क्रमाक ९९३।
Closing : पुत्रपौत्रा व्रतारोपाल्लभंति प्राणिन सदा।

Colophon लिखायत प० चम्पाराम निष्यकृत महात्मा स्यमुराम सवाईजयनगरे स १८६३।

976 मुक्तावली-व्रतोद्यापन

Opening वीर प्रणम्य जिनबुद्धिलवानुराग मुक्ताव्रतवरस्य सुखाकर च ॥
Closing रामराज्यपरमाकरो गुणनिधि सव कलाकौशलम ॥

देखो— रा० सू० III पृ० २०६
जि० र० को, पृ० ३१०

न दीसघगुर्वावली

977 देखो स० गुटका क्रमाक ७ पत्र १०६ तक तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६० ।

978 देखो स० गुटका क्रमाक ८ पत्र १५ तक ।

979 देखो स० गुटका क्रमाक २६ पत्र १३८ तक ।

980-83 नन्दीश्वरपक्तिपूजा

Opening मध्ये मडपमानिखेद्धरनरे नादीश्वर मडल
नर्चे पचभिरानन गुणगरु शक्रस्मनास्मस्मत ।
Closing आयुजयकरी स्वकामितकरी सौख्यसपत्करी
वत्तोद्यनकरी सता शुभकरना देगाहनामह्नणा ॥८६॥

देखो—जि० र० को पृ० २००

984 न दीश्वर-पूजा

देखो स गुटका क्रमाक २७ पृष्ठ ३० तक तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६७ ।

985 नन्दीश्वर पूजा

Opening तीर्थोदक मणिसुवणघटपुनीतै भुवनाधिपति जिनेन्द्रम ॥
Closing नवकोडि सयापण वीमा वन्दे ॥२०॥

986 नन्दीश्वर पूजा

Opening । नन्दीश्वराऽष्टमो द्वीपो द्विपचाशज्जिनालया ।
अकोतम जिनबिम्बं शतै अष्ट पूजयेत् ॥

Closing वाञ्छित पूरये नणा महितसल्लिप्रघानक ।
अनादिकमसयात छन्नक शगाकवत ।।

विशेष रचना अन्यत्र अनुपलब्ध है ।

987 नदीश्वरव्रतोद्यापन

Opening प्रणम्य श्रीजिनाधीश मवज्ञ मवपूजितम ।
वीतराग जगनोऽत्र वमचक्रप्रवद्धकम ।।१।।

Closing यावन्ति जिनचत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये ।
तावन्ति सतत भक्त्या त्रि परीत्य नमाम्यहम ।।१।।

Colophon लिखित दयाचन्द वासी जनगर हाल वासी दिल्लीमध्ये लिख्यायत ज जमल नेही चत्र सुदी ७ स० १८८१ ।

988 नदीश्वरोद्यापनविधि (अष्टाह्निका व्रतोद्यापन)

Opening श्रीनाभेय जिन नौमि विश्वमागल्यहेतव ।
कमचक्रातिग सिद्ध वधमान जिनोत्तमम ।।

Closing अस्ति श्रीकाष्ठासघो मुनिजनवन्दीस्तत्राभून्मुनीन्द्रो
नाम्ना श्रीभीमसेनस्तदनुक्रमत श्रीभूषणस्तार्किक ।
विद्वद्व दशिरामणी यतिपति श्रीचन्द्रकीर्तिमहा
स्तत्पट्टाचल भास्करा विजयते श्रीराजकीर्ति सुधी ।२।
तत्पादाबुजसेवको गणनिधि सवज्ञभक्तोऽस्ति यो
नाम्ना ज्ञानपयोनिधिततः स्वलित वरणीविदग्धा गणी ।
तेनेद जिनपूजन भवहर नन्दीश्वरस्योदभुतम
सद्धर्माय श्रीवरस्य पत्ताय सतत भूयात्सता सिद्धये ।३।

Colophon ब्रह्मश्रीपतिवचने श्रीवीरजानगरे चन्द्रनाथचत्यालये ज्ञानावरणीकमक्षयाथ लिखित शास्त्र आषाढ सुदी १३ रवौ स० १७५२ ।

विशेष प्रशस्ति के अनुसार इसके रचनाकार ज्ञानसागर प्रतीत होते है, जि० र० को० मे ऐसी कोई रचना नही है । 'भट्टारक सप्रदाय' (२९६ पृ०) के अनुसार ज्ञानसागर राजकीर्ति के शिष्य थे ।

देखो—जि० र० को० पृ० २००
भट्टारक सप्रदाय, पृ० २९६
ज० ग्र० प्र० स० I प्रस्तावना, पृ० ४१

989 नवग्रह-पूजा

Opening । ग्रहा सशष्टयेयुष्मान् आयात सपरिच्छदा ।
अत्रोपविशते तावद्या यजे प्रत्यकमादरात् ।।

Closing तिलशालि यव प्रसत्रिनीता ग्ता प्लुतसमिदिभरथाग्नि ॥

देखो—जि० र० को०, पृ० २०६
रा० सू०, पृ० २६२

990 नवग्रह पूजा

देखो म० गुटका क्रमाक १४ पत्र ६७ तक।

991 नेमिनाथ-पूजाष्टक

देखो स० गुटका क्रमाक १० पत्र २१६ तक।

992 न्हवन विधि

देखो म० गुटका क्रमाक १३ पत्र ६० तक, प्रशस्ति के लिए क्र० २६२।

993-1002 निर्वाण-पूजा

Opening ऊ जय ३ नमोस्तु ३ णमो अरिहताण
Closing : महियल सतिछइ पयडियाय सिरि उन्य किति गुणि वदियाय।
इय तित्थकर निछइ पुण पवित्तय पढ पवियाणथ विमल परे।
निहि पावय णासन दुरिम विनासइ मगल सयत पहुति थरे॥

1003 पदमावती-पूजा

Opening : श्रीपाश्वनाथजिननायक शामन पुण्य लक्ष्मी॥
Closing आह्वान नव पग्मेश्वरी॥३२॥

पदमावती-पूजा

1004 देखो म० गुटका क्रमाक ८ पत्र ८ तक।

1005 देखो स० गुटका क्रमाक २८ पत्र १७३ के बाद।

1006 पल्यविधान व्रतोद्यापन

Openieg प्रणिपत्य जिनेशान जगदानन्दायिन।
ब्रुवे पल्यविधरिज्या मनोमलजलावली॥
Closing व्रतमणिमयहार षप्टशुद्धाष्टमोरु
तवलमणिविभास कीर्तिकात्यानितारम्।
प्रगुणगुणनिवद्ध रत्ननदिप्रसिद्ध
निजदृढ कुक्लेम मुक्तिकातानुरक्ता॥३३॥

गुणकगेह जिनमीज्यदेहमनतकीर्ति ललितादिकीर्ति
मुक्ताहृणाया चकार स रत्ननदी भवता श्रिये व ।

Colophon आ० श्री रामकीर्ति शिष्य प० श्रीहर्षकल्याणाभ्या बूदीस्थ सावडा गोत्रिय साधुजटु नाम्ना लेख्य दत्तम पल्यविधानोद्यापनम । चैत्रसुदी ६ स० स० १७११ ।

देखो—आ० सू०, पृ० ६३
रा० सू० II, पृ० ६२, ६३
जि० र० को०, पृ० २४०

1007 पल्यविधानोद्यापन

Opening भक्त्या जिनेन्द्र जितमोह नत्वा प्रवक्ष्ये विधिवत्प्रबुद्धान ।
उद्यापन श्रीपतितोयमस्यम भवानलपोनिष्ट सुभानसगान ।१।

Closing उद्यापन पल्यविधाननाम्ना कृष्णाख्य वर्ण्याग्रहत सुचारु ।
व्यधारि सिद्ध शुभचन्द्रदेव भूयात्सुधर्मार्थमिद जनानाम ॥

नोट पाडवपुराण मे भी इस रचना का उल्लेख है। इसका अपर नाम पल्यव्रतोद्यापन भी है।

देखो—रा० सू० II ३१४
रा० सू०, पृ० ६३
जि० र० को०, पृ० २४०

1008-9 पचकल्याणक पूजा

Opening वृषभाय नमस्तुभ्य श्रीजिनाय नमो नम ।
सभवाय कप्पकाय नम सुमतये नम ॥

Closing श्रीमूलसघऽजनिकुदकुद श्रीपद्मनदि त्वकलकदेव ।
श्रीपूज्यपादापरसोमदेव ते मा सुश्रीगुरव दिशतु ।
श्रीमद्देवेन्द्रकीर्ति श्री विमलमतिधरा पापसतापहारी ।
विद्यादनी मुनीन्द्रो गुणगणनिलयो मल्लिभूषो यतीन्द्र ।
लक्ष्मीचन्द्रो गणेन्द्र सुजिन गुणपटु पचवादीभसिह ।
श्रीमल्लोके प्रसिद्धोभयविधुमुनी य सवकल्याणकारी ।२।
तत्पट्टेऽभयनन्दि शास्त्रकुशल प्रख्यातकीर्तिरभूत
पचाचारविचारपालणपर सज्जैनलोके बभू ।
तच्छिष्योजिनभावनाग्रणरत ससारभीरु सुधी
श्रीमत्पचविचारतीर्थमहिमा चक्रे सुधीसागर ।३।
लोकाकाशगृहोत्र मे सुजिनयो जात प्रदीपस्सदा,
सद्रत्नत्रयरत्नदशनपर पापौघनिर्नाशक ।

श्रीमच्छी श्रवणोत्तमस्य तनुज प्राग्वाट वंशे भवो
हसाख्याय ततो प्रयच्छतु मना स श्री सधीसागर ।

देखो—प्रा० सू०, पृ० ८८
रा० सू० II, पृ० ३६६
रा० सू० IV, पृ० ५६

1010 पचकल्याणक-पूजा

Opening सख्यातीतानि नामानि सन्ति ते मुक्तिवल्लभ ।
तथापि कश्च नामधय स्तुव त्वा गुनिना वर ।१।

Closing चन्द्रापुरी श्रीवषभगगेहे नत्वा गुरु श्रीगुणकीर्तिसज्ञ,
श्रीसामन्तभीमसवर्णितो च तत्रे सपूज्या व्रति मेघराज ।।

1011 पचकल्याणक-पूजा

Opening सिद्ध कल्याण श्रीजिनानाम ।।

Closing श्रीकाष्ठसघऽजनि रामसेनस्तन्व वये श्रीमुनिविश्वसेन
विद्याविभूषो मुनिराट बभूव श्रीभूषणो वादी गजेन्द्रसिंह ।
तत्पट्टधारी किल चन्द्रकीर्ति सो स्यास्ति शिष्यो ननु ज्ञानबोधि
तेनेन्द्रमाकारी विधानमेतत्कल्याणकाना निजकार्यमिच्य ।।
लिखित मोतिराम ।

1012 पचकल्याणक-पूजा

Opening सिद्ध कल्याणबीज शा नये श्रीजिनानाम ।।

Closing मर्वात्मना सवदा ।।

1013 पचकल्याणक-पूजा

Opening सुखदायक । पट च । ५ । मुक्तिनारी मनोहरण ।।

Closing मोक्ष चापि दिशन्तु व जिनवरा सर्वात्मना सवदा ।।२।।

पचकल्याणक-पूजा

1014 देखो स गुटका क्रमाक १५ पत्र १२५ तक तथा प्रशस्ति के लिए क्रमाक २६३ ।

1015 देखो स० गुटका क्रमाक २५ पत्र ८४ तक ।

1016 पचमास-चतुदशी-व्रतोद्यापन

Opening सकलभुवनपूज्य वधमान जिनेद्र
सुरपतिकृतसव त प्रणम्यादरेण ।
विमलव्रतचतुदश्या शुभोद्योतन च
भविकजनसुखाथ पचमास्या प्रवक्षे ।१।

Closing कतव्य व्रतदोपन मन्युगाष्टेदुप्रमेऽदे सितौ
साभाद्रीनवमीदिने च वसवा पुर्व्यां हितस्विद्युभि ।
क्षेमे द्रादिसुकीर्नि यत्क्रमल षटपादेन ये य कृता
श कुर्या सु सुरे द्रकीर्तिगणिना भट्टारकेनावनौ ।८।

Colophon रचनाकाल भादो सुदो ६ स० १८४८ ।

देखो—आ० सू० पृ० ६०
रा० सू० II पृ० ६४
रा० सू० III पृ० २०४
जि० र० को० पृ० २६

1017 पचमास-चतुदशी-व्रतोद्यापन

देखो क्रमाक १०१६ लिपिकाल भादो सदी १३ स० १८३६ ।

1018 पचमेरु-जयमाल

देखो स० गुटका क्र० २५ पत्र १३२ तक प्रशस्ति के लिए क्र० २९५

1019 पचमेरु-पूजा

Opening आद्य सुदशनो मेरु विजयोऽचलस्तथा ।
चतुर्थो मदिरो नाम विद्यु माली च पचधा ॥

Closing वरसुगुण सयुक्ता केवलज्ञानशुभ्रा
स्थितभुवन सुकातासिद्धयानगकानाम ।
पठति सुजयमाला धमभूषनताना
स भवतु मुक्तेशो ज्ञानवानिन्द्रकीर्ति ॥

1020-21 पचमेरु-पूजा

Opening सवौषडाहूय निवेष्टिताभ्या प्रतिमा समस्त ॥

Closing भूधर प्रति नेहा करि मन एहा जयमाल भणो ॥१४॥

विशेष अष्टक सस्कृत में तथा जयमाल हिन्दी मे है ।

1022-23 पचमेरु पूजा

Opening देखो क्रमाक १०२०

Closing इयथुण विजिणसग सिव सहाई सोपावई ॥१॥

पचमेरु पूजा

1024 देख स० गुटका क्र० १५ पत्र ८१ तक, प्रशस्ति के लिए क्र० २६३

1025 देखो स० गुटका क्र० १६ पत्र ५१ तक।

1026 देखो स० गुटका क्र २५ पत्र १८२ तक, प्रशस्ति के लिए क्र० २६५

1027 देखो स० गुटका क्र० २७ पत्र २७ तक।

1028 देखो स० गुटका क्र० ३६ पत्र १८ तक।

1029 पचमी व्रतपूजा (पचमी-प्रोषधोद्यापन)

Opening श्रीमच्छनाघ्ररसनार्चितपादपदम
पद्मासन हृदि निधाय पद स्वभानाम।
यस्तस्थिवान शिवपदे कुशभाक्षतोघ
सस्थापये विधिवणयुतेऽच्युत तम ॥

Closing तीथकरा सकल लोकहितकरास्ते देवे द्रव दर्महिमासहिता गुणौघ।
वन्दावती नभशना च शना शिवानि कुव तु शुद्धवनितासुनविन्नजानि ॥
जगति सुविन्तिकीर्ति रामकीर्ते सुशिष्यो
जिनपतिपदभक्ता हषनामासुधीर।

Colophon क्वचिन उदयसुनुनेन कल्याणभूमौ
विधिरयमेवनीसा मोक्षसौख्य ददातु ।२।
भ० सुरेन्द्रकीर्ति जी को शिष्य प० चदारामेण स्वहस्तलिपिकृत मर्गसिर वदी १४ स० १८५६।

जि० र० को० पृ० २२७
रा० सू० II, पृ० ६४
रा० सू० II २०४

1030 पचमीव्रतोद्यापन

Opening देखो क्रमाक १०२६

Closing वितरित शुभमत्र पचमीप्रोषध च
शिवपदसुखमस्मि 'हष' वर्येऽपि मुक्तो।

1031 पचमीव्रतोद्यापन

Opening केवलज्ञानसभूतिर्यतो जाज यते नणा
तद्व्रत स्थापयाम्युच्चराह्वानन पुरस्सरम् ॥

Closing सवव्रताधिप मार मवसौख्यकर सताम
पचमीव्रतमेनद्व पुष्या नश्वरी श्रियम ॥

Colphoon बूदी (कोटा) नगरे आचायश्रीरामकीर्ति तच्छिष्यहृषकल्याणाभ्या पापडीवाल गोत्रिय साधु नरहरि भार्या सवीराख्यया सलेख्य दत्त पचमी व्रतोद्यापन लिख्येत जोसी पौ्कग चत्र मुदी ६ स० १७११ ।

1032 पचपरमेष्ठी-गुणमाल

देखो स० गुटका क्र० २५ पत्र १२५ तक ।

1033 पचपरमेष्ठी-पूजा

Opening कल्याणकीर्तिकमला कमनाकर स
च्चचच्चिदुज्वलमह प्रकटी कृताथम ।
उच्च निधाय हृदि वीर जिन विशुद्धये
शिष्टेष्टपचपरमेष्ठिमह प्रवक्ष्ये ॥१॥

Closing श्रीस्थूलमूलव्रजमूलसघद्रुमो बलात्कारगणोरुशाख
मरस्वतीगच्छ विचित्रपत्र प्रफुल्यता सतत साफलानि ।
श्रीमूलसघे वरनदिसघे बभूव भट्टारकधमकीर्ति
तत्पट्टपदमाबुजभानुमूर्ति मुनीशशील कविभूषणोऽभूत ।२।
पट्टे श्रीगुरु शीलभूपणविभो श्रीज्ञानभूष प्रभु
राजत्युज्ज्वलराजराजतयश स्पष्टाखिलाशागण ।
साहित्यागमतककशलसज्ज्योति पुराणस्मति
व्याख्यानप्रथितप्रनापमहिमा कारुण्यपुण्याबुधि ।३।
स्फूर्यात्प्रतापतपनप्रकटीकृताशा श्रीज्ञानभूषणपदाबुजचचु बिताले ।
कत्तव्यमित्युदयता सुयशोभिनदि सूरे सदतरुदपोकरणैकहेतु ।४।

Colophon लिखित शुभचितक दयाचदेन लिखापित लालाभखतावरसिंह जी जेठ सुदी १३ बुधवासरे स० १८७८ ।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १७२
रा० सू० II, पृ० ६४, ३१४
रा० सू० III, पृ० ५७
जि० र० को० पृ० २२५
भट्टारक सम्प्रदाय, पृ० १३२

1034 पचपरमेष्ठी-पूजा

Opening श्रीमत्परमगभीर प्रभुविभवविभूषित ।
नमामि परमात्मान तद्गुणप्राप्तये परम ।१।

Closing धर्माचार्यग्रहश्चक्रे गुणकल्याणमल्लिका ।
शुभचन्द्रेन च द्रेण सचर्या श्रीजिनेशिनाम ।

इत्याष्टापटाधिकशतकमलमडल विधाय पचगुरुगणमाला पूजा विदधात ।

देखो—रा० सू० II पृ० ६४ २१४, ३६५
रा० सू० III, पृ० २०५
ज० ग्र० प्र० स I प्रस्तावना, पृ० ३०

1035 पचपरमेष्ठी पूजा

Opening देखो क्रमाक १०३४ ।

Closing ग्मीनिधाननिनय———शुभचन्द्रम ।

1036 पचपरमेष्ठी पूजा

देखो स० गुटका क्र० १५ पत्र २०८ तक ।

1037 पचपरमेष्ठी-पूजा

देखो स० गुटका क्र० १० पत्र २२३ तक ।

1038 प्रतिमासांतचतुर्दशी व्रतोद्यापनविधि

Opening श्री वीर शिरसानम्य वक्ष्ये सक्षेपतस्तराम ।
चतुर्दस्युपवासानामष्टषष्ठिशत क्रमम ।१।

Closing पारगामी परममुनिरभू मल्लाचार्यमुख्य
श्रीविद्यानदि नाम निखिलगुणनिधि पुण्यमूर्ति प्रसिद्ध ।
तच्छिष्य सप्रधारी विबुधजनमनोहर्षदानदक्षो
दक्षोऽत्ररामनामाविधि शुभकरोत्पूजानायाविधश्च ।
जयसिह भूपस्य मत्री मुख्योऽग्रणी सताम
श्रावकस्ताराचद्राख्यस्तेनेट व्रतमुद्धतम ।२।
तदवसरमुद्दिश्य पूर्वशास्त्रानुवर्त्तित
वृत्तोद्यततमेनेन कारित पुण्यहेतवे ।३।

देखो—रा० सू० II, पृ० ६२
रा० सू० III, पृ० २०५
ज० ग्र० प्र० स० I, पृ० २७
ज० ग्र० प्र० स० I प्रस्तावना, पृ० २५, २६

1039 प्रतिमासान्त-चतुर्दशी-व्रतोद्यापनविधि

देखो क्रमाक १०३८।

विशेष क्रमाक १०३८ मे वर्णित प्रशस्ति के अतिरिक्त इस प्रति मे निम्न श्लोक अधिक है—

'अब्देद्विशू याष्टकाके (१८००) चत्रमासे सिते दले।
पचम्या चतुर्दश्या व्रतस्योद्यतन कृतम ॥

1040 प्रतिष्ठा-पाठ (सार)

Opening स्फूजत्केवलबोधमिधुविसरे यद्विदुवद भासतो
यस्य श्रीपरमेष्ठिनो जिनपतेर्नाभेयसूनोस्त्रयम।
लोकाना सकला सुभत्करुणापधर्मो द्विधो द्योतित
तस्मै श्रीमदनतचि मयकला सविभ्रतेस्ता नम ॥

Closing पूजा कर्मविधूननाय मद वेदद् प्रकृत्यस्तक्र
यत्र मडलमालिखेद्वसुदला वीते प्रथक शासाम।
सयोज्यामरनायकान शिवपदप्राप्त्यान यजेत्तगुणा-
नेव युक्ति विशारदेन पटुना कार्यो विधिभूयस।
कु दकु दाग्रशिष्येण वसुविद्वाख्यसूरिणा
निमित्त शातिनाथस्य प्रतिष्ठाया नियोगत।
श्रीदक्षिणेन कुकणनाम्नि देशे सह्याद्रिणा सगतसीम्निपूते।
श्रीरत्नभूध्रो परिदीप्तचत्य लालट्टराज्ञा विधिनोर्जित यत ॥
तत्कालमुद्दिश्य गुरोरनुज्ञामादाय कोलापुरवासि हर्षात।
तत्तोषता सलिखित प्रतिज्ञा पूत्यथमेव श्रुतसविधत्ति ॥
वसुविंदुरिति प्राहुस्तदादि गुरवोपत।
जयसेनपराख्याया न प्रमोस्तु हितषिणाम् ॥

इति कुदकुदाचाय पट्टोदयभूधरदिवामणि श्रीवसुविद्वाचायविरचित प्रतिष्ठासार पूर्तिमजीगमत्।

लिपिकाल श्रावणबदि १४ स० १९७८ मुकाम सोनीपत।

देखो—प्र० जै० सा०, पृ० १७६
जि० र० को०, पृ० २६१

1041 प्रतिष्ठा-पाठ (सार)

देखो क्रमाक १०८० ।

Colophon लिखित शकरलाल शर्मा गौड माघ वदि ३ रवौ स० १९७५ मालिक पाक्षिक उदासीन श्रावक किसनलाल जनी॥

1042 प्रतिष्ठाविधि

Opening पचमीगतिमाप नान पचकल्याण पूजितान
सिद्धान्नत्वा प्रवक्ष्येऽहम प्रतिष्ठालक्षण स्फुटम् ॥

Closing जिनप्रतिष्ठासमये समेता ग्रहम्मि लौकातिकदेवताश्च
लौकातिकदेवता पूजा ।

1043 प्रतिष्ठासारसग्रह (६ सग)

Opening सिद्ध सिद्धा तसद भाव विशुद्धज्ञानदशन ।
सिद्ध शुद्धप्रमाणास्त्रनिरस्तपरदशनम ॥

Closing छद मस्थत्वात्प्रमादाद्वा यदत्र स्खलित मम ।
सशोध्य तत सुशास्त्रज्ञा कथयतु महषय ।५४।
प० आशाधरजी ने अपने 'जिनयज्ञकल्प मे इसका उल्लेख किया है ।

देखो—जि० र० को पृ० २६१
रा० सू० II पृ० २०१ ३८६
रा० सू० III पृ० ५७
आ० सू० पृ० १९३

1044 प्रतिष्ठासारसग्रह

Colophon श्रीमूलसघ नद्याम्नाये बलात्कारगण सरस्वतीगच्छ श्रीकुदकुदाचार्यान्वये आचाय श्रीचन्द्रकीर्तिजी तच्छिष्य घासीरामजी भावसी पठनाथ चत्रसुदी प्रतिपदा बुधवासरे स० १७५९ शाके १६२४ ।

यह लिखावाका अधिकारी नदलालजी मुखारामजी की आज्ञा पाय लिखी माघ सुदी १४ स० १८७३ ।

1045 पूजासारसमुच्चय

Opening विज्ञान विमल यस्य भासते विश्वगोचरम् ।
नमस्तस्मै जिनेन्द्राय सुरेन्द्राभ्यर्चिताघ्रये ॥

Closing भट्टे श्रेणिकृताह्नतो विजयता श्रीजनपूजाक्रम
वी.सेन जिनसेन सूरिणा पूज्यपादगुणभद्रसूरिणा ।
इन्द्रनदिगुरुणकसंधिना जैन पूजनविधि प्रभाषिता
इत्याद्य कविभि विनेयगुरुभि प्रोक्त जिनार्चा विधि
श्रुत्वाभ्यच्य विचित्रमन्त्र सतत धृत्वा मयाप्यर्जित ।
भव्यश्रेणिहिताप्तिहेतुरतुल समन्त्रसवेष्टित ॥
पूजासारसमुच्चयो विजयता श्रीजनपूजाक्रम ।

इति विद्यानुवादोपासकाध्ययनजिनसहिता चरणानुयोगाश्रय पूजा सारसमुच्यय समाप्त ।

देखो—जि र० को० पृ० २५५
श्रा० सू० पृ० १०३

1046 पूजाविधान

Opening ॐ नम सिद्धेभ्य जय३ नमोस्तु३ (णमोकार मत्र)
Closing जे तपसूरा मईभाईया

1047-48 पुष्पांजली पूजा

Opening जिनान सस्थापयाम्यत्र ध्यानन्नपि विधानत ।
सुदशनभवा पुष्पाजलि व्रतविशुद्धये ।
Closing विधुवसुरसचन्द्रार्के प्रयुक्तकृताचसि
दिनमसि मासे रत्नचन्द्रो चतुर्थ्याम ।
धवलभगुसुवार सागवागडपुरेत्र
जिनवषगगनलादि श्रावकादेशनोच्येत ॥१॥

देखो—जि० र० को० पृ० २५४

1049 देखो स० गुटका क्र० २, पत्र १३९ तक। 'कयण कित्ति सइ सुइ लहह ।"

1050 देखो स० गुटका क्र० २५, पत्र ४० तक। अपरनाम सुदशन पूजा।

1051 देखो स० गुटका क्र० २३, पत्र ७० तक।

1052 रत्नकुडिका-मन्त्र

देखो संस्कृत गुटका क्र० २, पत्र ११८ तक।

1053 रत्नत्रयपूजा

Opening श्रीवर्द्धमानमानम्य गौतमादींश्च सद्गुरून् ।
रत्नत्रयविधिं वक्ष्ये यथाम्नाय विमुक्तये ॥

Closing अद्य पयाग्गय विग्येष्पिण अदुणाणह् अ चणु ।
एम करेप्पिण तहि पढमऊ वजण् पूजिअ ।

1054 56 रत्नत्रयपूजा

Opening देखो क्रमाक १०५३

Closing येना योन विरोधि वर विमजा शक्रादि पूजा श्रिया
सौधर्माधिपचक्रिपूवकपद श्रीमुक्तिशर्मामृतम ।
पाय पायमपायदूरमचला भव्यश्रिय प्राप्यते
तद्वच्चारुचरित्ररत्नमनिश प्रद्योतता चेतसि ॥

देखो—जि० र० को०, ३२७
आ० सू० पृ० १२१
रा० सू० III पृ० ५९ २०६ ३०८

1057 रत्नत्रयपूजा

Opening देखो क्रमाक १०५३ ।

Closing जो मरणग परग्इ नहइ अप वइ मिद्ध विलासिणि अणुसरई ॥

1058 रत्नत्रयपूजा

Opening देखो क्रमाक १०५३ ।

Closing भवेत्तेषा विघ्नातप बुधमहाचद्र मदशो
जिने द्राब्जाना ससतिमयघने मारुतसम ॥२॥

1059 63 रत्नत्रयपूजा

Opening श्रीमत स मति नत्वा श्रीमत सुगुरूनपि ।
श्रीमदागमत श्रीमान वक्ष्ये रत्नत्रयार्चनम ॥

Closing कलय कलय वत्त पश्य पश्य स्वरूप
कुरु कुरु पुरुषार्थ निवतानदहेतो ।३।

1064 देखो स० गटका क्र० १० पत्र १७३ तक। तीनो अंगो की पृथक पृथक पूजाएँ हैं।

1065 देखो स० गुटका क्र० १३ पत्र ३८, प्रशस्ति के लिए क्र० २६२ ।

1066 देखो स० गुटका क्र० १५ पत्र ५० प्रशस्ति के लिए क्र० २६३ ।

1067 देखो स० गुटका क्र० १७ पत्र २६ ।

1068 देखो स० गुटका क्र० २३ पत्र ६६ प्रशस्ति के लिए क्र० २६४ ।

1069 देखो स० गुटका क्र० २३ पत्र ६८ प्रशस्ति के लिए क्र० २६४ ।

1070 देखो स० गुटका क्र० २५ पत्र २१ ।

1071 देखो स० गुटका क्र० २७ पत्र २५ प्रशस्ति के लिए क्र० २६७ ।

1072 देखो स० गुटका क्र० २७ पत्र ८५, प्रशस्ति के लिए क्र० २६७ ।

1073 देखो स० गुटका क्र० ३१ पत्र ७८ ।

1074 देखो स० गुटका क्र० ३४ पत्र ३८ ।

1075 ऋषिमण्डल पूजा

Opening योजित्वा निजकर्मककशरिपून कवत्यमाभजिरे
दिव्येन ध्वनिनात्रयोध्यमगिन चक्रम्यमाण जगत ।

Closing प्राप्ता निर्वृति पक्षयामनितरा म यातिभामादिगा
यत्ये तान वृषभादिकान जिनवरा वीरान्तसातानहम ।
(णमोकार मंत्र) चत्तारि सरण पव्वज्जामि ।

Colophon लिखित रत्नाकरमिर श्रावणसुदी ६ सोमवार स० १८६० ।

देखो—जि० र० को० पृ० ५६
र० सू०, पृ० ३०७

1076 77 ऋषिमण्डलपूजा

देखो स० गुटका क्र० २ पत्र १५५ तथा गुटका क्र० १४ पत्र १८७ ।

1078 सहस्रगुणितपूजा

Opening प्रणम्य श्रीजिनाधीश लब्धि सामस्त्यसयुत ।
श्रीसिद्धचक्रस्य संप्रस्यार्चा सहस्रगुण ब्रुवे ॥

Closing प्रविलतर सुपूज्यं सोमचंद्रादिसेव्यम्
भजति सिवसुखात विसृज्याखिनाथम ॥१०॥

देखो—रा० सू० II, पृ० ६२, २०८
रा० सू० II पृ० ६६ ३१६
आ० सू० १३८

1079 सहस्रनामपूजा बृहत

Opening — सूत्राश्रपूजिन पूज्य सिद्धशुद्ध निरजनम
ज मदाग्र विनाशाय नौमि प्रारब्ध सिद्धये ।१।

Closing — श्रीमूलसंघ वरभारतीये गच्छे बलात्कारगणेऽतिरम्ये
आसीत्सुदेवेन्द्रयशोमुनी द्र सद्धर्मधारी मुनि धर्मचन्द्र ।
पट्टे तदीये मुनिधर्मभूष सत्वोपदेशी वरधर्ममूर्ति
शून्यत्रयैकांक सुनाम इज्यां चकार देवेन्द्र सुकीर्तिपूजा ॥
विशालकीर्ति वरपुण्यमूर्ति शतेन्द्र संचर्चितपादपद्म
श्रीमिज्जिनेन्द्र सुसहस्रनामा जिनेश्वर पातु शुभलोकान्
जगदाह्लादे वने रम्ये श्रीपट्टादि जिनालये
धमभूषश्चकारेज्या सोधयतु पडिता ।

देखो—जि० र० को० पृ० ४२६
आ० सू० पृ० २१२
रा० सू० II पृ० ६६
रा० सू० III २०८

1080 सहस्रनामपूजा बृहत

Opening — सूत्राश्रपूजित पूज्य ... प्रारब्ध सिद्धये ॥
Closing — यो दधत्त्रिजगत्राज्य

1081 सकलीकरणविधान

Opening — इ द्रश्चत्या त्र गच्छ ... कम चरेदिदम ।
Closing — अनेन सिद्धार्थाना ... दिक्ष क्षिपेन ॥

1082 देखो स० गुटका क्र० २ पत्र १६४ तक ।

1083 देखो स० गुटका क्र० २३ पत्र ५४, तथा प्रशस्ति के लिए २६४ ।

1084 समवसरण पाठ

Opening — नमस्कृत्यार्हतसिद्धान सूरीन सत्यपाठकान्,
मुनीन विन्ध केवलज्ञानकल्याणार्चा शुभाप्तये ।१।

Closing जिनसिद्धमहाचार्योपाध्यायसाधवा, सदा,
कुर्वन्तु सस्तुता श्रीमद्रूपचन्द्राय मंगले ।४८।

विशेष पूर्ण प्रशस्ति के लिए ज० ग्र० प्र० स० ७ पृ० १५८ देखो। रचना काल सं० १६६२ लिपीकृत सवाई जयपुर मध्ये जनाश्रमण चुलबीरामेण कार्तिक सुदी ७ सं० १८६१।

दखो—रा० सू० I, पृ० ६८
जि० र० का० पृ० ४१६
ज० ग्र० प्र० स० I, १५८

1085 समवसरणपाठ

Opening प्रणमामि महावीरं पंचकल्याननायकम ।
केवलज्ञानसाम्राज्य लोकालोकप्रकाशकम ॥

Closing व्याजास्तुतार्वा गुणवीतराग ज्ञानात्कमाम्राज्यविकासमान ।
श्रीकोमला कीर्ति विकासमान रत्नेषरत्नाकर चक्रकीर्ति ।४।

दखो – जि० र० का०, पृ० ४१६

1086 समवशरण पाठ

११०६ दखो स० गुटका न० ६ पत्र १६८ तक।

1087 सामायिक पाठ भाषा सटीक

Opening पडिक्कमामि सने इरिया वहियार विराहणाए।
अण्णगुत्त अइगमणे णिगमणे णणु गमणे चक्कमणे

Closing सामायिक करवा वालो पुरुष श्री भगवानक आगे भावनाभाव छ।

Colophon लिखित भट्टारक श्री जगत्कीर्ति तदाम्नाए खडेलान्वये सोनीगोत्र साह ठाकुरसी तत्पुत्रसाहि अखराज तदभार्या दोदाखमद तृतीय लाडी तत्पुत्र चि० गजरमलजी इद पुस्तक घटापित। आचार्यश्री चारुकीर्ति तत्सिष्य प० गगाराम वाचनार्थ पल्यव्रत विधान निमित्त टुक (टौंक रियासत) मध्ये विस्तेता शांतिनाथजिनालये।

विशेष यह रचना प्राकृत गद्य मे है। टीका हिंदी पद्य के साथ गुजराती पद्य मे भी है।

1088 सकटहरण पार्श्वनाथाष्टक

देखो म० गुटका न० ८ पत्र १६।

1089 शान्तिचक्रपूजा

Opening

अर्हद्बीजमनाहत च हृदये श्रीशान्तिमन्त्रावृत,
तद्बाह्ये ष्टदल जयादिसहित द्वयग्टाब्जपत्र बहि ।
तत्पत्र स्वरमग्यरा स्वग्युता विद्यादिदेवी लिखि
त्व पूजयती द्र त जिनपद मपानि यद्वांछितम ॥

Closing

नि शग यन्नाथरत्नमनिभि प्राज्यरुदारग्गि,
स्तोत्रयस्य गणाणमस्य रग्भि पारो न सप्राप्यत।
भव्याभोरुहनदि केनरतिभक्त्या मयापि श्रुत
मोऽस्मान पातु निरजनो जिनपति श्रीशान्तिनाथ सदा।

देखो—जि० र० को, पृ ३७६।

1090 शान्तिचक्रपूजा

देखा स० गुटका न० २ पत्र ४६ तक। शेष सदर्भ के लिए देखो क्र० १०८८।

1091 94 शान्तिधारापाठ

Opening (णमोकारमत्र) ऊ ह्रीं श्रीं क्लीं——

Closing अज्ञान नव जानामि क्षमस्व परमेश्वर।४।

Colophon : यह पुस्तक ला० बनवारीलाल जी हापुड मुलाजिम इम्पीरियल बक दिल्ली ने कार्तिक सुदी २ स० १९८३ मे भेट की।

1095 शान्तिपाठ

Opening

शिरसा प्रणमामि ॥
सवगणाय तु यन्तु शान्ति मह्यमपर पठते परमा च ॥८॥

Closing दु खखओ सरयण ॥

1096 98 शान्तिपाठ

Opening शाति जिन अम्बुजनेत्रम ॥

Closing सगयगमण होऊ मज्झ ॥

1099 देखा स० गुटका क्र० ३४ पत्र ३८ तक प्रशस्ति के लिए क्र० ३००।

1100 देखा स० गुटका क्र० ३१ पत्र ८५ तक।

1101 देखो स० गुटका क्र० २७ पत्र १३ तक, प्रशस्ति के लिए क्र० २९७ ।

1102 देखो स० गुटका क्र० १३ पत्र ६१ तक, प्रशस्ति के लिए क्र० २९२ ।

1103-7 शान्तिविसर्जन-पाठ

सभी संदर्भों के लिए देखो क्र० १०९६ ।

1108 सदर्भ के लिए देखो क्र० १०९६ । लिपिकाल—लिखत लसकर महाराज जनकोजी राव सिंध छावनी नगीच गुआलियर के आसौज वदी ११ संवत १८९३ ।

1109-15 सदर्भ के लिए देखो क्र० १०९६ ।

1116 देखो स० गुटका क्र० १० पत्र १६२ तक ।

1117 देखो स० गुटका क्र० १६ पत्र ४८ तक ।

1118 देखो स० गुटका क्र० ३९ पत्र १५ तक ।

1119 सप्तपरमस्थानव्रत-पूजा

Opening श्रीमतमानम्य जिनेन्द्रवीर विश्वामराभ्यर्च्चितपादपीठम ।
श्रीगौतमेश गणिन नमामि समस्तसत्वाभयदानदक्षम ।१।

Closing देया सु शाश्वती लक्ष्मी विश्वाभ्युदयसाधका ।
तीर्थनाथास्त्विमे सर्वे भारतक्षत्रमडना ॥

देखो—रा० सू० III, पृ० २०५

1120 सप्तर्षिपूजा

देखो स० गुटका क्र० १५ पत्र १४५, प्रशस्ति के लिए क्र० २९३ ।

1121 देखो स० गुटका क्र० २५ पत्र ९०, प्रशस्ति के लिए क्र० २९५ ।

1122 देखो स० गुटका क्र० ३९ पत्र १४ ।

1123 सरस्वतीपूजा (श्रुतस्कन्धपूजा)

देखो स० गुटका क्र० ६ पत्र २ पर ।

1124 सरस्वतीपूजा

Opening अर्हत्सिद्धगुरुप्रपाठकमहासाधून्समाराध्य सद्
भास्यत्युत्तमपादपद्मयुगल मूर्ध्ना प्रणम्य त्रिधा ।

विद्यानन्द्यकलंकपूज्यचरणा अविध्य विद्यास्पदम
श्रीमत्स्वामि समतभद्रभवतोर्यार्चेश्रुतस्कधकम ।

Closing पूजितोऽयं श्रुतस्कधो ददातु तत्र वाछितम ।
शांतिरस्तु नृपादीना चतुर्विधगणस्य च ॥

Colophon श्रुतसागरमेत भजत समेत निखिलजगपरित शरणम । लिखत अमीरात ग्राम गाजममध्ये जेठ वदि १२ शुक्रवार स० १६७१ ।

देखो—जि० र० को० पृ० ३८६
रा० सू० II पृ० ३१७

1125-26 सरस्वतीपूजा

देखो क० ११२४ ।

1127 28 शास्त्रपूजा

Openin ज मजरामत्युभयकारण सकलदुजनजाडयनिवारणम ।१।
Closing स्तुवन्ति बहुधा स्तोत्र बहुभक्तिपरायणा
नानाभव्य मम बीम नाध्यचापि समुद्धरेत ।६।
विशेष कर्ता का नामोल्लेख नहीं है । प० परमानदजी के अनुसार इसके कर्ता मलयकीर्ति के शिष्य विजयकीर्ति है ।

1129 शास्त्रपूजा

Opening देख क्रमाक ११२७ ।
Closing जिनवाणीमस्तक नमो सदा देत है ढाक
नोट अष्टक सस्कृत मे तथा जयमाला हिन्दी मे है ।

1130-33 शास्त्रपूजा

देख क्रमाक ११२७ ।

1134 शास्त्रपूजा (श्रुतपूजा, सरस्वतीस्तवन)

Opening बाधन स्फुरिताचिताथ वलयास्तक्ष्मा विकल्पात्मना
Closing आशाधरकीर्तिरस्ति सुमहाविध सवद्य सता ।१।
विद्यायुव्वसु विक्रमरुपलितु ब्रह्मादियजद्धितु ॥

शास्त्रपूजा

1135 देखो म० गुटका क्र० १३ पत्र ५१ तक प्रशस्ति के लिए क्र० २६२ ।

1136 देखो स० गुटका क्र० १६ पत्र ७७ तक।

1137 देखो स० गुटका क्र० १६ पत्र ४२ तक।

1138 देखो स० गुटका क्र० १६ पत्र ४४ तक।

1139 देखो स० गुटका क्र० २३ पत्र ५३ तक प्रशस्ति के लिए क्र० २६४।

1140 देखो स० गुटका क्र० २५ पत्र ४६ तक प्रशस्ति के लिए क्र० २६५।

1141 देखो स० गुटका क्र० २७ पत्र १४ तक प्रशस्ति के लिए क्र० २६७।

1142 देखो स० गुटका क्र० ३१ पत्र ८४ तक।

1143 सिद्धचक्रपूजा

Opening प्रणम्य श्रीजिनाधीशं लब्धि साभये सजुतम्।
श्रीसिद्धचक्र यं तस्यार्च्या सहस्रगुण स्तुवे ॥१॥

Closing श्री धमचन्द्र सुतसिंधुचन्द्रो
विमुक्तदोषो वरधमभूषण।
देवेन्द्रकीर्ति शुभसौम्यमूर्ति
पायात्स भव्यान सनत जिनेन्द्र ॥

1144 सिद्धचक्रपूजा विधान

Opening देखो क्रमाक ११४३।

Closing ऊ विद्वीकार हरोद्ववरेफविद्वीनवाक्षरम।
मालाद्य स्यदिपीयूष बिंदु बिंदु मनाहतम ॥
इच्छ चक्रमुपास्यदिव्य वपुराह्वानादिपूव ज्वल
द्वयामानाहतमतरगमुदयत् स्व शुभतेजोमयम।
यस्योर्ध्वाहितमाद्यमत्रमधियत जप्त्वा शिवाशाधर
प्राग्मत्र विधिवज्जुहोति स यथा ध्यान फलमश्नुते ॥

देखो—जि० र० को० III पृ० ४३६
रा० सू० II पृ० ६६
आ० सू० पृ० १४२

1145 सिद्धचक्रपूजा

Opening तु विशेषद्वयार्थ तथा सिद्धचक्र ॥४॥ समन्वादि ।

Closing अत्र यस्यानुग्रहतो दुराग्रह इत्यादि सिद्धप्रवन।
ततस्तोष्ये गणधरान्नित्य सवकमक्षयोन्मुखा।

Colophon इति प्रभाचन्द्रकृता सिद्धचक्रपूजा यत्रमवलोक्य समाप्ता ।

देखो—रा० सू० II, पृ० ६६
जि० र० को III, ८३६

1146 सिद्धप्रतिष्ठा

Opening : णमो अरिहंताण ।
Closing गगाद्या अर्चिता एता आद्यातामागधा इमे ।
अध्वीशा मारय चर्णं जिनाभिषवहेतवे ।
विशेष आदि मे ब्रह्मजु न कृत अपभ्रंश 'गणधरवलयपूजा' के कुछ छद है ।

1147 सिद्धप्रतिष्ठाविधि

देखो स० गुटका १४ पत्र ११० तक ।

1148 सिद्धपूजा (भावाष्टक)

Opening निजमनोमणिभाजन अह परिपूजये ॥१॥
Closing अविचलज्ञान प्रकाशन परमसिद्ध भगवान ॥

1149 सिद्धपूजा (भावाष्टक)

Openin ऊर्ध्वाधोरयुत वरीभकण्ठीरव ॥
Closing अरिहता उयाला सिद्धा अट्ठ वसूरि छत्तीसा ।
उवझायण पणवीमा साऊ गुण अट्ठवीसाय ॥

1150-74 सिद्धपूजा

Opening ऊर्ध्वाधोरयुत वरीभकण्ठीरव ॥
Colophon असमयसमयसार सोभ्येति मुक्तिम् ॥

1175 देखो स० गुटका क्र० ६ पत्र ३६ तक ।
1176 देखो स० गुटका क्र० १० पत्र १६० तक ।
1177 देखो स० गुटका क्र० ११ पत्र ७ तक ।
1178 देखो सं० गुटका क्र० १३ पत्र २४ तक ।
1179 देखो सं० गुटका क्र० १५ पत्र २६ तक ।
1180 देखो स० गुटका क्र० १६ पत्र ६२ तक ।

1181 देखो स० गुटका क्र० १८ पत्र १० तक।

1182 देखो स० गुटका क्र० १९ पत्र ३७ तक।

1183 देखो स० गुटका क्र० २३ पत्र ३९ तक।

1184 देखो स० गुटका क्र० २७ पत्र १३ तक।

1185 देखो स० गुटका क्र० २९ पत्र १३९ तक।

1186 देखो स० गुटका क्र० ३१ पत्र १८ तक।

1187 देखो स० गुटका क्र० ३४ पत्र ३४ तक।

1188 देखो स० गुटका क्र० ३९ पत्र १० तक।

1189 सिद्धपूजा जयमाल

Opening सिद्धान सिद्धमहोदयान गुणगणाम्भोधि

Colophon जो पढ पढाव णियमइ भावई
सो णर पावइ सिद्ध सुहम ॥११॥

1190 सिद्धपूजाविधान

Opening प्रक्षीण मणिव मलेस्वमहसि स्वार्थप्रकाशात्मकै ।१।

Closing शश्वच्चित्राशाश्वर रूपातीतसमाधितवपु पाव पतद्दुकृत,
व्रतस्योभयमृदया युक्तसुकृत सिद्ध तृतीये भवे ॥१०॥

देखो—रा० सू० IV पृ० ५५४ ७१६

1191 शीतलगगापूजाष्टक

देखो स० गुटका क्र० १० पत्र २१५ तक।

1192 स्नपनाष्टौ (अभिषेकपूजा)

देखो स० गुटका क्र० १० पत्र २०८ तक।

1193 स्नपनविधि

Opening सौगंधसगतमधुव्रतझकृतेन सवर्ण्यमानमिव गधमनिद्यमादौ।
आरोपयामि विबुधेश्वरव दवद्य पादारविंदमभिवद्य जिनोत्तमानाम्॥

Closing निमल निर्मलोकार पवित्र पापनाशनम्।
जिनगधोदक वंदे दुष्टकर्मविनाशनम्॥

1194 स्नपनविधि

Opening श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य मयाभ्यधायि ।१।
Closing निर्मल निमलीकरण कर्माष्टकविनाशनम् ।२०।

1195-201 षोडशकारण-पूजा

Opening ऐन्द्र पद प्राप्य पर प्रमोद धन्यात्मतामात्मनि मन्यमान ।
दृक्शुद्धिमुख्यानि जिने द्र लक्ष्म्या महाम्यहृ षोडशकारणानि ।
Closing ए सोलह कारण कम्मवियारण जे धरति छपसीन अग।
ते दिवि अमरेसर भुवनेसर सिद्धिवरगन हियहि हरा ॥

1202 देखो स० गुटका क्र० २ पत्र १०७ तक ।

1203 देखो स० गुटका क्र० १० पत्र १६६ तक ।

1204 देखो स० गुटका क्र० १३ पत्र ३२ तक ।

1205 देखो स० गुटका क्र० १४ पत्र १४ तक ।

1206 देखो स० गुटका क्र० १५ पत्र ३३ तक ।

1207 देखो स० गुटका क्र० १६ पत्र ६४ तक ।

1208 देखो स० गुटका क्र० २३ पत्र ३६ तक ।

1209 देखो स० गुटका क्र० २७ पत्र १८ तक ।

1210 देखो स० गुटका क्र० २७ पत्र १०१ तक ।

1211 देखो स० गुटका क्र० २७ पत्र १० तक ।

1212 देखो स० गुटका क्र० ३१ पत्र २१ तक ।

1213 देखो स० गुटका क्र० ३४ पत्र ३६ तक ।

1214 षोडशकारण व्रतोद्यापन

Opening श्रीमतधरणीश्वर सन्मणि ॥
Closing त्रिसंध्येऽभूत् • लभतेऽन्तके ।५।
Colophon श्रीरामकीर्ति शिष्याभ्यां पं० हर्षकल्याणाभ्यां श्रीजूटनाम्ना सलेख्य वर्त श्रावका योगिणा षोडशकारणव्रतोद्यापनार्थ बूंदी मध्ये । लक्ष्यत जोशी पुष्करसीलोरमध्येवास्तव्य फागुन सुदी १४ स० १७१० रचनाकाल मागशीष शुक्ला ७ स० १६६४ (वेदनंदरसचन्द्रवत्सरे) ।

देखो—जै० ग्र० प्र० स० ७, पृ० २७
रा० सू० II, पृ० ६७
रा० सू० III, पृ० ७०४, २०७, ३०८, ६०
जि० र० को, पृ० ४०५

1215 षोडशकारण-पूजा

देखो क्र० १२१४।

1216 शुक्लपञ्चमी-व्रतोद्यापन

Opening क घत सुमडकमोदकपायस जिनवर

Closing यस्य पादानखांशुभिर्द्योतितावज्रमौलिय ,
पायाच्छीवर्द्धमानोऽसौ भवतो भक्तितत्परान् ।

देखो—रा० सू० ४, पृ० ५४६

1217 सुरापगाष्टक

देखो गुटका न० १० पत्र २१२ तक ।

1218 स्वस्त्यन विधान

देखो स० गुटका क्र० १० पत्र २०५ तक ।

1219 तीसचौबीसी-पूजा

Opening ससार सातततपोऽहम स्वामिन शरण्यागत ।
विज्ञापयामि भोगेषु निस्पृहो भगवन्निह ।१।

Closing श्लोकस्या शोभचन्द्रे या जयोक्ति भवि समजा ।
पण्डितो वषचन्द्रेण सासनोत्सवहेतवे ।

Colophon लिखत दयाचद महात्मा लिलकवासी जैन नगर का ।

1220 तीसचौबीसी-पूजा

Opening जे० ।२१। ॐ ह्री प्रवराय। विश्वसेन सुविश्वार्थं प्रपादनपरायण ।
मचे० ।२२।

Closing । शुभचन्द्र भावशर्माभ्या जिनभक्तिराग चिर नदतु ॥

1221 त्रिंशतिचतुर्विंशतिका पूजा

देखो क्रमाक १२१९ ।

1222 त्रिशतिचतुर्विंशतिका पूजा

देखो क्र० १२१८।

1223 देखो स० गुटका क्र० ७ पत्र २३८ तक। श्लोक संख्या १५३०।

1224 देखो स० गुटका क्र० १८ पत्र १३६ तक।

1225 28 त्रिपंचाशत क्रियाव्रतोद्यापन

Opening श्रीदेवेन्द्रफणीन्द्रवन्द्यविनुतं नत्वा जिनं सन्मति
हारासारतुषारगौरतनुभ्या श्रीसारदा सारदा।

Closing भव्योऽग्रवाल सुकुलोत्पन्नपूर्णचन्द्र
श्रीराजमान्य सुमहत्तरनाथ ।।म्ना।
श्राद्धक्रियामिहविधि सदनुग्रहेण
देवेन्द्र नाम कविना विहिता श्रिये स्यात ।१।
पद्मावधारणीधरेन्द्र त्रिभव श्रीविक्रमस्वीकृत
श्राजतस भव विप्रराजबुध देवेन्द्रेण पूज्यस्य य ।
त्रिपंचाशदभि क्रियाव्रतविध पूजाक्रमोऽसौ चतुश्चत्वारिंशदिते
च षोडशदिने षोन्शशतेऽब्दे निर्मितो नदतु ।१०।

देखो—रा० सू० II, पृ० ६३ २१०, ३८८
रा० सू० III पृ० २०१ २०८
जि० र० को० II पृ० १६१
आ० सू० पृ० १६८

1229 तीर्थंकर आचार्याणाम अर्घ्याणि

देखो स० गुटका क्र० ७ पत्र १६६ तक।

1230 वर्धमानजिनपंचकल्याणक

Opening वर्धमानमहं स्तोष्ये वर्धमानमहोदयम ।
पंचकल्याण पंचभिन्न मुक्तिलक्ष्मी स्वयंवराम ।

Closing पंचकल्याणसौरंधणि स प्राप्य य सास्वत सिद्धिकम प्रयात प्रभु ।
वर्धमानो महावीर नामस्त्रिधाभक्तिवत विधत्ता समामात्मन ।२०।

देखो—जि० र० को, पृ० ३४२

1231 वसुधारामहाविद्या सटीक

Opening ॐ स सारध्यै दैनम्ग प्रतिह त्रिदिवावहे ।
वसुधारे सुधाधारे नमस्तुभ्य क्रपामहे ।।

Closing मनुयास्तुर गधवश्च लोको भगवतो भाषितमभ्यनदन्निति।
इति ग्रायवसुधाधारिणी समाप्तम्।

Colophon लिखी बा० मेहतावराय जैनी दिल्ली या कार्तिक वदी ३ बुधवासरे स० १६५८ वी० ति० स० २४२७।

देखो -जि० र० को०, पृ० ३४५

1232 वेदीप्रतिष्ठा

Opening मूहूत गिद्धौ कृतसिद्धभक्ति विलिख्य यत्र सुविनायकायन्त्रम्।
छत्रत्रय सिद्धमुनीश्वरार्द्धि श्रुतानि स स्थाप्य रचेत्सपर्याम।

Closing करकृत कुसुमनाम जलि स वितीय
धनदमणिसुरत्नानीशपूजाथ सार्थे।
त्रिकिर विकिर शीघ्र भक्तिमुदभावयित्वा
निगदतु परमाके मडपो र्वािवकारो।५।

Colophon लिखित पौष सुदी ८ वी० नि० स० २४४२।

1233 वेदीप्रतिष्ठा (मडपप्रतिष्ठा-विधान)

देखो क्रमाक १२३२।
लिपिकाल—वसाख सुदी १५ स १६७३।

1234 वेदीप्रतिष्ठा

Opening देखो क्रमाक १२३२।

Closing भास्वत भूतनमीशपूजनकृना हस्त भश स्थापित

1235 वेदीप्रतिष्ठा-पाठ

Opening कानतामममिवज्य मानयन भूपसीमधर पाश्वका मुदा।
ज्यातिरग्रपरिपूणकारक स नियोज्य स्वनिमुत्तमा क्रियात ॥

Closing इमे मत्र अधिवासनाया सर्वे उपतोगिनो भवन्ति। इति हवनमंत्रम।

विशेष पाण्डुलिपि के पृष्ठ ३१, ३२ पर विनायकयत्र और याज्ञमडल भी दिये हुए है।

1236 विदेहक्षेत्र-पूजा

देखो स गुटका क० १६ पत्र ६६ तक

1237 विदेहपूजा

Opening श्रीमज्जबूधातकीपुष्करार्धे द्वीपेषूच्चर्य विदेहा शरा स्यु।

Closing इय बीसजिणेसुर सिवपरमपय ॥

1238 विघ्नहरपार्श्वनाथाष्टक

देखो स० गुटका क्र० ८ पत्र २४ तक। स न्भ के लिए देखो भट्टारक सम्प्रदाय पृ० ५३४।

1239-45 विंशतितीर्थंकरजिन-पूजा

Opening श्रीमज्जम्बूधातकी नित्य य ।।मि ।।
Closing ह वास जिणवर पावहि परमपय ।।

1246 विंशतितीर्थंकर पूजा

देखो स गटका क्र० १० पत्र २० तक।
Colophon शिष्टे श्रीजगदादिकीर्तिगणिना भट्टारकाणा मुदा।
पूजाकारि नरेन्द्रकीर्ति सुगरो शिष्येण वादीशिना ।।

1247 विंशतितीर्थंकर पूजा

Opening श्रीम मेरु सुदर्शनादि सविधि ये स ति स ।।र्चिता ।।
Closing शिष्टे श्रीयुगादिदेवगणिना धर्मार्थकामे मुदा।
पूजाकारिसुरेश्वरा नरवरा शिष्येन वादीशिना ।।

1248 विंशतितीर्थंकर पूजा

Opening पूर्वा।र विदहषु विद्यमानजिनेश्वरा ।
स्था ययाम्यहमत्र शुद्धसम्यक्त्वहेतव ।।
Closing वद्धियछन्न् महात्मन् केनि णिरुवम्

1249 विंशतितीर्थंकर-पूजा

Opening देखो क्रमाक १२४८
Closing वतमान जिन बीस की सरन सुखदाय ।२५।

1250 विंशतितीर्थंकर-पूजा

Opening देखो क्रमाक १२४८।
Closing जो पूज ध्याव पढ पढाव ते पाव शिव परमपय ।६।

1251 विंशति तीर्थंकर-पूजा

Opening देखो क्रमाक १२४८।
Closing इम बीस जिनवर वाछित फल दीजिए।

1252-56 विंशतितीर्थंकर-पूजा

Opening देखो क्रमांक १२४८।
Closing ग ग्रीम जिणमुर परमपय ।१।

1257 विंशतितीर्थंकर-पूजा

Opening श्रीमज्जंबूधातकीपुष्करार्धद्वीपेषूच्चैर्विदेहा शगा स्यु ।
त्ना ादा विद्यमाना जिने द्रा प्रत्येक नाम्नेन ि य य ामि ।
Closing ि रमा ाम ग गुणिजा, जो हरज ाग
पढ पढाव तं पाव शिव परमपया ।६।

1258 विवाह पद्धति

Opening जय३ नमोस्तु३ णमो अरहंताण ।
Closing निध्यग्निवसुभूम्यब्दे मित्यापाढ च मासके ।
उत्तरापाम्नक्षत्र स्वभ्र ाक्ष उभऽहनि ।।
मन्तपुरीयमुहकमगजस्वगहे वाचारामेण स्वपरनिश्चयेतर
करग्रहणस्येय पुस्तिका निपीकृता ।।
Colophon त द्रकगाश्रय ाम त्रिधीगणक क्षीरस्य ित्र परिपूरणकारणाय ।
ाव वि ि शकनमन्त म यवर्ती मापूणमाभयति पूरयन्तु समथ ।।
लिपिका त आपाढ सुदी स० १८३९ उत्तरापाढ नक्षत्रे ।
विशेष वाचाराम लिपीकार प्रतीत होते है रचयिता नही ।

1259 विविधपूजाघ्याणि

देखो स० गटका नं० २० पत्र ३९ तक ।

1260 योगेन्द्र-पूजा

Opening श्रीमदगणीन्द्रहिमवन्मुखकदराया
वाग्मीष्मसूसरति चारुविनिगतायाम् ।
स्नातानेकविधि धम्म तरंगिकाया
योगिश्वारानघरत्नधरान्समर्चे ।१।
Closing तस्म यत्तपसा प्रमाणकरणे ब्रह्माणभाग्त्यपि ।१।

1261 श्रीशान्तिकविधान-पूजा

Opening सौग याहूत षटपदाब्जकुसुमा प्रालबशोभास्फुर
चेतोहारि विशारिहाटकहठशृंगारसचारया ।

त्रि श्रोत श्रुति सौम्यस पन्मनव्यापारसाकारया
मत्पुण्योदक धारया जिनपते स प्नावयेप्निद्वयम ।१।

Closing

पौर पाटान्वये श्रीमान वाग्भट्ट श्रावकोत्तम ।
तत्पुत्रो वरदेवोऽभूत्प्रतिष्ठाचार्यकोविद ।१।
श्रीदित्ताख्यस्तदनुज सर्वशास्त्रविशारद ।
तत्पत्नी मानिनी ख्याता पतिव्रतविराजिता ।२।
तयोस्तु धर्मदेवाख्य पुत्र वरदनन्भव
श्रीगोगाख्यस्य विज्ञस्य दूरीकृत कलागण ।३।
तेनाकारि शुभाप्रद शान्तिकस्नानमुत्तम
पठन्तु श्रावका सर्वे शोधनीय महात्मभि ।४।

देखो—रा० सू० IV, पृ० ५४४, ४१८
जा० ग्र० प्र० स० I, पृ० १७०
जा० ग्र० प्र० स० पृ० ४८३

General Index

Abhayacandra 142
Adhayanandı 44 52 ‘8 92 106 122 146
Adhayadeva Surı 50
Abhinava Dharmabhusana 48
Akalanka Deva 28 38 46 62 64
Aksayarama 154
Amaracanda Paṇdıta 11
Amarakırtı Surı 84
Amarasımha 56
Amıtagatı Ācarya 12 20 70
Amoghavarsa 98
Amrtacanda Surı 26 29 30 32 35
Anantakırtı 3
Anantaviryacarya 50
Annama Bhaṭṭa 50
Abhayadeva Surı 50
Anubhutı swarupacarya 54
Aparajıta Surı 18
Āśadhara Paṇdıta 18 24 70 82 84 92 132 136 168

B

Badıśa 186
Bahumunı 102
Bandhusena 56 64
Bhadrabahu 60
Bhagacanda 92
Bhagıratha Paṇḍıta 60
Bhāravı 7
Bhāskaracarya 58 60
Bhatrharı 2 4 14
Bhaṭṭa Kedara 56
Bhattojı Dıxıta 54
Bhaṭṭotpala 58 60
Bhımasena 9 10
Bhudhara Dāsa 150 152
Bhupāla Kavı 70 72
Bhūpālarāja 70
Bhuvanakırtı 38
Brahmacaryajıt 4
Brahmadāsa 186
Brahmadeva 24 26
Brahma Jınadāsa 4 6 132
Brahma Krsṇadasa 6
Brahma Nemıdatta 2 8 22
Brahmasena 120

C

Cāmundarāya 18
Caṇakyacarya 48
Candrakırtı 118

D

Devacanda Surı 96
Deva Gaṇı 186
Devanandı 5 38 52 72 90 100 104
Devaprabha 30
Devasena Surı 16
Devendra Kırtı 12
Dhanañjaya Kavı
Dhanvantarı 62
Dharmabhuṣaṇa 160
Dharmacanda 38
Dharmadāsa 44
Dharmadeva Pt 188
Dharmakırtı 158
Dıvākara Pt 62
Dıxıta Devadatta 102

Dyanataraya 168

E

Ekasandhi Bhaṭṭaraka 22 134

G

Gargacarya 60
Gautama Swami 100
Gunabhadracarya 6 14 18 36 44 58
Gunabhadra Bhadanta 16
Gunabhusanacarya 18 116
Gunakirti 148
Gurudāsacārya 28

H

Hamsa 108
Haribhadra Sūri 30, 34
Haribhāsakara 56
Harinama 68
Harivijaya Suri 58
Harsakirti 14 36 152 184
Hemacandra suri 16 46 52 53 110
Hemaraja 68 20

I

Ila Bhatta 34
Indrakirti 150
Indranandi Bhattaraka 134
Indra vamadeva 44 58

J

Jagannātha Paṇdit 72
Jagatkirti 186
Jainedrabuddhi 52
Jakobi Dr 65
Jalhaṇadeva 15
Jayakesari 98
Jayasagara 92 114
Jayasenacarya 28 154
Jinadasa 6 134 136 142
Jinadatta Suri 60 136
Jñānabhusaṇa Bhaṭṭaraka 26, 28 104 152

Jñanasagara 120 150 168

K

Kalidāsa 6 10 56
Kamalakirti Bhaṭṭaraka 160
Kanakakirti 118
Kanakakuśala 88
Kaśinatha Bhaṭṭacarya 60
Kauṇḍa Bhaṭṭa 54
Keśavanandi 98 100 176 180
Keśavasena 6
Kirtisena 5
Kulabhadra 34
Kumudacandrācārya 86 88
Kundakundacārya 24, 26, 28 32, 34, 84

L

Laksmisagara 134
Lalacanda Vinodi 112 124 142
Lohat saha 132
Lohimbaraja 62

M

Madhavacarya 62
Madhavasena 12 20
Maghanandi Muni 72 78
Magha Kavi 10
Mahacandra 156
Mahakavi Haricandra 4
Mahendra 52
Maheśvara Kavi 56
Mahicanda 114 184
Mallibhusana 166
Malayakirti 104 166 168 170
Mallisena Suri 6 22 30 50 64 100
Mammaṭacarya 56
Manadeva Suri 102
Manatungacarya 64 66 68 120
Manikyanandi 48
Mathuragaccha 12
Medhavi 22
Megharaja 148
Mulagaccha 9 12
Muñjaraja Dharanareśa 13

N

Nāgacanda 110
Nadıguru 28
Nandanandın 28
Nandı Samgha 10
Narasımgha 84
Narendrakırtı Bhaṭṭaraka 72 186
Narendrasena 50 140 142 154 158
Nemıcanda 4 18 22 24 58
Nemıdatta Munı 116 168
Nıtyavıjaya 33
Nuhadasa 158

P

Padmanandı 15 26 74 88 98 104 106 112 170 172 174 176
Padmaprabha Deva 74
Padmaprabha Maladhārıdeva 24 90 92 96
Parmananda Pt 167
Paraśurama 60
Prabhacandracarya 18 26 30 38 50 88 108 110 132 170
Prathu 60
Punnaṭa Samgha 5
Pūjyapadacarya 20 30 38 44 52 58 100

R

Rajamalla Pt 24
Rājaśekhara 6
Rajasena 74
Ramabhadracarya 54
Ramabhadraśrama 54
Ramacandracarya 52
Ramacandra Mumuksu 10 98 100
Rāmakırtı 152
Raṇaraṅga sımha 18
Raṅgojı Bhaṭṭa 54
Ratanacanda Bhaṭṭāraka 12 154
Ratnakırtı 116
Ratnanandı Ācarya 2
Ratnanandı Bhaṭṭaraka 148
Ratnaprabha Sūri 50
Ravısenācarya 8
Rayamalla Bramha
Rısabhadasa 158
Rupacanda 160

S

Sadasukha Pt 64
Sadharaṇa Pt 182
Sahasrakırtı 20 44 58
Sakalabhūsaṇa 44
Sakalacandra Bhaṭṭaraka 12
Sakalakirtı Bhaṭṭaraka 4 6 7 10 12 14 16 20 24 28 34 36 58
Śalıbhadra 92
Samantabhadracarya 30 46 74 84 88 106 108
Śambhu Kavı 62
Śaṁkaracarya 88
Śantıdasa Brahma 114
Sarasvatıgaccha 12
Śasıkirtı 150
Sıddhacarya 60
Sıddhasena Dıvakara 86
Sıddhasena Gaṇı 44 58 110
Śilaṅka 16
Śıvakadasa 72
Śıvakoṭyācarva 18
Somadeva Surı 12 14 44 58
Soma 8
Somakırtı Surı 8 10 16
Somaprabhacarya 12 14 36
Somasena Bhaṭṭaraka 44 58 104
Śrıbhuṣaṇa 116 120 148 150 152 166
Śrıcanda 8
Śrideva 14
Śrıdhara 4
Śubhacandra Bhava Śarma 180 182
Subhacandra Bhaṭṭaraka 8 10 12 22 36 44 64 120 138 140
Śubhacandra Cırtı 152
Śuddhısagara 132 148
Sumatısāgara 122
Suprabhācārya 36

Surendrakirti Bhaṭṭāraka 72 150
Swami Kumara 36
Swātmarama Yogindra 58

T

Todaramala 132

U

Udayacandra 142
Udayakirti 146 148
Umaswami 38 40 42 94

V

Vadicandra Suri 6
Vadiraja Sūri 8 48 76
Vagbhaṭṭa 8 56
Vamadeva 18
Varahamihira 60
Vardhamāna 48
Vāsavasena 16
Vasunandyacarya 16 44 154
Vasuvindvacarya 154
Vibudha Śridhara 4
Vidagdha Vaidya 62
Vidyanandi 12 24 38 46 50 82
Vijayakirti 9 104 146 166 168, 170
Vimalasena 16
Viranandi 4
Virasena 74 80 82 100
Virasimgha 4 52
Viru Kavi 104 160
Viśalakirti 134
Visvabhusaṇa Bhaṭṭaraka 134 146
Viśvasena 176
Vopadeva Kavi 62

Y

Yaśah kirta 26 166
Yasonandi 152 176
Yogadeva Pandita 38
Yogi Bhaṭṭa 56
Yogindradeva 26

प्रशस्तिभाग के अन्तर्गत आये हुए सामान्य नामों की अनुक्रमणिका

अ

अकबर 45 56 69, 139

अकलंक देव 53 64 72 85 92 95 98 112 135 136, 183 198

अखराज 195

अखैराम मिश्र 86

अग्रोतका वय 38 58, 77 204

अचलदास श्रीमाल साहू 147

अजित 11

अजितदेवाचार्य 30

अजितप्रसाद 84

अजितसिंह राबराजा 127

अध्यात्मोपनिषद 37

अनन्तकीर्ति 9 183

अनुभूतिस्वरूपाचार्य 105

अनुविदितकीर्ति 114

अनोपचन्द्र 112

अनोपदे 12

अपराजित सूरि 41

अपहस्तित बत्ति 57

अभयचन्द्र 9 50 51 69

अभयनन्दी 7 102, 166 183

अभिधान चिन्तामणि 111 113

अभिनव आचार्य 95

अमरकीर्ति 113, 135 136

अमरचन्द 43

अमरसिंह 18

अमरा 18

अमरादे भार्या 18

अमरावती 112

अमीचन्द 66, 86

अमीलाल 198

अमृतचन्द्र सूरि 60 63 66

अम्बावती बाजार 76, 127

अयोतिकान्वय 45

अर्कपुर नगर 49

अर्यानी ऋषि 87

अलवर नगर 50 71

अवधूतचर्या कथन 33

अवन्ति 7

अवरंगशाह भूपाल 117

अहुनिलवाड 21

अहमदाबाद 2

आ

आगम 58

आगरा 58 123, 147

आजिभट्ट 109

आत्माराम 34

आदिनाथ चैत्यालय 74, 75, 76

आनन्दराम 70 77

आनन्द सूरि 132

आनन्दी राम 34

आपलि सघ 4

आप्तमीमांसा 97

आमेर का देहुरा 17, 124

आरत राम 66, 86

आरतीराम 70

आर्यसेन 50

आशाधर 5, 46, 53, 65 126, 171 175, 190, 198 199, 201

आशाधराष्टक 171

आसानन्द 24
आसापल्ली 88
आसाराम 37
आसासाहु 62

इ

इन्द्रकीर्ति 185
इन्द्रनन्दि 191
इन्द्रप्रस्थपुर 11 63 73, 133 145 176
इमरतीचन्द 138
इम्पीरियल बक दिल्ली 196
इष्टोपदेश टीका 53

ई

ईडर शाखा 2

उ

उगरस 22
उत्तमजी 71
उत्तमदे भार्या 18
उत्तराधिगच्छ 53 62
उदयकीर्ति 182
उदयचन्द 27 66, 96 155
उदयचन्द ऋषि 58
उदयचन्द लुहाड्या 76 137
उदय सूनु 186
उधा साहु 18
उमा स्वामी 27 43 85 166
उरगपुर 9

ऊ

ऊर्जयन्त 127

ऋ

ऋषि राजश्री 39

ए

एकचन्द 125
एक सघि 64

औ

औरंगाबाद 27

क

कणाद 100
कनककीर्ति (कणय कित्ति) 22 74 162 191
कनक कुशल 139
कनक विमलशील 114
कमलमधुर कीर्ति 114
कमलविजय 139
कमलसागर 14
करण छीहल 46
करमचन्द साहु 18
करुणाष्टक 59
करौलिक नगर 47
कर्ण नृपति 43
कर्णाटकी वृत्ति 49 50
कर्णाटदेश 51
कल्पवल्ली नगर 17
कल्याण 53
कल्याण कीर्ति 22, 69 113
कल्याण दास साहु 12
कल्याणदे भार्या 12
कल्याण मित्र 36
कल्याण भूमि 186 187 202
कल्याणसागर ब्रह्म 69
कल्लोल पण्डित 97
कसोदास पण्डित 162
कस्तूरविजय पण्डित 27
काकापुर 69
कादपुरा 77
कामचण्डालीकल्प 67
कामदेव 42
कामस्थान 136
कामालपुरा 30
कारजानगर 181
कायरजकपुर 113
कालिदास 108

कालूराम 5
कालूराम महात्मा 67
काल्हा साहू 46
किसनलाल जैन पाक्षिक 110
कीर्तिसागर 14
कुकुदपुत्र 101
कुन्दकुन्दाचार्य 24 72, 135, 183
कुमारपाल भूपाल 37 90
कुमारसेन मण्डलाचार्य 45
कुमुदचन्द्र 9 113 137
कुरण देश 189
कुरावर ग्राम 90
कुरुजांगल 45
कुलचन्द्रही भार्या 58
कुलभद्र 77
कुसुमपुर 95
कृष्णगढ़ 171
कृष्णजिष्णु 15
कृष्ण नृप 7
कृष्णदास ब्रह्म 17
कृष्ण वर्णी 183
केशव ब्रह्म 2
केशवम 112
केशव वर्णी 50
केशव विधि 119
केशवसेन आचार्य 15
केसर्या श्राविका 93
कोडोहडा 61
कोद्री भार्या 46
कोलापुर वासी 189
कोल्हा 46
कौजू 62
क्वरसेनाम्नाय 24
क्तव्ला 71
क्षमणक 18
क्षुतसागर 22
क्षेमकीर्ति 24
क्षमेन्द्र 185
क्षेमेन्द्र (तृतीय) 35
क्षेमेन्द्र कीर्ति 127

ख

खंडेलवाल सरावगी 94
खंडेलान्वय 12, 62, 97 195
खरतरगच्छ 44, 69, 93 101
खिमचर सर्वाई 46
खुशालचन्द 12 74 24
खुशालचन्द ऋषि 76
खुशाल वध 62
खुरवास पण्डित 25
खेतपाण्डे 58 59
खेमचन्द भट्टारक 49
खेमसी 46
खो (खो) हरीनगर 84

ग

गगवश 50
गगाराम पण्डित 195
गजनायक मुनीन्द्र 53
गढ़मन 62
गणधरवलय पूजा 200
गनेमला लाला 58
गन्धमादन पर्वत 121
गन्धहस्ति महाभाष्य 130
गन्धारवासी 83
गर्ग गोत्र 58 69
गांधी धरण्य 83
गाँधी भोजा 83
गाधी वर्धमान 83
गाल्हा साहू 62
गिरधारीलाल 8 35, 63 64 70 90 92 94 109 119, 120 131, 134
गीतासागर पण्डित 95
गुणकीर्ति भट्टारक 2 6 45 184
गुणचन्द्राचार्य 49, 51, 160
गुलिया 15

गुणनन्दी 7 32
गुणभद्र सूरि 32, 45, 132 191
गुणभूषण 42, 43
गुणस्थानक 50
गुणार्णव कवि 176
गुमानीराम महात्मा 7 86
गुलझारीमल श्रावक 120
गुलाबचन्द 31 102
गूजरमल 38 185
गूजर साह 62
गोकुलचन्द 34, 83, 103
गोगा 208
गो—दे भार्या 62
गोधा के देहुरा 125
गोधा गोत्र 91, 94
गोधा साह 18
गोपाचल दुर्ग 6
गोपाल 86
गोपाल मिश्र 35
गोम्मट 50
गोम्मटसार 56
गोलशृ गारवंश 11
गोलालारान्वय 36
गोविन्द मिश्र 161
गोविन्द ब्रह्मचारी 113
गोविन्द सुत ब्राह्मण 46
गौड सघीय 34
गौतम 51
गौरसेन 30
ग्वालियर 197

घ

घटकपर 18
घासीराम 190
घोलयाणी पन्था 45

च

चंचलराम 31, 78
चतुरभुज 38
चन्दाराम 186
चन्द्रकीर्ति भट्टारक 18 31 75, 111, 171 181 184, 190
चन्द्रदेव 166
चन्द्रनन्दि 41
चन्द्रप्रभालय 25 31 81, 135 181
चन्द्रमुनि 19
चन्द्रापुरी 184
चम्पाराम पण्डित 159, 180
चम्पालाल 82 123
चम्पावती 8
चावण दे भार्या 62
चांदू प्राड गोत्र 62
चामुण्डराय 43 50 88
चारित्ररत्नचन्द्र 29
चारुकीर्ति 195
चालुक्य वंश 21
चित्रकूट 51
चुन्नीलाल कुन्दीया 86
चुन्नीराम 195
चूहडमल बिलाला 74
चेलासाह 62
चौबीस ठाणा 112
चौहाण वंश 104

छ

छजुजी 122
छठाम देश 49
छत्रपति 49
छपरौली 32
छाजू पांडे 11, 58, 153
छाबडा गोत्र 53 202

ज

जगतसिंह सवाई 76
जगत्कीर्ति 25 195 206
जगत्भूषण 36

जगन्नाथ 114, 128
जगन्नाथवादी 91
जजु पांडे प्रतिष्ठा भार्या 48
जटुसाधु 183
जनकोजि राव महाराज 197
जम्बू स्वामी 51
जयकेसरी 46
जयनगर 2, 23, 53, 88, 91, 92 172
जयरामदास श्वेताम्बर 77 84
जयसिंह राजा 21, 172, 188
जयसेन 189
जलमार्ग यज्ञाभिधान नगर 87
जाटू साहु 58
जालाका 25
जिणदासही भार्या 58
जिणासा साहु 113
जिनचन्द्र 18, 28, 46, 54, 62, 64, 101
जिनदत्त 121, 175
जिनदास 13, 55, 151 172 173
जिनपूजा वचक 59
जिनप्रभ सूरि 69
जिनयज्ञ कल्प 190
जिनरत्न सूरि 93
जिनवर्धन सूरि 93, 154
जिन सहाय 153
जिनसेन 43
जिनसेन वाग्मट्टी 134
जिनसेनाचार्य 6 10, 39, 50, 51, 53, 134, 135, 191
जिनहंस गणि 75
जिनेन्द्रकल्याणाभ्युदय 52
जिनेन्द्र चन्द्र 86
जिहानाबाद 48
जीजी आर्यिका 145
जीवण ऋषि 35
जीवन मुखराय 67
जुगल किशोर मुख्तार 67
जुवणादे भार्या 18
जैकोबी डॉ० 123, 137
जै जैमल नेही 181
जैन नगर 181, 203
जैन श्रमण तुलसीबीराम 41
जैनेन्द्र व्याकरण 102, 103
जैसिंहपुरा 48, 80, 93
जैसिंह मिर्जा 4, 5
जोक साहु 62
जोधराज 12 124
जोधराज गोदिका 128
जोधराज दीवान 37, 69
जोधासाह 62
जोसी पोष्कर 187
जौहरी गोधा 91
जौहरी लाल 94
ज्ञानकीर्ति भट्टारक वर्द्धमानाचार्य 49
ज्ञानदीपिका 46
ज्ञानभूषण भट्टारक 2, 14, 49, 50 61 75, 78, 154 162 187
ज्ञानसागर 187
ज्ञानसिंह गणि 70
ज्वालामालिनी कल्प 67

ट

टोंक 195
टोडरमल 22 172

ठ

ठकुरापुत्र 58
ठटीराम श्रावकलाल 167
ठाकुरसी साहु 195

ड

डगिहा गोत्र 37
डूकणही भार्या 58
डूंगरसी राजा 6
डूजा पुत्र 58
डेरतराम साहु 5

त

तक्षकपुर 92, 96
तपागच्छ 111
तपोगण 75 114, 139
तवसिद 21
तात्पर्य वृत्ति 57
ताराचन्द श्रावक 188
तिलकाके भार्या 12
तिलोक चन्द 12
तुकोगज उदासीन आश्रम 114
तुलाराम 125
त्रिभुवनकीर्ति 2
त्रिलोकेन्द्रकीर्ति 68
त्रैविद्यचक्रवर्ती 51
त्रैलोक्यकीर्ति 41 42

द

दक्षिण देश 27 164
दयाचन्द पाण्डे 48, 56 68 69 70 81 89 94, 88, 106 110, 165 181, 187, 203
दयापाल महामुनि 96
दयाराज पंडित 135
दरबारीमल 68
दरबारीलाल 52
दलपत ऋषि 21
दशरथ 10
दसोरा 86
दामोदर साहू 1
दासू ऋषि 22
दिल्ली 20, 44 66 67 70 95 161 162 181, 205
द्विज 86
द्विसंधान काव्य 112
दीवगांव 37
दीपचन्द साधु 34 58, 94
दीर्घपुर 69
दीवान रायचन्द सिंघई 88, 92
दीवान स्योजीराम 76
दुनीचन्द 21
दुर्गदेव 115
दुर्ग 87
देवकी कीर्ति 28
देवगिरि नगर 164
देवचन्द 145
देवदान वस्ता 12
देवनन्दि 10, 125
देवपल्ली 75
देवप्रभ 67
देवसी सेठ्ठी 75
देवसेन भट्टारक 45
देवेन्द्र 170, 194, 204
देवेन्द्रकीर्ति 3, 5, 9, 11, 12, 18, 27, 83, 171, 183 199
दोदासमवे 195
दौलतराम दीवाण 6, 66

ध

धनजी 70
धनजय कवि 11, 154, 155, 172
धन्ना ऋषि 161
धन्यकुमारचरित्र III 9
धन्वतरि 18
धरमा साहू 18
धरम पंडित 98
धर्मकीर्ति भट्टारक 187
धर्मचन्द्र भट्टारक 9, 51, 11
धर्मदास 58, 93
धर्मदास लाला 161
धर्मदेव 208
धर्मभूषण यति 9, 95, 194, 19
धर्मसेन भट्टारक 24, 45
धर्मामृत 65
धर्मेन्द्र 10
धवल 112
धवला 60
धारानगरी 19, 45,
धीराघर 123

धूलाणा 111
धूसिराई धूपसिंघ 127

न

नगराज 74
नन्दलाल 190
नन्दिगणि 41
नन्दितट 35
नन्दि संघ 21
नन्लकडपुरी 15
नन्नराज 74
नयचन्द्र पण्डित 84
नया मन्दिर 82
नरपति 75
नरसिंह 38 77
नरहरि साधु 187
नरेन्द्र 163, 178
नरेन्द्रकीर्ति 12 74, 92 206
नरेन्द्रपुरी श्रीचरण 105
नवरत्नसाह 71
नवरंगाबाद 27
नागकुमार चरित्र 67
नागचन्द्र 154
नागनन्दि 41
नागपुरीय 171
नागपुरीय पूज 75
नागराज 25
नामदेवी 42
नाममाला 10
नायकडे 75
नारायणदास 84 85
नाल्हा 46
निकुंभग्राम 116
निगमोद्बोध 15
निघट्टु 112
नित्यानन्द 109
नीवाहेडा ग्राम 154
नृपतिविक्रम 81
नृसिंह प्रिय 101
नेमिचन्द्र 49, 50, 87 157
नेमिचन्द्र गणि 46
नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती 45, 50
नेमिजिनचरित्र 18
नेमिजिनालय 12, 92
नेमिदत्त 3
नेमिदास साहू 123, 147
नेमिदेव साधु 34, 77
नेमिसेन 164
नेमी 42, 43, 127
नैगम श्रीविशालगच्छ 41, 42
न्यायमीमांसा 95, 98

प

पंकजनन्दी 156
पक्ति स० सुरिजन 98
पक्ति स० पद्मा 98
पच संग्रह 50
पचाननगर जिनालय 162
पटनाधिप बैजल 104
पट्टन 17
पट्टणा नगर 70
पठवलीया गोत्र 173
पडित गोत्र 46
पदकौमुदी व्याख्या 11
पद्मतिलक मिश्र 15
पदारथ साहू 18
पद्मनन्दि भट्टारक (पउमनन्दि) 1, 10, 11 18
25, 27, 46, 49, 51, 54 57, 58, 59,
62 69, 75 83, 90 113, 135 150,
152 166 171 183
पद्मनाभ नृपति 8
पद्मप्रभ 19
पद्मप्रभदेव 129, 140
पद्मावत ज्ञाति 125
पद्मावती पुरवाल 151
पद्मालय 173
पन्नालाल जोधा 114
पन्नालाल श्रावक 169

परमा ऋषि 24
परमानन्द पंडित 69 172
परसराम 84
परिदीर्घ चैत्य 189
परीक्षामुख 98
पल्लीवालान्वय 37, 69, 116
पाटनके भार्या 62
पाल्हीवनी 123
पाण्डवपुराण 53
पावरीवास 123
पानीपतनगर 84
पापड़ीवाल गोत्रिय 187
पारस पांडे 59
पार्श्वनाथ चरित्र 8
पार्श्वनाथ चैत्यालय 7 51, 127 164
पालमनगर 56 120 157, 169, 198
पालमनाथ हवेली 161
पी० एल० जैन 67
पीका भार्या 11
पीपापुर 22
पुन्नाटसंघ 6
पुष्पदन्त 111
पुरपाटवंश 42
पूनमल्ल 15
पुष्कर जोशी 202
पुहती बाई 83
पूज्यपाद 73 85, 87, 112 113, 135, 183
191
पूर्णचन्द 204
पूजिबुजी ऋषि 139
पेरोजा कोटे 58
पोरपाटान्वय 208
प्यारेलाल 91, 94
प्रताप 78
प्रतापसिंह 25
प्रतिष्ठासार संग्रह 64
प्रद्युम्न मिश्र 117
प्रभा 67
प्रभाचन्द्र पंडित 93
प्रभाचन्द्र भट्टारक 3, 4 14 18, 54, 62, 85,
171, 200
प्रभेन्दु 10, 40, 51 60, 66 68 72
प्रमाण परीक्षा 91
प्रमाणनयतत्त्वलोकालंकार 100
प्रवचन सेन 19
प्रश्नोत्तर श्रावकाचार 48
प्रश्नोत्तरोपासकाचार 48
प्रहीण काल 32
प्रागवाट मोहाका 80
प्राग्वाट 178
प्राग्वाटान्वय 101
प्राग्वाट 184
प्रेमचन्द्र 122
प्रेमपण्डित 94

फ

फलचन्द्र 78
फागई ग्राम 43
फागन 56

ब

बख्तावर सिंह 1, 52, 68, 193
बन्धुसेन 110 121
बलदेव सूरि 181
बलराम 7
बल्देव 21
बसवापुरी 185
बहुरा गोत्र 147
बालकृष्ण 27
बालकृष्ण जैन 129
बालचन्द 39
बाला साह 18
बुद्धकेशी 57
बुर्हानपुरनगर 58
बूंदी (कोटा) 183, 187 202
बैनाडा गोत्र 20
बोरवास 28
ब्रह्मकल्याण सागर 69

ब्रह्मसेन 80
ब्रह्मचारीश्वर 15
ब्रह्मवक्षा 75
ब्रह्मवैवर्तपुराण 117
ब्रह्माणी,मतिवचन 181
ब्रह्मसेन 163 178
ब्रह्मार्जुन 200
ब्राह्मण शालिगराम श्रीमाल 41

भ

भक्तावर सिंह 187
भगवानदत्त मिश्र 167
भगवानदास सिंह 20, 63, 90 119
भगवानदास लाला 135
भगीरथ 116
भतहरि 5
भद्रबाहु 135
भयाग्निजीवक 51
भरणमल गोत्र 38
भल्ल कवि 177
भल्ला साहु 147
भवानी बाई 28
भव्यकुमुदचन्द्रिका 46
भावदास मुनि 54
भट्टोजी दीक्षित 107
भट्टोत्पल 114 117
भातनारद 75
भानदेव 150
भानसिंह सुत 20
भानुकीर्ति 45
भानुतिलक 69
भानुपुर 68
भानु मूर्ति 90
भानुसिंधु 58
भारतवर्ष 51
भावदेव 53, 54, 178
भावशर्मा 203
भावसेन भट्टारक 45
भास्कराचार्य 115
भास्विन् 86
भीका पुत्र 58
भीका (या) रामसि 17, 58
भीमसुवर्ण 184
भीमसेन 24 35, 181
भीमा 2
भुवनकीर्ति भट्टारक 49, 61, 62, 75, 78
भुसावर नगर 20
भूधर 185
भूपालकवि 125 126
भूपालराज 126
भूषणसार 107
भृगुकच्छ 12
भैरवपद्मावती कल्प 67
भैरवपाससे 119
भोजदेव 19 45 170
भोपाल मिश्र 8

म

मक्खन मिश्र 163
मगधाधिप 17
मगतकूल (ष) 62
मगल 17
मतिसागर 9 21, 85 96 111
मदनपुर 207
मदन सवत 35
मधुराजी 13
मधूकनगर 14
मनसुख्याल 116
मनसुखदे 12
मनसा ऋषि 73, 76
मनसा राम 12
मम्मट सुभाषु 107
मलयकीर्ति 45 198
मल्लिभूपाल 51
मल्लिभूषण भट्टारक 4 49, 72, 73, 135 171, 183
मल्लिराज मुनि 53
मल्लिषेण भट्टारक 67, 69, 83, 99

महूड़ भार्या 46
महम्मद पातिसाह 50
महाचन्द 192
महाराज जनकोजीराव 197
महिमासागर गणि 111
महीचन्द्र पण्डित 75
महेन्द्रकीर्ति भट्टारक 12 13 24
महेश्वर कवि 111
माउण मूठौतिया 53
माघ 1
माघनन्दि 128
माणिक कोठारी 122
माणिकचन्द 56
माणिक्यचन्द्र देव भट्टारक 28
माणिक्यनन्दि 99
माधवचन्द्र त्रविद्य 88
माधव सिंह 12
मानती 208
मानसिंघ 18
मालपुरा नगर 31
मालवदेश 45
मित्तल गोत्र 123
मिहुरा ऋषि 22
मीना 32
मुकुन्द 116
मुक्तिप्रबोध 65
मुखीराम 190
मुगल पातिसाह 28
मुनिचन्द्र 51
मुनिसुव्रत चैत्यालय 45
मुन्नालाल 176
मुन्नीलाल पण्डित 39
मुरलीधर 148
मुराराम 57
मुलतानी देश 34
मुहकमगढ 207
मुहम्मद साह 73
मेदान नगरी 8
मेघकीर्ति गणि 102
मेघराज ब्रह्म 2 184
मेघविजय 65
मेवही भार्या 58
मेरठ नगर 124 131
मेलासाह 124
मेलासाह बोहित 125
मेहताब राय जैनी 205
मेहल्ल भार्या 18
मेहा 18
मोडिमपुर 2
मोतीराम साह 5, 163 184
मोहन 5 119
मोहन ऋषि 67
मौजा ऋषि 32
मौजाबाद नगर 18

य

यश कीर्ति 5 6 45 49
यशोदेव 34
यशोभिनन्दि सूरि 187
यशोमुनि 194
यशोविजय गणि 37
योगिनीदास 15
योगिनीपुर 24

र

रइधू 165
रणरगमल 50
रणरगसिंह 54
रतनचन्द पण्डित 109
रतघू (क) 21
रत्नकीर्ति 10 49 69
रत्नकीर्ति मण्डलाचार्य 62
रत्ननगर 4
रत्ननन्दि आचार्य 4 182, 183
रत्नप्रभ सूरि 100
रत्नभूषण 189

रत्नभूषण 15
रयणादे भार्या 18
रविषेण 109
रवीबसी 25
राघमलदेव 50
राजकीर्ति 181
राजप्रयाग 116
राजसेन 129
राजाराम 34
राम 167
रामकीर्ति 113 183 186 187, 202
रामकृष्ण 74, 76, 148
रामगज 74
रामचन्द संगही 53
रामचन्द्र गणि 102
रामचन्द्र शर्मा 106
रामचन्द्राचार्य 104
रामचन्द्राश्रम 106
रामजी 1
रामदयालु 115
रामदास मुनीश
रामनारायण 48
रामपुरा 86
रामभद्राश्रम 106
रामसहाय 145
रामसर्ग ब्राह्मण 157
रामसेन 35, 162, 164, 184
रामनुज 106
रामाश्रम 07
रायमल्ल ब्रह्म 9
रायमल्ल वर्णी 124, 172
रायमल्ल साहु 18
राय साहब 55
राष्ट्रकूट 35
रिखकलाल मुंशी 82
रिष्टसमुच्चय 155
रुखासा साहु 113
रूप्रासा 113
रूपचन्द 195
रूपोभार्या 58
रैवतकाचल 127

ल

लक्ष्मण 42 118
लक्ष्मणदास बैहमक 100
लक्ष्मणराय 142
लक्ष्मीचन्द्र 9, 41 69 83, 183
लक्ष्मीन्दु 4
लक्ष्मीदास 92
लक्ष्मीसागर 173
लखणपाल 116
लच्छीराम 38
ललितकीर्ति 183
ललितेश्वर 122
ललकर 19 197
लाटवागड़ि 19
लाडाहपुत्री 18
लाडीभार्या 195
लालचन्द पाडे 173
लालचन्द महात्मा 40 66, 92
लालचन्द विनोदी 159 167
लालमनि सिंघई 135
लालहराजा 189
लालादि वर्णी 51
लाहलही भार्या 58
लाहौर 60
लिखावतलाल 34
लोलिंबराज कवि 20
लोहाडया गोत्र 18

व

वउ गोत्र 12
वखतमल 27
वखतावरसिंह अग्रवाल 1 52, 68
वघेरवाल जाति 46, 113
वडतेडे 45
वडवताल 7

बनवारीलाल 196
बरतपुर 67
बरदेव 208
बररुचि 18 120
बराहमिहिर 18, 73, 116, 117
बर्द्धमानपुर 7
बद्धमान भट्टारक 15 95
बसुन्धराचार्य ज्ञानकीर्ति 49
बसुविन्दु सूरि 181
बस्तुपाल मुनि 4
बहुरंचले आर्या 18
बहुमुनि 149
बहुरल मल 125
बहुरा बोल 123
बाहराम 162
बाई मदन श्री 28
बाईहा बाई 83
बाचपति गोडबहो 9
बागटी 134
बाग्भट्ट कवि 19 208
बाग्भटालंकार 19
बागभट्टी जिनसेन 134
बाबाराम 207
बाजेराय 147
बादिचन्द्र 14
बादिभूषण भट्टारक 2 144
बादिराज 8, 14, 21 97 130, 131
बान्दिला ऋषि 28
बामदेव 41
बारिषेण 26
बाला त्रिपुरसुन्दरी पूजा 163
बालमदे आर्या 18
बासवानगर 74
बासवालानगर 122
बासुपूज्य 128
बिबुधरूपषि 8
बिवेकसुन्दर गणि 90
बिशालकीर्ति 51, 194
विश्वभूषण 36
विश्वसेन 136, 162, 164, 184
विश्वसेन काष्टासंघी 159
विष्टकसेन 78
वीका 62
वीरचन्द्र 61
वीरनन्दी 7
वीरपुत्र 101
वीरम साह 18
वीरसिंह 11 101
वीरसेन 112, 129, 191
वीरसेनाचार्य 60
वीरासभा 96
वृषवीर 151
वृषनाथ चैत्यालय मलितडाल 17
वृषभनाथ चैत्यालय 12 74, 184
वृषचन्द्र 203
वन्दरवती 127 186
वेगादीया 58
वेताल भट्ट 18
वजलदेव पटनाधिप 104
वदवाडा 91 94
वद्यजीवन 120
वद्यनवनिधि 76
विक्रम 18
विजयकीर्ति भट्टारक 2, 20, 24, 68, 75, 89, 154 198,
विजयगच्छ 37
विजयचन्द्र 125
विजयसिंहाचार्य 38
विजयसेन सूरि 132
विजयोदय टीका 41
विद्यानंद भट्टारक 3, 11, 22, 26, 27, 49, 69, 72 83 92 95, 97, 98, 113, 134 135, 166 171, 183, 188, 198,
विद्याभूषण सूरि 159, 164
विद्याविभूषण 184
विद्वद्गुणविलास गणि 41

विविचन्द्र 48, 54
विनयमति 114
विनयवर्धन गणि 9
विनयसागर ब्रह्म 36
विनयेन्दु 41, 42
विनयेन्द्र 10
विष्टरनिस्त्र 81
विमलमति 183
वोपदेव कवि 179
व्याकनाथ ब्राह्मण 46
ब्राह्मी 166

श

शंकरलाल शर्मा 190
शतश्लोक वैद्यक 119
शंभूनाथ ब्राह्मण 116
शम्भूराम महात्मा 23
शत्रु जयाद्रि 127
शान्तिचन्द्र 139
शान्तिदास 58 159
शान्तिनाथ जिनालय 195
शालमध्ये 78
शाहजहानाबाद 70
शाहजहाँ 1
शाहदरा 70
शिवकदास 127
शिवकोटि 22
शिवचन्द 147 161
शिवलाल 5
शिशुपालवध 9
शीलभूषण 187
शीलभूषण गणि 1148
शीलशाली 114
शुभेन्दु
शीलराज सूरि 11, 12
शीवनगर 109
शोभागदे 12
शीतलचन्द्र 12
शीलचन्द्र 193, 203
श्यामलाल 113
श्वेताम्बराम्नाय 4, 34
श्रमनाम नगर 45
श्रवण 184
श्रावकाचार 48 65
श्रीकुन्द 171
श्री जिहानाबाद 39
श्री कूट 202
श्रीहंसला 101
श्रीगंगाचार्य 19
श्रीपति ब्रह्मचारी 129
श्रीपादपद्म भट्टारक 43
श्रीपाल महामंडलेश्वर 45
श्रीपाल वर्णी 20
श्रीपाल वस्ति 171
श्रीभट्टादि जिनालय 194
श्रीभूषण 159, 160 162 164 181, 184
श्रीयामलीपुर 33
श्रीराम 100
श्रीरामजी पण्डित 44
श्रीरामरत्न पंडित 143
श्रीवर्द्धन 137
श्रीवर्म 8
श्रीवल्लभ 7
श्रीविक्रम 101
श्रुतमुनि 87
श्रुतसागर 26, 27 55 72, 73 85, 148, 198
श्रुतस्थान 2
श्रेणिक 83

ष

षट खण्डागम 112
षट प्राभृत 73

स

संघजी ब्रह्म 2
सकलकीर्ति भट्टारक 2, 13, 25, 49, 78, 88
सकल भूषण भट्टारक 89

सगमलाल पाठक 129
सचीरामपुर 21
सत्यघोष 132
सदानन्द मिश्र 15
सदाराम पण्डित 22, 31
सनेहीलाल 20
सन्मतितीर्थ 51
सपाद माधवपुर 127
सपाद जयनगर 74
सफला भार्या 62
समन्तभद्र 66, 72, 91,93, 102, 113, 133,
134 135, 198
समय सुन्दर उपाध्याय 102
समुन्दर पण्डित 46
सम्यक्त्वकाविहुरा 93
सरलचन्द गणि 101
सरखावा 45
सरस्वती कल्प 67
सरस्वती गच्छ 89 160
सलावानगर 62
सवाई जयपुर 45 52 59, 66, 68, 69 76,
77, 81 84 85 138, 155, 164, 180,
195
सवाई जयसिंह 66
सवाई प्रतापसिंह 74
सवाई माधोसिंह 77
सहीरा भार्या 187
सहस्रकीर्ति भट्टारक 6 45, 46
सह्याद्रि 189
सहावरा 24
सहारपुत्र 58
सागर 3, 05
सागर गणि 101
सागवाममपुर 191
सागारधर्मामृत 5
साथ रम्या का देहुरा 48
साधु मदु 183
सामल 184
सावडा गोविन्द 183
साहजहानाबाद 123
साहाजी 86
साही भार्या 58
सिकन्दाबाद 124
सिघलगोत्रीय 45
सिंहनन्दि 4 49 50, 55
सिंहपुर 86
सिंहाधिपति सुभाचन्द्र 136
सिद्धसेन 57
सिद्धसेन गणि 86
सिद्धान्तसागर भाष्य 61
सिद्धिवर्धनोपाध्याय गणि 44
सिद्धिविनिश्चय 86
सिधाणानगर 138
सिन्दूरप्रकरण व्याख्या 31
सिन्धुचन्द 99
सिन्धे की छावनी 197
सिरिराय सेहर 15
सिरोज (विदिशा) 135
सीताराम 66, 124
सीया भार्या 75
सीहा सभाधिपति 46
सुखराम 86
सुखराय 52 68
सुगुनचन्द 42 49, 66, 70, 86, 91, 94
सुदर्शन 46
सुदर्शन पूजा 191
सुदर्शन योगी 30
सुधर्माचार्य 51
सुधीसागर 171, 183, 184
सुन्दरलाल 91, 94
सुन्दरी 66
सुप्पयदोहा 77
सुप्रभाताचार्य 77
सुप्रभाताष्टक 59
सुमति कीर्ति 2
सुमतिसागर 166

सुरेन्द्रकीर्ति 11, 185, 186
सुरेन्द्रकीर्ति वर्णि 127
सुखदराय 149
सूरिप्रभु 111
सूर्यसिंह सोगीया 115
सृष्टिप्रकाश 86
सेठमल्ल 149
सेवग माफवर्णि 139
सेवितच 58
सोनी 113
सोनीगोत्र 195
सोनीपत 70, 189
सोपरी मार्गी 113
सोम 19
सोमकीर्ति 24, 35
सोमदेव 30, 34, 35, 102, 183
सोमदेवाचार्य 31
सोमप्रभाचार्य 30, 31 76
सोमराजश्रेष्ठी 45
सोमारूप 62
सोहलु चौधरी 46
सौभचन्द 177
सौभाग्य विजय 58
सौरवरी चैत्यालय 77
स्वयम्भूराम 180
स्वयम्भूराम महात्मा 159
स्यामावती 21
स्योचन्द 92

ह

हंसराज 53
हमीरहठ 122
हरपा 24
हरसाणा नगर 37
हरिकिशन पंडित 36
हरितालवासी 148
हरिभट्ट 109
हरिविजय सूरि 114
हरिश्चन्द मिश्र 135
हरिश्चन्द श्वेताम्बर 156
हरिषेण 145
हरिसच 93
हर्ष 17, 186 187, 202
हर्ष कल्याण 183
हर्षकीर्ति 31, 75, 111
हर्षवर्धन सम्राट् 93
हर्षसागर 24
हर्षांक्ष 24
हस्तिनागपुर 70
हाथरस 118, 142
हापुड़ 196
हिसार 58, 70
हीर 114
हीरकविजय सूरि 139
हीरानन्द महात्मा 138, 155
हीरामणि पंडित 162
हुमाऊपातिसाह 28, 8
हुलासराय 84
हूंबड़ जाति 75
हेमचन्द्र भट्टारक 51, 62, 110
हेमचन्द्र यति 171
हेमचन्द्राचार्य 37, 51 90, 99, 100 102, 154
हेमराज 123
हेमसेन 96